

मुल्भ साहित्य माला

वीसवॉ इक्कीसवॉ पुष्प

शरत्-साहित्य

शेष प्रश्न

अनुवादकता
धन्यकुमार जैन

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर (प्राइवेट) लिमिटेड,
हीगवाग
बम्बई-४

मूल्य घौंन रूप्य
गुटी वार, रिगम्बर १०६०

प्रकाशक—यशोधर मोदी, मैाणिग टायरकर,
हिदी प्रय-रखापर (प्राइवेट) लिमिटेड, हीरावाग, गिरगौंन, बम्बई-६
मुद्रक—ओम्प्रकाश पपूर, शानमण्डल लिमिटेड, धाराणसी(बाराण) ६०६३-१९

विभिन्न समयोंमें विभिन्न कार्योंसे बहुतेसे बंगाली परिवार युक्तग्रान्त (उत्तरप्रदेश) के प्रसिद्ध शहर आगरेमें आकर रस गये हैं। कद तो पीढियोंके आशिर्वाद है और कद हालमें ही आये हैं। चचेक और प्लेग जैसी महामारियाक समयकी भगदटन सिया इनका जीवन अत्यन्त निर्निभ है। आदगाही जमानके त्रिते और इमारत ये देख चुके हैं। अमीर-उमराओंकी छोटी, बड़ी, मझोली, दूटी और अपट्टी जहाँ जितनी भी कद है उनकी पूरी एची इहें कण्ठस्थ हो चुकी है। यहाँतक कि सवार प्रसिद्ध तानमहलभी अब इनके लिए कोद नवीनता नष्ट रह ग' है। स'पाके समय उदार और सख्त नेत्रोंको गोलकर, चाँदनी रातमें शध निमीलित नरासे दगकर, जैवरी रातमें ऑग फाट-फाटकर जमुनाके इध पार ओर उस पारसे ताजमहलका सौंदर्य उपलब्ध करनेक नितने प्रकारके प्रचलित प्रवाद और तरफिं है, उन सबको इन लोगोंने निचोडकर खत्म कर दिया है। ता'महल देगकर जिस बड़ आदमाने कय क्या कहा है, जिस जिसने कर्मिताएँ लिखी ह, भाधुस्ताने उब्द'रासमें सामने गड़ होकर किस किसने गलेम फाँसा डालकर मर जानेको काशिया की है, इह सब मादूम है। इनिहासकी जानकारीकी तरफसे भी इनमें रचमात्र तुटि नहीं पाद जाती। इनके छोटे-छोटे बच्चे-बधियातनने सीख लिया है कि जिस वेगमकी वहाँ सोरी थी, कौन-सा जाट-सरदार वहाँ राटी रनाकर खाता था और वहाँ लगा हुद कालिय नितनी प्राचीन है, किस डानुने नितने हीरे माणिक खूटे थे और उनकी अनुमानसे नितनी कीमते थी,—इनमसे धाद भी रात उनसे लिखा नहीं है। इस ज्ञान और परम निश्चिन्ताक बीच महसा एक दिन बंगाली-मुमाजमें चाचल्य दिग्गइ दिया। प्रतिदिन मुमाकियाका घण्ट जावा-जावा रहता है,—अमेरिकन टूरिस्टों (भ्रमण करनेवालों) से लेकर वृन्दावामे लौट हुए निणाराधनी भाट रनी ही रहता है,—किरादा रिन्नी

लगी। दूसरे ही क्षण जपती कन्याके माथ आगु रावूध भीतर प्रवेश करते ही सत्रने सम्मानके माथ उनका स्वागत किया। रादचुअस इण्टिमेशन पायी हो गया और गद्दीका गतरजका रोज़ फिलहाल स्थगित कर दिया गया। अविनाशन हाथ जोटकर कहा, “मेरा परम सौभाग्य है कि आप लोगोंके पाँसोंकी धूल इस घरम पडी।—हाँ, अमानत जसमय कैसे जाना हुआ ?” इतना कहकर मनोरमाक लिण उसका एक कुरसी आगे रग दी।

जागु रावू पासकी आराम कुरसीपर अपने शरीरका त्रिपुल भार रखते हुए जकारण उच्च हास्यसे कमरेको गुञ्जायमान करने वाले, “आगु कैयन^१ लिए जसमय ? मेरी ऐसी रदनामी तो भरे छोटे चाचा भी नहीं कर सके जविनाश रावू !”

ममोरमा हँसते चेहरेसे गिर छुटकार गाली, “कह क्या रहे हो बापूजी !” जागु रावूने कहा, “तो जाने दो छोटे चाचाकी बात। कन्याको आपत्ति है, लेकिन इससे बचकर कोन अच्छा उदाहरण त्रिटियाके रापको भी ताकत नहीं कि दे सके।” इतना कहकर उठोंने अपनी रसिकतास आनल्नेच्छुसके द्वारा फिर घर फाट डालनेकी तैयारी की। हँसी खनपर बोल, “मगर क्या कहें साहब, गठियासे पगु हूँ। नहा तो, त्रिन चरणोंकी धूलका आपने इतना गौरव रग दिया है, आगु गुप्तन उही पाँसोंकी धूल बुहारनेके लिए आपको एक नौकर रखना पडता अविनाश रावू ! लेकिन आज नैठनेका वक्त नहीं, अभी जाना होगा।”

इस अयकाशाभाउके कारणने लिण सभी उनका मुँहकी ओर देखने लगे। जागु रावूने कहा, “एक नियेदन है। मजूर करानेके लिए त्रिटियातकको घसीट लाया हूँ। कल भी छुट्टीका दिन है। शामके बाद घरपर जरा गाने वानेका आयोजन किया है। सपरिचार पधारना हागा। उसने वाद जरा मीठा मुँह—”

लटफ़ीसे बोले, “मगि, भीतर जाकर जरा आज्ञा ले आओ घटी। देर करनसे काम न चलेगा। एक रात और है भाद, यग प्रेण्ड्स, स्त्रियोंने लिए न सही, हम मरदोंने लिए दोनों तरहके खाने पीनेकी व्यवस्था की गई है,—वानी समझिए,—प्रेपुटिस् जगर न हो तो,—समझ गये न ?

१ कैय = बगालियाकी एक जाति विशेष।

समझ सभी गये, और एक स्वरसे सभीने प्रफट कर दिया कि उन लोगोंको कोई प्रेरणुदिस् नहीं है।

आगु राबूने खुग होकर कहा, “नहीं ही होना चाहिए।” लडकीसे कहा, “मणि, रानेने सम्बन्धमें माँ लमियासे मी राय ले आनी है, यह न भूल जाना। हर एकके घर जाकर उन लोगोंकी अभिरुचि जानने और आश लेकर घर लौटनेतक गायद आज हम लोगोंको ग्राम हो जायगी। जरा जल्दी काम सतम कर आओ बेटी।”

मनोरमा भीतर जानके लिए उठना ही चाहता थी कि अविनाश कह उठे, “हमारा घर तो, बहुत दिन हुए, सूना हो गया है। मेरी साली ह, पर वे विधवा है, गाना सुानेमा शीफ काफी है, इसलिए जायगी जरूर। लेकिन राना—”

आगु राबू झटसे बोल उठे, “उसकी भी कमा न होगा अविनाश राग, हमारी मणि जो है। मास मउली, प्याज लहसुन तो यह छूतीतक नहा।”

अविनाशने आश्रयके साथ पृछा, “ये मास मउली नहीं खाता ?”

आगु राबूने कहा, “खाती सर बुउ थी लेकिन दामाद साहनका इच्छा नहीं,—वे जरा कुछ सन्यासी दगरे आदमी हैं—”

छणभरमें मनोरमाका सारा चेहरा मुग हो उठा, यह पिताकी असमाप्त बातमें राधा देखर गेली, “तुम यह सर क्या कदे जा रहे हो राबूजी।”

पिता अप्रतिम से हो गये, पर कयाय कण्ठ स्वरमा स्वाभाविक मृदुता उसके भीतरसे तितकामो टिपा न सगी।

इसक बाद फिर रातबीत जमो नहीं, और भी दो चार मिनट जा ये लोग बैठे रहे, उस गीत आगु राबू वा रात करते रहे पर मनोरमा कुछ अन्यमनस्क रही, और गोगाने चल जानेकर कूठ देरने लिए समाके मनने ऊपर जैसे एक अमिय रिपादका भार लदा रहा।

मिनोमेंसे किसीसे किसीने मां स्पष्ट कुठ नहीं कहा, मगर सभा सोचने लगे कि सहा एक दामाद सादन कहाँसे आ धमने ? आगु राबूने फोड़ लडका नहीं, मनोरमा ही एक मात्र सन्तान है इस बातको सभी जानने थे। मनोरमा आज वर कुँआरा है,—रिगहिता या सधमाना फोड़ चिद्ध उसमें मौनूद नहीं है। रात स्प तीरसे पृछकर किसीने जानी नहीं थी, परन्तु, इस रिपमय सशयगी

१ रंगालमें यह कियोके प्रति सम्मान और रनेइष्टक शब्द समझा जाता है।

मूल्य त्रैलोक्य-रूपय

उठी गार, दिसम्बर १०६३

१-११—यशोधर मोदी, मैनेजिंग टायरेक्टर,

हिन्दी ग्रन्थ-रत्नाकर (प्राइवेट) लिमिटेड, हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई-४

१—ओम्प्रकाश कपूर, शानमण्डल लिमिटेड, धाराणसी(जनारस) ६०६३-१९

रातनी उत्सुकता नहीं, दिनेने काम घघाम दिन रातम हो जाता है । इतनेम एक प्रौढ अउस्थान बगाली-साहन अपनी शिक्षता, मुरूपा और पृण यीरना क-यांन साथ यहाँ आये, और स्वास्थ्य उदारन निमित्त शहरन एक किनार बडा भारी मरान किरायेपर लंर रहि लग । उनक साथ भैरा, बायरनी, दरमान आये, नाकर नौरानी, ब्राह्मण-रगोदया, गाडी घाड़, मोटर, शोपर, सादर, कोचवान वगैरह सभी आये, और इतने दिनांसे गाली पडा हुआ इतना बण मरान देगते देगते जैसे जादू कर दिया गया हो इस तरह, रातों रात आनाद हो गया । उन महाशयन नाम आगुतोप गुन था और क-याका मारमा । बहुत ही आसानीसे समनम आ गया कि ये लोग बड़ आदमी हैं । परन्तु, ऊपर जिस चाचल्यका उल्लेख किया है, वह इनकी धन-सम्पत्तिने परिणामनी कल्पना करके या मनोरमाकी शिक्षा और रूपनी ख्यातिन कारण इतना नहीं हुआ, जितना कि आगु नाबूक निरभिमान, सरल और शिष्ट आचरणसे । वे सुद लडकी का साथ लंर शहर आये और तलाश कर-करके सब घर मुलाकात करने गये । बोले, “हम बीमार आदमी हैं, आप लोगने अतिथि हैं, इसलिण, आप लोग अपनी उदारतासे अगर कृपा करके हम प्रवासियाका अपने दलभं शामिल नहीं कर लगे, तो हमारे लिए यह निवासनमाल काटना एक तरहसे असम्भव हो जायगा ।” मनोरमा घरोंने भीतर जा जानर स्त्रियोंसे परिचय कर आइ । उनने भी अस्वस्थ पिताकी तरफसे निवेदन किया कि आप लोग हमें गैर न समते । तथा इग तरहकी और भी बहुत सी रुचिंर मीठी रातें कहा ।

सुनकर सब ही खुश हुए । सबसे आगु नानूनी गाडी और मोटर ज-तन और जिस तिसने घर जाने आने लगी, और मद आरतोंका घरस लाने और घर पहुँचाने लगी । रातचीत, हँसी मजाक, गाना-बजाना और देगने लायक चीजं नार-नार दंपनेनी दिलचस्पी ऐसी जमने लगी कि इस रातको भूलनेम किसीने भी एक सप्ताहसे ज्यादा समय नहीं लगा कि ये लोग परदेशी या बहुत बड़ आदमी हैं । मगर एक रात, शायद कुछ सभोचवश और कुछ यर्थ सी समझकर किसीने स्पष्ट तोरसे नहीं पृछी कि आप लोग सनातनी ह या ब्रह्मसमाजी । और, परदेशम, इसकी ऐसी थोड़ थडी जरूरत भी नहीं होती । फिर भी आचार व्यवहार । समशा जा सकता है, सने एक तरहसे समझ लिया था कि ये हों । भी समाजने, पर अधिकांश उच्च शिक्षित, उच्च बगाली परिवारोंके

शेष प्रश्न

समान कसते कम खाने पीनेने विषयमें इनके को उचाव निचार नहीं है। यह बात सखी मालूम न होनेपर भी कि घरमें मुसलमान मारची है, इतना सख समझ गये कि इतनी उमर तक जिहाने लकीकी हँसारी खपर कालेजम पढाया है, वे असलमें किसी भी समाजने क्यों न हों, जनेर तरहका सवीणताओंसे छुटकारा पा चुने हैं।

अविनाश मुकजों कालेजमा प्रोफेसर है। बहुत दिन हुए उसकी खीना देहान्त हो गया है,—फिर उसने ब्याह नहा किया। घरमें दस सालका एग रडना है। वह कालेजमें पढाता है आर मित्र दोस्तोंने साथ आनन्द करता फिगता है। आर्थिक स्थिति अच्छी है,—निश्चिन्त और निरुपद्रव जीवन है। दो साल पहले मिथमा साली मलेरिया बुगारसे पाडित होखर आर हवा बदलने बदनोदने घर आइ थी। बुगारने छोड दिया, पर रहनोदने नहीं छोडा। फिलहाल बही घरकी मालकिन है। लटककी देग माल करती है, घर गृहस्थी सँभालती है। मित्र लोग सम्बन्धनी आलोचना करने मजाक उडाते ह। अविनाश हँस देता है, कहता है, “माइ यधमें शर्मिन्दा करने अर न जलाओ। तन्दार है तन्दार। नहीं तो, कोशिश करनेमें तो बोट बसर रती नहीं। अर सोचता हँ, धनकी बदनामीसे डबैत मार डालें, सो भी मेरे लिए अच्छा है।”

अविनाश अपनी खीनी बहुत ज्याग चाहता था। मवान भरमें सर्जन नाना आकार और नाना भगिमाजोंके उसने फोगेप्राफ टेंगे हुए हैं। सोनेने कसते एक नवी तन्दार टेंगी हुइ है। ऑडल पेण्टिंग है, कीमती फ्रेमम मली हुइ। अविनाश हर बुधवारको सबेरे उसपर माला लटका देता है। इस नि उसनी मृत्यु हुइ थी।

अविनाश सग आर्नादत रहनेमाला आदमा है। ताश चीपडम उसकी अन्यधिक आसनि है। इमीसे, छुटने दिन उसने घर लोमोंका खू समगम होता है। आज किसी त्योहारनी बजहसे कालेज-कचहरी नन्द ह। खाने-पानेने बाद प्रोफेसर मण्डल जा घमरा है। दो जन नीचेनी गद्दीपर गतर ज निडाये बैठे हैं, और दो जनें आँधे लेगकर उसे देग रहे हैं, नकीने सख लोग डिण्टी और नुन्दिफका निगा-बुद्धिकी खम्यताके अनुपातमें मोटी तनगाकी नाप-तौल करके उध धोलाहलके साम गबनमेण्टके प्रति ‘शइकुअस इण्टिफेशन’ और अश्रडा प्रकट करनेमें लगे हुए हैं। इतनेमें एग भारी भरतम मोटरकार दरगाजेपर आ

लगी। दूसरे ही क्षण अपनी कन्यासे साथ आगु बाबूने भीतर प्रवेश करते ही उसने सम्मानने साथ उनका स्वागत किया। रादचुअस दृष्टिभ्रमण पानी हो गया और गद्दीका शतरजमा रोल फिलहाल स्थगित कर दिया गया। अविनाशने हाथ जोड़कर कहा, “मेरा परम सौभाग्य है कि आप लोगोंने पाँचोंकी धूल इस घरमें पड़ी।—हाँ, अचानक असमय कैसे आना हुआ ?” इतना कहकर मनोरमाके लिए उसने एक कुर्सी आगे उठा दी।

आगु बाबू पासकी आराम कुर्सीपर अपने गीरका त्रिपुल भार रखते हुए अकारण उच्च हास्यसे कमरेकी गुञ्जायमान करके बोले, “आगु वेग्नर^१ लिए असमय ? मेरी ऐसी बदनामी तो मेरे छोटे चाचा भी नहीं कर सके अविनाश बाबू।”

मनोरमा हँसते चेहरेसे फिर झुमर गेली, “कह क्या रहे हो बाबूजी ?” आगु बाबूने कहा, “तो जाने दो छोटे चाचाकी बात। कन्याका आपत्ति है, लेकिन इससे बचकर को अच्छा उदाहरण त्रिपुलाके आपको भी ताकत नहीं कि द सके।” इतना कहकर उन्होंने अपनी रसिन्तासे आनन्दोच्छ्वासने द्वारा फिर घर फाड़ टालनेकी तैयारी की। हँसी स्कनेपर बोले, “मगर क्या कहें साहब, गठियासे पगु हूँ। नहा तो, जिन चरणोंकी धूलका आपने इतना गौरव रत्न दिया है, आगु गुप्तने उहीं पाँचोंकी धूल बुहारनेके लिए आपको एक नौकर रखना पड़ता अविनाश बाबू। लेकिन आज बैठनेका वक्त नहा, अभी जाना होगा।”

इस जगत्काशाभावके कारणके लिए सभी उनका मुँहकी ओर देखने लगे। आगु बाबूने कहा, “एक निवेदन है। मजूर करानेके लिए त्रिपुलातककी घसीट लाया हूँ। कठ मौ छुट्टीका दिन है। गामने राद घरपर जरा गाने बानेका आयोजन किया है। सपरिवार पधारना होगा। उसने बाद जरा गीठा मुँह—”

लटकीसे बोले, “मगि, भीतर जाकर जरा आशा ले आओ बेटी। देर करनेसे काम न चलेगा। एक बात और है भाद, यग प्रेस्ट्स, स्त्रियोंके लिए न सही, हम मरदोंके लिए दोनों तरहके राने पीनेकी व्यवस्था की गई है,—यानी समक्षिण,—प्रेजुडिस् अगर न हो तो,—समस्त गये न ?

१ वैद्य = बगालियोंकी एक जाति विशेष।

समझ सभी गये, और एक स्वर्गसे सभीने प्रफट कर दिया कि उन लोगोंको कोई प्रेरणित्व नहीं है।

आगु राबूने खुग होकर कहा, “नश ही दाना चाटिए।” लटकसे कहा, “भागि, गानेने सख्यधम माँ लामसोंसे भी राय ल आना है, यह न भूल जाता। हर एकने घर जाकर उन लोगोंकी अभिवृत्ति जानने और आगु लेकर घर लौटनेतर शायद आज हम गगोंना ग्राम हो जायगा। जय जल्दी काम रतम कर आओ बेनी।”

मनोरमा भीतर गानेने लिए उठना ही चाहती थी कि अग्निनाश वह उठे, “हमारा घर तो, बहुत दिन हुए, सुना हो गया है। मेरा साता है, पर ये विधवा है, गाना सुननेका शौक काफी है, इसलिए जायगी जरूर। लेकिन गाना—”

आगु राबू झटसे गोल उठे, “उमरा भा कमा न होगी अग्निनाश बाबू, हमारी भाणि जो है। मास मठली, प्याज-लहसुन ता यह दूतीतक नहा।”

अग्निनाशने आश्चर्यसे साय पूछा, “ये मास मठली नहीं खाता।”

आगु राबूने कहा, “ग्रावी सन-कुठ था लेकिन दामाद साहबकी इच्छा नहीं,—ये जरा कुछ सन्यासो दगर जादमी है—”

क्षणमरमें मनोरमाका सारा चेहरा मुग हो उठा, वह पिताकी असमाप्त बातमें राधा देकर गेली, “तुम यह सब क्या करे जा रहे हो राबूजी।”

पिता अप्रतिम-से हो गये, पर बचाने फण्ट-स्वरको स्वाभाविक मृदुता उसने भीतरनी तिवृत्तासे छिपा न सकी।

इसने राद फिर रातनीन जमा नहा, और भी दो चार मिनट जो ये लोग बैठे रहे, उस बीच आगु राबू ता रात करने रहे पर मनोरमा कुछ अन्यमनस्व रहा, और लेनाने चले जानेपर कुछ तेरने लिए सबोंने मनने उषर जैसे एक अप्रिय विशदका भाव लदा रहा।

भिन्नोभेसे दिशासे विज्ञाने भा स्पष्ट कुठ नहीं कहा, मगर सभा सोचने लगे कि सहसा एक दामाद साहब कहाँसे जा धमके ? आगु राबूने मोट लटका नहीं, मनोरमा ही एक मात्र सन्तान है, इस रातको सभा जानते थे। मनोरमा आज तक कुँआग है,—विवाहिता या सधमाना कोई चिह्न उसमें मौजूद नहीं है। रात स्पष्ट तौरसे पूछकर किसीने जानी नहीं थी, परन्तु, इस नियमन सजपकी

* बगाने यह श्रियोने प्रति सम्मान और स्नेहपूर्वक रूप समझा जाता है।

हवा भी तो किसीने मनतक नहीं पट्टी थी। तो फिर ?

मगर फिर भी, ये सयासी दगने दामाद साहब चाहे जं हा और चारे जहाँ हा, मामूली आदमी नहीं ह। कारण, उनकी मनाही नहा, सिफ अनिच्छाये जोरसे ही इतने उडे पिलामी ओर ऐवगाली पत्तिकी एकमात्र शिथिता कन्या का मास मछली जोर प्याज लहसुन खाना एनरारगी बन्द हो गया है।

और, शग्माने और छिपानेकी इसमें कौन-सी बात है ? पिता मारे सनोचन जड हो गये, क्या चेहरा मुग्न करने मन्ध हो रही,—भारा मामला सनन मनमें मानों एक अनाज्जित और अप्रिय रहस्यती तरह चुमरर रह गया, और आगन्तुक परिवारने साथ मिलने जुलनेकी जो सहज और स्वच्छ द धारा बर रही थी मानो उसमें अकस्मात् एक राधा-सी जा पनी।

२

मात्रम तो ऐसा हुआ था कि शायद जागु बाबू शहरके किसीका भी बाद नहा देंगे, लेकिन देखा गया कि रगालियामें जो प्रशिष्ट लोग हैं, वे ही निमन्त्रित हुए हैं। प्रोफेसराना दल गिरोह रॉधर आ पहुँचा और उनन घरकी म्रिया को पहलेसे ही मोटर भेजकर तुला लिया गया है।

एन उडे कमरेने पशपर लम्बा चाडा फ्रीमती कार्पट बिठाकर लोगाने बैठनेने लिए जगह को गद है। उगपर दो तीन देखी उम्माद बैठे साजका स्तर वॉध रहे ह। बहुत से उच्चे उह घेरे बैठे ह। घरने मालिक साहब जपन कहा थे, स्तर पाते ही दौड़-दोडे आये, और दोना हाथ उठाकर थियट्रिकल दगसे बोले, “स्वागत सजनगण ! मास्ट वेल्कम् !”

फिर उस्तादोंको इशारेसे दिखलाकर और जाँय मिचकानर धीमे स्वरसे बोले, “डरनेकी कोइ बात नहीं। सिफ इहा लोगाकी ग्यॉऊँ ग्यॉऊँ सुननेन लिए ही आप लोगोंको निमन्त्रण देकर नहा बुगया है। सुनायेंगे, ऐसा गाना सुनायेंगे कि मुझे आप लाग जाशीयाद दने हुए घर लौटेंगे।”

सुनकर सभी खुग हुए। सदा प्रसन्न अविनाग गानूका चेहरा जान दसे चमक उगा, बोले, “कहते क्या ह जागु बाबू ? इस अभागे देशके तो सभी लोगोंको मैं जानता हूँ, अकस्मात् यह रत्न पा कहाँसे गये ?”

“आश्चर्यकार क्रिया है साहब, अविष्कार किया है। आप लोग भी शिल्पुल

ही न पहचानते हों, सो रात नहीं है,—अब शायद भूल गये होंगे। चलिए, दिखाता हूँ।” अपनी बैठकना परदा हटाकर सचमा ये एक तरहसे दबनेलते हुए ही भीतर ले गये।

आदमा तो कुछ सॉन्गे रगना है, पर रूपना अन्त नहा। जैसा लम्बा अरहरा शरीर, वैसा ही सारे अंगनाँका निर्दोष गठन। नाक, आँग, भौहें, ललाट, जघरानी तिरठी रेखातक सारी विशेषताएँ एक ही मानव शरीरमें सुनिन्यस्त हो चुकनेपर वह नैसी त्रिस्मयनी वस्तु हो जाती है, यह बात उस आदमाको बगैर देखे क्यासमें नहीं आ सकती। देखते ही सहसा दग रह जाना पडता है। उमर शायद पत्तीससे आस-पास पहुँची होगी, मगर पहले वह जीर भी कम मान्द्रम होती है। सामनेके सोनेपर बैठे वे मनोरमासे रात कर रह थे, अब सीधे होकर बैठ गये जीर मुसकराकर बोले, “आइए।”

मनोरमाने उठकर आगन्तुक अतिथियोंको नमस्कार किया। परन्तु अकस्मात् सच ऐसे विचलित हो उठे कि प्रति नमस्कारकी रात भी किसीने मनम त आद।

अभिनाश रात्रु उमरमें भी उड़ थे जीर शत्रेजने लिहाजसे पद-गौरवम भी सचसे श्रेष्ठ थे। सचसे पहले उहोंने बात की। बोले, “आगरे कत्र लींटे शिपनाथ रात्रु ? सूरु रहे साहन, हम लोगोंका तो एतर भी नहीं लगी।”

शिपनाथने कहा, “नहा मिली ? आश्रय है।” आर फिर मुसकराकर बोले, “म नहा समझता था अभिनाश रात्रु कि भेरे आनेकी राट देखने हुए आप लोग इतने उद्विग्न हो रहे थे।”

उत्तर सुनकर अभिनाश रात्रुने यद्यपि हँसनेकी कोशिश की, किन्तु उनके सहयोगियों के चेहरे क्रोधसे भीषण हो उठे। किसी भी कारणसे हो, ये लोग पहलेसे ही इस प्रियदर्शन गुणी व्यक्तिसे प्रसन्न नहीं हैं। यह रात जाभाससे माद्रम होनेपर भी एफनी इस प्रोक्तिने भीतरसे जीर सचरी कठिन मुनच्छत्रिकी पजनासे इतनी कटु, अप्रिय और स्पष्ट हो उठी कि सिर्फ मनोरमा जीर उससे पिता ही नहीं किन्कि सदानन्द प्रकृतिन अभिनाशतक लज्जित हो गये।

परन्तु मामला आगे नहीं उठ पाया, यहीं रुक गया।

बगलन कसरेसे उस्तादजानी आभाज मुजाद दी जीर दूसरे ही धाग घटने गुमातने आकर निनयके साथ कहा, “सच तैयार है, किफ आप लोगोंके पहुँचने भरकी देर है।”

पेशेवर उस्तादाना सगीत साधारणतः जैसा हुआ करता है, यहाँ भी वैसा ही हुआ, विशेषताहानि मामूली। मगर कुछ दर बाद इस छात्री-सी सगीत-समाप्त थाइ-से धोताओं व बीच शिश्नाथका गाना समुच्च ही अपूर्व सुनाइ दिया। सिर्फ उसका कण्ठ ही अतुलनीय और अनिन्दनीय हो सा गत नहीं, रास्त्वम वह इस विद्याम असाधारण मुसिहित और पारदर्शी है। उसका गानना आडम्बर, गून्व सयत दग, स्वरनी स्वच्छन्द सरल गति, चंद्रपर अदृष्ट्य भावोंनी छाया, आँवोंनी अभिभूत उदासीन दृष्टि सब बातोंने एक ही समयम केद्रीभूत होकर समोगीण लय और तानसं परिपुद्द जन वह सगीत समाप्त किया तब मात्रम हुआ कि शिश्नाथजाने (सरस्वतीने) अपने गेनों हाथ गाली करने चाराका साथ आशीवाद इस साधकका माथेपर उठेला दिया है।

कुछ देरतक सभी लोग वाक्यहीन स्तब्ध हो रहे, सिर्फ शूद्र अमीर गौने धीरसे कहा, “ऐसा कभी नहा सुना।”

मनोरमाने रचपनस ही गाने-बजाने का अभ्यास किया है। सगीतमें वह अपट्ट नहीं थी। अपने छोटेसे जीवनमें उसने बहुत-कुछ सुना है, लेकिन यह बात उसे नहीं मात्रम थी कि ससारम ऐसी चीज भी मौजूद है और सगीतके छन्द छन्द या कदम-कदमपर हृदयके भीतर इस तरह कसक भी उठ सकती है। उसकी दोनों आँवें आँसु-गासे भर आई और उसे ठिपानक लिए मुँह परेपर वह चुपचाप उठने चली गई।

अशिनाथने कहा, “शिश्नाथ गानेका जल्दी तैयार नहा होता उसका गाना हम लोगोंने पहले भी सुना है,—लेकिन उसकी इससे थोड़ा तुलना ही नहीं हो सकती। इस साल भरक अन्दर तो उसने ‘दननिनिट्टी दग्गुव’ (हृद दरजेका सुधार) किया है।”

हरेद्रने कहा, “हाँ।”

अथ इतिहासके अध्यापक हैं। कठोर सच्चे आदमीके तौरपर मित्र मण्डलमें उनकी ख्याति है। गाना-बजाना अच्छा लगना उनके मतसे मनकी कमजोरी है। य निष्कण्ठ साधु आदमी हैं। इसीसे सिर्फ अपना ही नहीं, दूसरोंकी चरित्र-सम्बन्धी पवित्रताके प्रति भी उनकी अत्यन्त सजग तीक्ष्ण दृष्टि है। शिश्नाथके अकस्मात् वापस लौट आनेके कारण शहरकी आज हवा फिरसे कलुषित न हो जाय, इस आशाकासे उनकी गंभीर शांति क्षुब्ध हो गई है।

रामकर इस बातकी सम्भावनासे उनका मन बहुत उद्विग्न हो उठा कि धरम औरतें आ गई हैं, वे भी परदेकी ओटसे गाना सुनगी, चेहरा देलेंगी, और वह उह भी प्रीतिकर लगेगा। वे बोले, “गाना तो सुना था मधु बाबूका। यह गाना आप लोगोंको चाहे जितना भी मीठा लगा हो, पर इसमें प्राण नहीं हैं।”

सब चुप हो रहे। कारण, एक तो अज्ञात मधु बाबूका गाना किसीने सुना नहीं था और दूसरे गानेमें प्राण रहने न रहनेकी सुनिश्चित धारणा अभ्यक्ती तरह और किसीने निकट स्पष्ट नहीं थी। गुण सुनव आगु बाबू उच्छेजनावश तरु करनेको तैयार थे, पर अग्निनाशने आँखोंसे दृशारेसे उन्हें रोक दिया।

संगीतहीके विषयमें आलोचना होने लगी। कत्र, जिसने, कहाँ, वैसा गाना सुना था, उसकी व्याख्या और वर्णन किया जाने लगा। बातों ही बातोंमें रात बढने लगी। भीतरसे खबर आई कि औरतें सब जीम चुकी, और उन्हें घर भेजा जा रहा है। वृद्ध सब जज साहन रात हो जानेकी वजहसे घर चल दिये और अजीण रोगग्रस्त मुन्सिफ साहन भी जल और पान मात्र मुँहमें देकर उनसे साथी हुए। रह गया सिफ प्रोफेसर-दल। क्रमशः उसकी भी जीमनेकी बुलाहट हुई। ऊपरसे खुले बरामदेमें आसन त्रिग्राकर पत्तलें लगाइ गई हैं, सपने साथ आशु बाबू भी बैठ गये। मनोरमा औरतोंकी तरफसे छुट्टी पाकर देख-रेखके लिए आ पहुँची।

शिवनाथको भूय भठे ही हो, पर खानेमें रुचि नहीं थी, वह बिना खाये ही घर लौटाना तैयार था, मगर मनोरमा किसी भी तरह उस छोटा नहीं, वह सुत्तर सपने साथ बिठा दिया। आयोजन बट आदमियों जैसा ही था, इस बातका विस्तारके साथ वर्णन करके कि रेलमें जाते उत्त दूधलामें शिवनाथ के साथ तैम आगु बाबूका परिचय हुआ और मात्र दो दिनोंकी बातचीतसे जैसे वह परिचय घनिष्ठ जात्मीयतामें परिणत हो गया, आशु बाबू अपना वृत्तित्व प्रमाणित करनेके लिए कहा, “और, सपने बत्कर खूबी है भरे बाताली। इनके गलेकी अस्फुट मामूली-सी गुंजन ध्वनिसे ही मैं निश्चित समझ गया कि कोई गुनी पुरुष, असाधारण “यक्ति है।” इतना कहकर उन्होंने बताया कि सागीने तीरपर बुलाकर कहा, “क्यों बंटी, कहा नहीं था तुमसे, शिवनाथ बाबू भारी गुणी आदमी हैं? कहा नहीं था मणि, इनके साथ जान पहचान होना जीवनमें एक

संभाम्यकी बात है ?”

लडकीम मुखड़ा मारे जान-दके दीस हो उठा, बोली, “हॉ बाबूजी, तुमो कइ था । तुमने गाडीसे उतरते ही मुझे बताया था कि—”

“मगर देखिए आगु बाबू—”

घत्ता थे वज्र । सत्र चक्रित हो गये । जविनाशने व्यग्र होकर रोक्नेकी कोशिश की, “जो हो, रहने दो अथय । रहने दो जाज यह सत्र चत्ता—”

अधयने औरत भींचकर अँरुकि लिहाजकी बला टालकर कइ वार सिर हिलाया और कइया, “नहो जविनाश बाबू, दगानेसे काम नहा चलेगा । शिर नाथ बाबूकी सारां बात प्रकट कर देना मैं अपना फतव्य समझता हूँ । आप—”

“जो हो हो,—करते क्या हो अथय, कर्तयमा ज्ञान तो हम लोगारो भी है, नाइन,—और किसी दिन दरता जायगा—” इतना कइकर जविनाशने उमे एक धक्का देकर रोहननी कोशिश की, पर सफलता नहा मिली । धक्का अथय का शरीर हिल गया, पर कतव्यनिष्ठा नहा हिली । बोले, “आप लोग जानत ह कि ययका सजेव भेरे नहीं है । जनातिमो प्रथय म द ही नहा सजता ।”

जसहिणु हगदर बोल उठा, “अरे, सो क्या हम भी प्रथय देना चाहते ह ? लेजिन उमने लिष्ट क्या रोद न्यान-काल नहा ?”

अधयने कइया, “नहीं । ये अगर इस शहरम फिरसे न आत, अगर उच परिवारसे घनिष्ठता पढातेसी कोशिया न करते, प्जासकर कुमारी मनोरमा अगर कोई सम्बध न होता—”

उद्वेगके कारण आगु गनु न्याकुल हो उठे और ज्ञात आगकासे मनोरमा का चहया पाका पइ गया ।

हरेद्रने कइया, “इट इज टु मच !” (बहुत ज्यादानी है ।)

अधयने जोरने साथ प्रतिवाद किया, “ना, इट इज नॉट !” (नहीं, नहा है ।)

जविनाश बोल उठे, “जो हो—कर क्या रहे हो तुम लोग !”

अधयने किसी गालपर ध्यान ही नहीं दिया, बोले, “आगरमे ये भी किसी दिन प्रोफेसर थे । इननी आगु बाबूनी पतलाना चाहिष्ट था कि कैसे वह नौनरी धूटी ।”

हरेद्रने कइया, “अपनी इच्छासे छोड दी । पत्थरका कारोबार करने

क लिए ।”

अध्याने सण्डन किया, “शुठी बात है ।”

शिवनाथ चुपचाप भोजन कर रहा था, मानो इस सब त्रितण्डा-वादसे उसका कोई सम्बन्ध ही न हो । जब उसने मुँह उठाकर देखा और अत्यन्त स्वाभाविक भावसे कहा, “बात तो शुठी ही है । कारण, भोजेसरी अपनी इच्छासे नहा छोटवा ता दूसरोंकी यानी आप लोगोंकी इच्छासे ठोडनी पडती । और सा ही हुआ ।”

आपु गान्धे आश्रयन साथ पृछा, “क्या ?”

शिवनाथने कहा, “गराब पीनेकी बजससे ।”

अध्याने इस बातका प्रतिवाद किया, “नहा, शराब पीनेका बसुरपर नहीं, मतभाले होनेके कगूरमे ।”

शिवनाथने कहा, “जो शराब पीता है वही तो कभी न कभी मतभाला होता है । जो नहीं होता, वह या तो झूठ बोलता है, या शराबके उदले पानी पीता है ।” कहकर यह हँसने लगा ।

अध्याने मारे शोधने कठोर हो उठा, गाला, “निलजकी तरह आप हँसना चाहें ता हँस सकते हैं, मगर इस कगूरको हम लोग माफ नहीं कर सकते ।”

शिवनाथने कहा, “एसी बदनामी तो मैं आपकी करता नहीं कि आप माफ कर सकते हैं । इस सत्यको मैं स्वीकार करता हूँ कि स्वेच्छासे मुझसे नौकरी छुटानेके लिए आप लोगोंने स्वेच्छासे काफी परिश्रम किया था ।”

अध्याने कहा, “तो आशा है कि और भी एक साथ आप इसी तरह स्वीकार कर लेंगे । आपको शायद मालूम नहीं कि हम लोग आपकी बहुत-सा बातें जानते हैं ।”

शिवनाथने गरदन हिलाकर कहा, “नहीं, मुझे नहीं मालूम । फिर भी इतना अवश्य जानता हूँ कि औरोंके विषयमें आपका कुतूहल जैसा अपरिशील है, दूसरोंकी बात जाननेका अध्ययनसाथ भी वैसा ही विपुल है । क्या स्वीकार करना होगा, परमाइए ?”

अध्याने कहा, “आपकी स्त्री मौजूद है । उसे छोडकर आपने फिर व्याह किया है । सच है या नहीं ?”

आपु गान्धे सहसा गुम्मा हो पड़े, “आप यह सब क्या कह रहे हैं अध्या

सोभाग्यकी बात है ?”

लडकीका मुसंडा मारे जानन्दके दीप्त हो उठा, बोली, “हाँ बाबूजी, तुमने कहा था । तुमने गाड़ीसे उतरते ही मुझ रताया था नि—”

“मगर देखिए आशु बाबू—”

उत्ता थे अत्रय । सब चम्कित हो गये । अविनाशने चम्र होकर रोकनेकी कोशिश की, “जो हो, रहो दो अत्रय । रहने दो आज यह सब चचा—”

अक्षयने आँसूँ मीचकर आँसूँके लिहाजकी बला टालकर कइ बार सिर हिलाया ओर कहा, “नहीं अविनाश बाबू, दधानेसे काम नहा चलेगा । शिव नाथ बाबूकी सारी बात प्रकट कर देना में अपना कतव्य समझता हूँ । आप—”

“आ हो हो,—करते क्या हो अत्रय, कर्तयमा ज्ञान तो हम लोगो भी है, साह्य,—और किसी दिन देखा जायगा—” इतना कहकर अविनाशने उसे एक धम्रा देकर रोफनकी कोशिश की, पर सफलता नहीं मिली । धक्केसे अत्रय का शरीर हिल गया, पर कतयनिष्ठा नहीं हिली । बोले, “आप लोग जानते हैं कि यथका सकोच मेरे नहीं है । जनीतिसे प्रश्रय में दे ही रहा करता !”

असहिष्णु हरेद्र गोल उठा, “अरे, सो क्या हम भी प्रश्रय देना चाहते हैं ? लेफिन उसने लिए क्या कोई स्थान-काल नहीं ?”

अक्षयने कहा, “नहीं । ये अगर इस शहरम फिरसे न आते, अगर उच्च परिवारसे धनिष्ठता उढानेकी कोशिश न करते, रासकर कुमारी मनोरमाना अगर कोई सम्बध न होता—”

उद्वेगके कारण आशु बाबू याकुल हो उठे और जरात आशकासे मनोरमा का चेहरा पीना पड गया ।

हरेद्रने कहा, “इट इज टु मच !” (बहुत ज्यादाती है ।)

अत्रयने जोरने साथ प्रतिनाद किया, “नो, इट इज नॉट !” (नहीं, नहीं है ।)

अविनाश गोल उठे, “ओ हो—कर क्या रहे हो तुम लोग !”

अक्षयने किसी रातपर ध्यान ही नहीं दिया, बोले, “आगरेमे ये भी किसी दिन प्रोपेसर थे । इनको आशु बाबूको रतलाना चाहिए था कि कैसे वह नौकरी छूटी ।”

हरेद्रने कहा, “अपनी इच्छासे छोड दी । पथरका कारोबार करने

के लिए ।”

अश्वयने खान्डन किया, “शुद्धी रात है ।”

शिवनाथ चुपचाप भोजन कर रहा था, मानो इस सभ मितपंडा वादसे उसका वाद सभ्र थ ही न हो । अब उसने मुँह उठाकर देखा और अत्यन्त स्वामात्रिक भावने कहा, “वात तो शुद्धा ही है । कारण, भ्रौपंसरी अपनी इच्छासे नहीं छोड़ता ता दूसरोंकी यानी आप लोगोंकी इच्छासे छोड़नी पडती । और सो ही हुआ ।”

आशु गानूने आश्वयने साथ पृछा, “क्या ?”

शिवनाथने कहा, “गरात्र पीनेकी वजहसे ।”

अश्वयने इस बातका प्रतिवाद किया, “नहीं, गरात्र पीनेके कसूरपर नहा, मतगाले होनेके कसूरने ।”

शिवनाथने कहा, ‘ जो शरात्र पीता है वही तो अभी न कभी मतगाला होता है । जो नहीं होता, वह या तो शूद्र बोलता है, या शरात्रने बदले पानी पीता है ।” कहकर वह हँसने लगा ।

अश्वय मारे शोधने कठोर हो उठा, गाला, “निर्लजकी तरह आप हँसना चाहें तो हँस सकते हैं, मगर इस कसूरको हम लोग माफ नहीं कर सकते ।”

शिवनाथने कहा, “एसी उदनामी तो मैं आपकी करता नहीं कि आप माफ कर सकते हैं । इस सत्यको मैं स्वीकार करता हूँ कि स्वेच्छासे मुझसे नौकरी छुटानेके लिए आप लोगोंने स्वेच्छासे काफी परिश्रम किया था ।”

अश्वयने कहा, “तो जादा है कि और भी एक सत्य आप इसी तरह स्वीकार कर लेंगे । आपको शायद मालूम नहीं कि हम लोग आपकी गहुत सा बात जानते हैं ।”

शिवनाथने गरदन हिलाकर कहा, “नहीं, मुझे नहीं मालूम । फिर भी इतना असत्य जानता हूँ कि औरोंने रिषयमें आपका कुतूहल जैसा अपरिशीम है, दूसरोंकी बात जाननेका अध्ययसाय भी वैसा ही रिपुल है । क्या स्वीकार करना होगा, परमाहण ?”

अश्वयने कहा, “आपकी स्त्री मौजूद है । उसे छोड़कर आपने फिर ब्याह किया है । सच है या नहा ?”

आशु बाबू सहसा गुम्हा हो पड़े, “आप यह सब क्या कह रहे हैं अश्वय

गानू ? ऐसा भी बर्दा हुआ है, या हो सकता है ?”

शिपनाथ खुद ही राचमें टाककर नीले, “पर ऐसा ही हुआ है आगु गानू । उह छोटकर, मीने फिरसे म्याह किया है ।”

“कहते क्या है ? क्या हुआ था ?”

शिपनाथने कहा, “विशेष बात नहीं । वे हमेशा बीमार रहती ह, उमर भी तीस हो चली । औरतोंके लिए इतना ही काफी है । उसपर लगातार बीमारी भुगतनेके कारण दौत गिर गये, बाल पड़ गये, फिट्ठुल धूती हो गइ है । इसी लिए उह छोडकर दूसरा याह करना पडा ।”

आगु गानू निहल दृष्टिने उसन चहरेकी तरफ देखते रह गय, “ए ! सिफ इसीलिए ? उनका और कोइ अपराध नहा ?”

शिपनाथने कहा, “नहीं । कोइ शून दोष लगानसे लाभ ही क्या है आगु गानू ?” उसकी इस निमल सत्यवादितासे अभिनाश माना पागल हो उठा, “लाभ ही क्या है आगु गानू ! पागण्डो कहाने ! तुम्हारा लाभ नुस्खान चूल्हेम जाय, एन बार शून ही गोल जाते कि उमने गम्भीर अपराध किया था, इसीसे उसे छोड दिया है । एक शूनसे तुम्हारा पाप नहा बढ जाता ।”

शिपनाथ गुस्सा नहा हुआ, सिफ इतना ही बोला, “मगर इतनी बेजा बात म नहा कह सकता ।” हरेद्र सहसा जल भुन गया, बोला, “विवेक जैसी चीज क्या आपने अन्दर है ही नहा शिपनाथ गानू ?”

शिपनाथको इतनेपर भी गुस्सा न आया, उसने शान्त भावसे ही कहा, “ऐसा विवेक कोई मानी नहीं रखता । शूठे विवेककी जजीर पैराम टालकर अपनेको पगु बना डालनेका हिमायती म नहा हूँ । हमेशा दु ल भोगते चलना ही तो जीवन धारणना उद्देश्य नहीं है ?”

आगु गानू इस गम्भीर यथासे आहत होकर वाले, “मगर आप अपनी स्त्रीका दु ग्न तो जरा सोच देखिए । उनका रागी रहना परित्यापका विषय हा सकता है, लेकिन सिफ इसी बजहसे,—बीमार रहना तो काइ कसूर नहीं शिपनाथ गानू ! बिना किसी अपराध—”

“बिना किसी अपराधके में ही भग्न दु ग्न क्यों सहता रहूँ ? ऐसा विश्वास मेरा नहीं है कि एनका दु ल और किसीके सरपर लद देतेसे न्याय होता है ।”

आगु गानूने आगे नहस नहीं की । वे सिफ एक गहरा साँस लेकर चुप हो रहे ।

हरेद्रने पूछा, 'यह ब्याह हुआ क्यों ?'
"गौवहामें ।"

"सौतरु होते हुए लट्ठी दे दी । शायद इसके माँ-बाप नहीं हैं ।
शिवनाथने कहा, "नहीं । हमारे यहाँकी पहरीकी विधवा लट्ठीकी
"रकी नौकरानीकी लट्ठी है ? ग्यूस । रस । जाति क्या है ?"
'ठीक नहीं मालूम । शायद जुलाहिन-उलाहिन होगी ।'

अप्य बहुत देरसे बोला नहीं था, अत्र पृष्ठ उठा, "उसको अत्र-बोध भी नहीं होगा शायद ?"

शिवनाथने कहा, "अत्र बोधने लोभस तो ब्याह किया नहीं, किया है रूपन लिए । और इस चीजका शायद उसमें अभाव नहीं है ।"

इस उक्तिने राद मनोरमाने फिर एक बार उठनेकी कोशिश की, परन्तु इस बार भी उसने पाँव पथरकी तरह भारी हो रहे । फुटल और उत्तेजावश निशाने उसकी तरफ देगा नहीं । देखते तो शायद डर जाते ।

हरेद्रने कहा, "तो, यह शायद सिमिल ब्याह ही हुआ ?"

शिवनाथने गरदन हिलाकर जमान दिया, 'नहा, ब्याह हुआ शैवमतसे ।"

अभिनागने कहा, "यानी धोगा दनेका रास्ता दसों दिशाजासे खुला रक्खा, क्यों न शिवनाथ ?"

शिवनाथने हँसकर कहा, "यह तो बोधनी बात है अविनाश बाबू ! नहीं तो, पिताजी खुद अपनी मौजूदगीमें मेरा जो ब्याह कर गये हैं, उसमें तो कौन धोगेराजोकी गुन्जाइश नहा थी, मगर फिर भी धोखा तो रह ही गया था । उने हूँद निकालनेकी आँस होनी चाहिए ।"

अभिनाशसे कोई उत्तर देते न उन पटा, सिफ उसका चेहरा भार बोधने मुल हो गया ।

आउ बाबू चुपचाप फिर छुनाये बैठे हुए सोचने लग—यह क्या हुआ ! यह क्या हुआ !

दो-तीन मिनट किसीने भी मुँहस कोद बात नहीं निकली, निरानन्द और बलदनी धुन्ती हुद हनासे घर भर गया । बाहरसे एक जोरका टनाका झोंका आये मिना बेचैनी दूर नहा हो सकती, पेसा ही कुठ मनोभाव लिये हुए अभिनाश बाबू अरम्मात् बोल उठ, "जाने दो, जान दो ये सत्र रात । हाँ, तो

गोली, "कैसी कहानी है बापूजी ? खतम हो गई ? किसने लिखी है ?"

मगर बात मुँहसे निकलनेके बाद ही वह चौंक पड़ी, देखा कि कमरेमें पिता अकेले नहा हैं, सामने शिवनाथ बैठा है।

शिवनाथने उठकर नमस्कार किया, और कहा, "कहाँतक घूम आई ?"

मनोरमाने जवाब नहा दिया, सिफ नमस्कारके बदलेमें जरा-सा तिर हिलाकर उसकी तरफ पूरी तरहसे पीठ करके पितासे कहा, "पूरी पढ चुके बापूजी ? कैसी लगी ?"

आशु बाबूने इतना ही कहा, "नहीं।"

बन्याने कहा, "तो मैं ले जाऊँ, पढके अभी तुम्हें वापस दे जाऊँगी।" इतना कहकर वह पत्रिका हाथमें लेकर चल दा। परन्तु अपने सोनेके कमरेमें जाकर वह चुपचाप बैठी रही। कपटे बदलना, हाथ मुँह धोना वगैरह सब काम पडा रहा, पत्रिका एक बार गोलकर देखीतकर नहा कि कौन-सी कहानी है, किसने लिखी है अथवा कैसी लिखी है।

इस तरह नैठी-नैठी वह क्या सोचने लगी, कोई ठिकाना नहा। कुछ देर बाद, नोकरको सामनेसे जाते देखा उसने पृछा, "अरे, बापूजीक कमरेसे यह आदमी चला गया ?"

बन्याने कहा, "जी हाँ।"

"कम गया ?"

"पानी पढनेसे पहले ही।"

मनोरमाने रिडकीना परदा हटाकर देखा, रात ठीक है। फिर क्या गुरू हो गई है, पर ज्यादा नहीं। ऊपरकी ओर देखा, पश्चिमके आकाशमें बादल घनघोर होते आ रहे हैं और इस रातकी सूचना दे रहे हैं कि रातको मूसल्धार पानी पड़ेगा। पत्रिका हाथमें लिये पिताकी नैठकमें जाकर देखा कि वे चुपचाप बैठे हैं। पत्रिका उनकी आरामकुरसीके हाथपर धीरेसे रखकर गोली, "बापूजी, तुम तो जानते हो, यह सब मुझे अच्छा नहा लगता।"

इतना कहकर वह पासकी चौकीपर बैठ गई।

आशु बाबूने मुँह उठाकर कहा, "क्या सब बेटी ?"

मनोरमाने कहा, "तुम ठीक समझते हो कि मैं क्या कह रही हूँ। गुणीना आदर करना मैं भी कम नहीं जानती बापूजी, लेकिन शिवनाथ बाबू जैसे एक

टुट, दुश्चरित्र शराबानो क्या समझकर प्रश्न्य द रहे हो ?”

आगु बाबू मारे शरम और सक्तीचने एनरारगी पन पड गये । कमरेन एक कोनेम टेबिलपर बहुत-सी पुस्तकोंका ढेर पडा था, मनोरमा समयके अभावसे उहें यथास्थान सजाकर अततन रख नहीं सकी थी । उस तरफ आँखना दशारा करके वे सिफ इतना कह सने, ‘वे ह न अभी—”

मनोरमाने भयने साथ उधर मुँह फेरकर देता, शिपनाथ टेबिलके पास खडा हुआ कोइ कितान हँड रहा है । नौरने उसे गलत खबर दी थी । मनोरमा मारे शरमने मानो जमोनम घँसने लगी । शिपनाथने पास आकर राइ होनेपर वह ऊपर मुँह उठाकर देख न सकी । शिपनाथने कहा, “कितान मुझे मिली नहीं आगु बाबू । ली अत चला ।”

आगु बाबूसे और कुठ कहा नहा गया, सिफ इतना ही कहा, “गहर मह जो बरस रहा है ।”

शिपनाथने कहा, “रसने दीजिए । ज्यादा नहा है ।”

इतना कहकर वह जा ही रहा था कि अकस्मात् ठिटकर सडा हो गया । मनोरमानो लक्ष्य करके बोला, “भने देगात् जो मुन लिया हे वह मेरा दुभाग्य भी है और सौभाग्य भी । इसन लिए आप लजित न हों । ऐसी बात अक्सर मुननी पडती है । फिर भी, यह मैं निश्चि जानता हूँ कि रात मेर सम्य-वमें कही जानेपर भो मुझे सुनाकर नहीं कही गदे । इतनी निदय आप हरगिज नहीं है ।”

फिर जरा ठहरकर कहा, “भगर मेरी जोर एन शिपनाथत है । उस दिन अतय गाबू वगैरह प्रोपेसर्सेक गुटने मेरे विरुद्ध इगारा किया था कि मानो म किसी पास मतलबनो लेकर इस घरसे घनिष्ठता पदानेनी कोशिश कर रहा हूँ । पर एक तो सब लोगोंक औचित्यकी धारणा एक-सी नहा होती,—दूसरे बाहरसे कोइ एक घग्ना जैसी दिताइ देती है वह उसका पूण रूप नहा होता । पर रात जो भी हो, आप लोगोम प्रवेश करनेनी कोइ गूढ दुर्भिसधि उस दिन भी मेरे अन्दर नहीं थी और आज मा नहा है ।” फिर सहसा आगु बाबूको लक्ष्य करके कहा, “मेरा गाना मुनना आपनो अच्छा लगता है,—धर मरा ज्यादा दूर नहीं, अगर किसी दिन मुननेकी तगीयत हो जाय, तो वहाँ चरण रज दीजिएगा, मुझे खुशी ही होगी ।” इतना कहकर फिरमे नमस्कार करके शिप

नाथ बाहर चला गया। पिता या कन्या दोनोंमसे काद एक भी रातका जमान न दे सता। आगु बाबूके हृदयमेंसे बहुत-सी बातें एक साथ निकलनेको धक्का करना लगी, किंतु निरुल न सता। बाहर तब वषा जोरनी हो रही थी, यह रात भी उनको मुँहसे न निकली कि शिपनाथ बाबू, जरा ठहरकर जाइएगा।

नौकर चायका सामान लेकर हाजिर हुआ। मनोरमाने पूजा, “तुम्हारी चाय क्या यहाँ बना दूँ बापूजी ?”

आगु बाबूने कहा, “नहीं, मेरे लिए नहीं, शिपनाथ बाबूने जरा चाय पीने को कहा था।”

मनोरमाने नौकरको चाय वापस ले जानेके लिए इशारा किया। मनकी चंचलताके कारण आगु बाबू कमरमें दब होते हुए भी चौकीसे उठकर कमरमें चहलकदमी कर रहे थे, इतनेमें सहसा रिटकीने पास टिठककर सडे हो गये और क्षण भर गौरसे देखकर बोले, “उम पेडके नीचे जा गढा है सो शिपनाथ ही है ? जा नहा सता है, भीग रहा है।” फिर दूसरे ही क्षण बोल उठे, “साथमें कोई स्त्री भी सडी है। गगालियोंके जैसे कपड़े पहने,—वह बेचारी और भी भीगी जा रही है ?”

इसके बाद तुरत उन्होंने नौकरको बुलाया और कहा, “जदू, देख तो आ, गेटके पास पेडके नीचे सडे भोग कौन रहे हं ? जो बाबू अभी अभी यहाँ से गये हैं, वही हं क्या ?—लेकिन, ठहर ठहर—”

रात उनकी नीचमें हो कर गद, अकस्मात् मनमें भयानक सदेह जाग उठा,—वह औरत शिपनाथकी रही स्त्री तो नहा है ?

मनोरमाने कहा, “ठहरे क्यों बापूजी, जाकर शिपनाथ बाबूको बुला ही लव्हे न।” और वह उठके खुली रिटकीने किनारे पिताके पास जा सडी हुई। बोली, “वह चाय पीना चाहता था, ऐसा जानती तो मैं हरगिज उसे जाने नहा देती।”

लडकीकी बातके जवाबमें आगु बाबू धीरेसे बोले, “सो तो ठीक है मणि मगर, मुझे डर है कि वह स्त्री जो साथ सडी है, शायद उसकी वही स्त्री हो। बाहर सडी-गडी रात देख रही थी।”

बात सुनकर मनोरमाको निश्चित मालूम हुआ कि वह वही स्त्री है। एक बार उनके मनमें दुविधा आइ कि इस घरमें उसे किसी गहानेसे बुलाया जा

..रता है या नहीं, पर पिताने मुँहकी तरफ देखकर उसने यह सकोच दूर कर दिया। नौकरसे कहा, “जदू, जाकर उन दोनोंको ही बुला लो। शिर्नाथ गावू अगर पछें कि किसने बुलाया है, तो मेरा नाम बता देना।”

नौकर चला गया। गावू गावूजी जी उत्कण्ठाने भर उठा, बोले, “मणि, यह काम शायद ठीक नहीं हुआ।”

“क्यों गावूजी ?”

गावू गावूने कहा, “शिर्नाथ या चाहे जैसा हो, पर आगिर एक उच्च शिक्षित और शरीर आदमी है,—उसकी गत और है। पर उसने सिलसिलेमें इस औरतसे भी परिचय करना क्या ठीक हो सकता है ? जातिकी ऊँचता-नाचता हम लोग भते ही उतरी न मानते हों, पर भेद तो है ही। नौकर नौकरानियोंके साथ ता बहुत नहा किया जा सकता बगी।”

मनोरमाने कहा, “बहुत करनेकी जरूरत नहीं गावूजी। निपत्तने समय राखने राहगीरको भी कुछ घण्टाने लिए आश्रय दिया जाता है। हम लोग सिर्फ उतना ही करेंगे।”

गावू गावू मनकी दुमिधा नहीं मिटी। यह गार सिर हिलाकर बोले, “बात ठीक इतना ही रहा है। मरी समझमें यह भी तो नहा आ रहा है कि उस स्त्रान आ जानेपर तुम उसने साथ कैसा व्यवहार करोगा।”

मनोरमाने कहा, “भरे ऊपर क्या तुम्हारा विश्वास नहा है गावूजी ?”

गावू गावू जरा खुरी हँसी हँसकर गये, “सा तो है। फिर भी बात जरा ठीकसे समझम नहा आ रही है। तुम जानती हो जो तुम्हारी परावरकी श्रेणाने ह उनने साथ कैसा व्यवहार किया जाता है, और इतना बहुत कम लटकियों ही जाती होंगी। नौकर नौकरानियोंने प्रति व्यवहार भी तुम्हारा निर्दोष है, मगर यह जरा और गत है।—समझी बंदी, शिर्नाथपर म स्नेह करता हूँ, मैं उसन गुणोंका अनुयायी हूँ,—दोसरी सिटप्यनास आज गिना कारण वह बहुत कुछ लाञ्छन सह गया है, अन फिर घरम बुलाकर म उसे जीर गताना नहा चाहता।”

मनोरमाने समझा कि यह उगाने प्रति गिरायत है, उसने कहा, “अच्छा गावूजी, वैसा ही दोगा।”

गावू गावूने हँसकर कहा, “दाना क्या जाखान है बेग ? कारण, मेरे

नाथ बाहर चला गया। पिता या कथा दोनामसं कोद एक भी बातका ज्ञान न दे सता। आगु बाबूके हृदयमेंसे उहुत-सी बात एक साथ निकलनेको धकम धका करने लगी, किंतु निकल न सता। बाहर तब वषा जोरनी हो रही थी यह बात भी उतने मुँहसे न निकली कि पितानाथ बाबू, जरा टहरकर जाइएगा।

नौकर चायका सामान टेकर हाजिर हुआ। मनोरमाने पृठा, “तुम्हारी चाय क्या यहीं रना दूँ बापूजी ?”

आगु बाबूने कहा, “नहा, मेरे लिए नहीं, शिनाथ बाबूने जरा चाय पीने को कहा था।”

मनोरमाने नौकरको चाय वापस ले जानेके लिए इशारा किया। मनकी चंचलताके कारण आगु बाबू कमरम दद हाते हुए भी चौकीसे उठकर कमरेमें चहलकन्मी कर रहे थे, इतनेम सहसा रिडकीने पास टिटककर रसट हो गये और क्षण भर गौरसे देखकर बोले, “उस पेडक नीचे जो लडा है सो शिनाथ ही है न ? जा नहा सका है, भीग रहा है।” फिर दूसरे ही क्षण बोल उठे, “साथमें कोइ स्त्री भी लडी है। रगालियोंके जैसे कपड़े पदने,—वह बचारी और भी भीगी जा रही है ?”

इसके बाद धुरत उन्होंने नौकरको बुलाया और कहा, “जदू, देख तो जा, गेटने पास पेडक नीचे लटे भोग कौन रहे ह ? जो बाबू अभी अभी यहाँ से गये हैं, वही ह क्या ?—लेकिन, टहर टहर—”

बात उनकी धीचम ही रुक गद, अकस्मात् मनम भयानक सदेह जाग उठा,—वह जोरत शिनाथनी वही स्त्री तो नहा है ?

मनोरमाने कहा, “ठहरे क्यों बापूजी, जाकर शिनाथ बाबूको बुला ही ल्यावे न।” और वह उठके खुली रिडकीक रिनारे पिताने पास जा लडी हुइ। बोली, “वह चाय पीना चाहता था, ऐसा जानती तो म हरगिज उसे जाने नहा देती।”

लटकीकी बालने ज्ञानरम आगु बाबू धरिसे बोले, “सो तो ठीक है मणि मगर, मुझे डर है कि वह स्त्री जो साथ लडी है, गायद उसनी वही स्त्री हो। बाहर लडी-खडी गेट देख रही थी।”

बात मुनकर मनोरमाको निश्चित मालूम हुआ कि वह वही स्त्री है। एक बार उनने मनमें दुविधा जाइ कि इस घरमे उसे किसी रदानेसे बुलाया जा

सम्पत्ता है या नहीं, पर पिताके मुँहकी तरफ देखकर उसने वह सफ़ोच दूर कर दिया। नौकरसे कहा, “जदू, जाकर उन दीनारों ही बुला लोओ। शिनाथ बाबू अगर पृच्छे कि किसने बुलाया है, तो मेरा नाम बता देना।”

नौकर चला गया। आगु बाबूका जी उत्कण्ठासे भर उठा, बोले, “भगि, यह काम शायद ठीक नहीं हुआ।”

“क्या बापूजी ?”

आगु बाबूने कहा, “शिनाथ या चाहे जैसा हो, पर आपरि एक उच्च शिक्षित और शरीर आदमी है,—उसकी बात और है। पर उसने सिलसिलेमें इस औरतसे मा परिचय करना क्या ठीक हो सम्पत्ता है ? जातिका ऊँचता नो बता हम लोग भले ही उतनी न मानते हों, पर भेद तो हे ही। नौकर-नौकरानियोंके साथ तो बहुत नहा किया जा सकता बटी।”

मनोरमाने कहा, “बहुत करनेको जरूरत नहीं बापूजी। विपत्तिके समय रास्तेके राहगीरको भी कुछ घण्टाके लिए आश्रय दिया जाता है। हम लोग सिफ उतना ही करेंगे।”

आगु बाबू मनकी दुविधा नहीं मिटी। कद मार सिर हिलाकर बोले, “बात ठीक इतनी ही नहीं है। भरी समझम यह भी तो नहा आ रहा है कि उस स्त्रीने आ जानेपर तुम उसने साथ कैसा व्यवहार करोगी।”

मनोरमाने कहा, “मेरे ऊपर क्या तुम्हारा विश्वास नहीं है बापूजी ?”

आगु बाबू जरा खनी हँसी हँसकर बोले, “सो तो है। फिर भी बात जरा ठीकसे समझम नहा आ रही है। तुम जानती हो जो तुम्हारी मरामरको श्रेणीने ह उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाता है, और इतना बहुत कम लडकियाँ हा जानती होंगी। नौकर नौकरानियाँ प्रति व्यवहार भी तुम्हारा निर्दोष है, मगर यह जरा और बात है।—समझी बगी, शिनाथपर मे स्नेह करता हूँ, मैं उसने गुणोंका अनुरागी हूँ,—देवकी निडम्बनासे आज बिना कारण वह बहुत कुछ लाञ्छन सह गया है, अब फिर घरमें बुलाकर मैं उसे और सताना नहा चाहता।”

मनोरमाने समझा कि यह उसीने प्रति शिनाथत है, उसने कहा, “अच्छ बापूजी, वैसा ही होगा।”

आगु बाबूने हँसकर कहा, “झोना क्या आसान है बेगी ? कारण, मेर

नाथ बाहर चला गया। पिता या क्या दोनोंभने कोद एक भी यातका उगान
 ७ दे सता। आगु बाबूके हृदयमसे उहुत-सी गतें एक साथ निकलनेको धक्रम
 धया करने लगी, किंतु निरुल न सता। राहर तन क्या जोरनी हो रही थी,
 यह गत भी उतने मुँहसे न निकली कि पिपनाथ गबू, जरा ठहरकर जादएगा।

नौकर चायका सामान लेकर हाजिर हुआ। मनोरमाने पूजा, “तुम्हारी
 चाय क्या यहा बना दूँ बापूजी ?”

आगु बाबूने कहा, “नहा, मेरे लिए नहीं, शिवनाथ बाबूने जरा चाय पीने
 को कहा था।”

मनोरमाने नौकरको चाय वापस ले जानेके लिए इशारा किया। मननी
 चचलताके कारण आगु बाबू कमरमें दर्द होते हुए भी चौकीसे उठकर कमरेमें
 चहलकदमी कर रहे थे, इतनेम राहया सिडकीने पास ठिठककर सड़े हो गये
 और क्षण भर गौरसे देखकर बोले, “उस पेडके नीचे जो सडा है सो शिवनाथ
 ही है ७ ? जा नहा सका है, भीग रहा है।” फिर दूसरे ही क्षण गोल उठे,
 “साथमें कोइ स्त्री भी सडी है। बगालियोंन जैसे कपड़े पहने,—यह बेचारी और
 भी भीगी जा रही है ?”

इसके बाद तुरत उन्होंने नौकरको बुलाया और कहा, “जदू, देख तो
 आ, गेटने पास पेडके नीचे सड़े भोग कौन रहे हँ ? जो बाबू अभी अभी यहाँ
 से गये हैं, वही हँ क्या ?—लेकिन, ठहर ठहर—”

गत उनकी बीचमें हो रक गर्द, अकस्मात् मनमें भयानक सदेह जाग
 उठा,—यह औरत शिवनाथनी वही स्त्री तो नहा है ?

मनोरमाने कहा, “ठहरे क्यों बापूजी, जाकर शिवनाथ बाबूका बुला ही
 लावे न।” और यह उठने खुली सिडकीने किनारे पिताके पास जा खडी हुद।
 बोली, “यह चाय पीना चाहता था, ऐसा जानती तो मैं हरगिज उसे जाने
 नहा देती।”

लटकीकी बातन जराबम आगु बाबू धरेसे बोले, “सो तो ठीक है मणि
 भगर, मुझे डर है कि यह स्त्री जो साथ सडी है, शायद उसनी वही स्त्री हो।
 बाहर सडी-गनी गत देख रही थी।”

गत मुनकर मनोरमाको निश्चित मालूम हुआ कि वह वही स्त्री है। एक
 बार उनके मनमें दुःखिधा आद कि इस घरम उसे किसी गहानेसे बुलाया जा

सक्ता है या नहीं, पर पिताके मुँहकी तरफ देखकर उसने वह सकोच दूर कर दिया। नौकरसे कहा, “जदू, जाकर उन लोगोंको ही बुला लो। शिर्नाथ बाबू अगर पूछें कि किसने बुलाया है, तो मेरा नाम बता देना।”

नौकर चला गया। आशु बाबूका जी उत्कण्ठासे भर उठा, बोले, “भागि, यह काम शायद ठाढ़ नहीं हुआ।”

“क्या बापूजी ?”

आशु बाबूने कहा, “शिवनाथ या चाहे जैसा हो, पर आगिर एक उच्च शिक्षित और शरीर आदमी है,—उसभी बात और है। पर उमने सिलसिलेमें इस औरतसे भी परिचय करना क्या ठीक हो सक्ता है ? जातिकी ऊँचता नीचता हम लोग भूँ ही उतनी न मानते हैं, पर भेद तो है ही। नौकर नौकरानियामें साथ ता न तुल्य नहा किया जा सकता वेगी।”

मनोरमाने कहा, “बधुत्व करनेकी जरूरत नहीं बापूजी। विपत्तिके समय रास्तेके राहगीरको भी कुछ घण्टाके लिए आश्रय दिया जाता है। हम लोग सिप उतना ही करेंगे।”

आशु बाबू मनसरी दुविधा नहीं मिती। वह पार सिर हिलाकर बोले, “बात ठीक इतनी ही नहीं है। मेरी समझमें यह भी तो नहा आ रहा है कि उस खीर आ जानेपर तुम उससे साथ क्या व्यवहार करोगी।”

मनोरमाने कहा, “मेरे ऊपर क्या तुम्हारा विश्वास नहीं है बापूजी ?”

आशु बाबू जरा सूनी हँसी हँसकर बोले, “सा तो है। फिर भी बात जरा ठाकसे समझमें नहा आ रही है। तुम जानती हो जो तुम्हारी परावरकी भेणीने हैं उनसे साथ क्या व्यवहार किया जाता है, और इतना बहुत कम लटकियों ही जानती होंगी। नौकर नौकरानियोंके प्रति व्यवहार भी तुम्हारा निर्दोष है, मगर यह जरा और बात है।—समझी बेटी, शिर्नाथपर मैं स्नेह करता हूँ, म उससे गुणोंका अनुरागी हूँ,—दिवनी विडम्बनासे आज बिना कारण यह बहुत कुछ लट्ठन सह गया है, अब फिर घरमें बुलाकर म उमने और सताना नहा चाहता।”

मनोरमाने समझा कि यह उसीके प्रति शिर्नाथ है, उमने कहा, “अच्छा बापूजी, वैसा ही होगा।”

आशु बाबूने हँसकर कहा, “दोना क्या आसान है बेटी ? कारण, मेरे

मनपर भी इसकी खूब स्पष्ट धारणा नहीं रही है, कि उसका साथ क्या व्यवहार होना उचित है। सिर्फ यही खयाल आ रहा है कि शिखनाथको अब हमारे घर और क्या न मिले।”

मनोरमा कुछ कहना ही चाहती थी कि जचानक चौंकर बोली, “हाँ, लो, ये आ ही तो गये।”

आगु बाबू यस्त-से होकर बाहर आ गये, बोले, “खूब शिवनाथ बाबू,— भीगकर तो मिलकुल—”

शिवनाथने कहा, “हाँ, जचानक पानी जोरका पड़ने लगा,—सो मुझसे भी बहुत ज्यादा ये भीगी हैं।” कहते हुए साथी स्त्रीको दिग्ग्रा दिया। मगर वह कौन है, यह परिचय न तो उन्होंने ही साफ दिया और न इन्हीं लोगोंने साफ पूछा।

वस्तुतः उस स्त्रीका देहपर खूना कहने लायक कहीं भी कुछ नहीं बचा था। सपने सप कपड़े भीगकर भारी हो गये हैं, माथेके घने काले गालोंसे पानीकी धारा गालपरसे गढ़ रही है,—पिता और पुत्री इस नवागता रमणीके चेहरेकी तरफ देखकर असीम विस्मयसे निराव हो रहे। आगु बाबू खुद कपि नहीं है, किन्तु उह देखते ही लगा कि ऐसे ही नारी रूपकी शायद प्राचीन कालके कपि “निशिर घौत पद्म”के साथ तुलना कर गये हैं, और जगतमें इतनी अधिक सच्ची तुलना भी शायद और नहीं है। उस दिन जब आगुके नाना तरहके प्रश्नोंके उत्तरमें शिखनाथने अस्थिर होकर यह जवाब दिया था कि उन्होंने शिखिता होनेकी बजहसे नहा, रूपके लिए ब्याह किया है, तब किसीने नहा सोचा था कि यह बात कितनी ज्यादा सच है। पर अब स्तब्ध होकर आगु बाबू शिखनाथ की उस बातको बार-बार याद करने लगे। उह सचमुच ही ऐसा जान पड़ा कि इनकी जीवन यात्राकी प्रणाली शिष्ट और नीति-सम्मत भन्ने ही न हो, पति पत्नी सम्बन्धकी पवित्रता भी इनके बीच भले ही न हो, मगर इस नश्वर जगतमें नर नागीके नश्वर शरीरोंका ही आश्रय लेकर सृष्टिका यह कैसा अश्वर सत्य प्रस्तुतित हुआ है! और परम आश्चर्यकी बात है कि जिस देशमें चुप चुन लेनेका कोन विशिष्ट भाग नहीं, जिस देशमें अपनी जॉरोंको बंद करके औरोंकी आँखा पर ही निभर रहना पड़ता है, ऐसे जघकारमें इन दोनोंको परस्पर एक-दूसरकी खबर लग कैसे गइ? परंतु इस मोहाच्छन्न भावको काट फेंकनेमें उन्हें एक क्षणसे

ज्यादा समय नहीं लगा। व्यस्त होकर गये, “शियनाथ गानू, भीगे कप” ता गल लीजिए। जदू, बाबूजी हमारे साथ रुमम ले जा।”

बेहराबे साथ शियनाथ चला गया। मुक्किल आद अय मनोरमाकी। युवतीसी उमर लगभग मनोरमाके परापर होगी, और भीगे कपडे बदल टालनेकी उमे भी सख्त जरूरत थी। परन्तु उसने पद और जमका जो परिचय उस दिन शियनाथके मुँहसे सुना है, उससे मनोरमाकी कुछ समझम न आया कि वह क्या कहकर इसकी सम्बोधन करे। रूप इसमें चाहे कितना ही क्यों न हो, शिजा सस्कारहीन नाच जातीय इस दासी-कन्याको ‘आओ’ कहकर बुलानेम भी पिताके सामने उसे सजीव मालूम हुआ, और ‘आए’ कहकर सम्मानने साथ अपने कमरमें ले जानेमें तो उमे और भी पृणा मालूम होने लगी। किन्तु सहसा इस समस्याकी भीमाका कर दी स्वय उस युवतीने। मनोरमाकी तर्प देखकर उसने कहा, “मेरा भी सत्र जुठ भीग गया है, मेरे लिए भी एक धोती मँगा देनेी पड़ेगी।”

“देती हूँ।” कहकर मनोरमा उसे भीतर ले गइ, और मन्त्राको बुलाने गले कि इन्हें नहान घर ले जाकर जो जुठ चाहिए सो सत्र दे दे।”

उस स्त्रीने मनोरमाको उपरसे नीचेतक बार-बार देखकर कहा, “मुझे एक गाय धोराकी धुली धोती देनेके लिए कह दीजिए।”

मनोरमाने कहा, “सो ही देगी।”

स्त्रीने महरिसे पूछा, “उस घरमें सातुन है न?”

महरिने कहा, ‘ है।’

“लेकिन म किशोका लगाया हुआ सातुन कहा लगाती।”

इस अपरिचित स्त्रीका मन्तव्य सुनकर पट्ट ता महरिनी आश्रय हुआ, फिर वह बोनी, “वहाँ नये सातुनोंका बॉक्स पडा हुआ है। लेकिन, यह जीजीगादना अपना नहान घर है। उनका सातुन लगानेम क्या पुराइ है?”

स्त्रीने आठ मिक्कोटकर कहा, “नहीं, यह मुझसे नहीं होता, मुझे नडा नफरत मादम होती है। इसका सिवा हर एकका सातुन लगानेसे बीमारी हो जाती है।”

मनोरमाका चेहरा क्षोषसे सुग हो उगा, पर एक क्षणके लिए ही। दूसरे हा क्षण निमः हँसीकी छगसे उसकी दोनों आँखें चमकने लगीं। उसका मनपरसे मानो एक मेर दूर हो गया। हँसकर पूछा, “यह बात तुमने सीपी किससे?”

स्त्री ने कहा, "सीलूंगी किसने ? म खुद ही सब जानता हूँ ।"

मनोरमाने कहा, "सब ? ता जरा हमारी इस मन्दीरों में कुछ अच्छी बात सिखा देता । यह सिल्लुल ही मूरग है ।" कहते-कहते उसे फिर हँसा आ गद ।

महरी भी हँस ली, बोली, "बला पण्डितानीजी, गाधुन आधुन लगाकर पहले तैयार हो लो, फिर तुम्हारे पास बैठकर गुरु-नी अच्छा अच्छी बातें सीख देंगी ।—जी जीराद, धीन ह ये ?"

मनोरमा हँसी दबानेने लिए अगर दूगरी तरफ मुँह न पेर लेती तो सम्भव है कि वह इस अपरिचितता अविज्ञिता स्त्रीन मुँहपर कीजुक और प्रच्छन्न उपहासना मान साट जाती ।

४

मनोरमा आगु गायत्री सिर्फ लडकी ही हो, सो बात नहा यह उनरी साथ, सगा, भत्री, मित्र, एक साथ सब कुछ थी । इसीसे, पितापे सम्मानरसाध, भारतीय समाजम जो सकोचमहित दूरत्व सतानेने लिए अत्यय पालनीय माना जाता है, अधिनाग मौरोंपर उसरी रखा न हा पाती थी । गीत-बीचम ऐसी आलोचनाएँ दानाम होने लगती थीं जा बहुत-से पिताओंको गटकरी पर इनके कानाम नहीं गटकती थी । लडकीने आगु बागु इता प्यार करते ह नि उसरी सीमा नहीं । ये स्त्री नियोगन याद फिरसे व्याह करनकी मामें कल्पना भी नहीं कर सने, इसका भी एकमात्र कारण यह लडकी ही है । मगर मित्र मण्डलीम बात उठनेपर गेदक साथ व कहते है कि, "एक तो सादे तीन मनका यह भारी शरीर और सो भी वात-सगधे कारण पगु । अब और क्या इसके लिए एक लडकीना सननाश निया जाय भाद ! जो दु ग सपर लेनर मणिनी माँ स्वग सिधार गद है, सा मुझे मात्रम है । इस आगुने लिए घरी काफी है ।"

मनोरमा यह बात सुनती तो घोर आपत्ति करती, कहती, "गापूजी, तुम्हारी यह बात मुझे नहीं सुहाती । यहाँ ताजमहल देनकर कितने आश्मियाको न जाने क्या क्या याद आता है, पर मुझे याद आती है तुम्हारी और माँकी । मरी माँ स्वगम क्या दु ल सहनर गद है !"

आगु गायू कहते, "तू तो तब कुल दख-बारह सालनी नथी थी, तू तो सब

जानती है। एकके गलेम दूसरेकी माला गिरनेका जो किस्ता है सो सिफ म ही जानता हूँ रिटिया।” कहते-कहते उनकी आँगें डगडगा आती।

जागरेम आकर वे त्रिना किन्ही संकोचने सपने साथ दिल मिल गये ह, पर सरसे उदरर उनकी हार्दिक मैत्री हुद है अविनाश रावूने साथ। अविनाश सहिष्णु और सयत प्रकृतिका आदमी है। उसने चित्तम ऐसी एक स्वाभाविक शान्ति और प्रसन्नता थी कि वह सहज ही सपनी भ्रदा आकर्षित कर ेता। मगर आशु रावू मुग्ध हुए थ कुठ और ही कारणसे। उनकी तरह उसने भी दूसरी बार ब्याह नहीं किया था और पनी प्रेमने निदशनने लिए घरम सक्त्र अपनी न्वाके चित्र लगा रगे थे। आशु रावू उससे कहते, “अविनाश रावू, लोग हमारी प्रशंसा करते ह। सोचते है हम लोगोंका कैसा आत्म समय है, मानो हम लोगोंने कोद बहुत बडा कठिन काम कर डाला हा। पर, मैं सोचता हूँ कि यह प्रश्न उठता हा कैसे है? जो लोग दूसरी बार ब्याह करते है, वे कर सकते है इसीलिए करते ह। उह म दोष भी नहीं देता और न लोग ही समझता हूँ। मैं सोचता हूँ कि मैं कर नहां सकता। सिफ इतना हा जानता हूँ कि मणिका मोंनी जगह और त्रिशाओ स्त्रीक रूपम ग्रहण करना मेरे लिए सिफ कठिन ही नहा, असम्भव भी है। पर इसकी उह क्या रतर? बात ऐसी ही है न अविनाश रावू? अपने मनसे पृठ देनिष् अरा, टीक बात कहता हूँ या नहीं।”

अविनाश हँस देता, कहता, “लेकिन म तो चुग नहीं सका हूँ आशु रावू। मास्टरी करके गुजर करता हूँ, पत्त भी नहा मिलता और उमर भी हो चुकी है,—लडकी देगा कान?”

आशु रावू खुग होकर रहते, “टीक यही बात है अविनाश रावू, यही बात है। म भी सपनी कहता त्रिगा हूँ कि देहका वजन माद लीन मन है, बात का पगु हूँ, कन कहाँ चान्ते फिरने हाट फेठ हो जाय कोद टिकाना नहीं, लडकी देगा कान? लेकिन जानता हूँ कि लडकी लेनेमालाकी कमी नहीं है, सिफ लेनेमाला मनुष्य ही मर गया है! ह ह ह ह,—अविनाश मो मर चुगा जोर आशु मौ,—ह ह ह ह !—” कहकर टहाका मारकर ऐमे जोरसे हँसते कि परकी निडरियों और उनने शीशेठक बाँप उठते।

रोज शामको आशु रावू अपनी कन्यके साथ घूमने निकलते, पर अविनाश

के मनाने सामने आकर उतर पड़ते, कहते, “अर शामके वक्त ठंडी हवा लगना मेरे लिए ठीक नहा बेठी, गल्कि तुम लौटते वक्त मुझे अपने साथ ले जाना !”

मनोरमा हँसकर कहती, “ठंडी कहाँ है बापूजी, आज तो काफी गरमी है।”

बापूजी कहते, “सो भी तो अच्छा नहीं बटी, बूढ़ोंके स्वास्थ्यके लिए गरम हवा भी तो हानिकारक है। तुम जरा घूम फिर आओ, हम दोनों बूढ़े मिलकर तमतक दो चार गत ही करें।”

मनोरमा हँसकर कहती, “गत्तें तुम लोग दो चार छोड़ दो चार सौ करते रहो, मुझे उसमें कोई एतराज नहीं, लेकिन तुम दोनोंमेंसे कोई अभी बूटा नहीं हुआ, सो म याद दिलाये जाती हूँ।” इतना कहकर वह चली जाती।

गतनी वजहसे जिस दिन आगु बापूसे किसी भी तरह आया नहीं जाता, उस दिन अप्रिनाशको जाना पड़ता। गाड़ी भेजकर, आदमी भेजकर, चायका निमंत्रण देकर,—वैसे भी बनता आगु बापूसा अनियमित अनुरोध उनक पास पहुँचता और उसे वे किसी भी तरह टाल नहीं सकते। दोनोंके इकट्ठे होनेपर और और गत्तोंके साथ निमनाथका भी अक्सर जिन ठिंड जाता। इसकी वेदना आगु बापूने मनसे दूर नहा होती थी कि उस दिन उसे निमंत्रण देकर घर बुलाया आर सयने मिलकर अपमानित करने उसे रिदा कर दिया। शिपनाथ विद्वान् आदमी है, गुणी है, उसका सारा शरीर योगन, स्वास्थ्य आर सौ दयने भरा हुआ है,—यह सब क्या कुछ भी नहा ? तो फिर किस घास्ते इतनी सम्पदा भगवान्ने उसे दोनों हाथोंसे उठाकर द दी है ? क्या इसीलिए कि मनुष्य समाजसे उसे उठाकर दूर फेंक दिया जाय ? शराही हो गया है, तो इससे क्या ? शराव पीकर मतवाले तो गहुरे हो जाया करते हैं। यौवनमें यह कसूर तो उनसे भी बन पडा है, इसके लिए किसने उह त्याग दिया है ?

आत्मीकी गुटियों, आदमीके अपराधोंपर गौर करनेकी अपेसा उसे धमा करनेकी तरफ उनके हृदयका झुकाव बहुत ज्यादा होता जाता था, और इसीलिए वे अप्रिनाशके साथ अक्सर इस विषयकी गहन चिन्ता करते थे। प्रकट रूपसे शिपनाथको निमंत्रण देनेका अर उहँ साहस नहीं होता, निन्दु मन उनका हमेशा उसकी सगतने लिए तडपा करता। अप्रिनाशकी सिर्फ एक गत का उसे कोई जमान दते नहा बनता, कि ‘वह जो एक रीमार खीने छोटकर

शेष प्रश्न

दूसरी स्त्री घरम ले आया है, सो यह क्या है ?
 आगु बाबू लज्जित होकर कहते, “यही तो सोचता हूँ कि शिम्पनाथ जैसा
 आदमी यह काम कर कैसे सता ? लेकिन क्या जानें अग्निनाथ बाबू, शायद,
 भीतर कोद रहस्य हो,—हो सता है,—और—सभी गतों क्या सपके आगे
 कही जा सता है, या कहना उचित है ?”
 अग्निनाथ कहता, “मगर उसनी स्त्री निर्दोष थी, यह तो उसने अपनी ही
 जमानसे कबूल किया था ?”

आगु बाबू परास्त होकर गरलन हिलाने कहते, “सो तो किया ही था ।”
 अग्निनाथने कहा, “और यह जो मरे हुए मित्रनी पिधनाको धोगरा देना,
 सारे रोजगारको अपना बतकर उसपर दगल कर लेना,—यह क्या था ?”
 आशु बाबू मारे शरमसे जमीनमें गट जाते, जैसे खुद उहीने यह दुःमाय
 कर डाला हो । फिर अपराधीकी तरह धारसे कहते, “लेकिन बात यह है न
 अग्निनाथ बाबू, गायद भीतर कोद रहस्य हो,—अच्छा फिर अदालतने क्या
 समझकर उहें टिनी दे दी ? उसने क्या कुछ भी बिचार नहा किया होगा ?”
 अग्निनाथ कहता, “अग्नेजी अदालतनी गत छोड दीजिए आगु बाबू । आप
 खुद भी जमादार ह, वहाँ सपलने आगे दुगल बन रिजयी हो सता है, गता
 सकते हैं मुझे ?”

आगु बाबू कहते, “नहीं नहां, यह टीन गत नहीं । यह बात टीन नहीं ।
 मगर हों, यह भी नहा यह सता कि आपनी गत श्रु है । लेकिन गत यह
 है न—”

अचानक मनोरमा आ जाता तो हँसकर कहती, “बात जो है सो सभी जानते
 हैं । गपूजी, तुम खुद भी मन ही मन जानते हो कि अग्निनाथ बाबू मिथ्या तन
 नहीं करते ।”

इससे बाद, आगु बाबूने मुँहसे फिर कोद गत नहीं निरुलती ।
 शिम्पनाथके रिपयमें मनोरमानी हो निमुगता मानो सपसे ज्यादा थी । मुँहसे
 यह ज्यादा कुछ नहीं कहती थी, पर पिता सपसे ज्यादा डरने थे उसीसे ।
 जिस दिन शामको शिम्पनाथ और ससनी स्त्री पानीमें भीगकर इस घरमें
 आश्रय लेनेको बाध्य हुए थे उससे बाद दो दिनतक आगु बाबू बातने प्रसोपसे
 एकदम सतपर पडे रहे । न तो वे खुद ही कहीं जा सने और न अग्निनाथ ही

कामजी झड़की वजहसे उनके पास आ सने । परन्तु उनके जाते ही जागु बाबू वातन असह्य दर्दको भूलकर जारामपुरसीपर सीधे हाकर बैठ गये जोर बोले, “अजी अविनाश बाबू, शिवनाथजी स्त्रीक साथ तो हम लोगोका परिचय हो गया । लडकी है त्रिलकुल लक्ष्मीकी मूर्ति । ऐसा रूप कभी नहा दसा भाद । मादूम हुआ, जैसे उन दोनाको भगवान्ने किसी उद्देश्यसे ही मिलाया है ।”

“कहते क्या हैं ।”

“हाँ, हाँ । दोनोंको अगल-बगल खडा कर दो, तो देखते ही रह जाना पडता है । आप आँगे हटा ही नहा सकत, इतना म कहे देता हँ अविनाश बाबू ।”

अविनाशने हँसते हुए कहा, “हो सकता है । लेकिन आप प्रशसा करने लगते हैं तो उसकी सीमा नही रखते ।”

आगु बाबू क्षण भर उनसे मुँहकी ओर देखते रहे, फिर बोले, “यह दोष मुझमें है । सीमासे बाहर जा सनता होता तो इस मामलेमें भा जरूर जाता, मगर शक्ति नहा है । इन दोनोंक बारेमें कितना ही क्यों न कहा जाय, सग सीमाकी राई तरफ ही रहेगा, दाहिनी तरफ नहा पहुँचनेका ।”

अविनाशने इसपर पूरा विश्वास कर लिया हो सो बात नही, परन्तु पहलेका परिहासना ढग भी अब न रहा । बोले, “ता फिर उस दिन शिवनाथने अकारण दम्भ नहा किया, क्या ? मगर परिचय हुआ किस तरह ?”

आगु बाबूने कहा, त्रिलकुल देवी घटना हुद । शिवनाथको काम था मुझसे । स्त्री साथ थी, पर मजानके अदर लानेकी हिम्मत नही हुद, बाहर ही एक पेडके नीचे उसे खडा कर आया । लेकिन देव टेढा हो तो आदमीकी चतुराद काम नहा देती, सम्मन रात भी सम्मन हो जाती है । हुआ वही ।” यह कहकर उहोने उस दिनकी आँधी मेहकी सारीकी सारी घटना विस्तारके साथ कह सुनाद, फिर कहा, “हमारी मणि लेकिन खुश नहा हो सकी । उसकी कम उम्र ही थी, शायद कुठ पडी भी हो —मगर मणिका कहना है कि उस दिन शिवनाथ बाबूने सच्ची रात ही कही थी,—लडकी वास्तवमें अशिक्षित, किसी दासीकी लडकी है । कमसे कम हमारे शिष्ट समाजकी तो नही है, इसमें कोई सदेह नहा ।”

अविनाशको हुआ, “सो कैसे जाना ?”

आगु रावूने कहा, 'उसने शायद भीगा धोतारे बदले साफ धुली धोतो माँगी थी, और कहा था कि मैं किसीका इस्तेमाल किया हुआ सातुन नहा लगा सकती,—मुझे नफरत मादूम होता है।'

अभिनाश समझ नहीं सके कि इसमें शिष्ट-समाजके नियमोंके बाहरकी चीजें सौ बात हैं।

आगु रावूने भी ठीक यही बात कही, "इसमें असगत चीजें-सौ बातें हुई, मैं अरतन नहा समझ सका। मगर मणि कही है, बातमें नहा गापूजी, कहनेके दगमें एक घंटी बात थी जो बिना मुझे नहीं जानी जा सकती। इसमें सिवा, मित्रोंकी आँखों और कानोंको धोखा नहीं दिया जा सकता। हमारे वहाँकी नौकरानौकर भी समझ गई कि यह उसीकी जातरी है, उसने मालिनोंकी मोद नहीं। गिल्लुल नीचेसे अचानक एरदम ऊपर चला देनेसे जैसा होता है, इसने भी ठीक वैसा हुआ है।"

अभिनाशने कुछ देर चुप रहकर कहा, 'दुःखी बात है। मगर आपने साथ परिचय हुआ किस तरह? आपसे बोली थी क्या?'

आगु रावूने कहा, "जबूर। भीगी धोती बदलकर सीधी मेरे कमरेमें जाकर बैठ गई। शिष्टकी पला थी ही नहीं,—मेरी तनीयत कैसी है, क्या ग्याता हूँ, क्या इन्जेन चल रहा है, जगह यह जच्छी लग रहा है या नहीं,—पूछनेका क्या ही सहज स्वच्छन्द भाव था। बल्कि अभिनाश तो कुछ सकुचित भी हो रहे, मगर उसमें जटिलता चिह्नतर दगनेमें नहीं जाया। न बातचीतमें, न आचरणमें।"

अभिनाशने पूछा, "मादूम होता है, मनोरमा तब न होगी?"

"नहीं। उसे न जाने कैसी अश्रद्धा-सा हाँ गई है, कहा नहीं जाता। उन लोगोंके चले जानेपर मने कहा, 'मणि, उन्हें पिदा करने भी एक बार बाहर नहा आइए?' मणिने कहा, 'और जो कुछ कहो कर सकती हूँ गापूजी, लेकिन घरने नौकर-बानर या दास-दासियोंको 'पैटिए' कहकर अम्यथना नहा कर सकती और फिर 'जाइएगा' कहकर बिना भी नहीं दे सकती। अपने घर जानेपर भी नहीं।' इसने राद कहीके और क्या रह जाता है।"

कहनेकी ओर क्या रह जाता है, सा अभिनाशका मुद भाँड़े न सिगा, गिण मूदु-कठसे इतना कहा, "बताना मुश्किल है आगु रावू। पर मादूम

होता है कि मनोरमाने ठीक ही कहा था। इस तरहकी आस्तासे हम पैसा घरायी भ्रियाकी जान-पहचान न होना ही अच्छा है।”

आगु बाबू चुप रहे।

अग्निनाथने लगे, “शिमनाथने समाचका कारण भी शायद यही है उसे तो सभी बात मालूम है,—उसे दर था कि कहीं कोद भरी, न निकाल लायक बात उसकी स्त्रीन मुँहसे न निकल जाय।”

आगु बाबू हँस दिये, गले, “हाँ, हा भी समता है।”

अग्निनाथन कहा, “जरूर यही बात है।”

आगु बाबूने प्रतिभार नहीं किया, सिर्फ कहा, “लटनी लेकिन लामोई सी प्रतिमा थी।” कहकर उन्हाने एक डानी-सी साँस डोडी और वे आराम कुरसीने पीठ लगाकर लेट रहे।

कुछ देर चुप रहकर अग्निनाथन कहा, “मेरी बातसे क्या आपनं क्षोभ हुआ?”

आगु बाबू उठने बैठे नहा, उसी तरह अधलेगी हालतमें पड़ हुए धीरे धीरे बोले, “क्षोभ नहीं अग्निनाथ बाबू, पर न जाने कैसी एक व्यथा सी मालूम हुई इसीसे तो आपसे मिलनेके लिए इस तरह पटपटा रहा था। बात भी कैसी भीठी थी उसकी,—सिर्फ रूप ही नहा।”

अग्निनाथने हँसते हुए उत्तर दिया, “मगर मैंने तो उसका रूप भी नहा देखा और बातें भी नहीं सुनीं, आगु बाबू।”

आगु बाबूने कहा, “पर वैसा मौजा अगर कभी हाथ आयगा तो आप समझ जायेंगे कि उन्हें त्याग देनेम कितना अन्याय हुआ है। ओर कोई भले ही न समझ, पर म निश्चित जानता हूँ कि आप जरूर समझगे। जाते वक्त उस लडकाने मुझसे कहा, “अगर आप मेरे पतिको गाना सुनना पसन्द करते है, तब क्यों उह कभी-कभी उलवा नहीं आते? इस बातका ग्याल ही आप न करें कि मैं धीन हूँ, म ता आप लोगाने चीच आनेका दावा करती नहीं।”

अग्निनाथको कुछ आश्चर्य हुआ, गले, “यह तो मिलकुल अशिफिता जैसा बात नहीं आगु बाबू। सुननेसे मालूम हाता है, इसके निजके सम्बन्धमें हम चाहे कैसी भी व्यवस्था धर पर पतिको वह शिष्ट-समाजम चला देना चाहती है।”

आगु बाबूने कहा, “घास्तवमें उसकी बात सुनकर मालूम हुआ कि उस

सब मालूम है। हम लोगाने जो उस दिन उतने पतिनो अपमानित करने प्रिया किया था, इस बातका शिपनायने उससे छिपाया नहीं है। शिपनाय ज्यादा छिपा छिपुकर चलनेवाला शरत्क भी नहीं है।”

अग्निनाथने मन्त्र करते हुए कहा, “स्वभावसे वह ऐसा हा है। लेकिन एक चीज उसने जरूर छिपाई है। यह लटकी चाहे जो हो, इससे उसने वास्तव में ब्याह नहीं किया है।”

आगु गानूने कहा, “शिपनायने तो कहा है वह उसकी स्त्री है, और उसने भी ऐसा ही परिचय दिया कि वह उसका पति है।”

अग्निनाथने कहा, “परिचय दिया करे। मगर वह सच नहीं है। उसने अन्दर जो गम्भीर रहस्य है, अथवा गानू उसका भेद किसी न किसी दिन खोले बिना न रहेंगे।”

आगु गानूने कहा, “इसमें तो मुझे भी शक नहीं। कारण, अश्वय गानू शक्तिशाली पुरुष हैं। मगर इनका परस्परकी स्वीकारोक्तिमें सत्य नहीं, सत्य केवल छिपे हुए रहस्यको दुनियाके सामने उगाड़ देनेमें ही है? अग्निनाथ गानू, आप तो अश्वय नहीं ह। आपसे तो मैं एसी प्रत्याशा नहीं करता।”

अग्निनाथ लज्जित होकर बोले, “मगर समाज भी तो है। उसकी मलादके लिए भी तो—”

परन्तु उक्तय उाका गतम नहीं हो पाया था कि पासके दरगाजेको गोलर मनोरणने प्रवेश किया। अग्निनाथको नमस्कार करते उसने कहा, “गबूजी, मैं धूमने जा रही हूँ, तुम शायद आज गहर निरल नहीं सकोगे।”

“महा प्रिया, तुम जाओ।”

अग्निनाथ उत्कर गड़े हुए, बोले, “मुझे भी आज काम है। गजारने पास जग नहीं उठार दे सक्ती मनोरमा।”

“जरूर,—चलिए।”

जाते समय अग्निनाथ कह गये कि बहुत हा जरूरी कामसे उड कल ही दिल्ली जाना पडेगा और शायद एक सप्ताहने पहले वहाँसे लौटना नहा होगा।

जगतने आकर हाथम एफ छाटी-सी चिट्ठी दी। उसमें सिफ एक मक्य लिखा था—“शामनो नरर आइएगा।—आगु।”

जगतनी बिधवा मौसीने दरराजेर परदेनो ह्वाकर रिउते हुण गुलान जैना मुँह निनालकर कहा, “आगु गानूके घरने क्या आँखे निउाये ही बैठे थे जो घरमें आते-न आते तलर कर लिये गये।—अभी ही जाना हागा ?”

अग्निनाशने कहा, “शायद कोद रास काम है।”

“काम रास है। वे लोग तो जैने मुग्गी साहनो निगल ही जाना चाहते हैं।”

अग्निनाश अपनी छोटी सालीनो लाडसे कभी ‘छोटी बहू’ कहते हैं और कभी उसका नाम ‘नीलिमा’ लेकर पुकारते हैं। हँसकर बोले, “छोटी बहू, अमृत फल जनादरने साथ पेड तले पटा हुआ हो तो उसे देगकर गहरने लागोको लोभ जर हो ही जाता है ?”

नीलिमा हँस दी, बोली, “तब तो यह रात उन लोगोको जता देना जरूरी हो जातो है कि वह इन्द्रायण फल है, अमृत फल नहा।”

अग्निनाशने कहा, “अच्छा, जता देना। पर वं विश्वास नहीं करगे, लोभ और भी तब जायगा, हाथ बढानेम भी कसर न रखेंगे।”

नीलिमाने कहा, “उससे लाभ न होगा मुग्गभ महाशय, सन लागोकी पुँचने गहर जकी बार मनवृत सा गडा जनग रसूगी।” इतना कहकर वह हँसी टनाक परदेनी गोटमें चली गई।

अग्निनाश जर आगु गानूके घर जाकर पुँचे, तब थोडा-सा दिन राती था। गृहस्वामीने अत्यन्त आदरने साथ उनका स्वागत किया और कुनिम बोधक साथ कहा, “आप बार्मिक हैं। परदेशमें भिनको जनेला ग्रेडकर तम दिनस गैगहाजिर रहे, इस बीचम तो इस अनुचरनी दस दशाएँ उपस्थित हो गईं।”

अग्निनाश चोंककर बोले, “एक साथ दस दस दशाएँ ? पहले पहली तो बताइए।”

“बताता हूँ। पहली दशा तो यह हुई कि दाना टोंगें सिफ ताजा ही नहीं हुँदे रन्कि उ होने अत्यन्त तेज चालसे उपरसे नीचे और नीचेसे उपर आना जाना शुरू कर दिया।”

“बिहद भयना रात है। दूसरीका जगन कीजिए।”

“दूसरी यह कि आज किसी पक्के उपलब्धम हिन्दुस्तानी नारी कुल यमुनाके कूलपर इकट्ठा हुआ है और हरेद्र, अक्षय आदि पण्डित-समाजने निर्लित्त निर्विकार चित्तसे वहाँ अभी अभी अभियान किया है।”

“अच्छा, ठीक है। तीसरी दशाका हाल सुनाइए।”

“दर्शनेच्छु आश्रुतोप अत्यन्त उत्कण्ठित हृदयसे अविनाशकी प्रतीक्षा कर रहा है, प्रार्थना है कि वे अस्वीकार न करें।”

अविनाश हँसते हुए कहा, “उन्होंने प्रार्थना मजूर कर ली। अब चौथी दशाका बणन कीजिए।”

आश्रु बाबूने कहा, “यह जरा कुछ भारी है। चिरजीव महोदयने विलायतसे भारतमें पदापण किया है और वे काशी होते हुए परसा इसी आगरा नगरमें पधारे हैं। सम्प्रति मोटरकी मशीन रिगड गइ है और चिरजीव स्वयं मरम्मतके काममें लगे हुए हैं। मरम्मत समाप्तप्राय है और वे जब आते ही होंगे। अमिलपा है, पहली चाँदनी रातमें सब एक साथ आज ताजमहलका निरीक्षण करें।”

अविनाशका हँसता हुआ चेहरा गम्भीर हा उठा, पूछा, “ये चिरजीवी साहब कौन हैं आश्रु बाबू? क्या इन्हाकी बात उस रोज कहते-कहते अचानक रुक गये थे?”

आश्रु बाबूने कहा, “हाँ। मगर आज कहनेमें, कमसे कम आपसे कहनेमें कोइ रुकावट नहीं। अजितकुमार भेरे भावी जमाइ है, इन दोनोंका प्रेम ससारकी एक अपूर्व वस्तु है। लडका क्या है रत्न है।”

अविनाश स्थिर होकर मुनने लगे और आश्रु बाबू कहने लगे, “हम मस्र समाजी नहीं हैं। सब क्रिया-क्रम सनातनी मतानुसार करते हैं। यथासमय अर्थात् चार साल पहले ही इन दोनोंके न्याह हो जानेकी बात थी। होता भी यही, मगर नहीं हुआ। जिस तरह इन दोनोंका परिचय हुआ वह भी एक विचित्र घटना है,—विधि लिपि कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी। पर उस बातसे अभी जाने दीजिए।”

अविनाश पूववत् साध बैठे रहे। आश्रु बाबू बोले, “मणिकी तेल-साई हो गई थी कि इतनेमें रातकी गाडीसे काशीसे छोटे काका आ पहुँचे। पिताकी मृत्युके बाद वे ही घरके बड़े थे, बाल-बच्चा बाइ था नहीं, काकीको लेकर बहुत दिनोंसे काशीवास कर रहे थे। ज्योतिपपर उनका अरण्ड विश्वास

जगतने आकर हाथम एक डाटी-सी चिट्ठी दी। उसमें लिख एक वाक्य लिखा था—“शामको जरूर जाइएगा।—आगु।”

जगतनी विधवा मौसीने दरवाजे परदेको हटाकर गिरे हुए गुलाब जैसा सुँह निवालकर कहा, “आगु राबूने घरने क्या जाँव दिजाये ही बैठे थे जो घरमें आते न आते तलब कर लिये गये।—अभी ही जाना होगा।”

अग्निनाशने कहा, “शायद बाद कास काम है।”

“काम स्याद है। वे लोग तो जैसे मुसज्जी साहबको निगल ही जाना चाहते ह।”

अग्निनाश अपनी छानी मालीको लाडले कमी ‘जोटी बहू’ कहते हैं और कभी उसका नाम ‘नालिमा’ लेकर पुकारते हैं। हँसन बोले, “जोटी बहू, अमृत फल अनादरके साथ पेड तले पटा हुआ हो तो उसे देखकर बाहरके लोगोंको लाभ जरा हो ही जाता है।”

नीलिमा हँस दी, बोली, “तब तो यह बात उन लोगोंको जता देना जरूरी हो जाती है कि यह इन्द्रायण फल है, अमृत फल नहीं।”

अग्निनाशने कहा, “अच्छा, जता देना। पर वे विश्वास नहा करेंगे, लोभ और भी बढ़ जायगा, हाथ न्यनेम भी कसर न रकनगे।”

नीलिमाने कहा, “उससे लाभ न होगा मुसज्जी महाशय, सब लोगोंकी पहुँचके बाहर उनकी बार मजबूत सा पटा बनना रखेगी।” इतना कहकर वह हँसी ठगके परदेको ओटमें चली गइ।

अग्निनाश जरा आगु राबूने घर जाकर पहुँचे, तब थोडा-सा दिन वाकी था। गृहस्वामीने अत्यन्त आदरके साथ उनका स्वागत किया और कृत्रिम क्रोधक साथ कहा, “आप धार्मिक ह। परदेगम मित्रको जनेला छोडकर दस दिनसे गैरहाजिर रहे, दस शीचम तो इस अनुचरकी दस दशाएँ उपस्थित हो गइ।”

अग्निनाश चौंकर बोले, “एक साथ दस दस दशाएँ? पहले पहली तो बताइए।”

“नताता हूँ। पहली दशा तो यह हुई कि दोनो टॉग सिफ ताजा ही नहा हुँदे रक्कि उन्होंने अत्यन्त तेज चालसे ऊपरसे नीचे और नीचेसे उपर आना जाना शुरू कर दिया।”

“बेहद भयनी बात है। दूसरीका घणन कीजिए।”

“दूसरी यह कि आज किसी पक्के उपलक्षमें हिन्दुस्तानी नारी कुल यमुनाके कूलपर झूठा हुआ है और हरेद्र, अक्षय आदि पण्डित-समाजने निर्लिप्त निर्भ्रंश चित्तसे वहाँ अभी अभी अभियान किया है।”

“अच्छा, ठीक है। तीसरी दशाका हाल सुनाइए।”

“दर्शनेच्छु आशुतोष अत्यन्त उत्कण्ठित हृदयसे अविनाशकी प्रतीक्षा कर रहा है, प्रार्थना है कि वे अस्वीकार न करें।”

अविनाशने हँसते हुए कहा, “उन्होंने प्रार्थना मजूर कर ली। अब चौथी दशाका वर्णन कीजिए।”

आशु बाबूने कहा, “यह जरा कुछ भारी है। चिरजीव महोदयने विलायतसे भारतमें पदापण किया है और वे काशी होते हुए परसों इसी जागरा नगरमें पधारे हैं। सम्प्रति मोटरनी मशीन रिगड गइ है और चिरजाव स्वयं मरम्मतके काममें लगे हुए हैं। मरम्मत समाप्तप्राय है और वे जब आते ही होंगे। अभि र्था है, पहली चाँदनी रातमें सब एक साथ आज राजमहलका निरीक्षण करें।”

अविनाशका हँसता हुआ चेहरा गम्भीर हो उठा, पूछा, “ये चिरजीवी साहब कौन हैं आशु बाबू? क्या इहाँकी बात उस रोज कहते-कहते अचानक रुक गये थे।”

आशु बाबूने कहा, “हाँ। मगर आज कहनेमें, कमसे कम आपसे कहनेमें कोइ रुकावट नहीं। अजितकुमार मेरे भारी जमाद हैं, इन दोनोंका प्रेम ससार की एक अपूर्व वस्तु है। लडका क्या है रज है।”

अविनाश स्थिर होकर मुनन लगे और आशु बाबू कहने लगे, “हम ब्रह्म समाजी नहीं हैं। सब क्रिया-कर्म सनातनी मतानुसार करते हैं। यथासमय अर्थात् चार साल पहले ही इन दोनोंके न्याह ही जायेकी बात थी। होता भी यही, मगर नहीं हुआ। जिस तरह इन दोनोंका परिचय हुआ वह भी एक विचित्र घटना है,—विधि लिपि कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी। पर उस बातको अभी जाने दीजिए।”

अविनाश पूंखत् संध बैठे रह। आशु बाबू बोले, “भणिकी तेल-ताई हो गई थी कि इतनेमें रातकी गाडीसे काशीसे छोटे काका आ पहुँचे। पिताकी मृत्युके बाद वे ही परते बड़े थे, गल-बषा काइ था नहीं, काकीको लेकर बहुत दिनोंसे काशीवास कर रहे थे। ज्योतिषपर उका अरुण्ड विश्वास था, आकर

गोले, यह ब्याह अभी हो ही नहीं सकता। उन्होंने खुद तथा और पण्डितोंसे निर्मूल गणना करा देती है कि इस ब्याहके होनेसे तीन साल तीन महीनेके अन्दर ही मणि विधवा हो जायगी।

“धरम एक ऊधम-सा मच गया, सारी तैयारियों गुटालेमें पड़ गईं, मगर मैं काकाको जानता था, समझ गया कि इसमें जय भी इधर उधर नहीं होनेना। अजित खुद भी एक बहुत बड़े घरका लडका है, उसने एक विधवा काकीने सिवा सप्तरमें और फोड़ न था, वे भी बहुत गुस्सा हुईं, अजित मारे दुःख और अभिमानने इजीनियरिंग पढनेके बहाने विलायत चला गया और सने जान लिया कि यह सम्बन्ध हमेशाके लिए टूट गया।”

अविनाशने रुकी हुई साँस छोडकर पूछा, “इसके बाद, फिर ?”

आशु बाबूने कहा, “फिर हम सब हताश हो गये, हुईं नहीं एक मणि खुद। मुझसे आकर बोली, ‘नापूजी, ऐसी क्या बड़ी बात हो गई है जिसने लिए तुमने पाना पीना-सोना छोड दिया है ? तीन साल ऐसा क्या बड़ा समय है ?’ उसका मनको कितनी जरूरतसे ठेस पहुँची थी, सो मैं जानता था। मैंने कहा, ‘बेटी तेरी बात ही साथक हो, पर इन सब बातोंमें तीन साल तो दरकिनारा, तीन दिनकी रोक भी बुरी होती है।’ मणिने हँसकर कहा, ‘तुम्ह डरनेकी जरूरत नहा नापूजी, मैं उन्हें पहचानतो हूँ।’ अजित हमेशाके जरा कुछ सैनिक प्रकृतिका आदमी है, भगवान्पर उसका जबल विश्वास है। जाते समय मणिने एक छोटी चिट्ठी लिखकर चला गया। इन चार सालोंमें फिर उसने दूसरी चिट्ठी ही नहा लिखी। न लिखे, पर मन ही मन मणि सब जानती थी, और तबसे उसने ब्रह्मचारिणीका जीवन ग्रहण कर लिया। देखो तो बाहरसे फोड़ कुछ समझ ही नहा सकता। समझे अविनाश बाबू ?”

अविनाश श्रद्धालु प्रिगलित चित्त होकर बोले, “हाँ, वास्तवमें नहीं समझ सकता, मैं आशीर्वाद देता हूँ कि वे लोग जीवनमें सुखी हों।”

आशु बाबूने कन्याकी तरफसे ही मानां सिर झुकाकर उसे ग्रहण किया और कहा, “ब्राह्मणना आशीर्वाद निष्फल नहा होगा। अजित सबसे पहले काका साहबके पास गया था। उन्होंने अनुमति दे दी है। नहा तो, यहाँ शायद वह जाता ही नहीं।”

इसके बाद, दोनों कुछ देर चुप रहे, फिर आशु बाबू कहने लगे, “अजितने

विलासत चले जानेपर जय दो सालतक उसका कोई समाचार नहा आया तब मैंने भीतर हा भीतर बरफ़ी खोज न की हो सो बात नहा । पर मणिने अस्मात् मालूम हो गया और उसने मना कर दिया । कहा, 'बापूजी, उसकी कोशिश तुम मत करो । मेरा तुमने प्रसन्न रूपसे सम्प्रदान भन्ने ही न किया हो, पर मनसे तो कर ही दिया था ।' मैंने कहा, 'ऐसा तो कितने ही विवाहोंमें हुआ करता है, बेटी ।' लेकिन लडकीसी आँसुओंमें मानो पानी भर आया । बोली, 'नहीं होता बापूजी । सिर्फ़ बातचीत ही होती है, उससे ज्यादा कुछ नहीं,—नहा बापूजी, मेरे भाग्यमें भगवान् ने जो लिखा है उसे मैं सह सकूँ, यही काफी है, मुझे जोर कोई आदेश तुम मत देना ।' दोनोंकी ही आँसुओंसे आँसू गिरने लगे, पीठकर मैंने कहा, कसूर बन गया बेटी, अपने नासमझ बापूजी नू धम्मा कर ।"

अस्मात् पून-स्मृतिसे आवेगसे उनका कण्ठ रुद्ध हो गया । अविनाश खुद भी कुछ देखकर मत नहीं कर सके, उससे चाद धीरे धीरे बोले, "आशु बाबू, सखारम हम लोग न जाने कितनी गलतियाँ किया करते हैं और न जाने कितनी अनुचित धारणाएँ मनमें पालते रहते हैं ।"

आशु बाबू ठीक समझ न सके, "कैसी ?"

"यही, जैसे, हममेंसे बहुत-से ऐसा समझा करते हैं कि लडकियाँ उच्च शिक्षा पाकर मेम-साहना बन जाती हैं, हिंदुओंके प्राचीन मधुर सस्फारके लिए उनके हृदयमें जैसे स्थान ही नहा रहता । यह कितना बड़ा भ्रम है, भला ?"

आशु बाबूने गरदन हिलाकर कहा, "भ्रम बहुतेरी जगह होता जरूर है । मगर आप जानते हैं अविनाश बाबू, क्या शिक्षा और क्या अधिष्ठा, असल चीज है प्राप्त करना । इस प्राप्त करने न करनेसे ऊपर ही सर बातें निर्भर हैं । नहीं तो, एकका अपराध दूसरेपर आरोप करनेसे ही गुठाला होता है ।—आ गये अजित, मणि कहा है ?"

तोतेज सा रमा एक सुन्दर शक्ति युक्त कमरेके भीतर दाखिल हुआ । उससे कपड़ोंपर कालिलके दाग लग गये थे । उसने कहा, "मणि अतक मेरी मदद कर रही थी, उनसे कपड़ोंमें भी कालिल लग गई है, कपड़े बदलने गई हैं । मोटर ठीक हो गई है, शोरसे सामने लाकर रखी करनेकी कह दिया है ।"

आशु बाबूने कहा, "अजित, ये मेरे परम मित्र हैं, श्रीयुक्त अविनाश सुखे

पाप्याय । यहाँके कॉलेजके प्रोफेसर हैं, ब्राह्मण हैं, इन्हें प्रणाम करो ।”

आगन्तुञ्च युञ्जने अविनाशको पाँव छूकर प्रणाम किया । फिर सड़े होकर आशु बाबूको लक्ष्य करने कहा, “मणिरे जानेमें पाँचके मिनटसे ज्यादा देर न लगेगी । मगर आप जरा जल्दीसे तैयार हो लीजिए । देर होनेपर सब कुछ देखनेका समय नहीं मिलेगा । लोग कहते हैं ताजमहल देखते देखते जी ही नहीं भरता !”

आशु बाबूने कहा, “जी न भरनेकी ही चीज है, तुम्हींको अभी कपड़े बदलना बाकी हैं ।”

युञ्जने हँसकर कहा, “सो रहने दोजिए । यह तो हमारा पेशा है । कपड़ों पर कालिक लगनेसे हम लोगोंका कोई अगौरव नहीं होता ।”

बात सुनकर आशु बाबू मन ही मन अत्यन्त प्रसन्न हुए, और अविनाश भी युञ्जकी विनम्र सरलतापर मुग्ध हो गये ।

इतनेमें मणि आ पहुँची । सहसा उसकी तरफ देखकर अविनाश चौंक उठे । कई दिनोंसे उन्होंने उसे देखा नहीं था, और इस बीचमें ही यह अप्रत्याशित आनन्दकी घटना हुई थी । खासकर, उसके पिताके मुँहसे अभी-अभी जो बातें सुनी थीं उससे उन्होंने समझ लिया था कि मनोरमाके चेहरेपर आज शायद ऐसी कोई बात देखने जो अनिश्चनीय होगी और जीवनमें कभी देखी न होगी । मगर वहाँ कुछ भी नहा था, त्रिलकुल सीधी-सादी पोशाक । छिपे हुए आँदका छिपा आडम्बर कहींसे आत्म प्रकाश करता हुआ नहीं दिखाई दिया । सुगमीर प्रसन्नताकी शान्त दीप्ति चेहरेपर कहीं भी विकसित होती नहीं दिखाई दी, बल्कि, न जाने कैसी एक क्लान्तिकी छायाके ही आँखोंकी दृष्टिको म्लान कर रखा था । अविनाशको ऐसा जान पड़ा कि पितृ-रुनेहवश शायद आशु बाबूने अपनी कन्याको गलत समझा है, या फिर किसी दिन जो सत्य था वह आज झूठ हो गया है ।

थोड़ी देर बाद एक बड़ी भारी मोटरमें बैठकर सड़ चल दिये । जमुनाके घाट घाटपर पुष्प-लुध नारियो और रूप लुध पुरुषोंकी भीड़ तबनक लगभग कम हो चुकी थी । सुन्दर और सुदीर्घ मार्गमें सर्वत्र ही उनकी सज-धज और विचित्र रंग निरंगी पोशाक अस्तमान रत्न-चरंचसे विशेष सुन्दर हो उठी थीं, और उस दृश्यको देखते हुए जब वे विश्वविख्यात अनन्तसौन्दर्यमय ताजमहलके

गिहद्वारे सामने आ पहुँचे, तब हेमन्त ऋतुका छोटा-सा दिन अवसानकी आरंभ जा रहा था ।

यमुना किनारे जो कुछ देखनेका था सा सत्र देख भालकर अक्षयका दल पहलेसे ही वहाँ हाजिर हो गया था । तब उन लोगोंने बहुत बार देखा है, देखते देखते अरुचि हो गई है वसीसे वे ऊपर न जाकर नाचने बागम एक किनारे बैठ गये थे । इन लोगोंका आते देख उन सत्रने उध कालाहलने साथ स्वागत किया । गतयाधि-पीडित आशु बाबू अपनी भारी भरकम देहको घासपर रखते हुए गहरी उसास छोड़कर बोले, “ओ ए, अब जीमें जी आया । अब जिसकी कितनी तरोयत हो, मुमताज बेगमकी कत्र देखकर आनन्द प्राप्त करते रहो बाबा । आशु वैय यहींसे बेगम साहबानो फोनिश रजा लाता है । इससे ज्यादा और उससे कुछ नहीं हो सकता ।”

मनोरमाने धुब्ध कण्ठसे कहा, “सो नहीं होगा बापूजी, तुम्हें अनेका ठोड कर हमसे कोई भी उहा जा सकता ।”

आशु बाबू हँसकर बोले, “टरकी कोई बात नहा बेटी, तुम्हारे बूढ़े बापको कोई चुप नहा ले जायगा ।”

अविनाशने कहा, “नहा, इसकी आजा नहा । बदलूर केन और लोहेकी जजिर लाये और वट उठा ही बने सनेगा !”

मनोरमाने कहा, “मेरे बापूजाको कोई नजर न लगाए । आप लोगकी ही नजरसे बापूजी यहाँ आकर बहुत कुछ दुबले हो गये हैं ।”

अविनाशने कहा, “ऐसा अगर हुआ हो तो हम लोगोंसे जन्याय हुआ है, यह बात माननी ही पड़ेगी । कारण, दृष्ट करने लिहाजसे इस चीजकी इजत तब महलसे किसी बदर कम नहीं है ।”

सत्र कोई हँस दिये । मनोरमाने कहा, “सो नहीं हागा बापूजी, तुम्ह साथ साथ चलना होगा । तुम्हारी आँखोंसे देखे बिना इस चीजका आधा सौंदर्य देका ही रह जायगा । कोई कितनी ही बात क्या न बतावे पर तुमसे ज्यादा अमली बातें और कोई नहीं जानता ।”

अविनाशके सिवा इस बातका मम और कोई नहा जानता कि इसके मानी क्या है । वे भी यही अनुरोध करने जा रहे थे । इतनेमें सहसा सत्रकी दृष्टि पड़ी एक अप्रत्याशित चीजपर । तबने पूवकी ओरसे घूम कर अन्सात् खिन्ना

और उसकी स्त्री सामने आ पड़े। शिवनाथ अनदेखी करके दूसरी तरफ जाना ही चाहता था कि स्त्री उसकी दृष्टि जाकर्षित करके खुश हो उठी और बोली, “आगु बाबू और उनकी लडकी भी आद हैं, देखो तो सही।”

आशु बाबूने जोरकी आवाज लगाकर उन्हें पुकारा, “आप लोग क्या आये शिवनाथ बाबू ? इधर आइए।”

स्त्रीने साथ शिवनाथ पास आ सज हुआ। आशु बाबूने उनका परिचय देकर कहा, “ये हैं शिवनाथकी स्त्री। आपका नाम लेकिन नहीं मालूम।”

“मेरा नाम है कमल। मगर मुझसे ‘आप’ न कहा करें आगु बाबू।”

आशु बाबू वाले, “कहना उचित भी नहीं है कमल, ये लोग मेरे मित्र हैं, तुम्हारे पतिने भी परिचित है। बैठो।”

कमलने अजितकी तरफ इशारा करके कहा, “मगर इनका परिचय तो दिया ही नहीं।”

आगु बाबूने कहा, “क्रमशः दूँगा। ये मेरे,—ये मेरे परम आत्मीय हैं। नाम अजितकुमार राय। कुछ ही दिन हुए, विलायतसे वापस आकर हम लोगोंसे मिलने आये हैं। कमल, तुमने क्या आज पहले पहल ताजमहल देखा है ?”

कमलने सिर हिलाकर कहा, “हाँ।”

आशु बाबूने कहा, “तब तो तुम भाग्यवती हो। अजित तुमसे भी भाग्यवान् है क्योंकि यह परम आश्रयकी चीज उसने अभीतक देखी नहीं, अब देखेगा। लेकिन उजाला घटता जाता है, ज्यादा देर करना तो अब ठीक नहीं, अजित।”

मनोरमाने कहा, “देर तो सिर्फ तुम्हारे लिए ही हो रही है ग़ाफ़ी उठा।”

“उठना तो आसान काम नहीं है बेटी, उसने लिए तो आयोजन करना पड़ेगा।”

“तो फिर वही आयोजन करो न, ग़ाफ़ी।”

“करता हूँ। अच्छा कमल, देखकर कैसा मालूम हुआ ?”

“आश्रयकी चीज ही मालूम हुआ।”

मनोरमा उसने साथ बोली नहीं, यहाँतक कि उससे परिचय है, इस बात का आभास भी उसने आचरणसे प्रकट नहीं हुआ। पितासे तान्नीद करते हुए उसने कहा, “शाम हुई जा रही है ग़ाफ़ी, उठो अब ?”

“उठता हूँ बेटी।” कहकर आगु वाबू उठनेका जरा भी उद्योग न करके बैठे ही रहे। कमल जरा हँसी, मनोरमाजी तरफ देखकर बोली, “इननी तरीयत भी अच्छी नहीं है, और चढना-उतरना भी आसान नहीं। इससे बल्कि हम लग बैठे-बैठे पातें कर, आप लोग देख आइए।”

मनोरमाने इस प्रस्तावका जमान नहा दिया, सिर्फ पितासे ही जिदने साथ रहा, “नहीं बापूजी, सो नहीं होनेका। उठो अर तुम।”

मगर, देखा गया कि उठनेकी कोशिश लगभग किसीने भी नहीं की। जो जाग्रित आश्रय इस अपरिचित रमणाके सर्वांगमें व्याप्त हाकर अस्मात् मूर्तिमान् हो उठा, उसने सामने वह निकट ही खड़ा हुआ सगमरमरका अव्यक्त आश्रय मानो एक क्षणमें धुँधला-सा पड गया।

अविनाशी अन्यमनस्कता दूर हो गई। मोले, “इनक भिना गये काम न चलेगा। मनोरमाकी धारणा है कि पिताकी आँखोंसे देखे बगैर ताजका आधा सौन्दर्य भी हृदयगम नहा किया जा सकता।”

कमलने अपनी सरल आँख उठाकर पूछा, “क्यों ?” फिर आगु वाबूसे कहा, “आप शायद इस प्रियके विशेषज्ञ हैं ? और शायद सब बात जानते हैं ?”

मनोरमा मन ही मन निश्चित हुए, बातें ठीक अशिथित दासी-कन्या जैसी तो नहीं मालूम होता !

आगु वाबू पुलकित होकर मोले, “म कुछ भी नहीं जानता। विशेषज्ञ तो हूँ ही नहीं, और सौन्दर्य तत्वका सिर-पैरतक नहीं जानता। उस तरफसे तो मने इसे देखतक नहा कमल। मैं देखता हूँ बादशाह शाहजहाँको। मैं देखता हूँ उनकी असाम व्यथाको जो मानो इसने हर पत्यरके अग-अगम समाइ हुए है। मैं देखता हूँ उनके एकनिष्ठ पत्नी प्रेमको, जो इस ममर-कायकी सृष्टि करके चिरकालने लिए अपनी प्रियतमानो निद्रने सामने अमर कर गया है।”

कमलने अत्यन्त स्वभाविक कण्ठने उनके चेहरेकी तरफ देखकर कहा, “मगर उनकी तो, मुना है, और भी बहुत-सी बगमें था। बादशाहको मुमताज पर जैसा प्रेम था वैसा औरोंपर भी था। हो सकता है कि उससे कुछ ज्यादा हो, पर एकनिष्ठ प्रेम तो उसे नहीं कहा जा सकता आगु वाबू। उनमें वह बात नहीं थी।”

इस अप्रचलित मयानक मन्तयसे सब चौंख उठे। आगु वाबू का और कोई

इसका जवाब रोज़गार भी न पा सका ।

कमलने कहा, “बादशाह कवि थे वे अपनी शक्ति, सम्पदा और धैर्य इतनी बड़ी विराट् सौंदर्यकी वस्तु प्रतिष्ठित कर गये हैं । मुमताज तो एक आकस्मिक उपलब्ध मात्र थी । यह न होती तो भी ऐसा सौन्दर्य-सौध वे निसा भी घटनाको लेकर रच जा सकते थे । धमने नामपर होता तो भी थोड़े नुस्खान नहीं या और हजारों लाखों आदमियोंका हत्या करके दिग्विजय प्राप्ति की स्मृति के रूपम होता तो भी इसी तरह चला जाता । यह एकनिष्ठ प्रेम का दान नहीं है, यह तो बादशाहका निजी आनन्द-लोकका अक्षय दान है । यह, इतना ही हमारे लिए काफी है ।”

आगु राबूने दिलपर चोट-सी लगी । बार-बार सिर हिलाकर कहने लगे, “काफी नहा कमल, हरगिज ऐसा नहा या । तुम्हारी बात ही अगर सच हो, बादशाहके मनम एकनिष्ठ प्रेम अगर न था तो इस विलास स्मृति मन्दिरका कोई मानी ही नहीं रह जाता । फिर वे चाहे जितनी बड़ी सौन्दर्यकी सृष्टि क्या न कर जाते, मनुष्यके हृदयम वैसी श्रद्धाका आसन उनके लिए नहीं रह जाता ।”

कमलने कहा, “अगर न रहे तो वह मनुष्यकी मूर्ता है । मैं नहीं कहती कि निष्ठाका कोई मूल्य ही नहा, पर जो मूल्य युग युगसे लोग उसे देते आये हैं वह उसका प्राप्य मूल्य नहा है । एक दिन जिससे प्रेम किया है, फिर किसी दिन किसी भी कारणसे उसमें किसी परिवर्तनका अवकाश नहीं हो सकता मनका यह अचल अडिग जड धम न तो स्वस्थ है और न सुन्दर ही ।”

मुनकर मनोरमाके विस्मय की सीमा न रही । मूल दासी-कन्या कहकर इसकी उपेक्षा करना कठिन है, मगर इतने पुण्याने सामने उसी जैसी एक नारीने मुँहसे निकली हुई इस तरहकी लज्जाहीन बातने उसे अरदस्त चोट पहुँचाई । अब तक वह कुछ बोली नहा थी, पर अब वह अपनेको रोक न सकी कठोर किन्तु दबी जवानसे बोली, “मैं मानती हूँ, ऐसी मनोवृत्ति जोर किसीके न सही, पर आपने लिए स्वाभाविक है । मगर ओरोंकी दृष्टिमें न तो यह सुन्दर है और न शोभन ।”

आशु बाबू मन ही मन अत्यन्त क्षुण्ण होकर बोले, “ठि, बेटी ।” -

कमल गुस्सा नहीं हुई, बल्कि जरा हँस दी । बोली, “बहुत दिनोंके बदन-मूल मस्कारपर आघात लगनेसे आदमी सहसा सह नहीं सकता । आपने सच ही कहा

है, हमारे निकट यह बात प्रकृत ही स्वाभाविक है, क्योंकि हमारे शरीर और मनमें यौवन परिपूर्ण है, हमारे मनमें प्राण है। जिस दिन जानेंगी कि आवश्यकता होनेपर भा उसमें परिवर्तनकी कोई शक्ति बाकी नहीं रही उस दिन समझेंगे कि उसका सातमा हो चुका है,—वह मर चुका है।” कहकर ज्यों ही उसने आँस उठाई त्यों ही देखा कि अजितनी आँसोंसे जैसे धिनगाणियों निकल रही है। भाद्रम नहीं वह दृष्टि मनोरमाने देखा या नहीं, किन्तु यह बातने वाचक्ष्ममें अस्मात् गोल उठी, “भापूजी, अब दिन नहीं है, मुझसे जितना बनेगा मैं अजित पादुको तबतब कुछ याद दिला लाती हूँ।”

अजितकी अन्यमनस्कता दूर हा गइ। उसने कहा, “चलो, हम लोग देग आएँ।”

जागू बाबू खुश होकर बोले, “अच्छी बात है, जाआ बेनी, हम लोग यही पेटे है। लेकिन जरा जल्दी ही लौट आना, न होगा, तो कल फिर जरा जल्दी आ जायेंगे।”

६

अजित और मनोरमा जब ‘ताज’ दरवाज़े लोटे तब सूर्य अस्त हो चुका था, पर उजाला खतम नहीं हुआ था। सूर सूर गिरोह बाँधकर जमे थे, और तक घोरतर हो उठा। ताजमहलकी बात, घर लौटनेकी बात, यहाँतक कि अजित मनोरमाकी बातका भी उन्हें खयाल नहीं था। अश्वय सुप पैग उफन रहा था। देवदर भाद्रम होता था कि इसका पहल वह काफी शोर मचा चुका है और अब दम ले रहा है। जागू बाबू देहके अधोभागको चमके बाहरकी ओर पसार कर और ऊर्ध्व भागको दोनों हाथोंपर रखकर, गुद मार बहन करनेका एक तरीका निमालकर अत्यन्त दिलचस्पा साथ मुन रहे हैं। जविनाश सामनेकी ओर झुककर तीस दृष्टि कमलके चेहरेकी तरफ देग रहे हैं। समझमें आया कि फिलहाल सवाल-जवाब इन्हीं दोनोंके दरम्यान चाहू है। समने आगनुर्काकी आर मुँह उठाकर देखा। किसने जरा गरदन हिलाद और मिठी को उतनी भी फुरसत नहीं मिली। कमल और शिम्नाथ,—इन दोनोंने भा मुँह उठाकर देखा। किन्तु आश्वय यह है कि एककी आँसोंकी दृष्टि जैसे शिम्पाकी तरह जल रही है, दूसरेकी दृष्टि जैसे ही शान्त और मलिन हो रही है। मानो वह

कुठ देर ही नहीं रहा है, न कुठ सुन ही रहा है। इस दलमें नैठा हुआ भी शिपनाथ जैसे न जाने कहाँ कितनी दूर चला गया है।

आगु बाबूने कहा, “नैठो।” पर वे कहाँ नैठें, और नैठे या नहीं, यह देखनेकी भी उह पुरखत नहा मिली।

अग्निनाशने शायद अ नयकी युक्ति मालाका छिन्न सूत्र हाथमें ले लिया और कहा, “बादशाह शाहजहाँना प्रसन्न अभी रहने दो। मैं मानता हूँ कि उनने सम्बन्धमें प्रिचार करनेकी जरूरत है और प्रश्न जरा जटिल है। मगर प्रश्न जहाँ उस सामनेने सगमरमरके समान सफेद, पानीकी तरह साफ, सूखने प्रमाशनी तरह स्वच्छ ओर सीधा है,—ले लीजिए हमारे आगु बाबूका जीवन, किसी भा दिशामें भी कोई कमी नहीं थी, न तु न बक्की कोशिशम भी कोई त्रुटि नहीं थी, मालूम तो है ही सर,—लेकिन यह बात ये सोच ही न सने कि अपनी मृत स्त्रीकी जगह और किसीको टाकर किसी तरह पिठाया जा सकता है। यह बात इनकी कल्पनासे भी बाहर है। बताइए, नर नारीने प्रेमका यह कितना बड़ा आदर्श है ? कितना ऊँचा स्थान है इसका ?”

कमल कुठ कहना ही चाहती थी कि पीछेसे एक मृदु स्पर्शका अनुभव करके उधर देखने लगी। शिपनाथने कहा, “अब यह आलोचना बंद करो।”

कमलने पूछा, “क्यों ?”

शिपनाथने उत्तरम सिफ इतना कहा, “ऐसे ही कह रहा हूँ।” और वे चुप हो गये। उनकी बातपर किसीने विशेष ध्यान नहीं दिया,—उन उदास अन्य मनस्क आँखोंके अन्तरालम कोन सी बात दबी रह गई, किसीने मालूम भी न हुइ, और न किसीने जाननेकी कोशिश ही की।

कमलने कहा, “अच्छा, ऐसे ही। तुम्हें घर चलनेकी जल्दी पटी है शायद ? पर घर तो साथ मौजूद है।” और हँस दी।

आगु नानू सहम गये, हरेद्र ओर अ नय ओठा ही ओठोंमें मुसकराये, मनोरमाने दूसरी तरफ आँखें फेर लीं किन्तु जिसको लम्ब करके यह बात कही गई थी, उस शिपनाथने आश्चर्यजनक सुन्दर चेहरेपर एक रेखाका भी परिवर्तन नहीं हुआ,—मानो वह मिल्तुल पत्थरका बना हो,—न तो उसे कुठ दिखाइ देता है ओर न सुनाइ।

अग्निनाशसे देर नहा सही जा रही थी। उहाने कहा, “मेरे सगलना

जगन दो !'

कमलने कहा, "पर पतिकी मनाइ है जो । उनकी मशाके गिलाफ चलना क्या उचित है ?" यह कहकर वह हँसने लगी । अभिनाशसे स्वप भी प्रिना हँसे न रहा गया । बोले, "इस मामलेमें अपराध न माना जायगा । हम इतने आदमी मिलकर तुमसे अनुरोध कर रहे हैं, अगन दो ।"

कमलने कहा, "आशु गानूको जाज मिलाकर दो दिन देखा है सिप, पर इसी नीचमें मन ही मन मैं उन्हें चाहने लगी हूँ ।" फिर शिवनाथकी तरफ इशारा करते कहा, "अब समझमें आया न, कि क्यों ये मुझे गोलनेके लिए मना कर रहे थे ?"

आशु गानूने खुद रसमें रुकावट डाली, बोले, "पर मेरी तरफसे उन्हें सकोच या दुःखिया करनेका कोई कारण नहीं । बूटा आशु वैद्य यज्ञ निरीह आदमी है कमल । सिर्फ दो ही दिन देगकर तुमने उसे बहुत कुछ समझ लिया होगा, और दो दिन और भी देखोगी तो समझ जाओगी कि उससे डरने जैसी भूल ससारमें शायद ही कोई हो । तुम स्वच्छदतासे कहो,—ये सब बातें मुननेमें वामनम मुसे बहुत आनन्द आता है ।"

कमलने कहा, "मगर ठाक इसीलिए तो ये मना कर रहे थे, और इसीलिए अभिनाश गानूका गतजा जगन देनेमें अरतक मेरी जगन रफती थी कि नर नाराजे प्रेमर व्यापारमें न तो मैं इसे बड़ी चीज समझती हूँ और न आदर ही मानती हूँ ।"

अब अश्रुका मुँह खुला । उसने प्रश्नने दगमें श्लेष था, "सम्भव यही है कि आप लोग नहा माते, मगर क्या मानते हैं, जरा यताएँगी क्या ?"

कमलने उसकी तरफ देखा जरूर, पर टीक उसीको उत्तर दिया हो, सो यात नहीं । वह बोली, "एक दिन आशु गानू अपनी स्त्रीसे प्रेम करते थे, जो इस समय जीवित नहीं हैं । पर अब उह न तो ब्रुड दिया ही जा सक्ता है और न उनसे ब्रुड पाया ही जा सक्ता है । उन्हें अब न तो सुणी किया जा सक्ता है और न दुप दिया जा सकता है । वे हैं ही नहीं,—प्रेम-पायका निदानतक पुँड गया है । उह निची दिन प्रेम नित्रा था, मनमें सिप यह घटना मान रह गइ है । मनुष्य नहीं है, उसकी केवल स्मृति है । उसीको अहोरात्र मनमें पालते रहकर शतमानाअ अश्रु अतीतरने ही मुन जानकर जीवन नितानेमें कौन-सा

गडा भारी आदश है, मेरी तो कुछ समझम नहीं आता ।”

कमलने मुँहसे ऐसी बात सुनकर आगु बाबूको फिर चोट पहुँची । वे बोले, “मगर, हमारे देशकी विधवाआने हाथमें सिफ यही एक चरम पृँजी रहती है । पति चल बसता है, पर उसरी स्मृतिसे लेकर ही तो विधवा जीवनकी पवित्रता पनी रहती है । इसे क्या तुम नहीं मानता ?”

कमलने कहा, “नहीं । एरु गडा नाम दे देनेसे ही तो कोई चीज ससारम सचमुच गडी नहीं हो जाती । गल्लि यों कहिए कि इस देशम इसी तरह वेधय जीवन पितानेना रिगज है, इसे मैं अस्वीकार नहीं करूँगी ।”

अग्निनाशने कहा, “अगर ऐसा ही हा, लोग अगर उह ठगते ही आ रहे हों, विधवाके ब्रह्मचयमे, —खैर जाने दो, ब्रह्मचयना नाम अरु न लँगा,—लेकिन उसने आमरण सयत जीवनसे क्या हम गिराट् पवित्रताका भी सम्मान न दगे ?”

कमल हँस दी, बोली, “अग्निनाश बाबू, यह भी एक उसी शब्दका मोह है । ‘सयम’ शब्द बहुत दिनोंसे बहुत ज्यादा इज्जत पा पाकर ऐसा फूल उठा है कि उसने लिए अरु स्थान-काल कारण अकारण नहीं रह गया है । उसके उच्चारण मात्रसे सम्मानने बोझसे आदमीना सिर झुक्र जाता है । परन्तु, अरुस्था विशेषमें यह भी एक थोथी आवाजसे ज्यादा कुछ नहीं है । यह शब्द मुँहसे निकालते ही साधारण लोगोंको भले ही डर लगे, पर मुझ नहा लगता । मैं उस दलकी नहीं हूँ । सिफ इसीलिए कि बहुत से लोग गहुत दिनोंसे कोई एरु बात कहते आ रहे हैं, मैं उसे मान नहा लेती । पतिकी स्मृतिसे छातीसे चिपटाये रहकर विधवाओंको दिन काटने चाहिए, इसने समान स्वत सिद्ध पवित्रताकी धारणाको स्वीकार करनेम मुझे ततक हिचकिचाहट रहेगी जतक कि उसे कोई प्रमाणित नहा कर देगा ।”

अग्निनाशको जवाब ढुँढे न मिला और वे क्षण भर विमूढनी भाँति देखते रह गये, फिर बोले, “तुम कहती क्या हो ?”

अक्षयने कहा, “दो और दो चार होते हैं, इसे भी शायद प्रमाणित किये बगैर आप नहीं मानगी ?”

कमलने न तो जवाब दिया और न गुस्ता ही हुद, सिफ हँस दी ।
और भी एक सज्जन जो गुस्ता नहा हुए, ये ये आइल बाबू । किन्तु कमलकी

बातसे सगरे ज्यादा व्यथित भी वे ही हुए।

अक्षय फिर बोला, “आपनी ये सग गन्दी धारणाएँ हमारे शिष्ट-समाजमें नहीं हैं, यहाँ ये चल नहीं सकतीं।”

कमलने पूवन्त हँसते चेहरेसे ही उत्तर दिया, “शिष्ट समाजमें चलती नहीं हैं, यह मैं जानती हूँ।”

इसने गद कुठ देरतक सगरे सग मौन रहे। आगु गबू धीरे धीरे गले, “और एक बात तुमसे पूछता हूँ कमल। पवित्रता-अपवित्रताके लिए नहीं कह रहा, किन्तु स्वभावतः जो और कुछ कर नहीं सक्ता, जैसे मुझको ही ले लो, भौतिकी स्वर्गीय मौकी जगह और किसीको ला रिटानेकी तो मं कभी कल्पना ही नहीं कर सक्ता।”

कमलने कहा, “आप बूढ़ जो हो गये हैं आगु गबू।”

आशु गबूने कहा, “मानता हूँ, आज बूढ़ा हो गया हूँ, किन्तु उस दिन ता बूढ़ा नहीं था। पर तब भी तो यह बात नहीं सोच सकता था।”

कमलने कहा, “उस दिन भी ऐसे ही बूढ़े थे। देखते नहीं, मनसे। कोई कार आदमी हात हैं जो बूढ़ा मन लिये ही पैदा होते हैं। उस बूढ़ेने गामने नीचे उनका जीग शीग विरुद्ध यौवन हमेशा लज्जासे सिर नीचा किये रहता है। बूढ़ा मन गुण होकर कहता है, जहा ! यही तो अच्छा है, कोई हगामा नहीं, उन्माद नहीं,—यही तो शान्ति है, यही तो मनुष्यके लिए चरम तत्त्वकी बात है। उसने लिए कितने तरहके अच्छे-अच्छे विशेषण हैं, कितनी बाह्यवादीका आह्वार है। ऊँचे स्वरसे उसकी स्वातिकी बाजा बजता है, पर इस बातको वह जान भा नहीं पाता कि यह उसने जीगना जय बाद्य नहीं, आनन्दलोकके विमृजनका बाजा है।”

सभीको मन ही मन लगा कि इसका एक कडा जवाब देना जम्बो है। एक ग्दीने मुँठे यौगने उन्मादकी श्म निलम्ब रूतिसे सभीने कान जल्ने लगे, पर जगार देने लायक बात किगीको हूँदे नहीं मिली।

तब आशु गबूने गुरु कण्ठसे पुछा, “कमल, बूढ़ा मन तुम किये कहती हो ! देखूँ, अपने साथ जय मिलाकर। यह सचमुच ही यही है या नहीं।”

कमलने कहा, “मनका बुलापा मैं उगीको कहती हूँ आगु गबू, जो अपने गामनेको धार नहीं दल सकता, शिष्टा धार धर जयमन मन कल्पकी

समस्त आशाओंको जलाजलि देकर सिफ अतीतके अन्दर ही जिन्दा रहना चाहता है। ओर मानों उसे कुठ करनेकी, कुठ पानेकी चाह ही नहीं है,—वतमान उसकी दृष्टिमें लुप्त है, अनावश्यक है, और भविष्य अधहीन। अतीत ही उसके लिए सब कुछ है। वही उसका आनन्द, वही उसकी वेदना आर वही है उसका मूल धन। उसीको भुना भुनाकर गुजर करके जीवनके बाकी दिन निता देना चाहता है। देखिए तो आशु बाबू, अपने साथ जरा तुलना करके।”

आशु गानू हँसे, बोले, “यथासमय एक बार जरूर देखूँगा।”

अजितकुमारने अबतककी इतनी बातचीतके बीचमें एक भी बात नहीं कही थी, वह सिफ निष्पलक दृष्टिसे कमलके मुँहकी तरफ देख रहा था सहसा न जाने उसे क्या हो गया, अपनेमो वह सँभाल न सका, बोल उठा, “मेरा एक प्रश्न है, दोराए मिसेज—”

कमलने सीधे उसकी तरफ देखकर कहा, “मिसेज किसलिए? मुझ आप कमल ही कहिए न।”

अजित मारे चरमके मुग हो उठा—“नहा नहीं, सो कैसे,—ऐसा कैसे—”

कमलने कहा, “ऐसा वैसा कुठ भी नहीं। माँ-बापने मेरा यह नाम रखा था पुकारनेके लिए ही तो। इससे मैं नाराज नहीं होती।” अकस्मात् मनोरमाके मुँहकी ओर देखकर बोली, “आपका नाम मनोरमा है,—मनोरमा कहकर बुलानेसे आप नाराज होती हैं क्या?”

मनोरमाने सिर हिलाकर कहा, “हाँ, मैं नाराज होती हूँ।”

ऐसे जगदनी उससे किसीने भी उम्मीद नहा की थी, आशु गानू तो मारे सन्नोचके ग्लान हो गये।

सिफ सञ्चित नहीं हुई कमल स्वयं। बोली, “नाम तो और कुठ नहीं, एक शब्द है, जिससे समझा जाता है कि एक आदमी बहुताँमेंसे किसी एक आदमीको बुला रहा है। पर हाँ, यह सच है कि बहुताँ अम्प्रासे यह खटकती है। वे इस शब्दको नाना रूपसे अलङ्कृत करना सुनना चाहते हैं। देखते नहीं, राजा लोग अपने नामके आगे न जाने कितने निरर्थक शब्द जोड़ कर, कितने ‘श्री’ जोड़कर, तब कहा उसे दूसरेको उच्चारण करने देते हैं। नहीं तो उनकी भयादा नष्ट होती है।” इतना कहकर वह सहसा हँस पड़ी, और शिवनाथकी तरफ इंगारा करके बोली, “जैसे ये। कभी इनसे कमल कहते नहीं

यनता, कहते हैं शिवानी । अजित बाबू, आप बल्कि मुझे मिसेज शिवनाथ न कहकर शिवानी कहिए । शब्द भी ठोस है, और सत्र समझ भी लेंगे । कमसे कम मर्म तो समझ ही जाऊँगी ।”

परन्तु न जाने क्या हुआ कि ऐसा सुस्पष्ट आदेश पाकर भी अजितसे कुछ बोला नहीं गया, प्रश्न उसने मुँहमें ही अटक रहा ।

तब सध्या रतम हाँ चुन्नी थी आर कातिर पूनोंके प्राण्यच्छत्र आकाशमें स्वच्छ चाँदनी छिटक रही थी । उस तरफ देखकर पिताकी दृष्टि आकर्षित करते हुए मनोरमाने कहा, “बापूजी, ओस पत्नी गुरु हो गई है, बस, उठिए अब ।”

आशु बाबू बोले, “बह लो, उठता हूँ गिटिया ।”

अग्निनाथने कहा, “शिवानी नाम बहुत अच्छा है । शिवनाथ गुणी पुरुष है, इसीसे नाम भी मीठा दिया है, अपने नामके साथ मेल भी खूब मिलाया है ।”

आशु बाबू खिल उठे, बोले, “अजी ये शिवनाथ नहीं अग्निनाथ, ऊपरने वे ।” और एक तरफ आकाशकी ओर देखकर बोले, “आदि-कालके उस बूढ़े षट्कने दन दोनोंका सत्र तरफसे मेल कगनेके लिए आहार निद्रातत्र छोड़ दी थी । जीते रहो ।”

अकस्मात् अग्य सीधा होकर बैठ गया और दो-तीन तरफ सिर हिलाकर अपनी छोटी-छोटी आँतोंको यथाशक्ति पाटकर बोला, “अच्छा, आपसे एक प्रश्न कर सक्ता हूँ क्या ?”

कमलने कहा, “क्या प्रश्न ?”

अग्यने कहा, “आपके लिए सकोच नामकी तो काद गला है नदी, इसीसे पृष्ठता हूँ—शिवानी नाम तो अच्छा है, मगर, शिवनाथ बाबूके साथ क्या आपका वास्तवमें क्या हुआ है ?”

आशु बाबूना चेहरा म्याह पन गया, बोले, “यह क्या कह रहे हो अग्य बाबू !”

अग्निनाथने कहा, “तुम पागल हो गये हो ?”

हरेद्रन कहा, “भूट” (जगली) ।

अग्यने कहा, “आप तो जानते ह, मेरे आँगवाका धृग लिहाज नहीं ।”

हरेद्रने कहा, “धृग धृगचा किसी तरहका भी नहीं । पर हम लोगोंका सा है ।”

कमल लेकिन हँसने लगी। जैसे यह कोई बड़े विनोदकी बात हो। उस कहा, इसम नाराज होनेकी कौन सी बात है हरेद्र बाबू ? मैं बताती हूँ अक्ष बाबू। त्रिलकुल कुछ हुआ ही न हो, सो बात नहीं। ब्याह जैसी कोई बात हुआ जरूर थी। जो लोग देखने आये थे, वे लगे हँसने। बोले, यह ब्याह ही नहीं,—घोखा है। इनसे पूछनेपर इन्होंने कहा, 'तैव मतसे ब्याह हुआ तं इसमें चिन्ताकी कौन-सी बात है ?'

अविनाश सुनकर दु खित हुए, उन्होंने कहा, "लेकिन शैव विवाह तो अ हमारे समाजमें होता नहीं न, इसलिए अगर ये किसी दिन 'नहीं हुआ' कहकर उसे उडा देना चाह, तो प्रमाणित करने लायक तुम्हारे पास कुछ रह नहीं जाता कमल ।"

कमलने शिवनाथकी तरफ देखकर कहा, "क्या जी, करोगे क्या तुम ऐसा किसी दिन ?"

शिवनाथने कुछ जवाब नहीं दिया, वह पहलेकी तरह उदास और गम्भीर चेहरा लिये बैठ रहा। तब कमलने हँसीके बहाने माथेपर हाथ मारकर कहा— "हाथ रे भाग्य ! ये जायँगे 'नहीं हुआ' कहकर अस्वीकार करने और मैं जाऊँगी उसीको 'हुआ है' कहकर दूसरोके पास न्याय कराने ? उसके पहले गलेमें पॉसी डालने लायक एक रस्सी भी न जुटेगी क्या ?"

अविनाशने कहा, "जुट सकती है, मगर आत्म हत्या तो पाप है ?"

कमलने कहा, "पाप नहीं खाक है। मगर ऐसा होगा नहीं। मैं आत्म हत्या करने जाऊँगी, यह मेरे विधाता भी नहीं सोच सकते।"

आगु बाबू कह उठे, "यह तो मनुष्यकी-सी बात है कमल ।"

कमलने उनकी तरफ देखकर गिकायत करनेसे दगसे कहा, "देखिए तो अविनाश बाबूका अन्याय ।" फिर शिवनाथकी तरफ इशारा करके कहा, "ये करेंगे मुझे अस्वीकार, और फिर मैं जाऊँगी गरदन पकड़के इनसे स्वीकार कराने ? सत्य तो झूठ जायगा, और जिस अनुष्ठानको मानती नहीं, उसीकी रस्सी लेकर इहें बाँधना चाहूँगी मैं ? मैं करूँगी ऐसा काम ?" कहते कहते उसकी दोनों आँखें चमक उठीं।

आगु बाबूने आहिस्तेसे कहा, "शिवानी, ससारमें सत्य ही उडा है, इस बातको हम सभी मानते हैं, पर अनुष्ठान भी तो मिथ्या नहीं है ?"

कमलने कहा, “मिथ्या तो वह नहीं रही म। जैसे कि प्राण भी सत्य है और देह भी है,—लेकिन प्राण जय निरल जात हैं तव ?”

गनोरमाने पिताका हाथ रलीचने हुए कहा, “रापूजी, बहुत ज्यादा ओस पढने लगेगी, अर बिना उठे काम नहीं चलेगा।”

“अभी उठा, बिटिया।”

शिवनाथ सहसा खड़ा होकर बोला, “शिवानी, अर और देर मत करो।”

कमल इसी वक्त उठकर लड़ी ही गद और सबको नमस्कार करने वाली, “आप लोगोंसे परिचय हुआ मानो सिर्फ रहस्य करनेने ही लिए। कुछ खयाल न करें।”

शिवनाथने इतनी देर बाद अर जरा हँसी आइ, कहा, “बहस ही सिर्फ की शिवानी, सीखा कुछ भी नहा ?”

कमलने विस्मयके स्वरमें कहा, “नहीं। मगर सीखनेको या ही क्या, मुझे तो कुछ खयाल नहीं पडता।”

शिवनाथने कहा, “खयाल पडनेको बात भी नहीं थी, वह ओटका ओटमें ही रह गया। दो सने तो आगु गानूके जराप्रस्त वृद्धे मनके प्रति जरा श्रद्धा रखना सीखना। उससे उठकर सीखनेको और कुछ नहीं है।”

कमलने विस्मयके साथ कहा, “यह तुम कह क्या रहे हो आन ?”

शिवनाथने जवाब नहीं दिया, फिरसे सबको नमस्कार करन कहा, “चलो।”

आद्य गानूने एक गदरी साँस लेकर कहा, “आश्चर्य है।”

७

आश्चर्य तो है ही। इतने सिवा मनकी बात व्यक्त करनेने लिए और शर ही मौन-गा या ? साम्प्रमें, वे दोनों चने क्या गये एर अति आश्चर्य जनक नाटकके बीचके ही अन्तमें यवनिना डाल गये,—परदेके उर पार विस्मयकी न जाने किती बात अज्ञात रह गई। सभीन मनम यही एक बात उधर पुष्प मचाने लगी और सभीको ऐसा भावम हुआ भागा इसलिए वे यहाँ आये थे। आकाशमें चन्द्रमा उदित हुआ है, हमन्त कनुको ओससे भागी हुए चाँदनाथ पालर राजमहल्का सखद सगमरमर मायापुत्री भाति उन्नासित हो उग है, पर उधर किशानी दृष्टि भी नहीं है।

मनोरमाने कहा, “अब नहीं उठोगे तो सचमुच तुम्हारी तनीयत खराब हो जायगी ग़ापूजी।”

अविनाशने कहा, “ओस पड़ रही है, उठिए।”

समने सन उठके सडे हो गये। पाटकके ग़ाहर आशु बाबूकी ग़डी मोटर सडी थी, पर अक्षय हरेद्रके तोंगेग़ालेका पता नहीं था ? शायद इस ग़ीचमें वह ज्यादा किरायेकी सवारी पाकर चम्पत हो गया था। लिहाजा, किसी तरह सट-सटाकर सबको मोटरमें ही ग़ैठना पडा। कुछ देरतक सन चुप रहे, अन्तमें ग़ात की सग़से पहले अविनाशने। वे ग़ोले, “शिवनाथने झूठ कहा था। कमल हरगिज किसी दासीकी लटकी नहीं है। असम्भव है।” कहकर वे मनोरमाके मुँहकी ओर देखने लगे।

मनोरमाके मनमें भी ठीक यही प्रश्न उठ रहा था, पर वह मौन रही। अक्षयने कहा, “झूठ बोलनेका कारण ? खीरा यह परिचय ता ग़ौरवना नहीं है अविनाश ग़ाबू।”

अविनाशने कहा, “यही तो सोच रहा हूँ।”

अक्षयने कहा, “आप लोग अचम्भेमें आ गये, पर र्म नहीं आया। यह सब शिवनाथकी प्रतिध्वनि है। इसीसे उसकी ग़ातोंमें ‘ग़ैवाडो’ (ग़हादुरीका डौल) ग़हुत ज्यादा था, चीज कुछ नहा थी। असल और नकल जान लेता हूँ। इतना आसान नहा है मुझे धारता देना।”

हरेद्र बोल उठा, “बाप रे! आपनो धोरता देना ? एकदम मानोपॉली (एकाधिपत्य) पर हस्तनेप ?”

अक्षयने उसपर एक तीव्र क्रुद्ध दृष्टि डालकर कहा, “म दावेके साथ कह सग़ता हूँ कि उसमें उच्च धरानेका ‘कलचर’ (ससृष्टि) पाद भर नहा है। औरता के मुँठसे ये सब ग़ात ‘इमॉरल’ (अनैतिक) ही नहीं, अश्लील भी हैं।”

अविनाशने प्रतिग़ादके तौरपर कहा, “यह दूसरी ग़ात है। उसकी सग़ ग़ातों औरतोंने मुँहसे ठीक शोभन न लगे पर उह अश्लील नहीं कह सकते अक्षय।”

अक्षयने कठोर होकर कहा, “वे दोनों ही एकसे हैं अविनाश ग़ाबू। देरता नहीं, ब्याह इन लोगोंके लिप तमाशेकी चीज बन ग़द है। जब समने आकर कहा कि यह ब्याह नहीं है, धोरतेग़ाजी है, तब उहोंने सिफ़ हँसने कहा, ऐसी बात है क्या ? उनका एन्थील्यूट इन्टिफ़रेन्स (सम्पूर्ण उपेता भाव) आप लोगोंने

क्या नोटिस नहीं किया ? यह क्या कभी कुलीन कन्याएँ लिए शोभा दे सकता है, या कभी सम्भव हो सकता है ?”

रात उसकी सच थी, इसीसे सप सुप रहे। आगु बाबू अनंतक कुठ बोले नहीं थे। सप कुछ ये सुन रहे थे, किंतु ये, अपनी ही उधेड उनमें। सहसा इस सत-धतासे उनका ध्यान भग हुआ। धीरे धीरे बोले, “विनाहवे प्रति नहीं गल्कि उसके ‘फाम’ (तरीजे) पर शायद कमलनी उतनी आस्था नहीं है। अनुग्रान कुठ भी हो, जो हो गया सो उसने लिए ठीक है। पतिसे कहा, “ये लोग कहते हैं, यह, ब्याह धोगेराजी है।” पतिने कहा, “विगाह हुआ है हम लोगोंने गैर मतसे।” कमल खुश होकर बोली, “शिरने साथ ब्याह अगर शीव मतसे हुआ हो तो वही अच्छा है।” रात मुझे ऐसी मीठी लगी अविनाश बाबू कि पृष्ठिए नहा।”

भीतर ही भीतर अविनाशना मन भी इसी स्वरमें बँधा था, ये बोले, “और उसी शिरनाथने मुँहकी तरफ दंगरर हँसते हँसते पृष्ठना, ‘क्योंजी, करोगे क्या तुम ऐसा ? दोगे क्या मुझे धोरना ?’ उसने बाद तो कितनी ही रातें हो गई आगु बाबू, लेफिन उसकी गूँज अमीतर मेरे कानोंमें गूँज रही है।”

प्रत्युत्तरम आगु बाबूने हँसकर सिफ सिर हिला दिया।

अविनाशने कहा, “और उसका वह शिवानी नाम ? वह क्या कम मोठा है ?”

अधरसे मानो सहा नहीं गया, वह बोला, “आप लोगोंने तो मुझे दग कर दिया अरिनाग रागु ! उनका जो कुठ है सब मगुर है। यहाँतक कि शिवनाथने रामने साथ एक ‘नो’ जोड देनेसे भी मधु क्षरने लगा।”

हरेद्रने कहा, “सिफ ‘ना’ जोड देनेसे ही नहीं होता अन्ध बाबू, आपकी स्त्रीने ‘अन्धनी’ कहकर पुकारनेसे ही क्या मधु क्षरने लगेगा ?”

उसकी रात सुनकर सभी हँस पड़, यहाँतक कि मनोरमाने भी रास्तेकी तरफ मुँह फेरकर हँसी ठिपाइ।

अन्ध मारे शोधसे पागल-सा हो उठा। गरजकर बोला “हरेद्र बाबू, ‘दोष्ट यू गो दू फार’ (बहुत ज्यादा मत बतौ।) किसी उच्च शीय महिलाके साथ एंगी स्त्रियोंकी तुलना इशारेमें करनेसे भी मैं अत्यन्त अपमानजनक समझता हूँ, सो आपसे स्पष्ट कहे देता हूँ।”

हरेद्र चुप रहा। बहस करनेका उसका स्वभाव न था और न अपनी युक्तियोंसे प्रमाणित करनेकी ही उसकी आदत थी। नीचमें अचानक कुछ कहकर वह ऐसा नीरप हो जाता कि हजार कोंचनेपर भी कोढ़ उसके मुँहसे एक शब्द भी नहीं निकलवा सकता। हुआ भी ऐसा ही। अन्ध बच्चे हुए रास्तेमें शिवानीको छोड़कर हरेद्रने पीछे पड़ गया। वह कहता रहा कि उसने शिष्ट महिलाका शिष्टताहीन गन्दा मजाक उड़ाया है। शिवनाथकी शैवमतसे विनाहिता स्त्रीकी बातमें और 'यवहारम आभिजात्यकी बू तक नहीं, बल्कि उसकी शिष्टा और सरकारसे जघन्य हीनताका ही परिचय मिलता है,—आदि बातोंको यह अत्यन्त अप्रिय तरीकेसे बार-बार प्रमाणित करने लगा। इतनेमें गाड़ी आशु बाबूक दरवाजेपर आकर रूढ़ी हो गई, फिर अविनाश तथा और सड़कोंको उतारकर हरेद्र अन्ध आदिको पहुँचाने चली गई।

आशु बाबू उद्विग्न होकर बोले, "गाड़ीमें दोनोंके दोनों कहीं मार-पीटन कर बैठें।"

अविनाशने कहा, "इसका कोढ़ डर नहीं। यह तो रोजमराकी बात है, और इससे उनकी मित्रतामें कोढ़ पत्र नहीं आता।"

भीतर जाकर चाय पीने बैठे तो आशु बाबूने धीरेसे कहा, "अन्ध बाबूकी प्रकृति प्रबुद्धी कठोर है। इससे बदनर कठोर बात उनकी जगानपर और क्या आती?" सहसा लड़कीकी ओर देखकर बोले, "अच्छा मणि, कमलने सम्बन्धमें तुम्हारी पहलेकी धारणा क्या आज भी नहीं बदली?"

"कैसी धारणा बापूजी?"

"यही, जैसे,—जैसे—"

"मगर मेरी धारणासे तुम लोगोंको क्या काम बापूजी?"

पिताने फिर कुछ नहीं कहा। व जानते थे कि इस स्त्रीके सम्बन्धम मनोरमा का चित्त अत्यन्त विमुख है। यह बात उह पीडा पहुँचाती है, पर इस बातको लेकर नई तरहसे आलोचना करने बैठना उनके लिए जिस तरह अप्रिय है, वैसे ही निष्फल भी है।

अकस्मात् अविनाश बोल उठे, "मगर एक विषयपर आप लोगोंने शायद ध्यान नहीं दिया। वह है शिवनाथके अन्तिम शब्द। कमलका सब कुछ ही अगर दूसरेकी प्रतिध्वनि मात्र होता तो यह बात शिवनाथको कहनेकी जरूरत

नहीं पड़ती कि यह आपपर भ्रद्धा रखना सीते।" इतना बहकर उसने खुद भी गम्भीर भ्रद्धाके साथ आशु बाबूके मुँहकी तरफ देगकर कहा, "कहनम क्या हज है चास्ताम आप जैसे मक्तिने पात्र ससारमें हैं कितने ? सिफ इसीक लिए मैं उसके अनेक अपराध क्षमा कर सजता हूँ आशु बाबू, कि इतनेसे मामूली परिचयमें शिवनाथन इतने गड़े सत्यको हृदयगम कर लिया।"

सुनकर आशु बाबू चंचल हो उठे। उनका विपुल कलेवर लज्जासे मानो सजुचित हो गया। मनोगमाने दृतत्रतासे दोर्जा आरें भरकर वनाश मुँहकी तरफ मुँह उठाकर देखा और कहा, "अविनाश बाबू, यहींपर उनने साथ उननी श्रीका सचमुच भेद है। आज मैं जान गद कि उस दिन थोता और साधुन मोंगनके बहाने वह मेरा सिफ उपहास ही कर गइ थी। उस दिनका उसका अभिनय मैं समझ नहा सजी थी।—पर उसका यह सत्र छल-छन्द, सत्र व्यस्य व्यथ है बापूजी, अगर तुम्ह वह आज सत्रसे बडा जााकर न पहचान सजी हो।"

आशु बाबू व्याकुल हो उठे, "तू यह सत्र क्या कह रही है बेनी।"

अविनाशने कहा, "अतिशयोक्ति ता इसमें कहीं भी नहा आशु बाबू। जाते वक्त शिवनाथने यही बात अपना स्त्रीसे कहनेकी कोशिस की थी। आज उसने बात नहा की, पर उसकी इस एक ही बातसे मुझे मालूम हो गया है कि उन दोर्जामें परम्पर यहीं सत्रसे बडा मतभेद है।"

आशु बाबूने कहा, "ऐसा अगर हो तो शिवनाथका ही दोष है, कमलका नहीं।"

मनोगमा सहसा गल उठी, "यह तो तुम्हीं जानो बापूजी, कि तुमने किन आँसोंसे उसे देखा है, मगर तुम जैसे मनुष्यका जो भ्रद्धा नही कर सकती उसे क्या कमी क्षमा किया जा सजता है।"

आशु बाबूने लडकीर चोड़की तरफ देलकर कहा, "क्या बनी ? मुझपर अभ्रद्धा करनेका भाव तो उसने एक भी आचरणसे जाहिर नहीं हुआ।"

"पर भ्रद्धा तो नहीं दिखाइ दी ?"

आशु बाबूने कहा, "दिखाइ देनेकी कोइ बात भी नहीं थी गणि। बल्कि दिखाइ देती तो उसका यह मिथ्याचार होता। मेरे अन्दर जिस चाजको तुम लोग शक्तिसे बल्लता समझकर मुग्ध होत हा, उसकी नजरमें वह खालिस शक्तिनी कमी है। यहा बात उसने मुझसे कही है कि कमजोर आदमीको स्त्रीके

सहारे प्यार मिया जा सकता है,—परन्तु मेरा जो मूल्य उसकी दृष्टिमें नहीं है, जबरदस्ती उसे देकर उसने मुझ भी नीचे नहीं गिराया और न अपना ही अपमान किया। यही तो ठीक है, इशम व्यथित होनेकी तो कोई बात ही नहीं मणि।”

अतएव अजित अन्यमनस्क-या था, इस बातपर उसने श्धर देगा। वह कुछ भी जानता नहा या और जान लेनेकी पुरसत भी उसे नहीं मिली थी। सारी बातें उसने लिए धुँधली-सी थी,—अब आगु बाबूने जो कुछ कहा, उससे भी कुछ स्पष्ट नहीं हुआ, फिर भी उसका मन मानो जाग उठा।

मनोरमा चुप रही, किन्तु अग्निाश बाबू उच्चेजनाके साथ पृठ उठे, “तो क्या फिर स्वाधत्यागना कोई मूल्य ही नहीं ?”

आगु बाबू हँस दिये, बोले, “प्रश्न ठीक प्रोपेसरोँ जैसा नहीं हुआ। जो भी हो,—उसके लिए उसका मूल्य नहीं है।”

“तो फिर आत्म समयमकी भी काइ कीमत नहीं ?”

“उसकी दृष्टिमें नहीं है। समय जहाँ अथहीन है वहाँ सिफ निष्पल आत्म पीडन है। और उसीको लेकर अपनेको बड़ा मानना सिफ अपनको ठगना नहीं, बल्कि दुनियाको ठगना है। कमलके मुँहसे जो कुछ सुना उससे मुझे लगा कि वह इसी बातको बार बार कहना चाहती है।” इतना कहकर वे क्षण भर मौन रहे, फिर बोले, “मालूम नहीं उसे कहाँसे यह धारणा मिली पर सहसा सुननेसे बड़ा आश्चर्य होता है।”

मनोरमा बोल उठी, “क्या आश्चर्य होता है ! सारे शरीरमें जलन नहीं होने लगती ? बापूजी, क्या कभी कोई भी बात तुम जोरके साथ नहीं कह सकते ? जो जिसके मनमें आवेगा, कहेगा और तुम उसपर हँस कह दोगे ?”

आगु बाबूने कहा, “हाँ तो नहीं कहा बेटी। लेकिन मनमें राग द्वेष भरकर विचार करोसे सिफ एक ही नहीं ठगाया जाता, दूसरा पक्ष भी ठगाया जाता है। जो बातें हम कमलके मुँहमें ढूँढ देना चाहते हैं, ठीक वे ही बातें उसने नहीं कहीं। उसने जो कुछ कहा उसका निष्कप शायद यही है कि इन लम्बे सस्कारोंमें सत्य समझकर जिस तत्त्वको हमने अपने खूनके अन्दर प्राप्त किया है, वह प्रश्नका सिफ एक ही पहलू है। मगर उसका दूसरा पहलू भी है। आँल मीचकर सिफ सिर हिला देनेसे ही कैसे चल सकता है मणि ?”

मनोरमाने कहा. “बापूजी, इतना काल बीत गया, भारतवर्षमें क्या उस

पहल्लो देग्नेवाला दूसरा कोइ हुआ ही नहीं ?”

उसने पिता जरा हँसकर बोले, “यह अत्यन्त प्राथकी बात है बेटी । नहीं तो तुम खुद भी अच्छी तरह जानती हो कि सिर्फ एक हमारे देशने ही नहीं, दुनियाके किसी भी देशने पुरखा, ‘शेष प्रश्न’ का जवाब नहीं दे गये हैं । दे गये हों ऐसा हो भी नहीं सकता क्योंकि तब तो फिर सृष्टि ही रूख जाती । इसके चलनेका कोइ अर्थ ही नहीं रह जाता ।”

सहसा उन्होंने देखा, अजित एकटक देखा रहा है । बोले, तुम शायद कुछ भी समझ नहीं रहे हो,—क्यों ?”

अजितके गरदन हिलानेपर आगु बाबूने घटनाका पूवापर समझाकर कहा, “अश्वपान जाने कैसी एक होममुण्डकीसी पवित्र जाग जला दी कि लोग उसकी तरफ देखना तो दूर रहा धुँके मार आँगुतक नहीं सोल सके । और मजा यह कि हम लोगोंका मामला है शिवनाथने विरुद्ध, और दण्ड दिया गया है कमलको । वे ये यहाँके एक प्रोपसर, शराब पीनेके अपराधम उनकी नौकरी गई, रुग्ण खीने त्यागकर घर ले आये कमलको । बोले ‘निवाह हुआ है शिव मतसे ।’ अश्वय बाबूने भीतर ही भीतर पता लगाकर जाना कि सत्र घोखा है । पूछा गया, ‘लडकी क्या कुलीन घरानेकी है ?’ शिवनाथन कहा, ‘वह उनके घरकी दासाकी कन्या है ।’ पूछा गया, ‘लडकी क्या शिक्षित है ?’ शिवनाथने जवाब दिया, ‘शिक्षाके लिए निवाह नहा किया, किया है रूपके लिए ।’ बात सुनी । कमलका अपराध मुझ कहीं हूँके नहा मिला अजित, और फिर उसीको हम लोगोंने सत्र ससगोंसे दूर कर दिया । हम लोगोंकी घृणा जाकर पडी सत्रसे उदकर उसीपर । और यही हुआ समाजना न्याय ।”

मनोरमाने कहा, “उसे क्या समाजके अदर बुला लेना चाहते हो बापूजी ?”

आगु बाबूने कहा, “भरे ही चाहनेसे आ जायगी क्या बेटी ? समाजमे अश्वय बाबू मा तो मौजूद हैं,—उहाना पत्र तो प्रचल है ।”

लकीने पूछा, ‘तुम अनेले होते तो बुला लेते शायद ?”

पिताने इसना स्पष्ट जवाब नहीं दिया, बोले, “बुलातेसे ही क्या सत्र आ जाया करते हैं बेटी ?”

अजितने कहा, “आश्वय तो यह है कि आपके साथ ही उनका सत्रसे ज्यादा विरोध है, और मजा यह कि आपका रोह उन्हें सत्रसे ज्यादा मिला है ।”

अभिनाशने कहा, “इसका कारण है अज्ञित ताबू । कमलन बारें हम लोग कुछ जानते नहीं, जानते हैं तो सिर्फ उसका मित्रोही मत्तो ! और जानते हैं उसके अग्रपुत्र बुरादके पहलूको । इसीसे उसकी बात सुननेसे हम डर भी लगता है और गुस्सा भी आता है कि अब गया शायद खन-कुउ !”

फिर आगु ताबूको उद्देश्य बरफे कहा लगे, “इसका शरीर निष्पाप है, मन निष्कलुप है, सन्देहको छायातक इसपर नहीं पडती, न भयना दाग ही लगता है । महादेवन लिए चाहे गिप हो चाहे अमृत, एक ही बात है,—बालें ही हिलगा रहेगा, पेटम नहीं जायगा । चाहे देनताओंका दल आ जाय और चाहे दैत्य दानन आकर घेर ल, ये निर्लिप्त निभिकार चित्त रहेंगे,—सिर्फ गठियाये पजेमे बचे रहें तो ये खुश ह । मगर हम लोगोंको ता—”

बात पूरी न हो पाइ कि अचानक आगु ताबू दोनों हाथ उठाकर उह राव दिया, बोले, “आगे अब और कुछ न कहिएगा, आपके पैरा पडता हूँ । लगातार एक युगका युग विलायतम रिता आया हूँ, वहाँ क्या क्रिया है क्या नहीं, सो खुद मुझे भी याद नहीं,—पर यह बात अभयने कानोंतक पहुँच गइ तो रौर नहीं । एफदम नाडी-नासतक हँकर निकाल लायेगा । तब क्या होगा ?”

अभिनाशने आश्चर्यन साथ कहा, “आप क्या विलायत भी गये थे ?”

आगु ताबूने कहा, “हाँ, वह कुनम भी मुसस हो चुका है !”

मनोरमाने कहा, “बचपासे ही तापुजीका सारा णुवेशा यारोपम हुआ है । तापुजी वैरिस्टर हैं, बापूजी डॉक्टर है ।”

अभिनाशने कहा, “कहती क्या हा ?”

आगु ताबू उसी तरह कह उठे, “टरनेकी कोइ बात नहीं, डरनेकी कोइ बात नहीं प्रोफेसर, लिखा पला सब भूल गया हूँ । दीघकालते यायावर वृत्ति अरुलम्बन करने लडकीने साथ जहाँ तहाँ लाग डार लिये घूमा किया है, और जैसा कि आपने कहा, सारा चित्त-मट बिलकुल धुल पुछकर निष्पाप निष्कलुप हो गया है, धन्या-अन्या वही कुउ भी बाकी नहीं है । रौर, जो भी हो, इम बातको अभय ताबूके कगगोचर न कीजिएगा ।”

१ वह भ्रमणवृत्ति जिसमें घर बार साथ रहता है Nomad = वनजारा या तरुप भ्रमणकारी ।

अग्निनाशने हँसते हुए कहा, “अ त्वसे आपणो त्वा डर है ?”

आगु तानूने उसी वक्त खौफार किया, “हाँ। एक तो गटियाने मारे यों ही जीना कठिन है, उसपर उनका वहाँ कुतूहल जाग्रत हो गया तो निलकु ही मारा जाऊँगा।”

मनोरमा गुस्तेमें भी हँस दी, बोली, “तापूजी, यह तुम्हारा अन्याय है।”

तापूजीने कहा, “अन्याय मले ही हो बेगी, पर आत्म रक्षाका सभीको अधिकार है।”

सुनकर सबने स्र हँस पड़े। मनोरमाने पूछा, “जच्छा तापूजी, मनुष्य समाजमें क्या अ उप तानू जैसे जादमीका तुम जरूरत ही नहीं समझते ?”

आगु बाबूने कहा, “तुम्हारा यह ‘जरूरत’ शब्द तो बेगी ससारम स्रसे ज्यादा गुणालेनी चाज है। पहले इसनी मीमासा हो जाय, तत्र तुम्हारे प्रश्नका यथाथ उत्तर दिया जाय। मगर यह तो कभी होनेना नहीं। हमेशासे उसको लेकर तक चल्ता आ रहा है, मीमासा अतःफ हुद ही नर्हा।”

मनोरमा क्षुण्ण होकर बोली, “तुम स्र बातोंके जगारमें ऐम ही वचकर नेकल जाते हो तापूजी, कभी साफ-साफ कुछ कहते ही नहीं। यह तुम्हारा बडा अन्याय है।”

आगु बाबू हँसते हँसते बोले, “साफ कहने लायक मिया बुद्धि तेर बापमें नहीं है, मणि,—यह तेरी स्रदीर है। अत्र सामग्या मेर उपर गुस्सा करनेसे क्या लाभ है, त्वा ?”

अजित अचानक उठ खडा हुआ, बोला, “सिरम दद हो रहा है, जरा गहर घूम आऊँ।”

आगु बाबू चचल होकर बोल उठे, “सिरम इसमें कीद अपराध नहीं बेटा,—मगर इतनी ओसम ? तेसे अँरेमें ?”

दाँगाकी एक खुली मिटनीसे बहुत सी सिग्ध जोल्का नाचन नार्पठपर सिरार रहा था, अजितने उसको ओर उनका ध्यान आकषित करते हुए कहा, “ओस शायद थोड़ी बहुत पडती होगी, पर अँथेरा नहीं है। जाऊँ, जरा घूम आऊँ।”

“पर पैदल मत घूमना।”

“नहीं। गाडामें ही जाऊँगा।”

“गाडीका ढकना च्चा दना अजित, कहीं आत न लग जाय।”

अजित उधर राजी हो गया। आशु बाबूने कहा, “तो फिर अविनाश बाबूको भी उधरके उधर पहुँचाते जाना। लेकिन लोटनेमें देर न हो।”

“अच्छा”, कहकर अजित अविनाश बाबूको साथ लेकर बाहर चला गया। उसके चले जानेपर आशु बाबूने मुसकराते हुए कहा, “देखता हूँ, इस लडकेकी मोटरम घूमनेकी सनक अभी गई नहीं है। ऐसी ठण्डम चल दिया घूमनेको।”



पन्द्रह दिन बादकी बात है। शाम होनेमें देर नहीं है, आशु बाबू और मनोरमाको अविनाश बाबूने घर उतारकर अजित अनेला घूमने निकला है। ऐसा बड़ा अफसर क्रिया करता है। जा सड़क गहरने उत्तरसे आकर कॉलेजके सामनेने कुछ दूर जाने सीधी पश्चिमकी ओर चली गई है, उसीपर एक निराली जगहमें सहसा उच्च नारी ऋणसे अपना नाम सुनकर अजित चाक पड़ा। गाड़ी रोक दी। देखा, शिवनाथकी स्त्री है। सड़कके किनारे टूटा फूटा पुराने जमानेका एक दुमजिग मकान है, सामने उसने वैसा ही श्रोहीन फूलोका बगीचा है और उसीके एक किनारे गड़ी कमल हाथ उठाकर उसे पुनार रही है। मोटर ठहरने पर वह उसने पास आ गई, बोली, “एक दिन और भी आप ऐसे ही अनेले जा रहे थे, मैंने किना पुरकार, पर आप सुन ही नहीं पाये। पावेंगे कैसे ? बाप रे बाप ! इतने जोरसे जाते हैं,—देखनेसे मालूम होता है जैसे दम रुक जायगा। आपको डर नहीं लगता ?”

अजित गाड़ीसे नीचे उतर आया, बोला, “आप अनेली कैसे ? शिवनाथ बाबू कहाँ हैं ?”

कमलने कहा, “वे घरपर नहीं हैं। पर आप भी अनेते कैसे निकले ? उस दिन भी देखा था, सायम कोद नहा था।”

अजितने कहा, “नहीं। इधर कई दिनोंसे आशु बाबूकी तरीयत ठीक नहीं थी, इसीसे वे कोई निकले नहीं। आज उन लोगोंको अविनाश बाबूके यहाँ उतारकर मैं घूमने निकला हूँ। गामको तो मुझे घरमें रहना अच्छा नहीं लगता।”

कमलने कहा, “मेरा भी यही हाल है। मगर ‘अच्छा नहीं लगता,’ वहनेसे ही तो नहीं चलता,—गरीबोंको तो बहुत कुछ ‘अच्छा लगाना’ पड़ता है।” कहकर वह अजितके मुँहकी तरफ देखने लगी, फिर सहसा बोल उठी, “ले

चलियागा मुझे साथमें ? जरा धूम आऊँगी ।”

अजित मुसीबतमें पट गया । साथम आज शोषरतक नहीं था और यह वह पहले ही सुन चुका था कि शिवनाथ बाबू भी घरपर नहीं हैं, मगर ‘ना’ भी कहते नहीं जनता । जरा कुछ दुमिधाने साथ गेला, “यहाँ आपका साथी सगी भी शायद कोई नहीं है ?”

कमलने कहा, “मुनो इनकी रात ! साथी-सगी कहाँ पाऊँ ? देण नहीं रहे हैं मुहल्लेकी दशा । यह स्थान गहरने बिल्कुल बाहर ही समक्षिए । पास ही शाहगजर्म, या कुठ ऐसा ही नाम है, कहीं चमड़ेका कारखाना है,—हमारे पडासो घर मोची ही मोची है । कारखाने जाते ह, आते ह, शराम पीते ह और सारी रात हल्ला मचाते हैं,—यही मेरा मुहल्ला है ।”

अजितने पृछा, “इधर गरीब लोग ह ही नहीं क्या ?”

कमलने कहा, “शायद नहीं ह । और हों तो क्या,—मुझे वे अन्ने घर क्यों जाने आने देंगे ? तब तो कभी कभी जरा बहुत सूना सूना-सा मादूम होता था आप लोगोंने यहाँ भी चली जा समतो थी ।”—कहते-कहते वह गाडाने खुले दरवानेसे खुद ही भीतर जाकर बैठ गई और बोली, “आइए, मैं बहुत दिनोंसे माग्पर नहीं चडी । लेमिन आज मुझे बहुत दूरतर घुमा लाना होता ।”

अजितने कुछ सूझा नहीं कि क्या करना चाहिए । समोत्रेने साथ गेला, “ज्यादा दूर जानेने रात बहुत हो जायगी । शिवनाथ बाबू घर लौटकर आपको न देखेंगे तो शायद कुछ गप्पाल करेंगे ।”

कमलने कहा, “नहीं, रागाल करनेकी कोई रात ही नहीं ।”

अजितने कहा, “डाइररके पास न बैठकर पाउे बैगिए न ?”

कमलने कहा, “डाइरर तो आप खुद ही हैं । पास रिना बैठे बात कैसे करूँगी ? इतनी दूर पीठे बैठकर मुँह बन्द करने कहीं जाया जाता है ? आप बैठिए, अर देर न कीजिए ।”

अजित बैठ गया और गाडी चलाने लगा । रास्ता सुन्दर और निजन ह, कदानित् एक भाष आदमा दिग्गाइ द जाता है,—यस । गाडीकी तेज चाल क्रमश और तेज होने लगी । कमलने कहा, “आप तेज चलाना पसन्द करते हैं, न ?”

अजितने कहा, “हाँ ।”

अजितने कहा, “तब फिर ?”

कमलने कहा, “तब भी उससे यह सारित नहीं होता कि जो आनन्द आज मिला है वह नहीं मिला।”

अगली बार अजित हँस दिया। बोला, “सारित नहीं होता, मगर यह सारित जरूर होता है कि आप कम तार्किक नहा हैं। आपके साथ बातोंमें जीतना मुश्किल है।”

“अर्थात् जिसको कि वृत्त-तार्किक कहते हैं, मैं वही हूँ ?”

अजितने कहा, “नहा, सो बात नहीं, कि तु यह तो आप जरूर ही मानती होंगी कि अंतिम फल जिसका दुःख ही समाप्त होता है, उसके आरम्भमें चाहे कितना ही आनन्द क्यों न हो, उसे सचमुचका आनन्द भाग नहीं कहा जा सकता ?”

कमलने कहा, “नहीं, मैं नहा मानती। मैं मानना चाहती हूँ कि जितना पाऊँ उसीको सच्चा समझकर मान सकूँ। दुःखका दाह मरे बीते हुए सुखकी आसनी बूँदोंको सुरा न डाले। वह चाहे कितना भी क्यों न हो और परिणाम उसका ससारकी दृष्टिमें चाहे कितना ही तुच्छ क्यों न गिना जाय, फिर भी मैं उसे अस्वीकार न करूँ। एक दिनका आनन्द दूसरे दिनके निरा नन्दके सामने धरमाये नहा।” इतना कहकर वह क्षण भर स्तब्ध रही, फिर कहने लगी, “इस जीवनमें सुख दुःख दोनोंमेंसे कोई भी सत्य नहीं अजित बाबू, सत्य है सिर्फ उनके चलक्षण, सत्य है सिर्फ उनके चले जानेका छन्द मात्र। बुद्धि और हृदयसे उनको पाना ही तो यथाथका पाना है। क्या यही ठीक नहा है ?”

इस प्रश्नका उत्तर अजित न दे सका, किन्तु उसे लगा कि अधकारमें भी दूसरेकी दोनों आँख अत्यन्त आग्रहने साथ उसकी तरफ देख रही हैं। मानो वह निश्चित कोई बात सुनना चाहती है।

“क्यों, जवाब नहीं दिया ?”

“आपकी बातें खूब साफ समझमें नहीं आईं।”

“नहीं आईं ?”

“नहीं।”

उसने एक दबी साँस ली, और फिर धीरे धीरे कहा, “इसके मानी यह कि साफ-साफ समझनेका अभी आपका समय नहा आया। अगर अभी आये तो

उस समय मेरी याद कर लीजिएगा । करेंगे ?”

अजितने कहा, “करूँगा ।”

गाड़ी आकर दूरे फूटे फूल-बागचे सामने गड़ी हो गई । अजित दरवाजा खोलकर खुद सड़कपर सड़ा हो गया । घरकी तरफ देखकर बोला, “कहा भी जरा उजाला नहा मालूम होता । मालूम होता है, सब सो गये ।”

कमलने उत्तरते हुए कहा, “शायद ।”

अजितने कहा, “देखिए, आपकी ज्यादाती है न ! किसीको जता भी नहीं आइ,—शिवनाथ बाबू न जाने कितनी दुःखिन्ताम पड़े होंगे ।

कमलने रुहा, “हाँ, वे दुःखिताके वाससे सो गये हैं ।”

अजितने कहा, “ऐसे अँधेरेमें जायँगी कैसे ? गाड़ीमें एक हाथ लालटेन है, उसे जलाकर साथ चले ?”

कमलने अत्यन्त खुश हाकर कहा, “तब तो फिर कटना ही क्या है अजित बाबू । आइए-आइए । आपको जरा चाय पिला दूँ ।”

अजितने अनुनयने स्वरमें कहा, “और जो भी हुकम करगी, तामील करूँगा, मगर इतनी रातमें चाय पीनेकी आज्ञा न कीजिए । चलिए, आपको पहुँचाए आता हूँ ।”

बाहरका दरवाजा हाथ लगाते ही खुल गया । भीतरके बरामदेमें वहाँकी एक दासी सो रही थी, वह आइट पा जागकर बैठ गई । दोमजिला मकान है । उपर छोट-छोटे दो कमरे हैं । अत्यन्त सकीण जीना है, उसने नीचे हरिनेन लालटेन टिमटिमा रही है । उसे हाथमें उठाकर कमलने अजितको उपर बुलाया । वह मारे सकोचने व्याकुल होकर बोला, “नहीं नहाँ, अब जाता हूँ । बहुत रात हो गई है ।”

कमल जिद करने लगी, “सा नहीं होनेका, आइए ।”

अजित फिर भी दुविधा कर रहा है, देखकर कमलने कहा, “आप सोच रहे ह, आनेसे शिवनाथ बाबूके सामने उड़ी शर्मकी बात होगी । मगर यह क्यों नहीं सोचते कि नहीं आनेसे भेर लिए तो और भी ब्यादा लज्जाकी बात होगी ? आइए । नीचेसे ही इस तरह अनादरने साथ आपको जाने देनेसे रातको मुझे नींद न आयेगी ।”

अजितने ऊपर आकर देखा कि घरमें चीन बस्त नहींने बराबर है । एक कम

कीमतरी आराम बुरसी, एक छोटी-सी टेबिल, एक स्टूल, बंद ट्रक, एक मिनारे पुरानी लोहेकी साट और उसपर प्रिस्तर तकियाका ढेर पडा हुआ है। ये ऐसे बेढगे तौरपर रखे हैं, जैसे साधारणत उन सभ्य कोई जरूरत ही नहीं पडती। घर सूना है, शिवनाथ बानू नहीं ह।

अजितने आश्वय हुआ, कि-तु मन ही मन उसने सन्तोपनी सॉस ली, बोला, “कहाँ, ये तो अभीतक आये नहीं ह।”

कमलने कहा, “नहीं।”

अजितने कहा, “आज शायद हम लोगोंके यहाँ उनका गाना-बचाना सूख जोरमे चल रहा होगा।”

“कैसे जाना ?”

“कल परसों दो दिन गये गहा हैं। आज उन्हें पाकर आगु गानू शायद सारी धृति पृति करये ले रहे हैं।”

कमलने पूछा, “रोज जाते ह, इधर दो दिनसे क्यों नहीं ?”

अजितने कहा, “इसकी खबर हम लोगोंसे आपको ही ज्यादा होगी। सम्भवत आपको छोडा गहा होगा, इसीसे नहीं जा पाये होंगे। नहा तो उन्हें देखनेसे ऐसा तो नहा मायूम होता कि अपनी इच्छासे गैरहाजिर हुए हों।”

कमल कुछ क्षण उसने चेहरेकी तरफ देखकर अकस्मात् हँस दी। बोली, “यह किसे मालूम कि ये वहाँ जाते ह गानेके लिए। वास्तवम किसी आदमाको पकडकर रखना गण अनाप है। है न ?”

अजितने कहा, “चरुर।”

कमलने कहा, “ये भले आदमी ह, इसीसे। अच्छा, आपको अगर कोई पकडने रखता, तो आप रहते ?”

अजितने कहा, “नहीं। इसने सिंग मुझे पकडने रखनेवाला भी तो नहा है ?”

कमल हँसती हुई दो तीन बार थिर हिलाकर बोली, “यही तो मुश्किल है। पकडके रखनेवाला कौन कहीं छिपा रहता है, जाननेका उपाय ही नहीं। यही देखिए न, मैंने जो शामसे आपको पकड रक्खा है, इसकी आपको खबर ही नहीं। गैर रहने दीजिए, सभी गतोंपर तब करनेमे लाभ क्या होगा ? मगर बाता ही-बातोंमें देर हुई जा रही है। जाऊँ म, उस कमरेमेसे आपके लिए चाय

रना लौं ?”

“और यहाँ मैं अन्ध चुप मार बैठा रहूँ ? सो नहा होनेना ।”

“होनेसी जरूरत भी क्या है ?” इतना कहकर कमल उभे अपने साथ दूधरे फमस से गद् और उमर बैठनर लिए नया आसन दिखाकर बोला, ‘बैठिए । पर चित्रित है उस दुनियासी बात, अजित बनू । उस दिन इस आसनना अपनी पसन्ने गरीदत वक्त सोचा था कि इस पिछनर फिसासे बैन्नेने लिए कहूँगी— लेना वह बात तो और फिसासे कही नग जा सकती अजित गनू, फिर भी आपनो बैठनर लिए पिछा ही दिया । भला बतलादण, कितने से समयना अन्तर है यह ।”

इसका मानी क्या हुए, सोचना बड़ा मुश्किल है । हो सकता है कि बहुत ही नामान हा, और यह भी सम्भव है कि उससे भा ज्यादा दुल्ह हो । फिर भी, अजित मारे गमन मुग्न हो उठा । कहनेमें हिचकिचाया, मगर फिर भी बोला, “उस बैन्नेने दिया क्यों नहीं ?”

कमलने क्या, “यहो तो आदमाकी जरूरत भूल है । साचता है, सब कुछ उनाक अपने हाथमें है, लेकिन कहीं पैसा हुआ कौन सारा हिसाब कितान उल्ट-पल्ट दता है, काइ पता ही पदा । आपकी चायमें क्या चीना ज्यादा टाड़ै ?”

अजितन कहा, ‘डाल दीजिए । चानी आर दूधने लोभसे ही तो मैं चाय पीता हूँ, नग तो उमने मुने जोर लिचक्या नहा ।”

कमलने कहा, “म भी ऐसी ही हूँ । क्या लोग यह दिया करते ह, मरी तो कुछ समयमें ही नहा जाता । और मचा यह कि दमीक दगम मेरा जन्म है ।”

‘आपका जन्म भूमि क्या आसामम है ?”

‘मिफ आसामम ही नगी, एकदम चायन रगाचम ।”

‘ता भी चायम ननि नहा ?”

“दिनुल् नहा । लोग द दत ह ता पा लेती हूँ, मिफ गराफतने गतिर ।”

अजित चायना गाला हाथम न चारा तरफ ग्यकर बोला, “यह चायद आपका रमाहर है ?”

कमलन क्या “हाँ ।”

अजितन पूछा, “आर खुद ही बनाता होंग ? मगर कहीं, जान तो बनाने

का का नहा भिग ?”

कमलने कहा, “नहीं।”

अजित उगा हाँकने लगा। कमल उसके मुँहकी ओर देखकर हँसता हुआ बोली, “अब पृष्ठिण कि तब आप गायेंगी क्या ? उसका जवाब मैं कहूँगी रातना मैं गायती ही नहीं। दिनम सिफ एक ही बार गायती हूँ।”

“सिर्फ एक ही बार ?”

कमलने कहा, “हाँ। मगर इसका बाद हा आपका ग्याल घाना चाहिए कि ‘तो फिर शिवनाथ भाव घर जाकर क्या गायेंगे ? उनका तो तब एक आप बार गानका सामल्य नहा। तब फिर ?’ इसका उत्तर मैं कहूँगी कि ‘क तो आप हा लोगके यहा रमा पी आत ह, —उत क्या फिर है ?’ आप कहगे, ‘भा तो ठाक है, मगर राज तो ऐसा नहीं होता ?’ मुनक मैं सानूँगा, ‘इस बातका जवाब दूसरोको दनसे लाम ही क्या ?’ पर इसस आपका मन्तुष नहीं किया जा सनता। तब मन्तुर होकर कहना ही पड़गा, अजित बाबू, आप लोगके लिए खनेका काद रात नहीं। न यहाँ अब नहीं आते। मैं विवाहकी गिजानीका मोह शायद अब दूर हा चुका है।”

अजित वास्तवम इस बातका भागी नहा समझ सना। गम्भार प्रिम्पसन साथ उसने मुँहकी तरफ देखकर पूछने लगा, ‘इसका मानी ? आप क्या गुस्सेम कह रही हैं ?’

कमलने कहा, “नहीं, गुस्सेम नहा। गुस्सा करने लायक शायद आज मुझम जोर भा नहीं रहा। मैं समझती थी, पत्थर गरीदनके लिए वे जयपुर गये ह, आपम ही पन्ने पहल यह गगर भिली कि वे जागरा डोडकर अबतक नरा नहा गये है। चलिण, उस कमरम चलकर बड।”

उस कमरेम जाकर कमलने कहा, “यही हम लोगका सानेका कमरा है। तब भा इससे बादा एक भा चीज यहाँ नहीं थी,—जाज भा नहा है। किंतु उस दिन दन मय चीजाका चेहरा देखते तो आज मुझ कहना भा नहा पन्ता कि मैं गुस्सा नहा हूँ। केकिन आपको ता बहुत ज्यादा रात हा रही ह अतिन बाबू, अब तो दर करनेके काम नहीं चलेगा।”

अजित उठन खज हा गया, बोला, “हाँ, तो फिर आज चलना हूँ मैं।” कमल साथ-साथ उठ खली हूँ।

अजितने कहा, "अगर आज्ञा हो तो कल आऊँ ?"

"हाँ, आइएगा ।" कहती हुई वह पाठे पीठे नाच उतर आई ।

अजित कुछ देरतक प्रगल्भ शॉक्कर बोल, "अगर कुछ कगूर न समझ
गे एक रात पृष्ठ, शिश्नाथ राम नितने दिन हुए नहा आये ?"

"नो गये बहुत दिन ।" कहती हुई वह हँस ली । अजितने लाल्पनने
उकलेमें स्पष्ट दिग्माइ दिया कि हम हँसीना जात हा न्यारी है । उसने पहलेनी
हँसाइ इसना नहीं भा कोइ सादृश्य नहा ।

९

अजित जय घर लौटा तब रात गहरा हो गयी थी । सड़क सुस्तान थी,
सजाया जमा हुआ था, दुस्मान सब उन्द हा चुका थी,—आदमाना कल
राम निशानतक न था । घड़ी गोलकर देगा ले माग्म हुआ कि वह चारीक
अभावमें जाठ ही बने उन्द हा चुकी है । अभी गायद एक प्रजा होगा, या
दा उजे हागे,—टीक नितने नो ह, कुछ अन्दाज नहीं कर सना । यह निश्चित
है कि आजु रामुन घर अस्तक सब अत्यन्त चिन्तित हो रहे होंगे, सानसी
रात तो दूर रही, गाना पानातक गायद उन्द होगा । घर पहुँचकर यह क्या
कहेगा, कुछ खाच न सना । सब घटना तो कही नहीं जा सकता यह तब
सपथ है कि क्या नहीं कहा जा सकता ।—यकिय कुछ कहा जा सकता है, मगर,
शुभ भागनेनी उसे आदत नहा था । नहीं तो माटरमें जन्ले निरलकर दर
हानना कारण टूट निरालनेम इतनी चिन्ता गहा कग्नी पडती ।

गड खुला था । रमानने सलाम करने कहा कि शाबर नहीं है, यह आपका
हृत्न गया है । गारी अन्नरलम रगकर अजित आजु बाजूरी नेटकमें गय ।
जुलन हा देगा कि ये अर्मलिक सान नहीं गय, अम्बम्बर शरण लिय अकल
उठ उगना गड दर रहे ह । व उद्रेगसे साधे हाकर उठ गये जाग गाल, 'आ
गय । मे बार-बार यही साच रही था कि कोइ एक्मिडट हो गया होगा । नितना
गय तुमम कड चुका हूँ कि दूरक रास्तम कभी नकल नहा निरलगा चादिए ।
घुनेनी गान आनिर सामाने जा न ! निग तो सिनी ?"

अजित शरमिन्दा हाकर जरा हँस दिया, योग, "तब लगाकरा इतनी
दुश्चिन्ताम डाल दिया, हमन लिए म अत्यन्त दुःखित हूँ ।"

“दुख करना । घड़ीनी तरफ नजर उठाकर देखा, दो बज रहे हैं । थोड़ा बहुत खा पीकर सो जाओ जाके । कल मुन्गो सारी रातें । जदु, ओ जदु भा !—वह भी नालायक चला गया क्या तुम्हें हूँ ?”

आन्तन कहा, “दुखिए ता आप लोगोनी कितनी प्यादती है । इतने पड़ गहरम भग यह नहीं मुझे गली गयी हूँ ता फिरगा ?”

जागु गानून कहा, “तुमने ता कह दिया ‘प्यादती है’ मगर हम लोगोका नैसा लग गया था सा हम ही जानते । ग्यारह गने गिजनाथका गाना रतम हुआ, तबस—मणि गद कहों ? उमे भी तो तबसे नहा दग रहा हूँ ?”

अजितने कहा, ‘शायद सा गद होगी ।’

‘सोयेगी कैसे जी ? अभीतक उमने खाया भी नहा है ।’ कहत करते सरसा उ ह एक रात थोद आ गई, गये, “अस्तबल्म कोचानको देखा था क्या ?”

अजितने कहा, “नहा ता ।”

“तब तो हो गया ।” कहकर वे दुश्चिन्ता करे फिर एक बार उठर सीधे बैठ गये, गये, “तो सोचा था वही हुआ । मालूम होता है, गाड़ी लेकर वह भी गद हूँने । दगो तो कैसी परेशानीम डाल गद । इस डरसे कि कहा म मना न कर दूँ, जरा कुछ कष्टन नहीं गद, चुपक से चली गद । कोन जाने कब लौटेगी ! आजकी रात, मागम हाता है, कारी आँखों हा बोतेगी ।”

“म दगता हूँ जान, गाड़ी है या नहा ।” कइता हुआ अजित बाहर चला गया । अस्तबल्म जाकर देखा कि गाड़ी मोतूद है जार घोट नीच नीचम पैर पकत हुए मजेम घास खा रहे ह । उसनी एक दुश्चिन्ता मिनी ।

नीचन रगमदने उत्तरनी तरफ कुछ विलायती झाड़ु और पामने पेड जगरदन्त लापरवाहान साथ गये थे ।—उनन ऊपर ही मनारमाका सोनेका कमरा है । यह देखनेके लिए कि अतन कमरम उता जल रही है या नहा, अजित उस तरफने घूमकर जागु गानून पास जा रहा था । इतनेम आठामस किमीनी जागज मुनाद दी । अत्यन्त परिचित कण्ठ था । रात हो रही थी किरा एक गानने स्वरन प्रियम । काद जुरी बात नहीं थी,—किंतु फिर भी उसने लिए पेड पौधान छुरमुग्म पैठनेनी जरूरत नहीं था । क्षणभरने लिए अजितन दानों पैर निचानसे हा गये, पर क्षणभरने लिए ही । आलोचना चलन लगी आर यह चमे चुपचाप जाया था वैसे ही चुपकने चल दिया । उन दानोंमेंसे

काद भी न जान मना कि उनके दम निष्पीयमान्नीन विश्रम्भालापना मोद सा ती है ।

आपु गानून व्यग्र हाकिर पुछा, “कता ल्या ?”

जजितने कहा, “गाटा घाटा अस्तदलमें ही है । मणि राहर नदा गद ।”

‘गर जानम जान आद, “कहकर आपु गानूने निश्चित पारततिना दाप मास ल्या, फिर कहा, “रात गहुत हो चुका है, शायद वह धन धनाकर घरम नम सो गत् हागी । दयता हूँ कि आज लम्बाना गाना नहा हुआ । जा-जा वग, थोडा गहुत गानर तुम भी मो जाआ ।”

अजितन कहा, “इतनी रात गये म अर न गार्जेगा, आप सोने जाइए ।”

“जाता हूँ । पर तुम कुठ भा न गार्ओगे ? जरा कुठ खा पाकर—”

“नहा, कुठ नहीं । आप दर न करें । सोने जायें ।” इतना कहकर उस रण्य जादमीने भीतर भेजकर अजित अपने कमरम चला गया और वहाँ सुली हुद गिटरफार पास बाकर खडा रहा । वह निश्चित जानता था कि रगर-सम्यधी आलोचना रातम हानेपर पिताकी रगर लेनेको मनारमा इधर एर गार जरूर हा जायेगा ।

माण आइ, पर लगभग आध घण्टे गद । पढे उमने पिताना पैटरफक सामन जाकर देगा, कमरेमें अंधरा है । यदु गायद पास ही रही जाग रहा था, माकिरन पुशारपर उसने जराय ले नगी दिया था, पर उनके चने जानपर बत्ता गुसा दी था । मनोरमाके धण भर इधर उधर करन मुँह पेग ता देगा कि अजित अपने कमरेम सुनी गिटरफोके पास चुपचाप खडा है । उमर कमरम भा बनी नहा जा रही थी, लेसन सहनेके ऊपरन गगमदने धाण प्रकाशनी किरणों जाकर उसका गिटरफोपर पड रहा था ।

“मौन ।”

“म हूँ, अजित ।”

“बाह ! सब जा गये ? बापूजा शायद सोने चने गये ।” कहकर मना रमान माना जरा चुन रहनेका कागिग ना, परन्तु अगमात गतकी रफतारने उग रनने रहीं दिया । पहने लगी, “देगो तो तुम्हारा बंगा अनिचार है । घर भरफ लग माग कित्रय परीदान हाते रहे,—जरूर कुठ न कुठ हुआ हागा । इतीने बापूजे गार-गार मना करत ह अन्ते जानक लिए ।”

इन सब प्रश्नों और मत्त यात्रा अजितने कुछ भी जवाब नहीं दिया।

मनोरमाने कहा, “मगर उह नाद हरगिन न जाद होगी। जरूर जाग रहेंगे। उह जरा खर तो कर दें।”

अजितन कहा, “जरूरत नहा। वे मुझे दरख्त हा सोये ह।”

“दख्त माय ह ? तो फिर मुझे खर क्या नहा दी ?”

“उ होने समझा कि तुम सा गद हो।”

“मा खं जाती ? अतक तो मने ग्याया भी नहा ह।”

“तो ग्याय मा जाओ। रात जय ज्याय नही ह।”

“तुम नही ग्याओगे ?”

“नहा।” कहकर अजित गिटनीन पाससे हट गया।

“बाह, अच्छे रहे।” इससे यादा बात उमरे मुँहसे न निकली। मगर भीतरसे भी फिर काद जाय न जाया। राह मनारमा स्त घ गयी रही। उसमें मनामातर, गुन्ना होकर अपनी जिद कायम रखने लायक जोर नहीं रहा,— न मातम किमने गमना मुँह कतर पद कर दिया। अजित रात गतम करन घर लौगा है, घर भरम सयनी दुश्चिन्ताका अन्त नहीं। उसीने खुद इतना पडा अपराध करन उसन अपमानना हद कर दी और फिर भी जरा सा प्रतिवाद करनेकी भापातर उसनी जमानपर न आद। और, सिफ जीम ही निवात् नहा हून्, बल्कि सारी दह ही माना कुछ शणाक लिण लचार हो रही। गिनपीपर क्रोड वापस नहीं जाया। यद जाननेनी भी किसीने जरूरत नहा समझी कि वह गनी या चली गद। गहरी निगीथ गनिम उमा तरह चुपचाप गटी रहकर बहुत दर बाद वह धीरे धारे चली गद।

सबरे ही नीतरने जरिण जागु गानुनी मातम हुआ कि कल रातनी अजित या मनोरमा दातामसे किसीने भी नहा ग्याया। चाय पीते वक्त उहाने उक्तगन माय पृठा, “कल जरूर ही कोन अदस्त एकिसटेण्ट हो गया था, हुआ था न ?”

अजितन कहा, “नहीं।”

‘ता फिर अचानक तेल निगट गया होगा ?’

“नहा, तल काफी था।”

“ता फिर इतना देर नेमे ने गद ?”

अजितनी सिफ कहा, “नेमे ही।”

मनोरमा खुद चाय नग पाती । उमने पिताको चाय देखेर एक प्याल चाय और नाचैसी तान्नी अजितनी जोर बना दी, पर न तो कोई बात पृथी और न मुँह उट्टाकर उसकी जोर देगा । दोनाय इस भाव परिवर्तनको पिता लाट गये । नास्ता करके अजित तब नहाने चला गया तब लडकीको एकान्तम पाकर उद्विग्न रूपसे बोले, “तरी बगी, यह बात अच्छी नहा । अजितन साथ हम लंगोना सम्बन्ध राहे जितना भी घनिष्ठ क्या न हो, फिर भी घरम रे अतिथि ह । अतिथि क योग्य सम्मान उभरा दाना ही चाहिए ।”

मनोरमाने कहा “मने तो नहा रहा बापूनी कि नर्ण होना चाहिए ।”

“नहीं नहा, ‘नहा रहा’ यह मन् है जिन हमार आचरणसे किसी तरहम प्रियि या लापरवाही दाना भी अपरा है ।”

मनोरमाने उवा, “मो मानती हूँ । पर तुमने किम्ब मुना कि मरे आचरणसे अपराध बन पडा है ।”

आपु बापू उस प्रश्नना जवाब न दे सन । उहोंने सुना कुछ भी नहा, न कुछ जानने हा है, मन-कुठ उभरा अनुमानमात्र है । फिर भी मन उनका प्रश्न न हुआ । कारण इस तरफसे बहम का जा सकता है किन्तु उत्कण्ठित पिताके चित्तको नि गूह नहा किया जा सनता । थोड़ी दर बाद उहोंने धीरे धीरे कहा, “उतनी रातम अजितन फिर एगना नहीं चाहा, आर मैं भी मोने चला गया, तुम तो पन्ने हो मो गद थी,—न जाने कहाँसे, हो सकता है, हम लंगोनी तरफसे ही कोई लापरवाही जाहिर हुए हो । उनका मन आज नैसा प्रश्न नग मालूम होता ।”

मनोरमाने कहा, “वे अगर मागे रात रातम रिताना चाह ता हम लंगोको भी क्या उनके लिए परम जागने रहना होगा । यही क्या अतिथिन प्रति गृहस्थ का कर्तव्य है बापूजी ?”

तापु बापू हँस दिये । अपना तरफ इशारा करन बोले, “गृहस्थके माना अगर यन् गठियाका गयी हो बडा, तो उनका कर्तव्य है कि आठ रनेन एकर ही मो जान । तरी ता, यन् भी बहुत उठ सम्मानित अतिथि गठियाक प्रति सम्मान दिगाना होगा । जार, उसन मानी अगर और किसीक हा, तो उनका कर्तव्य उतावाप म नग नग । आज बहुत दिन पछैसी एक घन्ना यन् जा गन् मगि, तुम्हारे मा तर जिन्दा थी । एक बार म मउली पकटने

गुलिपाटा जा गया मो लोट नहा सका । सिफ एउ रात ही नहीं,—तुम्हारा मॉन उमीपर पुरीकी पुरी तान रात खिडकाम उठ बैठे रिता दा । उसना यह कतर किसन मुझाया था, तप पुरा नहा जा सना, मगर याद फिर कभी मुलाकात हुइ ता यह रात पृथना भरेगा नहा ।” इतना रहकर उ हाने क्षणभरक लिए मुँह फेरकर लडकीकी गिगाहस अपनी आँखाओ ठिपा लिया ।

यह रहानी कोइ नद नहा । किस्मक लोगपर इम घटनाका वे उतुत गार लडकाने सामने उल्लेख कर चुक ह मगर फिर भी वह पुरानी नहा होता । जे कभा याद जा जाती हे तभी वह नद जनकर दिग्गद द जाती है ।

इतनमे नौकराना जाकर दरवाजेक पास खड़ी हा गद । मनारमा उठ खड़ी हुइ, बोली, “बापूजी, तुम जरा बैठो, म रसाइना इन्तजाम कर जाऊँ ।” और वह जल्दासे चली गद । रातबीत बहुत आगे न रात पाद, इसस उमे आराम मालूम हुआ ।

दिन भरम आगु राबूने कद बार अजितने गारेम पूठा एक गार मागम हुआ कि वह कितान पत्र रहा ह, फिर खसर मिनी कि वह अपने कमरम अग चिट्ठी पत्री लिए रना हे, दोपहरक भाजनक समय उसने लगभग रात ही नग की आर गाना खतम हात हा वह उठकर चल दिया । जार, जार तिनक दंग वह जितना रग्या था उतना ही आश्चर्यजनक ।

आगु राबूक धोमकी सीमा नहा रहा । बोले, “बात क्या है मणि ?”

मनारमा आज बराबर पिताकी दृष्टिसे उचकर चल रही थी, अब भी गाम कर किसी तरफ गिना दंगे ही गाली, “मागम नहीं बापूजी ।”

वे क्षण भर उ पने मनम कुछ साच विचारकर माना अपने जापस ही कहा लग, “उमक वापस जानेकर म जाग हा रहा था । खानक लिए भा कना था, पर बहुत रात हो जानेस उसने खुद हा नहा खायो । तुम्हारा सा जाना ठीक नहा हुआ बनी,—लेकिन इसमें ऐमा क्या अपराध हा गया, मेरी तो कुछ समझम नहीं आता । इससे रहकर आश्चर्य और क्या होगा कि इस तुच्छ कारणका उमन इतना उडा मान लिया ।”

मनारमा चुप रही । आगु राबू खुद भी कुछ दर मान रहकर भीतरकी लज्जाको दनात हुए गाल, “रात तुमन उसस पृछी क्या नहा ?”

मनोरमाने जनाय दिया, “पृठनेकी कौन हा रात है,—पिताकी ?”

पृष्ठनेना बहुत-सी बातें हैं, पर पृष्ठना भी कठिन है, ग्यामनर मणिके लिए ।
इसे वे समझते थे, फिर भी उन्होंने कहा, “यह तो त्रिलोक साध है कि यह
नाराज है । गायद उसने सोचा है कि तुमने उगनी उपेक्षा की है । इस तरहकी
बुरा धारणा तो उसने मनम रखे नहीं दी जानी चाहिए बनी ।”

भोगरमाने कहा, ‘मरे बारेम अगर बेजा धारणा उठाने पर ली हो तो यह
उसका अपराध है । एक जादमीने अपराधना सुधारनेकी गरज क्या दूसरे
जादमीको अपने ऊपर ले नैनी चाहिए साधुजी ?”

पिता इस प्रश्नका उत्तर नहा दे सके । स्टडीको वे जिम दगमे पालते आय
ह उससे उनका ज्ञान सम्मानपर चोट पहुँच, ऐसा को जादेश वे नहीं कर
सकते । उनसे उठ जानेपर इसी रातपर भातर हा भीतर उठापोह करते करते
वे ज्यन्त उदास हो गये । बार बार इस बातको दुहराते हुए भी कि ऐसा हुआ
ही करता है बार यह भ्रम शक्ति है, उन्हें भीतरम बार नहा मिला । अजितना
भी वे जानत थे । यह सिर्फ सब तरहमे सुनिश्चित ही नहा है, कि उनम ऐसी
एक चारित्रिक सत्यप्रता उठोंने पाद थी कि आजक अकारण विरागसे निमी
तरह भी उसका सामंजस्य नहा वैकता था । इसका निणय करना कठिन हा गया
कि क्या सबर साम उद्गमना कारण उनपर भी यह गरमि ना हाउ उदरे
पाराव हो गया और ऐसी अशुभम रात जैसे उगम सम्भर हु ।

शामने समय एक तौंगेना गेटके अन्तर घुसने देग जागु रा नूने दगियाफ्त
निया ता मादूम हुआ कि वह अजितने लिए जाया है । अजितको उठों तुला
भेग और उनपर आनपर मुदितलम जरा-ना हंसपर पृठा, “तौंगेना क्या
होमा अजित ?”

‘जरा एक दपे घमने निरुदगा ।”

“क्यों, भोगर क्या हुद ? फिर रिगड गर क्या ?”

“नहा । लेकिन उसकी आप लोगाको जरूरत पड सकती है ।”

“अगर पड भी तो उसने लिए तभी मावूद है ।” और फिर एक शणभर
जुप रहकर गये, “बग अजित, सुन सब प्रता तो । मोरकर बारेम बीड रात
हुद है क्या ?”

अजितने कहा, “कहाँ, मुस ता नहा मादूम । लेकिन, आज भी तो आपने
इहाँ गाने-बजानेना जागजन है । गेगाता गनक । २, सरना घर पहुँचाने

लिफ मात्रना ही ज्यादा जरूरत है। समीप तीन न रहेगा।”

गद्यमें तरह-तरहका दुश्चिन्ता पाफ रागण पाउ पाउ इम रातसी भूल स गये थे। अब याद पा कि क सभा भग हानन रात पातर पि भा उत गरना सामन्तिा रर दिना गया था और सामन बाद हा गजलिम बेटेगी। साथ साथ यह भी जयाल् आ गया कि गरना विना विगनना रूपता भा मताग्गाज माम उदित हृ थी पर य मता ही मन जरा हँसकर रह गय। कारण, रँका हृ रल्लकी मातासज अन्वच्छन्दताका पतन इम रातका ग्याल् उद ख ही ता राग भा आर जय याद भी पाद ता उसमे तर्जापत प्रसन्न रहा हृ। उग समय पत्नीक लिफ य रात कितनी विरक्तिरर ह, इम रातका स्वत गिडगी भौंति अनुमान करर थ गये, “जाज वह सय-कुठ नहा हागा आजत।”

अजितन क्ता, “क्या ?”

“क्या ? मणिना ही पुठ दया एर रा।’ रहकर उताा बहसना जारो पुनारकर लटकीको जुलान भेज दिया, पार फिर जरा हँसकर र्हा, “तुम नायन हा क्या, गाता पाता मुनेगा ना ? मणि ? अच्छा, न मय आर रिगी दिा हागा, अभी जाजा तुम मात्र लेपर जग मूम आओ। लेकिन ज्यादा दर नहीं लगा मरते। और रह गता हँ कि तुम्हारा अरले जाना भी नहीं हागा। झाइवर नालायक गिलकुल आरगी हुआ जा रहा है। इतना रहकर वे एक कठिन समस्याकी अविनतानीय मीमासा करर उन्चल जानन्दम आराम तुरभीपर चित पन गये और जारना एर स तापसी गॉग छाटननक साथ वाले, “तुम जाओगे तौंगा किरायेका करर घुमने ? डि।”

मातरमा कमरम रैर रगते श्री अजितना देग गरदन टेग करे गली हा ग। आहट पाकर जागु पाउ फिर सीध हाकर बैठ गये जोर गहातुस विग्ध हँसाने चंढरेका चमकानर रा, “मैं पृठता हँ, जाजनी रात याद तो है कगी, या गिलकुल भू मालने निश्चित बैठो हा ?”

“क्या रापृजी ?”

“जाज सयसी निमन्त्रण द रगा है ? तुम लगाना गाना आना गतम हानेके बाल, उन लागानो जो आज जिमाना है,—सो भी कुठ ग्याल् है ?”

मनोरमाने गिरहिलाकर कहा, “है क्या र्हा। मोटर भेज दी है उन लोगों

को ले जानेके लिए ।”

“मोटर भेज दो ले जानेके लिए ? मगर खाने-पीनेका इन्तजाम ?”

मणिने कहा, “सब ठाक है, माद जुटि न होगा ।”

‘जच्छा !’ कहकर वे फिर कुरमीपर पड़ गये । उनके मुँहपर मानो किसाने म्हादी-मी पोत दी ।

मनारमा चली गई । अजित भी बाहर जा रहा था कि गांगु बाबूने उस दृश्यासे मना किया और वे बहुत दग्गतर चुप रहे । मादम उठकर बैठे और कहने लगे, “अजित, लटकाना तम्पमे भ्रमा मागनम मुझ लजा जाती है । पर उसरी मों चिन्ता नहा हँ,—ब हाता तो मुझे यह बात रहनी नहा पडती ।”

अजित चुप रहा । गांगु बाबू बाल, ‘यह बात व ही तुम्हार मुँहसे निजाल लेती कि उमस तुम क्या गुम्या हो, मगर व तो ह नहा,—मुझसे क्या यह बात कभी नहा जा सक्ता ?”

उनका स्वर ऐसा करुण था कि सुनकर हृदय व्यथित हो उठे । फिर भी अजित चुप रहा ।

गांगु बाबूने पूछा, “उमस क्या तुम्हाग सोद रातचात नहा हुद ?”

अजितने कहा, “हुद था ।”

गांगु बाबू व्यस्र हो उठे, “हुद था ? कब हुद ? मणि अचानक कल जा सा ग था, मा क्या तुमस उसने कहा था ?”

माजतने कुछ दर चुप रहकर गांगुद यहा मान किया कि क्या जमाव दना चादिण, फिर आद्विस्तेमे कहा, ‘उतना राततक जागन रहना न आसान ही था, और न उचित । मो जाती ता अभिचार न हाता, मगर व माद नग थी । आपर माने चल जानेपर थादा दर बाद हा उनमे भू हुद थी ।”

“फिर ?”

“फिर आर सो रात आपस नहा करँगा ।” कहकर रू चल दिया । दरमानक मारसे बड़ कहता गया, “गांगुद कल-परमोंतर म यंगे चल जाउँगा ।”

गांगु बाबू कुछ भी समझ न सक, सिफ इतना हा उनका समझम आया कि कोई भयकर दुषटना हो गई है ।

शान्तका लखर तागा बाहर चला गया और उयका आवाज उन्हींने सुन

नी। कुछ मिनटों तक गाद जोरका शोर मचाती हुई मांटर निर्मात्रताको लेकर आ पहुँची। उमका शोर भा उहाने मुन गया। पर वे हिले डुले नहा, जहाँ तक तहाँ मृत्तिका तरह निश्चल बैठ रहे। बैठक बैठनपर नाकरन जाकर समाद दिया, “सबू साहजन तनायत ठान नहीं ह, वे सो गये ह।”

उस दिन गाना नहीं जमा, राने पानेका उत्साह भी म्लान हा गया — सबको तार-तार थही मयाल आन लगा कि प्रका एक यक्ति घूमनक रहान गहर चला गया है जोर दूसरा यक्ति अपने त्रिपुल शरीर और प्रसन्न मिय हास्यक साथ समाना किस जगहका उतार उनाये समता था, आज यह सूनी पही है।

१०

इधर अजितना तोंगा कमल घरने सामने आकर गडा हो गया। कमल सडकवाले सत्रीण त्रामदपर गडी थी, ताल्य चार हाते ही हाथ उठाकर उसन नमस्कार किया। तोंगेको इशारमे उतात हुए चि स्पाकर बोली, “उमे विदा कर दीजिए। सामने सडा सडा तार तार लोटनेकी जल्दी मचाएगा।”

जीनेम सामने ही फिर भट हुड। अजितने कहा, “विदा तो कर दिया, पर लोटते वक्त दूसरा मिल तो जायगा ?”

कमलने कहा, “नहा। ऐसी कितनी दूरी है, पैदल ही चले जाइएगा।”

“पैदल जाऊँगा ?”

“क्या डर लगेगा क्या ? न हो तो म खुद जाकर आपको परतफ पहुँचा आऊँगी। जाइए।” रहकर यह उसे साथ लेकर रसोद घरम गई और बैठनक लिए कलत्राला बही जासन मिठाकर बोला, “जरा देगिए तो सही, सारे दिा मैंने कितने यजन उनाये ह। जाप न आते तो म गुन्मेम यह सत्र मोचियाका बुलाकर शॉट देती।”

अजितने कहा, “आपका गुन्मा तो कम नहीं है। मगर उससे इन यजना का इसकी अपे सा निराप अच्छा उपयोग होता।”

“कमरे मानी ?” कहकर कमल कुछ देरतक अजितने चेहरेकी तरफ देखती रही और फिर अन्तम खुद ही बोली, “अथात् आपका तो किमी चीजकी कमी नहा,—शायद इसमने हा बहुत कुछ पेंचना पटगा,—लेकिन उन तोगेका

यही भाव कभी है। वे तो इसे त्याकर जैसे नया जीवन प्राप्त करेंगे। लिहाजा, उन्हें मिलाना ही स्मोइवा सर्वोत्तम उपयोग है, यही न।”

अजितन गरदन हिलाकर कहा, “इसका मिया और क्या मानी जा सकता है?”

कमलने कहा, “यह हुआ गाधु सज्जाना भलाइ सुखरना मिनार,— पुश्तागाजीकी धम बुद्धिची युक्ति। परलोफक गातेम व लाग इगाना गाधुफ नय मानकर लिंग रगना चाहत है। यह नहा समगने कि असलम यहा अन्त मारगुय थोपा व्यय है। इस बातका वं कहांन जानगे कि सन्न जानदना मुधा पात्र ता अपयवक अविचारये ही करतक भर उपाता है।”

अजितने आश्चर्यके साथ कहा, “मनुष्यन सतयरी भायनाके अदर क्या जान द है ही नहीं।”

कमलने कहा, “नहीं, नग है। कतयन अदर जा आनन्द मादूम होता है वह आनन्द नहीं, आनन्दका भ्रम है, सामान्य यह दु लका ही नामान्तर है। उन बुद्धिये शासनसे जसदस्नी आनन्द मानना पदना है। पर वह तो रथन है। नहीं ता, यह जो मिननाथका आसन लाकर आपका मिनया है, प्रेमक इस अप व्ययमें आनन्द कहाँमें पाती? यह जा दिनभर भूष रहकर मने इतनी चीज बनाइ है—आप आकर गायेंग इमलिए हो तो? कि इनने यह अन्तयके अन्दर मुझे वृत्ति कहाँसे मिलती? अजित गानू, आज मेरी मय बात आप नहा समझेंगे, ममझनकी कोशिश करनेसे भी कुछ पायदा गहा हागा, मगर नतनी गडी उलटी गालने मानी अगर कभी अपने आर आपकी समझम आ जाय ता उग दिन मेरी याद कीजिएगा। पर यह मय जान दीजिये, आप गाने बैठिए।” जीर उसने थाल भरकर दहत तरहक ध्यजन उगने सामने रख दिये।

अजितने बहुत देरतक चुप रहकर कहा, “यह टीक है कि आपका कुछ गन्तिम गताका जय म क्यासमें नग ला सना लेकिन मादूम होता है कि वे मिलकुल ही असोध्य हा सा गत नहीं। समझा दनसे समझ भी सगता हूँ।”

कमलन कहा, “कौन समझा दगा जाजत गानू? म? मुचे जलरत।” जीर हंसते हुए उसने गानी पात्र उसका आगे रग दिये।

अजित रानेमें मन लगाकर बोला, “आपको गायद मादूम नहीं कि कल मय गाना नहीं हुआ।”

कमलने कहा, “जानती तो नहा, पर मुझे डर था कि इतनी रातम जाकर गायद आप ग्वायगे नहीं। यहा हुआ। मेरे अपराधम ही कल आपने तर्कीक पाइ।”

“लेकिन आज याज-समेत बगल हा रहा है।” बात करते ही उसे याद आ गई कि कमरा अभीतक भूया है। मन ही मन रजित हाकर बोला, “पर म बिगुल जानरों जैसा स्वार्थी हूँ। दिन भर आपने कुठ साया नहीं, उसका मैन जरा भी ग्याल नहा किया और मनेसे ग्याने बैठ गया।”

कमलने हँसत चेहरम जगाय दिया, पर यह तो मेरे अपने सानेग भी बत्कर है। इसीसे ता सटपट आपनी बिठा दिया है अजित गावू।” फिर जरा ठहरकर कहा, “और यह माम मउलीका मामला,—म तो ग्याती नहीं।”

“फिर सायेंगी क्या आप ?”

“यह है न।” उमन ठम आर दनकर रस हुए एनामेलन कगारका हाथक इशारसे दिताते हुए कहा, “और उसने अन्तर मेरे लिए चावल दाल आलू उमने हुए रगे ह। रहा मेरा राज भोग है।”

इम विषयम अजितका कुनुदल दूर नहीं हुआ, साथ ही उसे सकोचन राता भी। इस डरम कि कहा यह गरीबीना जिन न कर बैठे, उसने दूसरी हा बात छेड दी, कहा, “आपका दग्वकर मुझे गुरुसे ही पेसा जाश्रय हुआ कि कुठ कह नहीं सकता।”

कमरा हँस पया, बोला, ‘ यह ता मेरा रूप है। पर उसने भी हार कबूल कर ही जभय गावून आगे। वह उह परास्त नहीं कर सगा।”

अजित शमिन्दा हाकर भी हँस दिया, बोला, “मात्रम तो नहा हाता। बे गोलकुण्डाने माणिक ह। उनम उपर पराच नहा पन्ती। लेकिन मुझे तो मयम बत्कर आश्रय हुआ था आपनी बात सुनकर। सहसा मानो धैर्य-सा हूट जाता है,—गुस्सा आ जाता है। मायम होता है, किसी भां सत्यको आप टिकने नहा देना चान्ती। हाथ पनाकर रास्ता रोकना ही नैसे आपना स्वभाज हा।”

कमल गायद सुध हुए। बोला, “हो सकता है। पर मुझसे भी बडा एक जाश्रय गहों था,—यह था तसरा पदड। जेसी विपुल देह थी, वैसी ही विराट् शान्ति। धयना नैसे दिमाचल हो। उतापकी भापतक गहों नह पहुँचती। ऐसा जी होता है कि में जग उनकी लडका होती—”

बात अजितको बहुत हा अच्छी लगी। जागु बानूके प्रति यह अत करणम देवताकी भौति भक्ति रगता है। फिर भी उसने कहा, “आप दातोंकी ऐसी निरात प्रवृत्ति मिली कैसे ?”

कमलने कहा, “भाग्म नहा। मैंन सिफ अपना इच्छाकी ही बात कही है। मणिकी तरह मैं भी अगर उनकी लष्का होकर पैदा हाती।” फिर कुछ दर चुप रहकर बोली, “मर अपने पिताका भा कम नहीं थे। वे एम हा धीर, ऐस ही गत आदमी थे।”

कमल दासीका क्या है, छोटी जातकी लडकी है,—सबन मुँहम अजितको यह बात सुनी थी। अब मर कमलने मुँहम उसन पिताक गुणोंका उल्लेख सुनकर उसका जम-रहम्य जाननेकी आकाभा प्रबल हा उठी, मर नम डरम नि पृच्छन ताठारी कहा उसका व्यथान म्थापर असाधनीन चा न पड्चे, न कुछ पृठ न सना परतु मन उमना भीतर हा भातर म्नेह आर कदणासे उपर तक मर आया।

गाना गतम हुआ, सिन्तु उठोने लिप नहनपर जाजतन इनकार कर लिया, बोला, “पहले जाप गा लें। उसन बानू।”

“क्या तनलीफ पा रहे ह अजित बानू, उठिए। नकि हाथ मुँह धो आदए, फिर बैठिए,—म सा रही हूँ।”

“नहा, सो नहा हागा। रगीर ग्याये न जासन अटकर एक कदम भी इधर उधर न होऊँगा।”

“अच्छे आदमी ह आप।” कहकर कमल हँसती हुन अपना भोजन उधाड कर गाने बैठ गई। अजितने दखा नि उसन रचमान भा अत्युक्ति नहा की थी। चावल, गाल आर उबले हुए आरू ही थ। सूगकर बदरग हा गये थे। और दिन वह क्या गाती पाती है उसे नहीं मालूम। पर आज इतनी तरहकी आर काफी तैशारियों नीच भी उनके नस म्बच्छाहत आत्म पीडनसे अजितकी जायोंम पानी भर आया। कम उसने सुना था नि दिनम वह सिफ एक बार ही गाता है और आज जाना नि चंद्र यहा है जा सामने तीन रहा है। लिहाजा, युक्ति और तनर छलसे कमल मुँहम चाहे जो भी कये, सामनम भोगन क्षेत्रम उसन इस तरह आत्म-सयमसे अजितका अभिभूत और मुग्ध ऑग्न माधुय आर श्रुतसे अपन-मुन्कर हा उठा और रचना, असम्मान और अनादरसे जिन

व्यक्तियाने उम लाडित किया था उन मरन प्रति उसकी घृणाकी रागा न रही । कमलके गानकी तरफ लग्य दग्यकर अपने हग भावना यह दना न मना । उपनते हुए आवेगक साथ कहने लगा, “अपनी बडा मातकर जो लाग अपमान करन आपना दूर रगना चाहती ह, जा लाग अकारण रगानि करत फिरत ह, न ह आपने पाँव धून योग्य भी गही । मगारम देरीना आसा अगर विगन लिग हा तो यह आपन लिए है ।”

कमलन अर्द्धमिस्मयक साथ मुँह उगकर पुछा, “क्या ?”

“क्यों, सा म नहीं जानता, मगर शपथक साथ कह सकता हूँ ।”

कमलना विस्मयका भाव दूर नग हुआ, मगर यह चुप रही ।

अजितने कहा, “अगर शमा करें ता एक रात यूँ ।”

“क्या रात ?”

“पारिष्ठ शिगनाथक द्वारा अपमान और उचना पानने राद ही क्या आपने यह कृच्छ्र मत लिया है ?”

कमलने कहा, “नहीं तो । मेरे पल्ले पतिव्रत मरनेके रादमे ही म यह साया करती हूँ । इगमे मुझ कृ नही हाता ।”

अजितक मुँपर केने शिमान म्याही पात दी । उसन कुड देर स्तथ रहकर अपनेना सँभारत हुए धारे धीरे पुछा “आपना एक रात पहले और भी रिगह हुआ था क्या ?”

कमलने कहा, “हाँ । वे एक आसामी क्रिश्चियन थे । उनक मरनेके राद हा मेरे पिता भी मर गय अकस्मात् घोटमे गिरकर । उस गमय, शिगनाथक एक नाचा थे । नाय गगीचेन हंड कगर । उनकी स्त्री नहीं थी, माँना उहोंने अपन यर्ने आश्रय दिया । म भा उनक घरम आ गद । इस तरह, तग तरहके टुग कगन राच रहते रहते एक उक्त रगानना हा मेगी जादत पड गद है ?” कृच्छ्र मत ता क्या, पर इसमे शरीर और मन राना अकृते रहते ह ?”

अजितने एक सौंस लेकर कहा, “मैंने सुना है, जाति आपकी जुगना है ?”

कमलने कहा, “लोग ता यकी मताते है । पर माँ कहती थी कि उनक पिता आप लागानी जातिक ही एक करिगज थे । अथात् मेरे रास्तयिक मातामद जुगह नहा, वैय थे ।” और क जरा हँकर गली, “शो वे चाहे जो भी रहे हा, अग गुस्ता होना भी यय है और अकसोस करनेमे भी नोद हाभ नहा ।”

अजितने कहा, "सा ता ठीक है।"

कमलने कहा, "भाँके रूप था, पर रुचि नष्ट थी। ब्याहने रात को दरनामी हो जानेसे कारण उनके पति उन्हें लेकर आसामके चाय-बगीचेमें भाग गये थे। पर यहाँ वे जीये नहीं,—कुछ ही महीनेमें बुखार ही जुगारमें मर गये। तबसे साल बाद मेरा जन्म हुआ बगीचेके उड़ साहबके घर।"

कमलने बस और जन्मका वर्णन सुनकर अजितका क्षण भर पहलेका स्तोत्र और श्रद्धासे पिता हुआ हृदय अरुचि और सकोचके मारे सिन्धुडकर बूँद-सा रह गया। उसे सबसे ज्यादा यह बात अपरो कि अपनी और माँकी इतना बड़ी शर्मनी बात कहनेमें भी इतने रक्ता मर लज्जा नहीं जाद। जनायास ही कह गई, माँने रूप था, पर 'रुचि' नहीं थी। जिस जापारपर एक स्त्री मारे शर्मके जमीनमें धँस जाती है, वह इसने निकट 'रुचिना विनास' मात्र है। इससे ज्यादा कुछ नहीं।

कमल कहने लगी, "पर मेरे पिता थे साजुसन्तान जादमी। चरित्रमें, पाण्डित्यमें, सुचारुमें,—ऐसे जादमी मीने बहुत कम दग्ग हैं अजित जानू, जीवनके उनास साल मीने उन्हाने पास मिताने हैं।"

अजितने एक बार सदेह हुआ था कि नायद यह परिहास कर रहा है। पर यह संसा तमाशा ? बोला, "यह सब क्या जाप सच कह रही है ?"

कमलने जरा कुछ आश्चर्यन साथ ही लगान दिया, "मैं तो कभी कुछ गलती नष्ट आजत गात्र।" पिताजी स्मृति लहमे भरके लिए चेहरपर एक स्निग्ध दासि फल गई। फिर कहा, "इस लोसनमें कभी निरा भी कारण क्षुण् चिन्ता, छुट अभिमान, क्षुण् वाचना सहाय मुझे न लेना पड़,—पिताजी यही निष्ठा मुझे बार-बार द गय है।"

अजित फिर भी मानी विश्वास न कर सफा, जान, "आप एक अँग्रेजके पास हा शगर इतनी बनी हूँ तो आपकी अँग्रेजी भी जानी चाहिए।"

उत्तरमें कमल सिन जग मुगगरा था। बोली, "मेरा जाना हा गया, चलिए ग कमरेमें चले।"

"नहीं, अर मैं जाऊँगा।"

"बैठगे तहाँ ? आज इतनी जल्दा चले पायेंगे ?"

"हाँ, आज अर और रैन्नेका समय नहीं रहा।"

इतनी देर बाद कमलने मुँह उठाने उसने चेहरेकी अत्यन्त कटोरतापर ध्यान दिया। शायद, कारणना भी अनुमान कर लिया। वह कुछ दूर निनिमेष दृष्टिसे देखती रही, फिर धीरेसे बोली, “अच्छा, जाइए।”

इसने बाद अजित क्या कहे, कुछ समझमें न आया। अतमें बोला, “आप क्या अब आगेरेम ही रहगी ?”

“क्यों ?”

“मान लीजिए, शिवनाथ बाबू आइन्दा अगर नहीं जाये। उनपर तो आपका जोर है नहा ?”

कमलने कहा, “नहा।” फिर जरा स्थिर रहकर कहा, “आप लोगकं यहाँ तो वे रोज जाते हैं, गुप्त रूपसे जानकर क्या मुश्किल नहीं सन्तते ?”

“उमने क्या होगा ?”

कमलने कहा, “होगा और क्या, घरना तिराया इस महीनेना दिया हा हुआ है, फिर मं कल परसेतर चली जा सन्ती हूँ।”

“कहाँ जायँगी ?”

कमलने इस प्रश्नना उत्तर नहा दिया, चुप रही।

अजितने पृष्ठा, “आपके हाथमें शायद रुपये नहा है ?”

कमलने इस प्रश्नना भी कोई उत्तर नहीं दिया।

अजित खु भी कुछ देर मौन रहकर बोला, “जाते वक्त आपक लिए कुछ रुपये माथ लेता आया था, लीजिएगा ?”

“नहीं।”

“नहीं क्यों ? मुझे निश्चित मालूम है कि आपके हाथम कुछ नहीं है। जो भी कुछ था, सो आज भेरे ही लिए गतम हो गया।”

इसना भी कुछ उत्तर न पाकर वह फिर बोला, “जहरत पडनेपर क्या मित्रोंसे कोई कुछ लेता नहा ?”

कमलने रहा, “पर मित्र तो आप नहीं ह ?”

“न सही। पर अ मित्रोंसे भी लोग कज लिया करते ह और फिर चुका देते ह। तो आप वैसे ही ले लीजिए।”

कमलने गरदन हिलाने रहा, “आपसे कह चुकी हूँ, म कभी शक नहा रोल्ती।”

रात कोमल थी, किंतु तीरके फलजी तरह तीक्ष्ण । अन्तिमने समझ लिया कि इसम कुछ रहोमूल नहीं हो सकता । उसकी तरफ गौरसे दृग्ना तो मात्रम हुआ कि पहले दिन उसका शरीरपर जो मामूली सा जेवर था वह भी आज नहीं । सम्भवत घनका किराया चुकानेमें और इधर उद दिनोंका सच चतानेमें वह गतम हो चुका है । सहसा यथाक भारसे उसका मन भीतरमें से उठा । उसने पूछा, “पर जाता ही आपन तय कर लिया है क्या ?”

कमलने कहा, “इसका सिद्धा और उपाय क्या है ?”

उपाय क्या है, यह उसे नहा मालूम, और इसीलिए उसे कष्ट होन लगा । अन्तिम चेष्टाके तारपर उसने कहा, “दुनियामें क्या को भी ऐसा नहा है जिससे इस समय आप कुछ सहायता ले सकें ?”

कमलने तब सोचकर कहा, “ह, ओर लड़कीना तरह सिर्फ उन्हाकर पास जाकर हाथ पसारकर माँग सकती हूँ । पर आपकी तो रात हुए जा रही है । साथ चलकर पहुँचा दूँ क्या ?”

अन्तिम चरण हाकर गेला, “नहीं नहा, म अकेला ही जा सकूँगा ?”

“तो जाइए । नमस्कार ।” कहकर वह अपने सोनेके कमरमें चली गई ।

अन्तिम दो एक मिनट वहाँ मन्त्र हाकर सदा रहा । फिर चुपचाप धीरे धीरे नीचे उतर गया ।

११

दिनका तीसरा पहर है । शीतनी सीमा नहीं । जागु घासूनी पैठनी कौच की गिड़कियाँ सार दिन बन्द रहती हैं । वे जारामन्दुरमीने दोनों हथेलापर पेर फैलाकर गहरे मनोयोगसे साथ पढ़ पढ़ कुछ पत्र रहे थे । हाथके फागलपर पीठने दृग्नाती तरफसे एक छाया पड़ते ही वे समझ गये कि अब उनके नीकरनी दिया निद्रा समाप्त हुए है । सोने, “कच्ची नीदम ता गही उठ बैठ जदु, नहा तो फिर दुग्गा । ग्यास तकलाफ न माइम हो तो रजदारय जरा ह्य गयमर फेर कर दो ।”

नीने कार्पेणपर रनाइ पनी थी, आगन्तुकी उसे उगाकर उनका पैर नीचे तन्मौतन अपनी तरफ टफ दिये ।

जागु याबूने कहा, “हो गया, हो गया, प्यादा जठनकी जगज नहीं ।

जब एक चुरट देकर ओर थोड़ा सो लो—अभी तो दिन राकी है। पर समझ गयना कि—कल, हॉ, कल।”

अथात् कल तुम्हारी नौकरी चली हा जायगी। कोइ जगाम नहा जाया, कारण मालिकके इस तरहके मन्तयसे नाकर जम्पस्त हा चुना है। जैसे उसका प्रतिवाद करना यथ हे वैसे ही निचलित होना भी फिजुठ है।

आगु गानूने हाथ बटाकर चुरट ले लिया ओर दियासलाई जलनेके शब्दके साथ ऊपर मुँह उठाकर देखा। कुछ क्षण अभिभूतकी तरह दग रहकर बोले, “वही तो सोच रहा था कि यह क्या जदुआया हाथ है। इस तरह पैर टकना तो उसकी चोदह पीलियाँ भी न जानती होंगी।”

कमलने कहा, “पर इधर जो हाथ जला जा रहा है।”

आगु बाबूने यस्तताके साथ उमरे हाथने जलती हुइ दियासलाई लेकर फन दी और उस हाथको अपने हाथमें लेकर उसे जोरसे सामने रींच लिया। बोले, “इनने दिनोंमे तुम्ह देखा क्यों नहा बेटी।”

यह उहोंने पहले पहल उसे ‘बेटी’ म्हकर पुकारा। परतु यह उहें कहनेक बाद स्वय मालूम हो गया कि उनन प्रश्न कोइ मानी नहीं होते।

कमल एक कुर्सी रींचकर जरा दूर बैठना चाहती थी, पर उहान उसे एसा नही करने दिया, कहा, “वहाँ नहा बेटी, तुम मर मिलकुल पास जाकर बैठो।” ओर उसे मिलकुल पास खाचकर बोले, “आज अचानक कैसे कमल।” कमलने कहा, आज बहुत जी चाहो लगा आपको दरसनमा,—इससे चली आई।”

आगु गानूने उत्तरम सिफ कहा, “अच्छा किया।” जार इससे ज्यादा वे न बाल सने। अन्यान्य सभी तगोंक भमान उहें भी मालूम था कि कमलका नोइ सगी साथी नहीं है, कोइ उसको चाहता नहीं, किसी घर जानेका उसे अधिकार नहीं,—नितान्त नि सग जायन ही इम लटकीका पिताना पडता है, फिर भी यह बात उनके मुँहसे न निकली कि ‘कमल, तुम्हारी जब तगीयत हो, खुशीसे चली आया करा, और चाहे जिससे हो, पर मेरे पास तुम्हें कोइ सकोच नहीं होना चाहिए।’ इसने राद शायत शर्दोंके अभावसे ही वे दांतीन मिनट तक मानो अन्यमनस्वकी तरह मौन रहे। उनके हाथक कागज नीचे गिरसक जानेपर कमलने उठ उठा लिया और उनके हाथमें दते हुए कहा, “आप पल

रहे थे, मैंने असमय ही आकर शायद त्रिभु डाल दिया।”

जागु गानूने कहा, “नहीं। मैं पत् चुका। जो कुछ थोड़ा-बहुत बाकी है उसे बगैर पड़े भी काम चल सकता है, और पत्नेकी इच्छा भी नहीं है।” जरा ठहरकर फिर कहा, “इसने सिखा तुम्हारे चले जानपर मुझे अकेला रहना पड़ेगा, उसके अच्छा ता यह है कि तुम रात करा, म सुनो।”

कमलने कहा, “मैं आपसे दिन भर रात कर सकूँ तो कहना ही क्या है। पर जोर सब जो नाराज होंगे ?”

उसने सुँहपर हँसी होनेपर भी जागु गानूना चोट पहुँची, बोले, “रात तुम्हारी छूट नहा कमल। पर जो लोग नाराज होंगे उनमेंसे यहाँ कोई भीजूद नहीं है। यहाँके नये मजिस्ट्रेट एक पगाला हैं। उनकी खास मणिकी मित्रता है, दोनों साथ-साथ कालेजम पनी हैं। दो दिन हुए वे यहाँ पतिव पाव आद हं,—मणि उहीन यहाँ घूमने गद है, शायद रातना लाटेगी।”

कमलने हँसते हुए पृथा, “आपने कहा, कि ता लोग नाराज होंगे—ओ एन तो मनारमा हुद, और रात्रीने और कान ह ?”

जागु गानूने कहा, “सभी हैं। यहाँ ऐसीकी कमी नहीं। पहले मालूम होता था कि अश्विनी तुम्हारे प्रति नाराजगी नहा है, पर अब दगता हँ कि उसका विद्वेष ही सबसे बदनर है। उसने तो अश्वय वागुना भी मात कर लिया है।”

यह देगकर कि कमल चुपचाप मुन रही है, वे कहने लगे, “जब जाया था तब उसे ऐसा नहा देगा था, अचानक दो ही तीन दिनमें मानो वह तिलकुल बल गया है। अब अश्विनीकी भी ऐसा ही देग रहा हूँ। इन सबोंने मिलकर मानो तुम्हारे विरुद्ध पत्पत्न-सा रच रना है।”

असली बार कमल हँस दी, बोला, “अमात, मुगादुरके ऊपर बजाघात। पर मुना जैती समाज और तुनिवासे उद्विष्टत एक तुच्छ औरतने विरुद्ध पद्व्यत्र त्रिगुणिए। मैं तो त्रिगुणिके पर जाती नगी।”

जागु गानूना कहा, “तो तो ठाक है। गदरम यह भी काइ नगी जानता कि तुम्हारा पर वहाँ है, पर इसलिए तुम तुच्छ नहीं हो कमल। और इसीलिए वे हास न तुम्हें भूल ही सकते हैं और न माफ ही कर सकते ह। तुम्हारी चना और त्रिगु, तुम्हें सँचे नगी इहें न चीन मिला है न शान्ति।” कहते-कहते वे अच्यमात् हाथने कागाननी उठाकर बोले, “यह बरा है, जानती हो ? अश्वय

गानूनी रचना है। अंग्रेजीम नहीं होती तो तुम्ह सुनाता। नाम धाम नहीं है, पर गुरुसे आखिरतक सिफ तुम्हारा ही बात है, तुम्हींपर हमला है। कल मनिस्त्र साहजक धरपर, सुनते ह, नारी-कन्याण-समित्तमा उद्घाटन हागा, यह उसीका मगल अनुष्ठान है।” यह कहकर उन्होंने उसे दूर फक दिया और कहा, “यह सिफ निराध ही नहीं है, बीच-बीचम निस्सेव तौरपर पात्र पात्रियोंके मुँसे इसमें तरह-तरहनी बातें भी कहलगाद गद ह। इसरी मूल नीतिसे साथ किसीका विरोध नहीं,—निराध हो भी नहीं सकता। पर इसम वही बात नहीं, यक्ति विशेषपर कदम-कदमपर आघात करते रहनेमें ही मानो इसका आनन्द है। पर अणयका आनन्द और मेरा आनन्द एक नहा है, कमल। इसे ता म अच्छा नहीं कर सकता।”

कमाने कहा, “पर मैं तो इस लेखको सुनने नहा जाऊँगी,—फिर मुझपर चोट करनेकी साथकता क्या हुई ?”

आगु गानूने कहा, “बुठ भी साथकता नहीं, इसीसे शायद उन लोगोंने मुझे पढ़नेका दिया है। सोचा हागा ‘इतनेमसे मुट्रीभर ही सही।’ इस बूढ़ेको दु रा देकर जितना धोम मिटाया जा सके उतना ही अच्छा।” कहते हुए उन्होंने हाथ बटारपर फिर एक बार कमलको अपनी जोर खाचा। इस स्पश मात्रमें कितनी बात थी, कमल सजनी सत्र तो नहीं समझ सकी फिर भी उसका अन्त फरण न जाने कैसा हो उठा। वह जरा ठहरकर बोली, “जापका कमजोरी को तो उन लोगान साड लिया, पर जापके भीतरने असल आदमीको वे नहीं पहचान सके।”

“क्या तुमने पहचान लिया है बेटी ?”

“शायद उन लोगोंसे ज्यादा।”

आगु गानूने इसका उत्तर नहा दिया, बहुत देरतक नीरव रहकर वे धीरे धीरे कहने लगे, “सभी सोचते हैं कि हमेशा खुश रहनेवाले इस बूढ़ेके समान सुखी कोड नहीं। बहुत रुपया है, काफी जमीन जायदाद—”

“पर यह तो झूठ नहीं।”

आगु गानूने कहा, “झूठ नहा। धन और सम्पत्ति मेरे काफी है, पर यह आदमीके लिए कितना-सा है कमल ?”

कमल हँसती हुई बोली, “बहुत है आगु गानू।”

आगु बाबूने गरदन फेरकर उसकी तरफ देगा, फिर कहा, "जगर कुछ खयाल न करो तो तुमसे एक बात कहूँ,—"

"कहिए ?"

"म बुद्धा जादमी हँ, ओर तुम मेरी मणिनी उमरकी हो। तुम्हारे मुँहसे अपना नाम मेरे खुदके कानोंम न जान बैसा खटमता है कमल। तुम्हें कोई खतरा न हो तां तुम मुझे 'चाचाजी' कहा करो।"

कमलने जाश्रयका ठिकाना न रहा। आगु बाबू कहने लगे, "कहावत है कि मिलकुल मामा न होनेसे तो काना मामा ही अच्छा, म काना न सही, पर लँगडा जरूर हूँ, गठियासे लाचार। बाजारमे आगु बेचनी कानी काडी कीमत नहीं।" फिर उन्होंने हँसकर कौतुहल साथ हाथका जंगूठा हिलते हुए कहा, "न हो तो क्या है बेगी, लेकिन जिनका पिता जिन्दा नहा उसने इतने शकी होनेस काम नहा चकेगा। उसके लिए लँगडा चाचा भी अच्छा।"

दूसर पक्षसे जगम न पाकर वे फिर कहने लगे, "कोई अगर चिन्ताये कमल, ता उसे बिनयन साथ रहना, 'मेरे लिए खतना ही रहत है।' कहना 'गरीबन लिए रौंग ही सोना है'।"

उनकी कुरसीने पीठ तैने कमल छतकी ओर आँगन भिये आँसू रोकनेकी मोशिश करने लगी, कुछ जगम न दे सकी। इन दोनोंमें कहींसे भी मोड़ भेल नहीं, और किफ अनात्मिय अपरिचयका ही जगदमन पासला नहीं है, यन्कि पि.जा, सन्कार, रीति नीति, गार्हन्धियन और सामाजिक व्यवस्थामें भी दोनोंमें सितनी जगदमन जुदाई है। जहाँ कोई सम्म न ही नहीं, यहा सिफ एक सम्बोधन न छलने ही उसे बाँध रखनेकी चतुरादना दग कमरकी आँसुम खुत दिनों बाद आज आँसू भर आये।

आगु बाबूने पृठा, "क्या गिठिया, कह सकागी ?"

कमलने उमडते हुए आँसुआँसु सँभालते हुए सिफ इतना कहा, "नहीं।"
"नहीं ? कहा क्यों ?"

कमलने इस प्रश्नका उत्तर नहीं दिया, दूसरी बात छेड दी। बोली, "अजित बाबू कहाँ हैं ?"

आगु बाबू कुछ देर चुप रहकर बोले, "क्या मादूम, शायद घरपर ही हागा।" फिर कुछ देर मौन रहकर धीरे धीरे कहने लगे, "कद दिनसे मेरे खल

विशेष आता जाता नहीं और शायद वह यहाँसे जन्दी हा जायगा ।”

“कहाँ जायेंगे ?”

आगु गानूने हँसनेका प्रयास करते हुए कहा, “तू आदमीको सब लग क्या सब बात बताते ह, मिटिया ? नहीं बताते । शायद जन्मत ही नहीं समझते बतानेकी ।” जरा ठहरकर बोले, “सुना होगा शायद, मणिक साथ उसका सम्बन्ध बहुत दिनोंसे तय था, सहसा भाद्रम हो रहा है कि दोनोंम किन्ना बातपर झगडा हो गया है । कोइ किसीने सा न अच्छी तरह बात ही नहा करता ।”

कमल चुप हो रही । आगु गानू एक गहरी साँस लेकर बोले, “जगन्नीश्वर मालिन हैं, उनकी इच्छा । एक गाँव भवानभ उमत्त है और दूसरा अपने पुराने अभ्यासोंको भय व्याजने ठीक करनेम ला गया है । इस समय यही तो चल रहा है ।”

कमलसे अब चुप नहा रहा गया, कुतूहलक मारे पृष्ठ नैठी, “पुराने अभ्यास क्या ?”

आगु गानूने कहा, “बहुत से ह । पहले गेरुआ पहनकर सन्यासी हुआ, फिर गणितसे प्रेम किया, दशोद्धारक कामम जेत गया, मिलायत जाकर इलीनियर हुआ, वहाँसे वापस जानेके बाद गृहस्थ धानेकी इच्छा हुई,—पर फिलहाल शायद वह कुछ उदल गई है । पहले मात्र मठली नहीं खाता था, उसके बाद खाने लगा था, अब देखता हूँ कि चल परसोंसे फिर ठोड पैग है । जदु बहता है, बाधू घण्टे घण्टे भर कमरेमें बैठे नाक मूँदकर योगाभ्यास किया करते हैं ।”

“योगाभ्यास करते ह ?”

“हाँ । तापर ही कह रहा था, देश लौटने समय शायद कागी उतरकर समुद्रयात्राके लिए प्रायश्चित्त करता जायगा ।”

कमलने अत्यन्त आश्चर्यक साथ कहा, “समुद्र यात्राके लिए प्रायश्चित्त करेंगे ? अजित गानू ?”

आगु गानूने सिर हिलाते हुए कहा, “वह कर सकता है । उसम सयतोमुवा प्रतिभा है ।”

कमल हँस दी । कुछ कहना ही चाहती थी कि इतनेमें दरवाजेके पास किसी आदमीकी छाया दीरा पडी और जिस नौकरने इतने विभिन्न प्रकारक

समाद मालिनको पहुँचाये ये रही गगार आ गग हुआ, जीर उमाने मग्से बन्धर कनेर समाद यह दिया कि आगनाग, अजय, हरेद्र, अजित आदि गानुनोंका दल आ गा है।—मुनर निफ दगलपा ही नहा, रिक, गनुगव जागमन होनेपर उरुसित उरुसने अग्धना कग्ना निनका स्वभाय है उा आगु गानुतग्ना मुँ शूर गथा। क्षण भर गद आगनुक गिष्टगनुदाय कमरम पुग्ते ही आक्षयनक्ति हो गया। कारण, यह गत उनरी कग्नाग गहर थी कि यह औरत यहाँ इस तरह मिल सक्ती है। हरेद्रो हाथ उगगर कग्को नमस्कार करके कहा, “अच्छा तो ह ! गनुत दिगोंसे आपको देगा रही।”

आगनाग्ने हँसने जैसी मुग्गकृति करन एक बार धर और एक बार उधर गरदन हिलाद जिसका कोद जय ही समझम नहीं आया। अजय सीधा आग्मी ठहरा। वह सीधे भागसे आया और सीधे अभिप्रायसे पत्थरकी तरह क्षण भर सीधे कड़े गहनर एक आँगसे अग्गा और दूसरीसे रिक्ति परगाता हुआ एक कुरसी र्चिनर बैठ गया। आगु गानुगे उसने पृठा, “भग आर्टिकल पढा ?” यह पृठने गद ही उसरी गजर मिर्गम लटत हुए अपने लेग्पर पढी। उसे ब खुद हा उठाने जा रहा था कि हरेद्रने उसे रग्ते हुए कहा, “रहने दीजिए न अग्ध गानु, झाडू ल्गाते प्त नीर ही पक देगा।”

उग्गा हाथ अलग करके अ गये वागज उगा लिये।

“हाँ, प लिया।” कहते हुए आगु बानु उठन बैठ गये। ऑल उठाकर दगा कि अजितो उधरने सोनेपर बैठनर कग्न अग्गारपर नजर दीडाना गुरु कर दिया है। अग्नाग्ने कुछ कहनेना मौका पा जानेने एक गन्तोपनी सॉस ली और कहा, “मिने भी अग्धग्गा लेग् गुरुसे आरिखरक ध्यानने पगा है, आगु गानु। अग्नाग गत सच गीर गृह्यगानु है। देग्गी सामाजिक गग्सा का अगर सुधार गिया जाय तो उगे अच्छी तरह जाने हुए और पक्क भागपर ही करना चाहिए। हम मानते ह कि गुरापने समागमने हम गनुत सा अच्छी चीज पाद ह और अपनी गनुतेरी गुटियागो हमने देगा है, परन्तु हमारा सुधार हमारे अपन भागपर ही होना चाहिए। दूसरोंके अनुकरणसे हमारा कल्याण नहा हो सक्ता। भारतीय नारीकी जो गिशिष्टता है, जो उसरी अपनी चीज है, अग लोभ और मोहने वद होनर हम उससे उगे भ्रष्ट करें, तो हम हर गग्से असफल होंगे।—ठीक है कि नहीं, अग्ध गानु ?”

रात अच्छी है और सब आस्य मानूँगे लेगकी है। विनय-वश उन्होंने मुँहसे ओर बूट नहा कहा, पर आत्म गौरवकी अनिर्वाचनीय वृत्तिसे आधे मुँदे नेत्रासे वह बार सिर हिलाया।

आशु मानूँगे निष्पटतासे स्वीकार करते हुए कहा, “इस विषयमें तो कोद तब नहीं, जविनाश मानूँ। अनक मनीषी अनेक दिनोंसे यह रात कहते आये हैं, ओर शायद भारतका कोद भी आदमी इसका विरोध नहीं करता।”

अश्वय मानूँगे कहा, “करनेका रास्ता ही नहीं, ओर इसने अलग-ओर भी एक विषय है जो इस लेखमें लिखा नहीं गया है, किन्तु कल नारी-कल्याण समितिमें मैं अपने भाषणमें कहूँगा।”

आशु मानूँगे कमरकी तरफ मुँह फेरकर कहा, “तुम्हारे लिए तो समितिकी तरफसे निमन्त्रण आया नहा है, तुम वहाँ नहा आ-ओगी। मैं भी गठियासे लाचार हूँ। मैं भले ही न जाऊँ पर है वह तुम्हा लोगोंने भलाई बुराईकी बात। अच्छा कमल, तुम्हें तो इस रातपर आपत्ति नहा होगी?”

ओर किसी समय होता तो आजकल दिन कमल चुन ही रहती, पर, एत तो उसका मन यो ही ग्लानिसे भरा हुआ था, दूसरे इतने आश्चर्योंकी इस पारुष्य हीन सघनता ओर दम्भपुण्य प्रतिभूतासे उसने मनमें एक आग-सी जल उठी। परन्तु अपनेको यथासाध्य सयत करके वह मुँह उठाकर हँसती हुई बोली, “कान सी रातपर आशु मानूँगे? अनुकरणपर या भारतीय विशिष्टतापर?”

आशु मानूँगे कहा, “मान लो कि दोनों ही पर?”

कमलने कहा, “अनुकरण चीज अगर सिर्फ बाहरकी नकल हो तो वह धोखा है, अनुकरण है ही नहा क्योंकि तब वह आदृतिसे मेल खाते हुए भी प्रकृतिसे नहा मिलती। मगर, भीतर-बाहरसे वह अगर एक-सी हो तो ‘अनुकरण’ होनेके कारण लज्जित होनेको उसमें कोई भी बात नहा।”

आशु मानूँगे सिर हिलाते हुए कहा, “है क्यों नहा कमल, है। उस तरह सर्वांगीण अनुकरणमें हम अपना विशेषता खो बैठते हैं। उसने मानी है अपनेको तिलकुल ही खो बैठना। इसमें अगर दुख ओर लज्जा नहीं, तो किसमें है प्रताओ?”

कमलने कहा, “भले ही खो बैठ आशु मानूँगे! भारतने वैशिष्ट्य ओर यरोपके वैशिष्ट्यमें बड़ा भारी भेद है, परन्तु किसी देशके किसी वैशिष्ट्यके लिए

मनुष्य नहीं है, उन्नि मनुष्यने लिए ही उय वैशिष्यता आदर है । असल बात विचारनेकी यह है कि ततमान समयमें वट वैशिष्य उसने लिए कल्याणकर है या नहीं । इसने सिना और सन गत सिफ अध मोह हैं ।”

आगु बाबूने यथित होकर कहा, “सिफ अध मोह ही हैं कमल, उससे ज्यादा कुछ नहीं ।”

कमलने कहा, “नहा, उसमे ज्यादा कुछ नहा । सिफ इसीलिए कि किसी एक जातिना कोई एक विशेषता बहुत दिनोंसे चली आ रही है, क्या उस देशन मनुष्योंको अपने कल्याण-अकल्याणना खयाल मिये खौर उसी सँचेमें हमेशा दन्ते रहना हागा ? इसने क्या मानी ? मनुष्यसे बन्कर मनुष्यकी विशेषता नहीं हो सकती, और इस बातको जब हम भूल जाते हैं तब विशेषता भी जाती रहती है जोर मनुष्यको भी हम खो खैन्ते हैं । यहापर तो चान्त्विक लज्जा है आगु बाबू ।”

आगु बाबू मागो इतनुडि-स हो गये, बोले, “तब तो फिर सन पन्नाकर हो जायगा ? भारतीयने रूपम तो फिर हम पहचाना भी नहा जा सकेगा । त्तिहासमें ऐसी घटनाआनी सा गी भी मौजूद है ।”

आगु बाबूने कुण्टित और त्रिभुब्ध चेहरेकी तरफ देखकर कमलने हंसते हुए कहा, “तब मुनि षडपियोंने बशधरने रूपमें भले ही न पहचाना जाय, पर मनुष्यके रूपम तो हम पहचाना ही जायगा और जिसे आप इन्कर कहा करते ह, वह भी पहचान लेगा, उससे भी गन्ती न होगी ।”

अभयने उपहासने तगसे चेन्रेको कनोर खनाकर कहा, “इ तर सिफ हम ही लागाना है ! आपका नहीं ?”

कमलने जगाम दिया, ‘ नहा ।’

अभयने कहा, “यह सिफ शिखनायकी प्रतिष्वनि है, सिगार हुइ बात है ।”

हरदर बोले उना, “बूट ।” (हिल पगु ।)

“देगिए हरे द्र बाबू—”

“देख रहा हूँ । बीन्ट ।” (पगु ।)

आगु बाबू सहसा मानों स्वप्नातियतकी भाँति जाग उठे । बोले, “देखो कमल, दूरियोंकी गत भी नहीं कहना चाहता, पर, हमारा भारतीय वैशिष्य सिफ बात ही-बात नहीं है । इसना चला जाना कितनी जगदस्त क्षति है, उसका

हिसाब लगाना दु सा'य है। कितने धम, कितने आदश, कितने पुराण इतिहास, काय, उपारथान, शिल्प,—कितनी कितनी अमूल्य सम्पदाएँ,—सब कुछ इसी वैशिष्ट्यपर ही तो आजतक जीवित है। फिर इनमें तो कुछ भी नहीं रह जायगा ?”

कमलने कहा, “रहने रहनेके लिए आखिर इतना याकुलता क्यों ? जा जानेके—हा, सो नहीं जायेंगे। मनुष्यकी आवश्यकताओंके अनुसार फिर वे नवीन रूप, नवीन सौन्दर्य, नवान मूल्य लेकर दिखाएँ दगे। वही होगा उनका सच्चा परिचय। अन्यथा, सिर्फ इसीलिए कि बहुत दिनामे कोई चीज है, उसे और भी बहुत दिनोंतक पकड़े रखा होगा,—यह कैसे बात है ?”

अखने कहा, “इसके समझनेकी शक्ति नहीं है आपमें।”

हरेदने कहा, “आपके जगिष्ठ यन्हारपर मुझे आपत्ति है अतः बाबू।”

आगु बाबूने कहा, “यह मैं नहीं कहता कमल कि तुम्हारी युक्तियोंमें सत्य नहीं, पर जिसकी तुम अज्ञासे उपेक्षा कर रही हो उसने भीतर भी बहुत-सा सत्य है। नाना कारणासे हमारे सामाजिक विधि विधानापर तुम्हारी अश्रद्धा हो गई है। मगर एक बात मत भूलो कमल कि बाहरके बहुत-से उत्पात हम सहने पड़े हैं, फिर भी जो आजतक हम अपनी सम्पूर्ण विशेषताओंके लिये जिन्दा हैं सो केवल इसीलिए कि हमारा आधार सत्य था। ससारकी बहुत सी जातियाँ निलकुल लुप्त हो चुकी हैं।”

कमलने कहा, “तो इसमें भी कुछ किस बातका है ? हमेशा उध जगह घेरे बैठे रहनेकी भी क्या आवश्यकता है ?”

आगु बाबूने कहा, “यह दूसरी बात है कमल।”

कमल कहने लगी, “भते ही हो। पिताजीसे मने सुना था कि जायामी एक शाखा यूरोपमें जाकर रहने लगी थी, आज वह नहीं है। मगर उनसे उदले जो हैं, वे और भी बड़ ह। ऐसा ही अगर यहाँ होता, तो उनकी तरह ही हम लोग भी आन पृथ पितामहोंके लिए शोक करने न बैठते, और न अपने सनातन वैशिष्ट्योंपर दग्ध करते हुए दिन ही गुजारते। आप कह रहे थे अतीतक उपद्रवोंकी बात, पर यह भी तो सब नहीं कहा जा सकता कि उनसे भी उदर उपद्रव भविष्यमें हमारे भाग्यमें नहीं उदे ह, या हमारी सारी ही अल्प वट चुकी हैं। तब हम लोग जीवित रहगे किसके अल्प, उताएँ मला ?”

आगु बाबूने इस प्रश्नका उत्तर नहीं दिया, मगर ज्ञान शब्द उद्दीप्त हो उठे, बोले, “तब भी हम जीवित रहेंगे अपने उस आदमीके नित्यतापे उल्लर जो कि हाथें युगासे हमारे गाम अतिप्रलित बना हुआ है। जो आदम हमारे दानमें, हमारे पुण्यमें, हमारी तपस्यामें मौनूद है, जो आदम हमारी नारी जाति व अक्षय सतीत्वमें निहित है, हम उमोन उल्लर जीवित रहने। हिन्दू कभी नहीं मरते।”

अजित हाथका अगभार फेंकर उनकी तरफ आँग पाट-माउकर दगता रहा, जोर धण भरके लिए कमर भी चुप हो रही। उसे पयाल जा गया कि निरध लिखकर इसी आदमीके उसपर अमारण आक्रमण किया है। उसे वह कल नारी जातिने कल्याणने लिए अनेक तारियाँक समक्ष दमने साथ पड़ेगा, जोर उसमें मारेक मारे कगाउ सिफ उसाओ लथ्य करन किये ह। दुजय प्रोवसे उमका चेहरा सुन हो उठा, परन्तु इस बार भी उसने अपनी सँभाल लिया जार स्याभापिन स्वयम कहा, “आपके साथ रात करनेकी मेरी इच्छा नहीं होती अक्षय बाबू, मेर आत्म-सम्मानमें चोट लगती है।” यह कहकर वह आगु बाबूकी तरफ मुँह फेरकर कहने लगी, “यनी रात मैंने आपसे कहनी चाहो थी कि काद भी आदम सिर्फ त्थालिए कि वह उदुत कालतक स्थायी रहा है, तिय स्थायी नश हो सकता जार उसक परिवर्तनमें भा लनाको काद बात नहीं, उससे जातिनी प्रिणितता मो अग्न जाती हो, तो भी। एन उदाहरण देती हूँ। अतिथि मत्कार हमारा एक बड़ा आदम है। कितने काय, कितने कथानक, कितनी धमकथाएँ इसपर रची जा चुकी ह। अतिथिको खुश करनेके लिए दाता कणन पुनतकनी हत्या कर दी थी। हम रातार न जाने कितने आदमियोंके आँगू उहाये होंगे। फिर भी, यह काय आज सिफ कुत्सित ही जहाँ त्रिक्रि बीमत्स माना जायगा। एक सती स्त्रीने पतिको कंधपर रखकर गणिसाल्य पहुँचा दिया था,—सतीत्वने इस आदमकी भी किसी दिन तुलना नहीं थी,—मगर आन ऐसी घटना कहीं हो जाय तो वह मनुष्यक हृदयमें सिफ घृणा ही उत्पन्न करेगी। आपका अपने जीवनका जो आदम, जो त्याग, लागोंके मनमें श्रद्धा और विस्मयका कारण हो रहा है, किसी दिन ऐसा आ सकता है जब यह सिफ अनुसम्भाकी रात रह जायगी और उस निष्पल आत्म विग्रहकी ज्यादतीपर लोग उपहास करने चले जायेंगे।”

इस जाधानकी निमग्नतासे लहमे भरके लिए आगु बाबूका चेहरा बेदनासे पीला पड गया। वे बोले, “कमल, इसे निग्रहण रूपम ले क्या रही हो, यह तो मेरा आनन्द है। यह तो मेरा उत्तराधिपतिर सत्रसे प्राप्त अनेक युगाका धन है।”

कमलने कहा, “हो अनेक युगाका। सिफ वष गिनकर हा जादगाका मूय नहा आँका जाता। जचल, अरुल गलतियाम भरे समाजन हजारों वष भी, सम्भन है, भगियन दस वषन गति नगमें वह जायँ। व दस वष ही उन हजार वषोंसे बहुत ज्यादा नड ह, आगु बाबू।”

अजित अरुसात् मनुयन छोड हुए तीरकी तरह सीधा सडा हो गया, बोला, “आपकी ताताकी उग्रतासे इन लोगोंन शाब्द आश्रयका ठिकाना न रहा हागा, मगर मुझे जरा भी आश्रय नहा हुआ। म जानता हूँ कि न्य विजातीय मनोभावना मूल खात कहाँ है? किसलिए हमारे समस्त मगल जादगों क प्रति आपकी इतनी जबरदस्त घृणा है? मगर चलिए, जन हमार पास व्यथ देर करनेना वक्त नहीं है, पाँच वज गये।”

अजितन पीठे पीठे सत्रन सब चुपचाप कमरेसे बाहर निरल गये। किसीने उससे अभिवादनतन नहीं किया, आर न किसीने उसकी तरफ मुटकर देखा ही। युक्तियाँ जन हार मानने लगी तब इस तरहस पुरुषान दलन निजय धोपणा करने अपने पीरुपकी कायम ररता। उन लोगाके चने जानेपर आगु बाबूने धीरे धीरे कहा, “कमल, मुझपर ही आज तुमने सत्रसे ज्यादा चाँट पहुँचाद है, किंतु मैंने ही आज तुम्ह मानो सम्पुण हृदयसे प्यार किया है। मेरी मणिसे मानो किसी अशमें भी तुम कम नहा हो बेटी।”

कमलने कहा, “इसका कारण यह है कि आप सचमुचम महान् पुरुष ह चाचाजी। आप तो इन सत्रों जेसे मिथ्या नहीं ह। पर मेरा भी समय निरला जा रहा है, म जाती हूँ।” इतना कहकर उसने उनके पाँचक पास जाकर झुकके प्रणाम किया।

प्रणाम यह साधारणत किसीकी भी नहा करती। आज उसके इस अनहोने आचरणसे आगु बाबू चचल हो उठे। आशीवाद देते हुए बोले, “जन कन आओगी वगी?”

“जन शायद मेरा आना न हागा चाचाजी।” इतना कहकर वह कमरेसे बाहर चली गद और आगु बाबू उसकी तरफ देगते हुए चुपचाप बैठे रहे।

१२

जागरेने नये मजिस्ट्रेटजी स्त्रीना नाम हे मालिनी । उहाच प्रवास और उन्हीने मजानपर नारी-व्याख्यान समितिजी स्थापना हुद । प्रथम अधिवेशनजी तैयारियां ज्या कुछ समागहने साथ ही हुद थीं, किन्तु अधिवेशन अच्छी तरह सम्पन्न हो हुआ नहीं, बल्कि उसमें जाने नैसी एक विप्लवला-सी पैदा हो गई । तब मुख्यत यह थी कि यद्यपि आयोजन सब स्त्रियांके लिए ही था पर पुस्तकाके गरीब होनकी भी मनाही नही थी, बल्कि देखा गया, तो इस आयोजनमें पुष्प ही कुछ विशेषतासे निमंत्रित हुए थे । 'सका मार था अग्निनाशपर । मननशील गेनकरने तारपर ज सक्ता नाम था, और ऐगोंका दायित्व उर्हान ग्रहण किया था । अतएव, उर्हानके परामर्शने अनुसार एक निवनाथन सिवा जात्र किसीको भी छोडा नहा गया था । अग्निनाशकी छोटी साली गीलिया घर घर जाकर धनीसे लकर गरीबतक शहरकी सभी गंगाली गिण महिलाओमें जानेके लिए अनुरोध कर आई थी । सिध, जानकी इच्छा नही थी जात्र गानकी, पर गठियाके ददने गाज उनकी रक्षा नही ना, मालिनी खुद जाकर उह पत्रडे ने गई । अउय अना व्याख्यान शधमें लिये तैयार था, मामूला विनय भाषणक प्रचलित दो-चार शब्दोंके बाद वह सीधा और फटार होकर सडा हो गया और व्याख्यान पन्ने लगा । थोडी ही देरमें ऐसा लगा कि उसका वक्तव्य निषय नैमा जहचिहर है वैसा ही लग्ना भी । साधारणत जेगा हुआ करता है, प्राचीन कालकी सीना-सागिरी आदिना उल्लेख करक उनमें आधुनिक नारी जातिनी जात्रा हीनतापर बगानु लिये थे । एक आधुनिक गौर शिक्षिता महिलाके घरपर उन्हाकी 'तथाकथित' गिणान रिबद कत्रा तते कडोमें भ्से सनाच नहा हुआ । कारण अउपनी गत्र था कि अप्रिय सय कहनम वह उरता नहीं । लिहाजा, व्याख्यानमें सय हो, 'बाद न हो, अप्रिय उचनोंकी कमी नहीं थी । और उस 'तथाकथित' शब्दकी 'व्याख्यान लक्ष्यमें शिक्षण उगाकरणकी नजीर थी कमल । इस अमंत्रित स्त्रीके प्रति जक्षयक 'व्याख्यानम इतना जयमान था कि जिसकी हद नहा । अन्तने अउमें यह गहरे दु गये साथ ये शब्द कहनेके लिए मजबूर हो गया कि इसी शहरमें गीर एसी ही एक स्त्री मौजूद है, जो गिण समाजम गरावर प्रथम पा रहा है । ऐसा स्त्री, जिसने अपने नामक जावनकी अर्थ जानकर,

भी लज्जित होना ता दूर रहा, सिफ उभेवाकी हँसी हँसी ह, जिसने लिए रिवाज अनुष्ठान सिफ अथहीन सत्कारमात्र है और पति-पत्नी अत्यन्त एकनिष्ठ प्रेम जिसकी दृष्टिमें महज मानसिद्ध कमजोरी है। उपसहारमें आत्यये इस बातका भी उल्लेख किया कि नारी होकर भा जो नारीने सम्भीरतम आदरको अस्वीकार करती है, तथाकथित उस शिक्षित नारीने उपयुक्त विशेषण और उस स्थानक निणयमें उक्तका अपनी तरफसे कोई संशय न होनेपर भी सिफ सन्तोचन वह उसे बतानेमें असमर्थ है। इस जुटिके लिए वह सबसे क्षमा चाहता है।

वर्तमान महिला-समाजमें मनोरमाके सिवा और किसीने उस शौचासे नहीं देखा था। परन्तु उसने रूपकी रक्षाति और चरित्रकी अर्यातितो हरेक पुण्यक मुँहपर चक्कर चला होनेमें कसर नहीं रखी। यहाँतक कि इस नव प्रगतिष्ठित नारी-कल्याण-समितिनी सभानेनी मालिनीने कानोंम भी वह पहुँच चुकी थी, और इस विषयको लेकर नारी मण्डलम परदके भीतर और गहर कुर्तुहलकी सीमा न रही थी। इसलिये, रुचि जोर नीतिन सम्पन्न विचारने उल्लाहसे उद्दीप्त प्रश्नमालाकी प्रवृत्तासे पक्तिगत आलाचना तीव्र हो उठनेमें शायद देर न लगती, किन्तु उक्तका परम मित्र हरेद्र ही इसमें कठोर प्रतिरोधक हो उठा। वह सीधा उठने लगा हा गया आर बोला, “जब बाबूने इस निबंधका मैं पृणत प्रतिपाद करता हूँ। सिफ अप्रत्यागिक होनेकी वजहसे ही नहा,—किसी भी महिलापर उसकी गैरमौजूदगीमें जाग्रहण करनेकी रुचि नीस्वली (पापारिण) जोर उसने चरित्रका अकारण उल्लेख करना अशिष्ट और हेय है। नारी-कल्याण समितिनी तरफसे इस निबंध लेखकका विचार दना चाहिए।”

इसने पाद ही एक महामारीका-सा वाण्ड उठ सडा हु ता। अक्षय हिताहित जानबूझ होकर जो मनमें आया, कहने लगा आर उसका उत्तरमें स्वयं भापी हरेद्र बीच बीचमें ‘रीस्ट’ और ‘ब्रूट’ कहकर जवाब देने लगा।

मालिनी नद ता ही इनके सम्पन्नमें आद थी, सत्सा इस तरहने वारू वितण्डाकी उग्रतासे बड़ी जाफतम पड गई, और इस उक्तेजनाके प्रयाहमें अपना मतामत प्रकट करनेमें किसीन भी कृमीसे काम नहीं लिया। चुप रहे सिफ एक जागु गानू। निबंध पढ़े जानेके प्रारम्भसे ही जो वे गरदन झुकाकर बैठे सो सभा सतम होनेतक फिर उठेने मुँह नदी उठाया। और भी एक आत्मीने इस तकयुद्धमें साथ नफा दिया, और वे ये हरेद्र अक्षयकी बातचीतने नित्य

अभ्यन्त -भिनास नानु ।

इस बातको मालिनी जानती थी कि यत्कि विशेष चरित्रकी भलाइ बुगइका निरूपण करना इस समितिमा लक्ष्य नहा है और इस प्रकारकी आलोचनासे नर नारीमते किसीमा भी क्याण नही होता । इस बातको भी किसी तरह मालिनी समझ गई कि निरधम आगु नानुपर भी विशेष क्यास किया गया है और इससे उनको अत्यंत क्लेश हुआ है । समा भग हानेने राद बढ़ चुपनेसे अपना आसन छोड़कर इस प्रौढ व्यक्तिके पास जाकर बैठ गई और लज्जित मूट कण्ठसे बोली, “निरधम आज आपका शान्ति नष्ट करनेके लिए दु निवत हूँ आगु नानु ।”

आगु नानुने हँसनेकी कोशिश करते हुए कहा, “घरमें भा म जनेला ही रंग रहता । यहाँ कमसे कम समय तो रुट गया ।”

मालिनीने कहा, “बह इससे अच्छा था ।” फिर जरा ठहरकर कहा, “आज व * नहा यहाँ, भगि यहासे ग्या पीकर जायगी ।”

“अच्छी बात है, मैं यहाँसे जाकर गाडी भेज दूंगा । लेकिन ओर सत्र स्त्रियाँ ।”

“न भा सत्र आज यहा जीमगी ।”

अभिनास आर अजितके साथ आगु नानु गाडीमें बैठ ही रहे थे कि हरेद्र आर अथय आ धमने । उह भी पहुँचा देना होगा । राजी होना पडा । गन्ते भर आगु नानु मौन रहे । निरन्तर उह इस बातका क्याल होता रहा कि कमलकी लक्ष्य करन बिना नानु अथयने उनपर अशिष्ट कटाप किया है ।

गाडी घरपर पहुँची । नीचेके दरामदेम एक परिचित आदमी बैठा था । उम्बदवाला नैसी उसकी पोशाक थी । पास जाकर आगु नानुका उसने अंग्रेजीम अभिनादन किया ।

“क्या है ?”

जयाम उगने एक परचा हाथमें देने हुए कहा, “चिट्ठी है ।”

चिट्ठी उन्होंने अजितके हाथमें दे दी । अजितने उसे मोहरकी बत्तीके सामने ल जाकर पना, बोला, ‘कमलकी चिट्ठी है ।’

“कमलकी ! क्या पिना है कमलने ?”

“लिग्या है, पत्र ले जानेवाले सत्र मादम होगा ।”

आगु नानुने जिजामु चेहरेकी तरफ देखते हुए उसने कहा, “उनकी

इच्छा नहीं थी कि यह चिट्ठी और किसीने हाथ पड़े। आप उनका जपन जादमी ह। मेरे ऊपर कुछ रुपये चाहिए ये।”

बात सतम भी न हुई थी कि आशु गावू सत्सा अत्यन्त क्रुद्ध हो उठे, बोले, “मैं उमरा अपना आदमी नहा हूँ, जसलमें वह मेरी को नहा होती। उसकी तरफसे मैं क्यों रुपये देने लगा ?”

गाडीमने अश्वयने कहा, “जस्ट लाइव हर।” (टीर उमीरी तरह)

बात सभीके कानमें पड़ी। परवाहक भला आदमी था। लजित होकर बोला, “रुपये आपको नहीं देने होंगे, वे ही देंगी। आप सिर्फ कुछ दिनोंके लिए जामिन हो जायें तो—”

आशु गावूना गुस्सा और भी बढ़ गया। उन्होंने कहा, “जामिन होनेकी गज मेरी नहा है, उनके पति ह, उनकी बात उहीसे करिएगा।”

भला आदमी अत्यन्त विस्मित हुआ, बोला, “उनके पतिकी बात तो मने सुनी नहीं।”

“पता लगानेसे मुन हेंगे। गुड नाइट। आओ जजित, अब देर न करो।” कहकर वे उसे लेकर ऊपर चले गये। ऊपरके सहनवाले प्रण्टेसे शॉकर फिर एक बार डायरको याद दिला दिया कि मजिस्ट्रेट साहबकी कोठीपर गाडी पहुँचानेमें देर नहीं होनी चाहिए। जजित सीधा अपने कमरेमें जा रहा था, पर आशु गावू उसे अपनी पैठन ले गये, बोले, “पैठो। देर लिया मजा ?”

इस बातने मानी क्या हुए, अजित समझ गया। वास्तवमें उनकी स्वाभाविक सहृदयता, शान्तिप्रियता और चिराम्यस्त सङ्गिणुताके साथ उनकी इस क्षण भर पहलेकी अकारण जोर अनचेती रूपाने एक अश्वयके सिवा शायद और किसीको भी आघात पहुँचानेमें कसर नहीं रखी। पर गौर कुछ जाने एक दिन इस रहस्यमयी तरुणीके प्रति अजितका अत करण श्रद्धा और विश्वाससे भर उठा था। मगर जिस दिन कमने निशीथ रात्रिमें अपने विगत नारी जीवनका कच्चा चिट्ठा अनायास ही खोलकर रख दिया, उस दिनसे अजितके प्रिय और घृणाका सीमा न रही। इसी तरह उसने ये कई दिन बीते ह, और इसीमे आज नारी-कल्याण समितिने उद्घाटनके अवसरपर आदर्शवादी अश्वयने जो नारीत्वका आदर्श दिग्गानेके महान इस स्त्रीपर जितने भी कटाक्ष और

कृत्तियों की थी, उनसे अजितनो दुःख नहीं हुआ था। मानो उसने एसी ही आशा कर ली थी। फिर भी अन्धनी क्रोधार्थ पररताम चाहे जितना भी तीक्ष्ण दृष्टि क्या न हो, जागू गानू अभी अभी जो कर बैठे उसमें कमलने मानो कान मल दिये गये,—कल अनन्वता होनेने कारण ही नहीं, पुरुषक जयोग्य होनेने कारण भी। कमलनो वह अच्छा नहीं कहता। उसने मतामत और सामाजिक आचरणनी सुनीन निन्दामें अजितने अन्याय नहीं देता। वह अपने अन्दर इस रमणीने विरुद्ध कठोर घृणाका भाव ही परिपुष्ट होता देखा रहा है। वह कहता है, शिष्ट समाजमें जो चलता नहा उसे छोड़ देनेमें अपराध छूतातक नहीं। मगर इससे क्या हुआ?—दुदगाम पटी एक कजदार स्त्रीकी बुरे दिनाम माँगी गद मामूली-सी कुछ रुपयानी भीषणो लात मार देनेमें मानो वह पुरुष मात्रने चरम असम्मानका अनुभव करने मग ही मग जमीनमें गल गया। उस रातकी सारी रातचीत उसे याद आ गद। उसे उड़ जतनसे गिलाते वक्त कमल ने जा उसे चाय-बगीचेनी आप गीती सारी घटनाएँ सुनाद था, उसकी मौँका रिस्ता, उसका अपना इतिहास, जेजेज मनेजर साहने घर पैदा होनेका वणन,—सब रात उसने दिमागमें घूमने लगी। ने जितनी अद्भुत था, उतनी ही अश्चिकर। मगर वह सब कहनेनी उसे जरूरत क्या थी? और ठिया रखती ता नुफसान ही क्या हाता? मगर दुनियाकी इस सहज मुमुद्रिन जमा-खचना हिमात्र शायद कमलने ग्यालम नहीं आया। अगर आया भी हो ता उसने उमनी पगवाह नहीं की।

और सबसे बल्कर आश्चयजनक उसका कठोरसे कठोर धैर्य है। देरकसे उसीने मुँहसे उमे पहले पल मालूम हुआ कि शिवनाथ रुद्ध बाहर गहा गया, इसी गहरमें ठिया हुआ है। ओर मुनकर उह चुप रही। चेहरेपर न तो वेदनाका जाभास दिखाद दिया और न जगानसे शिफायतनी भाषा निकली। इतने बड़ मिथ्याचारक विरुद्ध उसने दूसरेने सामने शिफायत करनेका नामतक नहा लिया।—उस दिन सम्राट् महिषी सुमताजके स्मृति-मौधने किनार कठर जो रात उसने हँसते हुए हँसी हँसामें मुँहने निकाली था उनका निलकुल अरग पालन किया।

आगु गानू खुद भी शायद क्षण भरक लिए अनमने हो गये थ, सहसा सचेत होकर पहले प्रश्ननी पुनरावृत्ति करते हुए बोले, “मजा देव लिया न अजित!”

में निश्चयसे साथ कहता हूँ कि यह उस शिम्नाथकी ही चालाकी है।”

अजितने कहा, “नहीं भी हो। मिना जाने कुछ कहा नहीं जा सकता।”

आगु राबूने कहा, “हाँ, हो सकता है। मगर मेरा विश्वास है कि यह चाल शिम्नाथकी है। मुझे यह पडा आदमी जानता है न ?”

अजितने कहा, “यह तो सभीको मालूम है। कमल खुद भी न जानती हो, सो बात नहा।”

आगु राबूने कहा, “तब तो और भी ज्यादा बुरा है। पतिसे छिपाना तो अच्छी बात नहा।”

अजित चुप रहा। आगु राबू रहने लगे, “पतिसे छिपाकर और शायद उसकी रायसे गिलाफ दूसरे रुपये उधार लेना स्त्रीके लिए कितनी बुरी बात है। इसे हरगिज प्रश्न्य नहा दिया जा सकता।”

अजितने कहा, “उन्होंने रुपये तो माँगे नहीं, सिर्फ जामिन देनेके लिए अनुरोध किया था।”

आगु राबूने कहा, “दोनों बात एक ही हैं।” अण भर मोन रहकर वे फिर बोले, “और फिर मुझे अपना आदमी बताकर उस आदमीको धोखा किसलिए दिया ? वास्तवम में तो उसका कोई लगता नहीं।”

अजितने कहा, “शायद वे आपसे सचमुच हा अपना समझती हैं। मालूम होता है, उनका किसीको धोखा देनेका स्वभाव नहीं है।”

“नहा नहा, मैंने ठीक वैसे बात नहीं कही अजित।” कहकर मानो उन्होंने अपने तब जनाबदेही की। उस आदमीको सहसा शौकमें आकर बिदा कर देनेसे वह भी मन ही मन बड़ा भारी ग्लानि सी हो रही थी। बोले, “अगर वह मुझ अपना ही समझती थी और दो चार सौ रुपयाकी जरूरत ही आ पनी थी, तो वह सीधी खुद आकर ले जाती। खामरसाह एक गहरक आदमीको सत्रस सामने भेजनेकी क्या जरूरत थी ? जार चाहे जो हा, पर उस लडकीमें बिनेस मिल कुल नहा।”

नौरने आकर कहा कि भोजन तैयार है। अजित उठना चाहता था कि आगु राबूने कहा, “तुमने उस आदमीको मार किया था अजित, कैसा भद्रा चेहरा था,—मनी लेंटर टहरा न ! वहाँ जाकर शायद तरह-तरहनी बातें सुनाकर कहेगा।”

अजितने हसकर कहा, मनानेकी जरूरत नहीं पड़ेगी,—सच-सच कह देना ही काफी है।” यह कहकर ज्या ही यह जानेकी तैयार हुआ कि आगु वाबू सचमुच विचलित हो उठे, बोले, “यह अक्षय तो बिल्कुल ही नुदसन्ध माझूम होता है। आदमीकी सहन शक्तिकी सीमा लौंघ जाता है। नल्कि एरु नाम न करो अजित, जटुको बुलाकर उस ड्रॉअरना रोलने देगो तो क्या है। कमसे कम पॉच-सात सौ रुपया,—फिह्राल जो हो, भेज दो। अपना ड्राइवर शायद उन लोगोंका घर जानता है,—शिवनाथको कभी कभी पहुँचा जाया है।” कहकर उन्होंने खु ही जोर-जोरसे नौकरकी पुकारना शुरू कर दिया।

अजितने रोक्ते हुए कहा, “जा होना था सो हो चुका,—अब रातम यह रहने दीजिए, कल सबेरे बिचार कर देगिएगा।”

आगु वाबूने प्रतिवाद किया, “तुम समझते नहा अजित, मोद रास जरूरतने गिना रातहीको वह आदमी हरगिज न भेजतो।”

अजित भ्रम भर स्थिर खड़ा रहा। अन्तमे बोला, “ड्राइवर ता अभी है नहीं यहाँ, मनोरमानो लेकर न जाने कमतक लौटे। इस बीच कमलको सभ मालूम हो ही जायगा। उसके बाद रुपया भेजना उचित न हागा। शायद आपसे अब मे सहायता लेंगी भी नहीं।”

“मगर वह तो सिफ तुम्हारा अनुमान ही है अजित ?

“हाँ, अनुमान तो है ही।”

“लेकिन, परदेसमें न्पयेकी जरूरत तो उमन लिए इससे भी ज्यादा हो सकती है।”

“सो हो सकती है, मगर यह जरूरत शायद आत्म-सम्मानसे बढ़कर न भी हो।”

आगु वाबूने कहा, “लेकिन यह भी तो तुम्हारा सिफ अनुमान ही है ?”

अजितने सहसा थोद उत्तर नहीं दिया। भ्रम भर सिर घुमाये चुप रहकर वह बोला, “तहा, यह अनुमानसे भी बढकर है। यह मेरा निगास है।” इतना कहकर यह धीरे धारे कमरेसे बाहर निकल गया।

आगु वाबूने अरुनी उसे रोका नहीं, सिफ घेदनासे दोना आँखें पेंगकर वे उसकी ओर देखते रहे। इस बातको वे पुद भी जानते ह कि कमराके सम्बन्धमें ऐसा विबास होना न असम्भव है और न असङ्गत। निरुपाय पश्चात्ताप उनके

अन्त करणसे माना गराचने लगा ।

१३

नारी मन्व्याण मितिसे लोटनेपर नीलिमा अविनाश बाबूसे ले गैर,
“मुन्जी महाशय, कमलसे एरु दपे मिरूगी । मेरी रडी इच्छा है, उसे निमत्रण
दकर तिलाऊँ ।”

अविनाशने आश्रयसे साथ कहा, “तुम्हारी हिम्मत तो कम नहीं है छोटी
मालिनी ! सिफ जान पहचान ही नहीं, एन्गारगी निमत्रणतक कर देना
चाहती हो ?”

“क्यों, वह कोइ बाघ भाऊ है ? उससे इतना डर किसलिए ?”

अविनाशने कहा, “साघ भाऊ इस प्रान्तमें नहीं मिलत, नहा तो तुम्हारे
हुक्ममे उह भी निमत्रण दे आता । मगर इह नहा दे सकता । अश्वय सुन
लेगा ता फिर गैर नहीं । मुझे देना निमाला देकर ही पिण्ड छोडगा ।”

नीलिमा बोली, “अस्य बाबूसे म नहीं डरती ।”

अविनाशने कहा, “तुम्हारे न डरनेसे कोइ नुकसान नहा उसका नाम मेरे
अंशले डरनेसे चल जायगा ।”

नीलिमाने निद करते हुए कहा, “नहा, सो नहा होगा । तुम न जाओगे,
तो मैं खुद जाकर उह लिंग लाऊँगी ।”

“मगर मैं ता उनका घर जानता नहीं ।”

नीलिमा बोली, “लालाजी जानते हैं । म उनसे साथ चली जाऊँगी । वे
तुम जैसे डरपोक नहीं हैं ।”

फिर जरा सोचकर कहने लगी, “तुम लोगोंने मुँहसे जो सुना करती हूँ,
उससे तो भाऊम होता है कि शिवनाथ बाबूका ही कुसूर है । सो उह तो म
योतना नहीं चाहती । म चाहती हूँ कमलसे दंपना, उनसे बातचीत करना ।
कमल अगर आनेसे राजी हा जाय तो मजिस्टेट साहबकी स्त्री,—वे भी आनेके
लिए कहती हूँ, समझे ?”

अविनाश समझ ता सन गये, पर साफ-साफ सम्मति न दे सके और न
उनकी रोझनेकी ही हिम्मत हुए । नीलिमापर वे सिफ स्नेह और श्रद्धा ही करते
हैं सो बात नहा, मन ही मन उससे डरते भी थे ।

दूसरे दिन सुबेरे हरेन्द्रको बुलाकर नीलिमाने कहा, "लालाजी, तुम्हें एक काम और करना होगा। तुम कुँआरे आत्मी ठहरे, धरम यह तो है नहीं जो सदाचारके नामपर तुम्हारे कान ऐंट देगी। बासेम रहते हो, मिना माँ आपन जनाय रुद्धोंने कुण्डम—तुम्हें टर किस रातना है?"

हरेन्द्रने कहा, "टरमी रात पीठे होती रहेगी, पहले पतादए, काम क्या करना होगा?"

नीलिमाने कहा, 'कमलसे मैं मिलूँगी, रातचीत करूँगी, घर बुलाकर खिलाऊँगी। तुम उनका घर जानते हो क्या? सुझे साथ लेकर उन्हें निमन्त्रण दे आना होगा। किस वक्त चलेगे, पताओ?"

हरेन्द्रने कहा, "जिसे वक्त हुस्म करोगी उसी वक्त। लेकिन घर मालिक, भाइ साहबका अभिप्राय क्या है?" रुद्धकर उसने परामर्शने उस तरफ चैठे हुए जमिनाशमी तरफ इशारा किया। ये इजी चेरपर पड़ हुए 'पायोनियर' पद रहे थे। मुना सभ कुठ, पर चोले कुठ नहा।

नीलिमाने कहा, "वे अपना अभिप्राय अपने पास रखें—मुझे उसका जरूरत नहीं। मैं उनका साली हूँ, सालीकी बहन नहा जो 'पति परमगुरु'का गदा घुमाकर मुझपर ग्रास करगे। मेरे जामें जिसे आयेगा, उसे खिलाऊँगी। मजिस्ट्रेटकी बहन कहा है कि उह घर मिल गए वो वे भी आरंगी। उन्हें अच्छा न लगे, तो उनका समय वे और कहीं जाकर मिता आवें।" •

अभिनागने अन्धकारपरसे दृष्टि बिना हटाये ही जवाब दिया, "लेकिन यह काम अच्छा नहीं होगा, हरेन्द्र, कलकी रात याद है न? आगु वायू जैसे गदाशिव आत्मीने भी सावधान होना पडता है।"

हरेन्द्रने कुठ जवाब नहीं दिया और हम टरसे कि कहा कलकी यह रूपाँ साली रात १ उठ गयी हो और नीलिमाको भी न मालूम हो जाय, उसने इस प्रसङ्गको चंगे दबाकर कहा, "इससे तो बल्कि एक काम न कर भाभी, उह मेरे घरपर आनेका निमन्त्रण दे जादए और आप हो जादए उन घरकी मालिकिन। लक्ष्मीहीन घरमें कभये कम एक दिन तो लक्ष्मीना आभिमान हो जाय। मेरे लहके भी थोड़ी-बहुत बुरी भली चीजें खाकर खुशी मना ल।"

नीलिमाने अभिमानने मन्थर कहा, "अन्धी रात है, ऐसा हा सही—मैं भाभीपरमें उलाहनासे रात जाऊँगा।"

अग्निनाश उठने बैठ गये, बोले, “अथात् छींठालेदर धानम फिर कोद रसर ही न रह जायगी, कारण, गिजनाथका छोटकर गिफ उहामो तुम्हारे घर निमचित करानी फिर कोद बैपियत ही नहा दी जा सकगी। इगसे ता रत्कि, यही मुननेमें बहुत अच्छा लगेगा कि औरतें आपमम जान पहचान करना चाहती हैं।”

रात सचमुच ही युक्तिसगत थी। इसलिए यनी तय हुआ कि कालेजनी दुष्टी होनेके बाद हरेद्र नीलिमाका साथ ले जानर कमलका योता दे आये।

शामको हरेद्रने आकर कहा कि अब तकलीफ उठाकर वहाँ जानेकी कोद जरूरत नहीं। कल रातको यातेकी रात उनमे कही जा चुकी है जोर वे जानेको राजी हो गई हैं।

नीलिमा उत्सुक हो उठी। हरेद्र कहने लगा, “कल घर लौगते वक्त अचानक उनसे रास्तेम भट हो गइ। माथम पल्लेदारने सगपर एक भारी भरकम रफस था। मैंने पूछा कि इसम क्या है? कहाँ जा रही हो? उन्होंने कहा, जा रही हूँ जरा कामसे। तब फिर मन आपका परिचय दते हुए कहा, माभीने आपको कल शामके लिए योता भेजा है। औरताका मामला उहरा, आपको जाना ही पड़ेगा। जरा चुप रहकर उ हाने कहा, अच्छा। मैंने कहा, तय हुआ है कि मेरे साथ चलकर वे आपको सवायदा न्योता दे जाय—अब उनसे जानेकी जरूरत है क्या? जग हँसकर उन्होंने कहा, नहीं। मने पूछा अन्ली तो आप आ नहा सकेगी, क्या किस वक्त आकर म आपको लिया जाऊँ? मुन कर वे वेने ही हँसने लगा। बोला, जरूली ही म पहुँच जाऊँगी, अग्निनाश गानु का मजान में जानता हूँ।

नीलिमा फिरल गइ, बोली, “उन्नी धेम तो बहुत अच्छी मालम होती है। घमण्ट मिलकुल नहीं।”

उगलने कमरेमें अग्निनाश गानु स्पष्टे बदलत हुए कान लगाने सत्र मुन रहे थे, बहासे पूछने लगे, “और कुलीन सिरपर वह भारी रफस? उसका इतिहास तो बताया ही नहा भाइ माहय?”

“हरेद्रने कहा, पूछा नहीं।”

“पूछते तो अच्छा करते। सायद बचने या गिरना रखन जा रही होंगी।” हरेद्रने कहा, “हो : रता है। आपने पास गिरवी रखने आये तो आप इतिहास

पूछ लीजिएगा।" इतना कहकर वह उठ ही जा रहा था कि गंगा दरवाजे के पास खड़ा होकर बोला, "भाभी, अपना पाय-ब-पाय-स-मतिन। अपना चारपाय तो आपका गुन हा लिया होगा ? हम लोग उसे 'मू' कहा क्या है। मगर उम बेनारसे और धाड़ना पाण्डु बुद्धि होती तो वह उमायम नहीं आयानीम साधु महतक रूपम चल जाता, क्या, गुरु है न भाद साहब ?"

अभिनाम झोतरा हो गरज उठे, "हाँ जा, भित्वा-न्द भ्रामाराह मणाप्रभुजा, हमें मदेह ही क्या है ? न-तुरता नद वागल जिगा न न पाकर।"

"क्या शिष्ट कहेंगा। लेकिन जड़ चल रिगा भाभाजा, न फिर क्या समय हातिर हाउगा।" कहकर वह चला गया।

नालिमान तैशारीमें वाद कसर नहीं उठा रहा। मनारमा गुरून ही कमलसे बहुत खिलाफ थी। यह जानकर कि वह भिभी भी हालतम तहा आयेगी, जागू सानूके घरमें बियासे भा नहीं कहा गया था। मालिनीको खबर भेजी गई थी, पर अचानक अव्यत्य हा जानेसे वे भी नहीं आ सरी।

कमल टीक खपर आ गइ। सान-साहापर तही, जनेगी और पैदल जा पहुँचा। घर मालिनीने उन आदरसे साध रिगया। अभिनाम गामने मदे थे। कमलको उहोंने बहुत दिनोंत देगा नहीं था, आज उमक चहरे और उपगारी तरफ दगजर आशयचरित्त रह गय। गरीबीसे छाप उनपर साप पडी हुद थी। आशय प्रकट करत हुए बाने, 'सतको अकली ही पैदल चली आ रही हा क्या, कमल ?'

कमल ने कहा, "इसका कारण अत्यन्त साधारण है अभिनाम सानू, ममवने म जय भी कतिनाह नरा।"

अभिनाम सानू लजित हो गय, और लजा डिपानेन लिए चउसे गाल उठे, "तहा नहा, क्या कद रहा हो तुम ? काम टीक तहा हुआ लेकिन,—ओगी नह, ये ही ह कमल। इहाना दूगग नाम दे गियानी। सहाको देगणेन लिए तुम इतनी उतावली कर रही थी। चला, मानर चलकर मैग। तैशारी तो तुम्हारी सय हो चुका हागी, छोटी मालिनि, फिर निरपक देर करनेसे क्या फायदा ? टीक समसपर इह कि घर भी तो पहुँचा है।"

इस सय उपदेश और पूछ ताउम बहुत कुठ प्यादती थी। न तो हममें जासनी मोद जरूरत थी और न इसकी कोद उम्मीद ही करवा था।

हरेद्रने आकर कमलको नमस्कार किया। बोला, “जतिथिको स्वागतके साथ ग्रहण करते वक्त मैं पहुँच नहा पाया भाभीनी, बसूर हो गया। अक्षय आया था, उसे यथोचित मीठे वाक्यांसे परितुष्ट करने विना करनेमें देर हो गई।” और वह हँसने लगा।

भीतर जाकर कमलने जो भोजन-सामग्रियाँ प्राच्य दगा तो धण भर चुपचाप खानी रह गई और बोली, “मेरे लिए चीज तो ये खूब बनाई हैं, लेकिन मैं तो यह खाना खाती नहीं।” इसपर सन-यस हो उठे तो वह बोली, “आप लोग जिसे हजियान कहते हैं, मैं सिर्फ वही खाती हूँ।”

सुनकर नीलिमा दग रह गई, बोली, “यह क्या बात कही आपने? आप हजिय खाएगी, जिस दुःख कारण?”

कमलने कहा, “रात ठीक है। दुःख नहा है, सो रात नहा लेकिन यह खाना खाती नहीं हूँ, इसलिए मेरी जरूरत भी कम है। आप कुछ खयाल न करें।”

“पर बिना खयाल किये काम भी तो नहा चलता।” नीलिमाने धुण होकर कहा, “नहा खानेसे इतनी चीजें मेरी नष्ट जो होंगी?”

कमल हँस दी। बोली, “जो होना था सो तो हो चुका, उसे लौंगया नहा जा सकता। उसपर फिर खाना खुद क्यों नष्ट होऊँ?”

नीलिमाने विनयके साथ जन्तिम चेष्टा करते हुए कहा, “सिर्फ आप भरने लिए, सिर्फ एक दिनके लिए भी क्या नियम भंग नहीं कर सकती?”

कमलने सिर हिलाकर कहा, “नहा।”

उसके हँसते हुए मुँहसे सिर्फ एक ही शब्द सुनकर सहसा किसीका कुछ भी ठीक खयाल नहीं आ सकता कि उसमें इतना शक्तिनी जरूरतम था। परन्तु वह दृढ़ताकी मनस पड़ी हरे द्रने कानमें और सिर्फ वही समझा कि इसमें किसी तरहका फेरफार नहीं हो सकता। इसीसे घर मात्किन्निकी तरफसे अनुरोधनी पुनर्गति होत ही उसने टोक दिया, बोला, “रहने दो भाभी, अब मत कहो। चीज आपकी काद मिगटेगी नहा, मेरे यहाँके लटके जाकर पाठ पौठके सन साफ कर जायँगे। पर इनसे अब जाग्रह मत करो। बल्कि जो कुछ साथ उसका इन्तजाम करो।”

नीलिमा गुस्सा होकर बोली, “सो किये देती हूँ। पर मुझे अब तसही देनेकी जरूरत नहीं लालाजी, तुम रहने दो। यह घास-फूस नहा है जो तुम अपने

छुड़के छुड़ भेन बरगल चत गगे । इमे म रान्नेम फर दूंगा, पर उह न गिलाऊंगी ।”

हरेद्रने हँसत हुए कहा, “क्या, उापर श्रापनी इतनी गाराजगी क्या है !”

नालिमा ने कहा, “उहाँकी बदीलत तो तुम्हारी यह दुर्गति है । गाय गपया छुड़ गये हैं, खुद भी पैदा कम नहीं करते,—अन्तर बहू आती तो लटके-गलास पर भर जाता । ऐसा अमाग काण्ड तो न होता । खुद भी जैसे तुँआरे सार्किन महाराज हो, दल भी पैसा ही लायन तैयार हो रहा है । तुमने कह देती हैं, उहँ मैं हगिच न गिलाऊंगी ।—जाने दो, मेरा सय गिगड जाने दो !”

कमल कुठ भी न समझ सगी, आश्रयसे देखती रह गई । हरेद्र लजित होकर बोला, “माभीनीनी बहुत दिनोंगे मुझपर जो नालिश चर रही है, यह उसीनी सगा है ।” कहते हुए सशेषम मामला मुलझाना चाहा, बोला, “वे गिना माँ-आपने मेरे आशय छान हैं । मेरे पास रहकर स्कूल और कालेजमें पन्ते हैं । उापर इनका साराका सारा गुम्हा जा पडा है ।”

कमाने त्वन्त आश्रयसे साथ कहा, “यह बात है क्या ? कहाँ, मने तो आजतक कमी सुना नहीं !”

हरेद्रने कहा, “मुनने लयन दगम जुठ नहीं । लडिन वे ह गय चरित्रसार जच्छे लटन । उनपर मेरा स्नेह है ।”

नालिमा बुद्ध स्वरम गोल उठी, “उनका प्रण है कि बड़े होकर वे सय देग गया करगे ।—अथात् गुरु जैसे ब्रह्मचारी गीर मननर गिगित्त्य करंगे ।”

हरेद्रने कहा, “बगी एक दिन उह देखने ? देखके प्रसन्न हांगी ।”

कमल उमी बक्त राजी होकर बोली, “अगर आप ले जायँ तो मैं बल ही जा सक्ती हूँ ।”

हरेद्रने कहा, ‘नहीं, बल नहां, और किसी दिन । हमारे आश्रमन सनेद्र सतीश काशी गये ह, उन लोगाने जा जानेपर आपनी ले जाऊंगा । मैं टावेने साथ कहता हूँ, उह देखकर आप खुश हो चारंगी ।”

अविनाश अभी अभी आने गये हुए थे । उसकी वृत्त मुननर वे ऑरें पाडकर गेले, “कुठ जमाने आगाराग अड्डा अभीसे आश्रम भी हो गया क्या ? न जाने कितना पागण्ड रचना तुझ जाता है रे हरे द्र ।”

नीलिमा नाराज हो गई । बोली, “यह तुम्हारी बेजा बात है

साहब ! लालाजी तो तुमसे आश्रमके लिए चंदा माँगने जाये नहीं जो पारखण्टी कहन गाली दे रहे हो ? अपने स्वरचमे पराये लडकोंका जादमी बनाना पारखण्ड नहीं है। रत्निक जो ऐसा आलोप करते ह, उहीँको पारखण्टी कहना चाहिए।”

हरेद्र हँसता हुआ बोला, “भाभी, अभी-अभी आप ही तो उह भेट करन का छुण्ट प्रताकर तिरस्कार कर रही थी, अब आपकी ही बातनी प्रतिध्वनि करनेमें भाप साहबको यह पुरस्कार मिल रहा है।”

नीलिमाने कहा, “म कह रही थी गुस्सेमें। लेकिन उहीँने ऐसा क्या सोच कर कहा ? पारखण्ड किसे कहते ह, पहले अपने अदर स्पष्ट कर ल, फिर दूसरेसे कहें।”

कमलने पूछा, “आपने तो सभी लडके स्कूल-कालेजम पतत होंगे ?”

हरेद्रने कहा, “हँ, बाहरसे तो ऐसा ही है।”

अग्निनाग बोल उठ, “जान भीतरने क्या सब प्राणायाम और रचक कुम्भन की चचा करते हँ ? उसे भी साथ साथ क्या गही कह देते ?”

सुनके सब हँस दिये। नीलिमाने अनुनयन स्वरमें कमलसे कहा, “मुखर्जी महापायका आज्ञा मिजाज देखाकर उनके विषयम थोद धारणा न बना लीनिगा। कभी कभी इनका दिमाग बहुत ठण्डा रहता है, नहीं तो बहुत पहल ही मुझे यहाँसे भागकर जान उचानी पडती।” कहकर वह हँसने लगी।

वहीँपर जरा कुछ उच्चापनी भाप जमती जा रही थी, इस सिग्ध परिहासन बाद मानो यह उड गइ। इतनेमें महाराजने जानर खतर दी कि कमलका भोजन तैयार है। अतएव, बतमान आलोचना स्थगित रखकर सबको उठना पडा।

×

×

×

करीब दा घण्टे बाद भोजनादि हा चुकनेपर सब जाकर जब बाहरन कमरेम बैठ, कमलने तब पूव प्रसंगके सिलसिलेम पूछा, “लडके आपने रचक कुम्भन कहा करते तो न सही, पर कालेजकी पुस्तक कण्टस करनेन सिना आर जा भी कुछ करते ह सो क्या है ?”

हरेद्रने कहा, “करते कर रहे ह। इस बातनी कोशिशम भी व लापरवाही नहीं करते जिससे कि भविष्यम वाम्नायमें जादमी इन सखें। मगर जिस दिन आपने पाँवोंनी धूल उहाँ पडेगी, उस दिन सब बातें समझा दूँगा। जान नहीं।”

इस छीना इतना ज्यादा सम्मान लिया जा रहा था कि अग्निनाशका साथ

रदन श्वासे जगने लगा, मगर वे चुप ही बने रहे ।

नीलिमा ने कहा, “आज कहनेमें आगिर अटचन क्या है, टालाजी ? अपनी गिना पद्धतियों सामने नहीं चालना चाहते तो न सही, पर यह उताहम क्या दोष है कि प्राचीन काल में भारतीय आदमापर अपनी तरह सबका ब्रह्मचारी होनेकी गिना दे रहे हो ? तुमसे तो मने आभासम रूपम यही सुना था ?”

हरेद्रने विनयके साथ कहा, “छठ गुना है, यह तो मैं नहा कह रहा भाभीजा ?” कहते बहुत उसे उस दिनकी जसकी बात याद आ गइ । कमल ने देखकर बोला, “आपका भी शायद मेरे काममें सहानुभूति न होगी ।”

कमलने कहा, “काम आपका क्या है, गौर गौरसे मालूम निये तो कुछ कहा नहीं जा सकता हरेद्र जानू । मगर यह तो कोई युक्ति नहीं है कि प्राचीन काल में लंचम टाका देना ही आस्तममें मनुष्य बना देना है—”

हरेद्रने बग, “परन्तु वही तो हमारे भारतमका आदश है ।”

कमलने जवाब दिया, “पर यह किसने तन कर लिया कि भारतमका आदश ही चिर-युगका चरम आदश है—बताए ?”

जिनाग अरतन कुछ बोले नहा थे, अर गुस्सेको दनाकर बोले, “हो सकता है कि चरम आदश नहा भी हो, लेकिन कमल, यह हमारा पृथुपुन्योका आदर्श जा है । भारतमकियोंका यह हमेंगाका लक्ष्य है, यही उन लंगाने चलनेका एकमात्र माग है । हरेद्रके आश्रमकी बात मैं नहा जानता, लेकिन उसने यही लक्ष्य अगर ग्रहण किया है तो मैं उसे आशीवाद देता हूँ ।”

कमल कुछ दरतन चुप बैठी उनके मुँहकी तरफ देखती रही, फिर बोली, “मादम नहा, क्या आदमाके यह गलती हाती है । अपने सिवा मानो वे और किसी भारत वागीको आँसोंसे देखने ही नहा । भारतम जोर भी तो बहुत-सी जातियाँ रहती हैं, वे हम आदमानों मला क्यों अपनागे चली ?”

जिनाग कुपित हो उठे, बोले, “चूहेम जाँ वे । मेरे पास ऐगा आनेदन निष्फल है । मैं तो सिर्फ अपना ही आदश अगर स्पष्टतासे देख सका तो उसको काफी समझगा ।”

कमलने धारसे कहा, “बट आपकी बहुत ही गुस्सेकी बात है जिनाग जानू । नहीं तो, आपको एतना बडा अधभक्त समझनेकी मेरी प्रवृत्ति नहीं होती ।” फिर उस टहरकर कहने लगी, “मगर, क्या मालूम, शायद पुष्प मरने

सब इसी तरह विचार किया करने हों। उम दिन अजित गान्धर्व सामन भी अफ़स्रात् यही प्रसंग उठ गया था। भारतीय सनातन विशिष्टता और उसकी स्वतंत्रता नष्ट होनेसे उल्लेखसे उनका तमाम चेहरा मारे वेदनाक सपेद पक पक गया था। किसी दिन ये उल्कट स्वदेशी थे—आज भी भीतर ही भीतर शायद बड़ी हं—यह बात उनके लिए सिर्फ प्रत्यक्षा दूसरा नाम है।” इतना कहकर उसने लम्बी सॉस ली और चुप रह गई। अविनाश गायद कुछ जगार देनेको थे, पर कमल उधर बिना देते ही कहने लगी, “लेकिन मैं साचती हूँ कि इसमें डर किस बातका है? किसी एक देश विशेषमें पैदा होनेकी वजहसे ही उसका आचार-चरहार छातीसे क्यों चिपकाये रहना पड़गा? चली ही गई उसकी अपनी विशेषता, तो इसमें हर्ज किस बातका? इतनी ममता क्या? विश्वमें समस्त मानव जगत् एक ही विचार, एक ही भाव, एक ही विधि-अधानकी प्रजा धामन रहने हो जायें, तो इसमें हानि ही क्या है? यही डर है न कि फिर भारतीयके तौरपर हम पहचाने नहीं जायेंगे? न पहचाने जायें, न सही। इस परिचयपर तो बौद्ध आपत्ति नहीं करेगा कि विश्वकी मानव जातिमें हम एक हैं, उसका गौरव क्या कुछ कम है?”

अविनाशको सहसा बौद्ध जगार हूँ न मिला, बोले, “कमल, तुम जो कह रही हो, खुद ही उसका अर्थ नहीं समझता। इसमें मनुष्यका सपनाश हो जायगा।”

कमलने जगार दिया, “मनुष्यका नशा होगा अविनाश बाबू, जो लोग अभिमानमें अंध हो रहे हैं उनके अफ़साराका सबनाश होगा।”

अविनाशने कहा, “ये सब कोरी शिवनाथकी बात है।”

कमलने कहा, “यह तो मुझे नशा मालूम कि वे भी यही बात कहते हैं।”

अबकी बार अविनाश अपनेको संभाल न सके। “यग्यसे चेहरको स्याह करके बोले, “रघु मालूम है, सब बातें कण्ठस्थ कर रखी हैं, और जानता नहीं कि किसी हैं?”

उन्ने इस भेदे अशिष्ट चरहारका कमलने बौद्ध जगार नशा दिया, जगार दिया नीलिमाने। बोली, “बात चाहे जिसकी भी हा मुसलजी साहन, माल्खीके काममें कड़ी बातकी धमकी देकर छात्रोंका मुँह बंद किया जा सकता है, पर उसमें समस्याका हल नशा होता। प्रश्नका जवाब न दे सकते हो लालाजी,

तो इसमें शरमाने का कोई बात नहीं, पर पिछतामो तौष जानेंमें, जम्बर शरम जानी चाहिए !—एक गाड़ी बुलवाने भेजो किसीको भइया । तुम्हें दूरे तक पहुँचा आना पड़ेगा । तुम ब्रह्मचारी आदमी ठहरे, तुम्हें साथ भेजनेमें तो काई डर है ही नहीं ।” कहत हुए उसने कटाक्षसे अग्निनाशनी तरफ देना, और ज़ोली, “सुनजा साहजका चेहरा जैसा भांटा हो उठा है, उसको देखकर जन ज्यादा डेर करना ठीक नहीं ।”

अग्निनाश गम्भीर होकर ज़ोले, “अच्छी बात है, तुम लोग उठी गप्य करो, मैं सोने जा रहा हूँ ।” और वे उठकर चल दिये ।

नीकर गाड़ी लाने गया था । हरेद्रने कमलके प्रति ग़्थ्य करके कहा, “मरे आश्रममें मरकर एक दिन जाना ही होगा । उस दिन लिबाने जाऊँ तो आप 'ना' नहीं कर सकेंगी ।”

कमलने हँसते हुए कहा, “ब्रह्मचारियों का आश्रममें मुझे क्या घसाट रहे हैं हरेन बाबू ! मैं न गद ता न सही ।”

“नहीं, सो नहीं होगा । ब्रह्मचारी होनेसे हम लोग ऐसे भयानक नहीं, शिल्पकुत्त सीध-सादे हैं । गेरजा नहीं पहनते, जग बत्तल चगीरह भी कुछ नहीं । सत्साधारणने नीचमें हम उधार साथ मिले हुए हैं ।”

“मगर यह भी तो अच्छा नहीं । असाधारण होकर साधारणमें आत्मगोपन का मोक्षदा करना भी एक तरहका अयुक्त आचरण है । शायद अग्निनाश ज़ानुने इसीको पागण्ड कहा होगा । इससे तो गन्वि जग-बन्धक, गेरजा चगीरह कहा अच्छा । उसीस आदमाने पहचाननेमें सहृणियत हातो है, और टगाये जानेकी भी कम सम्भावना है ।”

हरेद्रने कहा, “आपके साथ तनम नीतना मुदिकल है,—दारा ही पनेगा । मगर रास्तमें क्या आप हमारी सस्थाको अच्छा नहीं समझती ? सफल होऊँ चाहे न होऊँ, इसका आदान तो महान् है ।”

कमलने कहा, “सो तो मैं नहीं कह सकता हरेद्र बाबू । अन्य सभी सपनों का तरह यौन-सयमम भी सत्य है, मगर वह गान सत्य है । धूमधाम या समाराह के साथ उसे जीवनका मुख्य सत्य बता देनेसे वह भी एक तरहका असयम हो जाता है । उसका दण्ड भी है । जात्म निग्रहने उग्र दम्भसे जाध्यात्मिकता क्षीण होने लगती है ।—तो ठीक है, मैं जाऊँगी आपका आश्रमम एक दिन ।”

हरेद्रने कहा, “आना ही होगा, न जानेसे म छोड़ूंगा नहीं। लेकिन एत रात बड़े देता हूँ, हमारे यहाँ आठम्वर नहा है, प्रदशनने तौरपर हम कुछ नहीं करते।” कहते-कहते सहसा नीलिमाकी तरफ इशारा करके बोला, “मेरी आदश तो ये हैं। इहाँकी तरह हम लोग स्वाभाविकताके पबिक ह, वैधयका कोई ग्राह्य प्रकाश इनम नहो है,—बहरसे मादम हागा कि मानो विलासिताम ये मग्न हो रही है मगर म जानता हूँ इनका दु साध्य आचार विचार, इनका कठोर आत्म शासन—”

कमल मौन रही। हरद्वर भक्ति जोर श्रद्धामे त्रिगलित हानर कहने लगा, “आप भारतने अतीत युगने प्रति श्रद्धासम्पन्न नहा ह, भारतका जादग आपको मुग्य नहीं करता परन्तु उताइए तो भला कि नारीत्वकी इतनी बडा महिमा,— इतना बडा आदर्श और किस देशमें है ? इस घरकी ये गृहिणी ह, भाद्रसाहयकी मातृहीन सन्तानकी ये जननीने समान ह। इस घरकी सारी त्रिभेगारी इहीं पर है। यह सत्र होत हुए भी, इनका काद स्वाथ नहा, काद पधन नहा। उताइए न, किस देशकी त्रिभेगएँ इस तरह पराये कामम अपनेको रखा सकती ह ?”

कमलका चेहरा सित हास्यसे त्रिफलित हो उग। उसने कहा, “इसम भलाइकी बौन सी रात है हरन नानू ? हो सकता है कि पराये घरकी नि स्वाथ गृहिणी और पराये उचारी नि स्वाथ जननी होनेका दृगन्त ससारम और कहा न हो। नहा होना अद्भुत हो सकता है, मगर अद्भुत होनेका कारण ही अच्छा हो जायगा, किस तरह ?”

सुाकर हरेद्र दग रह गया, और नीलिमा मारे आश्चर्यने एकटक उसने चेहरेकी तरफ देखती रह गइ। कमलने उसीको लक्ष्य करके कहा, “गाकोंकी छटासे, त्रिशेषनाम चातुयमे लोग इसे चाहे जितना गारवान्वित क्या न कर लाल, पर गृहिणीपनेने इस मिथ्या अभिनयमें सम्मान नहो है। इस गौरवको जोड देना ही अच्छा है।”

हरेद्रने गम्भीर वेदनाने साथ कहा, “यह तो एक मुश्टगल घर गृहस्थीको नष्ट करने चले जानेका उपदेश है। इस बातकी तो आपसे कोई आशा नहीं रखता था।”

कमलने कहा, “मगर घर गृहस्थी ता इनकी अपनी है नहा, होती तो

ऐसा उपदेश न देती। और मना यह कि इसी तरहसे कम भोगके नशेमें पुरुष हम मतवाली बनाये रखते हैं। उनकी बाहवाहीकी तेज शराब पीकर हमारी आँसोंपर ागा छा जाता है। सोचती हैं, यही शायद नारी-जीवनकी चरम राशकता है। हमारे यहाँके चायके ागीचोंके हरीश बाबूकी बात याद आ गई। उनकी जब सालह सालकी छोटी पहिनना पति मर गया तब उसे घर लाकर वे अपने झुण्डके झुण्ड गाल-बच्चे दिखाने रोते हुए बोले, 'लक्ष्मी, यदन मेरी, अब वे हा तरे बा-बच्च हैं। फिर किस बातकी यदन, इहें पाल-पोसकर जादमी बनाओ, इनकी अपनी माँकी तरह।—इस घरकी सर्वे-सदा बनकर आजसे तू साथक हो, यही मेरा आशीवाद है।' हरीश बाबू बड़े भले आदमी हैं, ागीचे भरमें सब लोग धन्य धन्य कर उठ।—समीने कहा, 'लक्ष्मीके भाग्य अच्छे हैं।'—अच्छे तो हैं ही। सिफ़ खियाँ ही समझ सकती ह कि इतना बड़ा दुभाग्य,—इतनी बड़ी धोखेवाजी और कुठ हा ही नहा सकती। मगर एक दिन जब यह विडम्बना पकने जाती है, तब प्रतिहारका समय निकल जाता है ?"

हरेद्रने कहा, "फिर ?"

कमलने कहा, "फिरकी बात मुझे नहा मादूम हरेद्र बाबू। लक्ष्मीकी साथ कताका अन्त में नहीं देग पाइ,—उसने पहले हा वहाँसे मुझे चला आना पडा था।—लेकिन उस, अब तो गाडी आने लटी हा गई। चलिए, रास्तेमें जाते जाते रताऊँगी। नमस्कार।" कहकर वह उसी क्षण उठने लडा हो गई।

नालिमा चुपचाप नमस्कार करके खडी रही। उसकी आँसोंक तारे मानो अगारोंकी तरह जलने लगे।

१४

'आश्रम' शब्द कमलने सामने हरेद्रने मुँहसे अचानक ही निकल गया था। उसे सुनकर अग्निनाशने जो मजकूर उडायया था वह बेजा ाहा था। लोगोंको यही मादूम था कि कुठ गरीब विद्यार्थी वहाँ रहकर विना सबके स्कूल-कालेजमें पन्ते हैं। वास्तवमें अपने चासस्थानकी गहरनालोंके सामने इतने बड़ गौरवके पदपर प्रतिष्ठित करनेका सकल्प हरेद्रने मनमें नहीं था। वह, दिल्लीकुल हा एक गम्भीरी बात थी और गुरु गुरुम उसका श्रीगणेश भी साधारण तौरपर ही हुआ था। परन्तु इन सब चीजोंका स्वप्न ही ऐसा है कि दाताकी कमजोरसे अगर

एक बार भी इनमें गति पैदा हो गई तो फिर उस गतिमें विराम नहीं आता। कठोर जगली पौधेकी तरह मिट्टीका साराका सारा रस रसचक्र जड़से लेकर पत्तों तक वाप होना फिर देर नहीं लगती। हुआ भी यही। इस विषयमें यहाँ कुछ और कह देना टीका होगा।

हरेद्रने कोई भाइ-बहन नहीं है। पिता बकालत करने धन संचय कर गये थे। उनकी मृत्युके बाद घर भरमें रह गई सिर्फ हरेद्रकी पिबवा माँ। वे भी तब परलोक सिंार गई जब हरेद्रकी पत्नाद रतम हुई। लिहाजा अपना कहने लायक घरमें ऐसा कोई न रहा जो उसे ब्याह करनेके लिए तग करता, अथवा स्वयं मेहनत और आयाजन करने उसने पॉनामें बेडी डाल देता। इसलिए पत्नाद जब रतम हो गई तब महज कोई काम न रहनेके कारण ही हरेद्रने देश और देशवासियोंकी सेवामें मन लगाया। काफी साधु-सगति की, पेंसमें पड़ी रफमका ब्याज निराल निरालकर एक दुर्भिक्षजनारण समिति कायम की, बाढ पीडितों का सहायताके लिए जाचायदेके दलमें शामिल हो गया, सेवक सघमें मिलकर छुले लगे, काने गहरे, गँगे भूतोंको ला लाकर उनकी सेवा करने लगा। इस तरह जैसे जैसे उसका नाम जाहिर होने लगा जैसे जैसे भले आदमियाका दल आ आकर उमसे कहने लगा 'रुपया दो, परोपकार कर।' गती रुपये रतम होनेको थे, पूँजीमें हाथ लगाये बिना अब कोई चारा नहीं था। ऐसा अवस्था जब जा पहुँचो, तब अरुमात् एक दिन जनिनाशने साथ उसकी भट हुई ओर परिचय हो गया। सन्ध ध चाहे जितनी दूरका हो, पर उसी दिन उसे पहले पहले पता चला कि उसकी दुनियामें अब भी एक आदमी ऐसा है जिसे वह जातमीय कह सकता है। जनिनाशने कालेजमें तब एक अध्यापकी जगह साती थी, कोशिश करने वे उस कामपर उसको नियुक्त कराकर अपने साथ आगरा ले गये। उस प्रान्तमें आनेका यही उसका इतिहास है। पठाँहकी तरफ मुसल्मानी राज्यके शहरोंमें पुराने जमानेके वृत्त से बढ़-बढ़ ममान अब भी कम किरायेपर मिल जाया करते हैं जोर उहीमसे एक हरेद्रने ले लिया। यही उसका आश्रम है।

मगर यहाँ आकर जो कुछ दिन उसने जनिनाशने घर बिताये, उन्हींने बीच नीलिमाने साथ उसका परिचय हो गया। उस रमणीने उसे बिना जान पहचानका आदमी समझकर एक दिन भी ओटम रहकर नौकर नाकरानीकी

मारफत आत्मीयता दिखलानेकी कोशिश नहीं की।—एकबारगी पहले ही दिन सामने तिकल आद। बोली, “तुम्हें क्या क्या चाहिए लालाजी, मुझसे कहनेमें शरमाना मत। मैं धरती गृहिणी नहीं हूँ, मगर गृहिणी बनकर मार सभ मरे हो ऊपर है। तुम्हारे भाइ साहन कहत थे, छोटे बाबूकी खातिरदारीम कभी रह गत् तो तनरता कट जायगी। सो इस गरीबिनीका नुकसान मत करा देना भाइ, अपनी जरूरतोंसे बाकिस करो रहना।”

हरेद्र कस ज्ञान दे, उसकी कुठ समझमें न आया। मारे शरमने वह ऐसा सिकुड गया कि जो इन मीठी बातोंको जनायास हो हँसती हुई कह गद, उसने मुँहकी तरफ देग भी नहा सना। पर शरम दूर होनमें भी उमे दो एक दिनसे ज्यादा देर न लगी। मालूम हुआ, जैसे उसे गिना दूर गिये दूसरा काइ चारा ही नहीं। इस रमणीकी जैसी स्वच्छन्द और जनाडभर प्रीति है वसा ही सहज स्वामानिक सेवा। एक तरफ जैसे यह बात उनका चेहरे मोहरे, ओढाव पहनाव और मधुर आलाप-आलोचनासे नहा मालूम हो सक्ती कि व विधवा हैं, इस घरम उनका कोइ वास्तविक आश्रय नहीं, व भी इस घरम गैर हं,—वैसे ही यह भी नहीं मादम पटता कि उनका यही सभ कुठ है जो बाहरसे दोग रहा है।

उमर भी उनकी सिकुल कम हो, सो बात भी नहीं है। गायद तीसरे लगभग पहुँच चुनी है। उस उमरम योग्य गम्भीरता उनम खोज निजालना मुश्किल है—ऐसा हलका उनका हँसी-पुनीका मेला है। आर मजा यह कि जरा-सा ध्यान देनेसे ही यह बात साफ समझी जा सक्ता है कि एक ऐसा अदृश्य आच्छादन उन्हें निज-सात धरे रहता है जियने भीतर प्रवेश कर्नेका काइ रास्ता ही नहीं। न तो घरम नौकर-चाकर या दास-दासी ही वहाँ घुस सकते ह और न मालिक ही।

इस घरम, इसी जाय हसन बान हरेद्रके गो सत्ताह नीत गये। सहसा एक दिन यद मुनकर कि उसने अलग एक मकान गिरायेपर ले लिया है, नालिमाने नागत होकर कहा, “इतनी जल्दी क्यों कर डाली लालाजी, यहाँ पना कीन तुम्हें पक्क रहना चाहता था?”

हं द्रने लज्जित होकर कहा, ‘एक दिन ता जाना ही पटता मामीजी।’

नौलिमाने जराब दिया, “सा ता गायद जाना पक्का। मगर देख-देगाये

नशेरा रंग अभीतक तुम्हारी आँखोंसे गया नहीं लालाजी, और भी कुछ दिन मामीनी हिफाजतम रह लेते तो अच्छा था।”

हरेद्रने कहा, “सो तो रहूँगा ही मामीजी। यहा तो हूँ, दसेन मिनठना रास्ता है यहाँसे, आपनी निगाह त्राके जाऊँगा वहाँ?”

अभिनाश घरने भीतर बैठे काम कर रहे थे, वहीसे बोले, “जाओगे जहन्नुममें। बहुत मना किया कि ओर कहीं मत जा रे, यहीं रह। मगर सो कैसे हो!—इजत पटी है या भाद साहजनी रात बडी है? जा, नये अड्डेमें जाकर दरिद्र नारायणनी सेवाम चण जो कुछ पास है सो।—छोटी मालिकिन, उससे कहना-सुनना यथ है। वह ठहरा चडकना सन्यासी—पीठ ठिदाकर चरखीकी तरह घूमे गैर इन लोगोंका जीना ही गलत है।”

नये मजानमें आकर हरेद्रने नौकर, रमोइया बगैरह रखकर अत्यन्त शान्त शिष्ट निरीह मास्टरोंकी तरह कालेजके काममें मन लगाया। बहुत उडा मकान है, उसमें बहुत-से कमरे हैं। दो एक कमरोंके सिवा गलीके सब यों ही ताली पट रहे। महीने भर बाद ही ये सूने कमरे उसे पीडा देने लगे। किराया देना ही पटता है और काम कुछ आते नहा। लिहाना चिट्ठी गइ राजेद्रके पास। वह था उसकी दुमिथ निवारिणी समितिका मंत्री। देगोद्वारके लिए विशेष आग्रहके कारण दो सालकी सजा भुगतकर पाँच-छै महीने हुए छूटा था आर पुराने बंधु ग धर्माकी तलाशमें घूम रहा था। हरेद्रकी चिट्ठी और रेलना किराया पाकर वह उसी वक्त चला आया। हरेद्रने कहा, ‘देखूँ, अगर तुम्हारे लिए कोद नौकरी-जौकरो दिला सकूँ।’ राजेद्रने कहा, ‘अच्छी रात हे।’ उसका परम मित्र था सतीश। वह किसी तरह हजालतसे बचकर मेदिनीपुर जिलके किसी एक गाँवमें ब्रह्मचयाश्रम खोलनेकी उबेड बुनम लगा था, राजेद्रका पत्र पाते ही वह एक हफ्तेके अंदर अपने साधु-सकल्पको स्थगित कर आगरे चला आया और जेठे ही नहीं आया, तृपा करन गाँवसे एक भक्त को भी साथ लेता आया। शतीशने इस रातको युक्ति और शान्त बचनाने तलपर बडी खूबीके साथ सानित कर दिया कि भारतवर्ष ही एकमात्र धर्म भूमि है। मुनि ऋषिगण ही इसने देखा हैं। हम लोग ब्रह्मचारी होना भूल गये हैं, इसीसे हमारा मन कुछ चला गया है। इस देशके साथ सत्कारने किसी भी देशकी तुलना नहीं हो सकती। कारण, हम ही लोग एक दिन थे जगत्के शिक्षक और हम ही लोग

ये मनुष्यके गुरु । लिहाजा, चतमानमें भारतवासियोंके लिए एकमान करने लयक काम है गाँव-गाँव और नगर नगरमें जसख्य ब्रह्मचयाश्रम स्थापित करना । देशीदार करना अगर कभी सम्भव हुआ, तो वह इसी रास्तेसे सम्भव होगा ।

उसकी बात सुनकर हरेद्र मुग्ध हो गया । सतीशना नाम तो उसने सुन रखा था, परन्तु परिचय न था, इसलिए इस सौभाग्यके लिए उसने मन ही मन रात्रेन्द्रको धन्यवाद दिया, और इसके लिए भी अपनेको धन्य समझा कि पहले उसका ब्याह नहा हो गया । सतीश सत्रादि-सम्मत अच्छी-अच्छी बातें जानता था और कई दिनोंतक वहीं गत चलती रहा । हम ही लोग इस पुण्य भूमिके मुनि ऋषियोंके बशधर हैं, हमारे ही पृत्रपुरुष एक दिन सत्कारके गुरु थे,—जतएव फिर एक दिन गुरु पदके हम ही उत्तराधिकारी हो सक्ते हैं । कौन आय-रक्तसे उत्पन्न पागण्डी इस गतना विरोध कर सकता है ?—नहीं कर सकता । आर कर सत्रने लायक दुमतिस्म्पन्न आदमी भी वहाँ थोड़ न था ।

हरेद्र उमत्त-सा हो गया, परन्तु तपस्या और साधनाकी चीज होनेके कारण आश्रमकी सारी बात यथासाध्य गुन रती जाने लगीं, सिफ रात्रेन्द्र और सतीश बीच गीतमें बाहर जानर लडके संग्रह करने ले आने लगे । जा उमरमें छोटे थे वे स्कूलम भरती हो जाते और स्कूलकी गिजा पूरी करने उत्तीण हो जाते वे हरेद्रकी कोणिससे किसी न किसी कालेजमें दाखिल करा दिये जाते । इस तरह थोड़ ही समयमें लगभग सारा मजान नाना उमरके लडकोंसे भर गया । बाहरके लोग विशेष कुठ जानते भी न थे और न काइ जाननकी काशिश ही करता था । उडती हुई तरसे सिफ इतना ही सुन लेते थे कि हरेद्रके घरमें रहकर कुठ गरीब बंगाली लडके पल्ले लिखते हैं । इससे ज्यादा अविनाशको भी मालूम न था और न नीलिमाको पता था ।

सतीशने कतोर शासनमें घरमें मास मठलो आनेका कोइ रान्ता न था, ब्राह्म मुहूर्तम उत्तर सत्रका स्त्रोत्र-पाठ, ध्यान, प्राणायाम आदि शास्त्र निहित प्रक्रियाएँ करनी पडती थीं, उसके बाद पन्ना लिखना और नित्य-कर्म । मगर अधि कारियोंका इससे भी मन नहीं भर, और साधन माग क्रमश कठोरतर हो गया । रगोइया महाराज भाग सड़े हुए, नौकरको ररत्ताम कर दिया गया और उनका काम पारी-पारीसे लडकोंपर आ पडा । किसी दिन एक ही तरकारी होती तो किसी दिन वह भी नहीं, लडकोंका पन्ना लिखना जाता रहा,—स्कूलमें

उनपर फटकार भी पड़ने लगी, किन्तु कठोर षंघे हुए नियमोंमें प्रियलता नहीं आई। सिफ एक विषयम अनियम था आर वह बाहरसे कही निमंत्रण आने पर। नीलिमाने किसी एक व्रत उद्यापनके उपलक्ष्यमें इस यतिक्रमको हरेद्रने जरूरदस्ती कायम किया था। इसका सिना और कदा भी किसी विषयमें धमाके लिए स्थान न था। लटने नगे पाँव रहते और गाल रुखे रहते। इस विषयम सतीशकी अत्यन्त सतक और हरकत पहरा देने लगी कि कही किसी छिद्र पथसे उनम प्रियसिताका जनधिनार प्रवेश न हो जाय। इसी तरह आश्रमन दिन बीत रहे थे। सतीशका तो कहना ही क्या, हरेद्रने मनम भी आत्म गौरवकी सीमा न रही थी। बाहरके किसी आदमीन सामने वे विशेष कोद बात प्रकट नहीं करते थे, परन्तु अपने अदर हरेद्र आत्म प्रसाद और परितृप्तिन उच्छ्वसित जावेगम जरूर यह कह दिया करते कि इनमने एक भी लडनको अगर वे आदमा बना सन तो समझगे कि इस जीवनकी चरम साधनता उन्हें प्राप्त हो गद। यह सुनकर सतीश कुछ गाल्ता नहा, पिनयसे सिफ जमना सिर हुका लेता।

सिफ एक विषयम हरेद्र और शतीश दोनोंको पीडाका अनुभन होता था। दोनों ही इस बातका अनुभन करते थे कि कुछ दिनोंसे राजेद्रका आचरण पहले जैसा नहा रहा है। आश्रमने किसी काममें अन वह उतनी निलचस्पी नहीं लेता, सबरेन साधन भजनम अन वह प्राय अनुपस्थित रहता है आर पृछनेपर कहता है कि तबीयत ठीक नहा है। इसपर मजा यह कि तबीयत गराय होनेके कोद लक्षण नहीं दिखाने देते। क्या उसकी शकायत है, क्यों यह ऐसा हुआ जा रहा है,—पृछनपर भी कुछ जगान नहीं मिलता। किसी दिन सुबह ही उठ कर वहाँ चला जाता है, दिनभर जाता ही नहीं, आर रातको जन घर लोटता है तन उमना चेहरा ऐसा होता है कि हरेद्रतनको कारण पृछनेकी हिम्मत नहीं पडती। ओर मजा यह कि ये सन बात आश्रमन नियमोंन सवथा विरुद्ध है। इस बातको राजेद्र अच्छी तरह जानता था कि एक हर द्रने सिना शामन गद आर किसीको भी गहर रहनेना अधिनार नहा है,—फिर भी उसे कोई परवाह नहीं। आश्रमना सेनेगरी था सतीश, उमीपर शृजला रगना भार है। इन सन अनाचारके विरुद्ध वह हरेद्रसे ठीक गिनयतने तोरपर तो कुछ कह सनता नहीं किन्तु बीच-बीचम जाभास जोर इशारेसे यह भाव प्रकट कर देता है कि उसे आश्रममें रपना अन उचित नहा है।—लटन प्रियगट सनते हैं। यह

रात नहीं कि हरेद्र खुद भी न समथता हो, किंतु मुँह खोलकर खुल कहनेकी हिम्मत उसमें नहीं थी। एक दिन सारी रात यह तापता रहा, सपने जरा यह घर रौंग तप उसीकी रातकी लेकर सूर जोरकी चालोचना होने लगी हरेद्रने आश्चर्ये साथ उससे पूछा, “रात क्या है, रातेन, कल रात भर थे कहीं ?”

उसने जरा हँसनेकी कोशिश करते हुए कहा, “एक पेड़ने नीचे पटा था।”

“पेड़ने नीचे ? पेड़ने नीचे क्यों ?”

“बहुत रात हो गई थी। उस वक्त शोर मचा आप लोगोंने जगाकर परेशान नहीं किया।”

“अच्छा। कतनी रात नेथे हो गई ?”

“ऐसे ही घूमते घूमते।” कहकर वह अपने कमरेमें चला गया।

सतीश पास ही पैग था। हरेद्रने पूछा, “रात क्या है, उताओ तो ?”

सतीशने कहा “आपकी रात टालकर चला गया। कुछ परवाह ही नहीं थी। फिर भग में कैसे जान सकता हूँ ?”

“बात तो ठीक है भाइ, इतनी ज्यादाती तो ठीक नहा।”

सतीश मुँह भारी करके कुछ दरतन चुप रहा, फिर बोला, “आप एक बात तो जानते होंगे कि पुलिसने उसे दो साल जेलमें रखा था ?”

हरेद्रने कहा, “जानता हूँ, लेकिन वह तो झूठे सक्षेपर खरता था। उसका कोई अपराध नहीं था।”

सतीशने कहा, “मैं निरर्थ उसका मित्र होनेका बजहसे ही जेल जाते जाते खूब गया था। पुलिसकी दृष्टिने उसे आज भी दुष्टकाग नहा दिया है।”

हरेद्रने कहा, “असम्भव कुछ नहीं।”

उत्तरमें सतीशने जरा विषमरी हँसी हँसकर कहा, “मैं सोचता हूँ, उसने कारा कहीं हमारे आश्रमपर पुलिसकी मोह न हो जाय।”

सुनकर हरेद्र विनित्त चहसे चुप रहा। सतीश खुद भी कुछ देर चुप रहकर सहसा पूछ बैठा, “आपको शायद मालूम होगा कि सनेद्र इशरका अभिनयकर नहीं मानता।”

हरेद्र दग रह गया, बोला, “नहीं तो ?”

सतीशने कहा, “मुझे मालूम है, वह नहीं मानता। आश्रमने कामकाज और गिरी निरीक्षणर उसकी रचमात्र धडा नहीं। इससे ता कश्कि उसकी कहीं

गौरी औकषी लगा दीजिए तो अच्छा ।”

हरेद्रो कहा, “गौरी तो पेडवा फल नहीं सतीश कि जब चाहूँ तब तोडकर हाथमें दे दूँ । उसने लिए काफी कोरिश करनी पडती है ।”

सतीशने कहा, “तो वही कीजिए । आप जब कि आश्रमके प्रतिष्ठाता और प्रेमिष्ठेण हैं और मैं सेनेटरी हूँ, तब सभी विषय आपको जताते रहना मेरा कर्तव्य है । आप उससे अत्यन्त स्नेह करते हैं और मेरा भी वह मित्र है । इसीसे उसके विरुद्ध कोई बात कहनेकी जरूरत मेरी प्रवृत्ति नहीं हुई, मगर अब आपको सावधान कर देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ ।”

हरेद्र मन ही मन डरकर बोला, “लेकिन मैं जानता हूँ कि उसका चरित्र निमल है—”

सतीशने गदन हिलाकर कहा, “हाँ । इस तरफसे तो उसको उसका पद्म बड़ा गुरु भी दोषी नहीं ठहरा सकता । राजेद्र आजीवन बुँवारा है, लेकिन वह ब्रह्मचारी भी नहीं है । असल कारण यह है कि इस बातको सोचनेका भा उसके पास बल नहीं कि स्त्री नामकी थोड़ चीज भी उसारम है ।” फिर क्षण भर चुप रहकर बोला, “उसके चरित्रकी शिनायत मैं नहीं करता, वह अस्वाभाविक रूपसे निमल है, लेकिन—”

हरेद्रने पूछा, “आपिए तुम्हारे ‘लेकिन’का मतलब क्या ?”

सतीशने कहा, “कलकत्तेने दासेम हम दाना एक साथ रहा करते थे । वह तब कैम्बेल् मेडिकेल् कालेजका छात्र था और घरपर बा० एम-सी० पढता था । सभी जानते थे कि वही फस्ट पास होगा, लेकिन परीक्षाके पहले अकस्मात् न खाने वह कहाँ चला गया—”

हरेद्रने विस्मित होकर पूछा, “वह डॉक्टरो पढता था क्या ? मगर मुझसे तो कहता था कि वह शिवपुर इंजीनियरिंग कालेजमें भरती हुआ था, पर वहाँका पढाई बची सख्त होनेसे उसे भाग जाना पडा ।”

सतीशने कहा, “लेकिन तलाश करें तो मालूम होगा कि कालेजम थर श्चरमें वही अबल आया था और बिना कारण चले आनेके कारण वहाँके सभी शिक्षक अत्यन्त दुःखित हुए थे । उसकी बुआ धनी घरमें ब्याही हैं, वे ही फन्नेका सच दे रही थी । इस तरहकी हरकतोंसे नाराज होकर उन्होंने सच देना बन्द कर दिया, उसने बाद ही शायद आपसे उसका परिचय

हुआ है। लगभग दो साल घूम फिरकर जब वह घर पहुँचा तब उसकी बुआने उसीकी रायसे उसे डाक्टरी स्कूलमें भरती कर दिया। इसमें प्रत्येक विषयमें वह फस्ट हो रहा था, फिर भी तीनों साल बाद सइसा एक दिन सब छोड़-छाड़ अलग हो गया। यही उसमें एक ऐन है। उदा कठोर है। मैं उससे पार नहीं पा सकता। वहाँसे छोड़-छाड़कर हमारे यहाँ आने रूँटा गाटा है। मुझसे बोला, 'लडने पलाकर वी० एस-सी० पास करूँगा और कहीं किसी गाँवमें जाकर मास्ट्री करने जीवन तिताऊँगा।' मैंने कहा, 'अच्छी बात है, यही करो।' उसके गद, पढ्रह तीस दिन पढनेमें ऐसी मेहनत की कि न नहानेका ठीक न रानेका, आँखोंकी नादतक गायन हो गद, -ऐसी मेहनत की कि देखकर आश्चर्य होता है। सब कहने लगे, ऐसा तगैर त्रिये क्या कोई प्रत्येक त्रिययमें फस्ट हो सकता है ?”

हरेदरको पूरा हाल मादूम न था, उसने सॉस रोने हुए ही कहा, “फिर ?”
सतीश कहने लगा, “उसने गद जो कुछ उसने गुरु किया वह भी अद्भुत है। कितानें तो फिर उसने छुद ही तहाँ। न जाने कहाँ रहता है—कुछ पता ही नहीं। जब लौटकर आता है तब उसका चेहरा देखनेसे डर लगने लगता है। मानो इतने दिनोंतक उसने नहाया-खाया ही न हो।”

“फिर ?”

“फिर एक दिन दलखलेने साथ पुलिस आ घमकी और उसने भवानभरमें जैसे दक्ष-यज्ञ गुरु कर दिया। इसे छोडकर उसे बगेरती, उसे रोल्कर इसे बन्द करती, त्रिसीको डॉट्टी, किसानों रोतती, ऐसा ऊधम मचाया त्रि त्रिना अपनी आँखों देगे कोद उसना अनुमान भी नहीं कर सकता। मेसम रहनेगले प्राय सभी कर्त्तोंमा काम करते थे, मारे डरके दो जनोंको तां जुधम क्ष गया। ममीने सोच लिया कि अब बचना मुदिनल है, पुलिसगले आज सभीको पन्ड कर पॉसीपर लटका देंगे।”

“फिर क्या हुआ ?”

“फिर लगभग तीसरे पहर पुलिस राजेनकी और राजेनना मित्र होनेने कारण मुझे पन्ड ले गद। मुझे चारके दिन बाद छोड दिया, पर उसना फिर कोद पता नहीं लगा। छोडते वक्त सादने मेहरमानी करते कुछ चार-चार सावधान कर दिया कि ‘बन स्टेप, आँतली नन स्टेप’—तुम्हारे घरसे हक

जेलका फासला सिर्फ एक कदमना रहा है। गाँव में मंगगा स्नान करने, मों मालीन दर्शन करने, घर लौट जाया। सने कहा, 'सतीश तुम उठ भाग्यवान् हो।' ऑफिस पहुँचा, साहने दो महीनेनी तनला हाथमें थमाकर कहा, 'गो'। सुना कि इस बीचमें मेरी बहुत कुछ तलागी हो चुकी है।"

हरेद्र सतध रह गया। कुछ देर उसी तरह रहकर अतमें धीरे धीरे बोला, "तो क्या तुम्हें निश्चित मालूम होता है कि राजेन—"

सताशने निनतीन स्वरम कहा, "मुझसे मत पूछिए। मेरा वह भिन्न है।"

हरेद्र खुश नहीं हुआ, बोला, "मेरा भी तो वह भाइकी तरह है।"

सतीशने कहा, "एक बात निचार दग्नेकी यह है कि उन लोगाने मुझे बेरसूर पकड़कर परेशान जरूर किया था, पर छोड़ भी दिया।"

हरेद्रने कहा "बकरसूर परेशान करनेना भी तो यानून नहीं है। जो लाग वह कर सतत है वे यह क्या नहा कर सकगे?" यह कहकर वह उस समय तो कालेज चला गया, परन्तु उसने मनमें अशान्ति बना रही। सिर्फ रात्रेदरे भनिष्यनी चिन्ता करके ही नहा, बल्कि इसलिए भी कि देश सेनाक कामम देशने लडकोंको जदमी नानेका यह जो जायोजन चल रहा है, कहीं निना कारण नष्ट न हो जाय। हरेद्रने तय किया कि रात झूठ हो या सच, पुलिसकी दृष्टि अकारण आश्रमपर आकारित करना हरगिन उचित नहा। सासनर जय कि वह साफ साफ यहाँने नियम भंग करता ज रहा है, तब कहा नौकरी लगवानर या आर किसी यहाँने उसे अन्यत्र हटा देना ही वाठनीय है।"

इसने उद्दिन बाद ही मुसलमानोंक किसी त्योहारपर दो दिनकी जुट्टी थी। सतीश काशी जानेकी अनुमति लेने आया। भारतमें सत्र भागरा आश्रम के अनुरूप आदतपर सस्थाएँ सगटित करकेकी दिशाल कल्पना हरेद्रके मनम थी और उसी उद्देश्यको लेकर सतीश काशी जा रहा था। रात्रेदने सुना तो वह भी आकर कहने लगा, "हरेद्र भदया, सतीशन साथ म भा कुछ दिनोंके लिए काशो घूम आऊँ।"

हरेद्रने कहा, "उसे काम है, इसीलिए जा रहा है।"

रात्रेदने कहा, "मुझे काम नहा है, इसीसे जाना चाहता हूँ। जानेना रेलभावा मेरे पास है।"

हरेद्रने पूछा, "लेकिन वापस आनेना?"

राजेन्द्र चुप रहा। हरेन्द्रने कहा, “राजेन्द्र, कुछ दिनसे तुम्हें एक बात कहना चाहता हूँ, पर कह नशा पाता।”

राजेन्द्रने जरा हँसकर कहा, “कहनेकी जरूरत नहा हरेन्द्र भइया, मैं जाता हूँ।” कहकर वह चला गया।

रातकी गाडीसे वे जानेवाले थे। घरसे निकलते वक्त हरेन्द्रने दरवाजेने पास जाकर अस्वभावत् उसका हाथमें एक कागजकी पुडिया थमाते हुए चुपसे कहा, “तुम वापस न आओगे तो मैं बहुत दुःखित होऊँगा राजेन्द्र।” और इतना कहकर वह लहम भरम अपने कमरेमें चला गया।

इसके दस बारह दिन बाद दोनों ही जने लौट आये। हरेन्द्रको एकात्मतम जुलाफ सतीशने प्रकृष्ट चेहरसे कहा, “उस दिन आपका उतना ही कहा काम कर गया हरेन्द्र भइया। काशीमें आश्रम स्थापित करनेके लिए राजेन्द्रने दस कुठ दिनोंमें अमानुषिक परिश्रम किया है।”

हरेन्द्रने कहा, “परिश्रम करता है तो वह अमानुषिक ही करता है।”

“हाँ, यही किया उसने। पर उसका चौघाट हिस्सा भा अगर हमारे इस आश्रमके लिए मेहनत करे तो क्या कहने हैं।”

हरेन्द्रने आश्चर्यित होकर कहा, “करेगा भइ, करेगा। अतः शायद वह ठीक रातको ध्यानमें नहा ला सना। मैं निश्चयसे कहता हूँ, तुम देख लेना, अगले उसने कामकी हद न रहेगी।”

सतीशने खुद भी यह विश्वास कर लिया।

हरेन्द्रने कहा, “तुम्हारे वापस आनेकी रातमें एक काम स्थगित पडा हुआ है। जानते हो, मैंने मन ही मन क्या तय किया है? हमारे आश्रमका अस्तित्व और उद्देश्य ठिपाये रखनेसे अरु काम नहा चल सकता। दंगकी और दस जनोंकी मदानुभूति प्राप्त करना हमारे लिए जरूरी है। इसकी विशिष्ट कार्य पद्धति का जन-साधारणमें प्रचार करना आवश्यक है।”

सतीशने सन्दिग्ध काँठने कहा, “परतु उससे क्या काममें निम्न न आयेगा?”

हरेन्द्रने कहा, “नहा। इसी रविवारको मैंने कुछ लोगोंको आमंत्रित किया है, वे सब देने आँगे। ऐसा करता होगा कि आश्रमकी शिक्षा, साधना, सधम और विद्वताके परिचयसे उम्र दिन हम उहँ मुग्ध कर दे सक, — तुम्हारे ही ऊपर सब दापित है।”

सतीशने पृथ, “कौन-कौन आयेगे ?”

हरे द्रने कहा, “अजित नाबू, अविनाग भइया, भाभीजा ! शिवनाथ नाबू फिलहाल यहाँ ही नहीं, मुना है कि किसी कामसे जयपुर गये हैं । पर उनकी ली कमलना नाम मुना होगा, ये आयेगी, और तनीयत ठीर हुइ तो शायद आगु नाबूको भी पकड ला सकूँगा । जानते तो हो, ये लोग कोइ ऐसे जैसे आदर्मी नहीं हैं । दस बातना रयाल रचना है कि उस दिन इन लोगोंसे हम वान्तिरिद्ध भद्रा वसूल कर सकें । दसना भार तुम्हापर है ।”

सतीश तिनथसे सिर हिलाता हुआ बोला, “आशीवाद दीजिए कि ऐसा ही हो ।”

× × ×

रविवारको शामने पहले ही अभ्यागत लोग आ पहुँचे । आये नहीं सिफ आगु नाबू । हरेद्र दरवाजेसे उन सबको सम्मानके साथ स्वागतपूर्वक भीतर ले आया । लडने उस समय आश्रमने नित्य कार्योंम लगे हुए थे । कोई पत्ती जला रहा था, कोई झाड़ू लगा रहा था, कोइ चूल्हा सुलगा रहा था, कोइ पानी भर रहा था और कोइ रसोइकी तैयारियाँ कर रहा था । हरे द्रने अविनास के प्रति लक्ष्य करके हँसते हुए कहा, “भाइ साहन, आप जि ह अभागे आवारों का दल कहा करते हैं, ये ही हैं वे हमारे आश्रमने लटके । हमारे यहाँ नौकर रसोइया नहीं हैं, ये ही लोग सब काम अपने हाथोंसे करते हैं ।—भाभीजी, चलिए हमारी भोजनशालाम । आज हमारे यहाँ पक्का दिन दे, वहाँका आयो जन देल आइए, एक बार चलिए ।”

नीलिमाने पीछे पीछे सब रसोइ घरके सामने जा लड़े हुए । एक दस गारह सालका लडका चूल्हा सुलगा रहा था ओर उसी उमरका दूसरा लडका हँसियास आलू बना रहा था । दोनोंने उठकर नमस्कार किया । नीलिमाने लडकासे स्नेहने सम्बोधन करते हुए पूछा, “आज तुम लोगोंक यहाँ क्या क्या रसोइ बनेगी, बेग ?”

एक लडकेने प्रसन्न मुखसे उत्तर दिया, “आज रविवारके दिन हमारे यहाँ दम आलू बनते हैं ।

“ओर क्या क्या बनता है ?”

“और कुछ नहीं।”

नीलिमाने व्याकुल होकर पूछा, “सिफ दम आऊ, रस ? दाल, शाल या और कुछ—”

लटनेने कहा, “दाल हमारे यहाँ कल मनी थी।”

सतीश पास ही खड़ा था, उसने समझाते हुए कहा, “हमारे आश्रमम एक बानसे ज्यादा बनानेका नियम नहीं है।”

हरेद्रो हँसते हुए कहा, “हानेरी गुनाहस भा नहीं भामीजी, होगा कैसे ? हमारे भाद सादर दसो तरह दूसरोंने आगे आश्रमका गौरव बढ़ाया करते हैं।”

नीलिमाने पूछा, “नीजर और भी कहा होंगे शायद ?”

हरेद्रने कहा, “नहीं। उन्हें रत्ता जायगा तो दम-आवृत्तो प्रिया कर देना पड़ेगा। लटके उसे पसंद नहा करगे।”

नीलिमाने जागे कुछ नहीं पूछा, उन लटकोंकी सूतनी तरफ देखकर उसकी आँसू बगडरा जाद। योगी, “लालाजी, और कहाँ चलो।”

समने इस बातके मानी समझे। हरेद्र पुलकित होकर बोला, “चलिए, मैं निश्चयके साथ जानता था भामी कि यह आपसे सहा नहीं जायगा।” फिर उसने कमलजी तरफ देखकर कहा, “लेकिन, आप तो खुद ही इसमें अन्वसत हैं,—सिफ आप ही समझगी इस मयमकी साथकताको। इसीसे उस दिन इस ब्रह्मचर्याश्रमम जानेका नियमके साथ आपने आम-रण दिया था।”

हरेद्रने गम्भीर चहरेकी तरफ देखकर कमल हँस पटी, बोली, “मेरी खुदकी बात और है, लेकिन इन सब बच्चाना रतने आडम्बरं साथ इस तरहको निष्कल दखिताका आचरण करानेका नाम क्या आदमी बनाना है हरेद्र बाबू ? ये ही हैं शायद यहाँके ब्रह्मचारी ? ऋह आदमी बनाना हो तो साधारण आर स्वाभाविक मार्गसे बनाए। झूठे दुःखना मोक्ष सिरपर लादकर असमयमें ही इन्हें गैना या कुनटा न बना डालिए।”

कमलके शब्दकी कठोरतासे हरेद्र तिलमिला गया, जविनाशने कहा, “कमलजी बुलाना तुम्हारा ठीक नहीं हुआ हरेद्र।”

कमल शरमा गई, बोली, “सचमुच, मुझे बुलाना किसीके लिए भी ठीक नहीं।”

नीलिमाने कहा, “मगर मैं उन किसीमें शामिल नहीं हूँ कमल। मेरे घरमें कभी तुम्हारा जनादर न होगा। चला, हम लोग ऊपर चलन पेट। देगे, लालाजीने आश्रममें और क्या-क्या आतिथ्याजियाँ निकलती हैं ?” यह कहकर उसने अपने स्निग्ध हाथसे आवरणसे कमलकी लज्जा ढक दी।

दूरी मजिलपर काफी लम्बा-चौड़ा आश्रमका रास कमरा था। पुराने जमानेका नकाशीका काम छतने नाचे और दीवारोंपर अब भी मौजूद है। बैठनेके लिए एक बच्च और चार पाँच कुर्सियाँ हैं, पर साधारणतः उनपर बैठता कोई नहीं। पदपर एक पटी सतरजी बिठी हुई है। आज रास दिन होनेके कारण उसपर सफेद चादर बिछा दी गई है और उसपर पटोनी लालाजीने यहाँसे नङ्ग-नङ्ग तनिये मँगाकर रग्न दिये ह। नीचमें उन्हाके यहाँसे लाया हुआ बेल सूटेदार बारह डालियावाला शमादान और एक कोनेमें सज रग्न शेडसे ढकी हुई दीवारगिरी जल रही है। नीचेकी अधकारमय और जानन्दहीन आन हवामसे इस कमरेमें आकर सपने सन खुग हुए।

अविनाशने एक तनियेका सहारा लिया और दानों पैर सामनेकी आर पसार कर सन्तोपनी साँस लेते हुए कहा, “उफ्! जानमें जान जाइ।”

हरेद्र पुलकित होकर बोला, “हमारे आश्रमका यह कमरा कैसा है भाई साहब ?”

अविनाशने कहा, “यहीं तो तुमने मुझिलम डाल दिया हरेद्र। कमल मौजूद है, उसका सामने किसी चीजको अच्छा बतानेकी हिम्मत नहा पडती— हो सक्ता है कि तीव्र प्रतिभादने जोरसे वह अभी साबित कर दे कि इसने छतकी नकाशीसे लेकर पशतक सन कुछ घुसा है।” इतना कहकर वे कमलके मुँहको रफ देखकर जरा हँस दिये और बोले, “इसे तो तुम भी मानोगी कि मेरे पास और कोई पूँजी भले ही न हो, पर उमरकी पूँजी मने रतूज जमा कर रती है। उसीके त्तरपर तुमसे एक बात कहता हूँ। मैं अस्वीकार नहीं करता कि सच बात बहुधा अप्रिय होती है, पर इसने मानी यह नहीं कि प्रिय बात मात्र सत्य नहा होती कमल। तुम्हें नहुत-सी रातें शिनाथने सिखाइ ह, थिय यही एक बात सिखाना राकी रस छोडा है।”

कमलका चेहरा सुग्न हो उगा, पर इसका जनादर दिया नीलिमाने। बोली, “शुद्धनाथकी जो इतनी चुटि रह गई है मुसर्जी साहब, हम उनपर जुरमाना

करते उसका बदला लेंगे, मगर गुरुगिरीमें तो कोई भी पुरुष कम नहीं मालूम होता। इसलिए, प्रायना है कि अब आप अपनी उमरकी पूँजीमेंसे और भी दो एक प्रिय वाक्य बाहर निकालें।—हम लोग मुनकर धन्य हूँ।”

अभिनाश भीतरसे जल भुन गये। इतने आदमियोंके बीच उनका जो अपमान किना गया वेरल उसीके कारण नहीं, बल्कि इस वक्रोक्तिके तीरके भीतर जो तीव्र फल ठिपा हुआ था उसने विद्ध करके ही दम नहीं लिया, अपमान भी किया। कुछ दिनोंसे एक तरहके असन्तोषकी गरम हवा न जाने कहाँसे आकर दोनोंके बीचमें रह रही थी। यह आँधीकी तरह भीषण नहीं थी, पर घास तिनके, धूल-रत उड़ाकर कमी-कमी दोनोंकी आँतोंमें झोंक देती थी। कम हिलते हुए दाँतोंकी तरह चमानेका काम तो चलता था परन्तु चमानेके आनन्दसे दोनों वंचित थे। हरेद्रको लम्ब करके उन्होंने कहा, “नाराज तो नहा हो सकता हरेद्र तुम्हारे भाभीने मिलतुल झूठ नहीं कहा कि मुझे पहचाननेम तो अब उनके लिए कुछ राखी नहा है उह ठीक ही मालूम है कि मेरी पूँजी जो कुछ है एगने जमानेकी सोधी-साही है, उसमें बलु होनेपर भी रस-बस कुछ नहीं।”

हरेद्रने पूजा, “इसके मानी क्या भाइ साहन ?”

अभिनाशने कहा, “जुम सन्यासी आदमी टहरे, मानी ठीक समझोगे नहा। मगर छोटी मालिनिन जवानक कमलकी जैसी मत हो उठी ह, उससे जागा की जाती है कि अगर ये उनके अनुभवसे काम लगी तो धन्य होनेका रास्ता अपने आप साफ हो जायगा।”

इस चमकी कदयता स्वयं उन्हें अपने कानोंमें भी रणकी थी, जोर दुर्विचयकी संधासे ये और भी कुछ कहना चाहते थे कि हरेद्रने उह रोक दिया। उसने चरितकण्ठसे कहा, “भाइ साहन आज आप कमी यहाँके अतिथि ह। इस बातको अगर आप लोग भूल गये कि कमलको हम आजमकी तरफसे सम्मानक साथ निमंत्रित करके लाये हैं, तो फिर हमारे दुःख की सीमा न रहेगा।”

नालिनाने कहा, “तो फिर मरे सम्बन्धमें कृपाकर उन्हें स्मरण करा दो कमलकी कि अगर कोई किसीको छोटी मालिनिन कहकर पुकारने लग जाय तो वह उसकी गन्धमुरझी गृहिणी नहीं हो जाती। उसे उखार शासन करनेकी

मानाका भी गान रहना चाहिए । मेरी तरफसे मुग्गजी साहबने अनुभवने भाण्डारम इतना आज और जमा कर दिया जाय—भविष्यमें वह काममें आ सकता है ।”

हरेद्रने हाथ जोड़कर कहा, “रक्षा वाजिए भाभी साहिब, सारीकी सारे अजुभन-अभिजताकी लडाइ क्या आज मेरे ही यहाँ आकर लड़ी जायगी ? जितनी बाकी रची है उतनी रहने दीजिए, घर जानर पूरी घर लीजिएगा, नहीं ता हम लोग तो जैसे ही मारे जायगे । जिस बातने टरसे अध्यको नहीं बुलाया, आगिर क्या वही रात तफदीरमें वदी है ?”

मुनवर अनित और कमल दोनों ही हँस पड़े । हरेद्रने पूछा, “अजित बाबू, मुना है, कल आप अपने घर जायेंगे ?”

“पर आपने मुना किससे ?”

“आजु बाबूने बुगने गया था, उ होने कहा कि शायद कल आप जा रहे हैं ।”

अजितने कहा, “शायद । पर कल नहीं, परसों । यह भी निश्चित नहीं कि घर जाऊँगा या और वहाँ । हो सकता है कि शामतक स्टेशन पहुँच जाऊँ और उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम जिस तरफकी गाडी मिल जाय उसीपर यात्रा शुरू कर दूँ ।”

हरेद्रने हँसते हुए कहा, “लगभग वैरागी होनेके ढगपर । अथात् गन्तय स्थानका फोद निश्चय नहीं ।”

अजितने कहा, “नहीं ।”

“लेकिन लौग्नेना ?”

“नहा, उसका भी फिलहाल कोई निश्चय नहीं ।”

हरेद्रने कहा, “अजित बाबू, आप भाग्यवान् आदमी ह । परन्तु चोरिया बसना दोनेके लिए अगर चाहिए ता म एक आदमी दे सकता हूँ परदेसके लिए ऐसा भिन मिलना मुश्किल है ।”

कमलने कहा, “ओर रसोइयेको जरूरत हो तो म भी एक ऐसा पक्ति दे सकती हूँ जिसकी जोड़ी मिग्ना मुश्किल है । आप भी स्वीकार करगे कि हाँ, है तो अहकार करने लायक ही ।

अविनाशको कुछ भी अच्छा नहा लग रहा था, वे बोले, “हरेद्र, अब देर

काहेकी है, चलनेकी तैयारी करो न। क्या कहते हो ?”

हरेद्रने विनयने साथ कहा, “लटमोंने साथ जरा परिचय न कीजिएगा ?
घोडा मृत उपदेश उह न दे जाइएगा, भाद साहन ?

अविनाशने कहा, “उपदेश देने तो मैं आया नहीं, आया था सिर्फ इन लोगोंका साथी बनकर। तो उसकी भी जरूरत नहीं रही।”

सतीश मृत से लडकोंन साथ ऊपर आ पहुँचा। दस-बारह वयसे लेकर उनीस-तीस वयसे युवकतक उसमें थे। जाटने दिन जार उदनपर सिर्फ एक कुरता, पाँचम जूतेतक नहीं—शायद इसलिए कि जीवन धारणने लिए उनका कोई विशेष प्रयोजन नहा। राने-पीनेकी वस्तुआ पहले ही दिग्गा दी गई है। ब्रह्मचर्याश्रममें यह सब शिखाक ही अगई। हरेद्रने आज एक सुन्दर भाषण रट रगा था, वह मन ही मन उसीको दुहराते हुए यथाचित गाम्भीर्यसे साथ बोला, “इन लटमोंने देशने कामम जीवन अपण कर दिया है। यही आशीवाद आप लोग हम दीजिए कि आश्रमना यह महान् आदेश भारतन नगर नगर आर गाँव गाँवमें ये प्रचार कर सकें।”

सने मुक्त कण्ठसे आशीवाद दिया।

हरेद्रने कहा, “अगर समय मिला तो अपना वक्तव्य मैं पीछे सुनाऊँगा।” यह कहकर उसने कमलको लक्ष्य करके कहा, “आपको ही आज रास तौरसे आमत्रण देकर हम लोगोंने बुलाया है, कुछ सुननेकी आशासे। लडक आशा लगाये हुए हैं कि आपन मुँहसे आज वे ऐसी कोई बात सुनगे जिससे उनके जीवनका प्रत अधिकतर उज्ज्वल हो उठे।”

मारे सनेव ओर दुबिधाक कमल मुख हो उठी। वाली, “मैं तो व्याख्यान नहा द सकती हूँ न।”

इसका उत्तर दिया सताशने, बोला, “व्याख्यान उहा उपदेश चाहते हैं हम। देशने काममें जा चीज इनसे सने उवादा कामम जायेगी, सिर्फ उसीने सारमें।”

कमने उसीने पृष्ठा, ‘देशने कामसे आपका तात्पर्य क्या है, पहले यह बताइए !’

सतीशने कहा, “जिससे देशना सनेगीक कपाण हो उही ता देशना काम है।”

कमलने कहा, “मगर कल्याणनी धारणा तो सननी एक सी होती नहा। आपने साथ मेरी धारणाका अगर मेल न येग तो मेरा उपदेश आपने काम नहीं आ सकता।”

सतीश सन्टमें पड गया। इस बातका ठीक उत्तर उसे ढूँढ़े न मिला। उसका इस सक्टसे उद्धार करनेके लिए हरेद्रने कहा, “देगनी मुक्ति जिससे मिले वही है देशका एकमात्र कल्याण। देशमें ऐसा कौन होगा जो इस सत्यको न मानता हो ?”

कमलने कहा, “रहनेमें डर लगता है हरेन बाबू, कि सनने सन भडक उठगे। नहीं तो मैं ही कहती कि अपने आपको और दूसरोंको भूलभुलैयामें डालनेवाला इस ‘मुक्ति’ शब्दके समान ओर कोई छल ही नहीं। किससे मुक्ति हरेन गावू ? त्रिविध दुखमें या मन र धनसे ? तताइए कि किससे देशका एक मात्र कल्याण समझकर आश्रम प्रतिष्ठामें आप लोग नियुक्त हुए हैं ? यही क्या आपकी स्वप्नेश सेवाका आदेश है ?”

हरेद्र वस्तु होकर गेला, “नहा, नहा, नहा, यह सन नहीं, यह सन नहीं, यह कामना हमारी नहा।”

कमलने कहा, “तो फिर ऐसा कहिए कि यह हमारी कामना नहीं, कहिए कि हमारा आदेश इससे भिन्न है। कहिए कि ससार त्याग जार बेराग्य-साधन हमारा लक्ष्य नहीं। हमारी साधना है ससारका सम्पूर्ण ऐश्वर्य, सम्पूर्ण सौन्दर्य, सम्पूर्ण जीवन लेकर जीवित रहना ? मगर उसनी शिभा क्या यही है ? उदनपर कपड़ नहीं, पॉयाम जूते नहीं, फटे पुरान कपड़ पहन रगे हैं, रूग्ने बाल हैं, एक छाक अध पेट खाकर जो लडने अस्वीकारन गीच रत रहे हैं, प्रातिन आनन्दका जिनने भीतर चिह्नतन नहीं रहा है, देगनी लक्ष्मी क्या उहीक हाथ अपने भाण्डारनी चानी सौंप देगी ? हरेद्र बाबू, मसारनी तरफ एक बार मुँड उठाकर देखिए तो सही। जि हैं उठुत मिला है, उ होंन ही आमानीसे दिया है। उन लोगोंका ऐसी अकिंचनताका स्कूल गोलकर त्यागका त्रेतुण्ट नहीं रनाया गया था।”

सतीश हतनुद्धि-सा हो गया, गेला, “क्या आप कहना चाहती हैं कि देश के मुक्ति सग्रहम धमनी साधना और त्यागनी दी गनी कतइ जरूरत नहीं ?”

कमलने कहा, “मुक्ति-सग्रामना अथ तो पहले स्पष्ट हो जाय ?”

सतीश वर्ग शॉन्ने लगा। कमल हँसती हुई बोली, “आपने भावोंसे मालूम होता है कि आप विदेशी राजशासिके यथनसे मुक्त होनेकी दा दशवा मुक्ति-संघाम कह रहे हैं। अगर यही हो सतीश बाबू, तो मैंने न तो कभी धमकी साधना की है और न त्यागनी दी ग ही ली है, फिर भी आपसे कहे देता हूँ कि मुझे आप सबसे आगे सामना करोगालोंके दग्ध पाइएगा,—आप लोग तब दूँदे भी न मिलो।”

सतीश कुछ सोला नहीं, वह न जाने कैसा घरवा-सा गया, और उसकी चकल दृष्टिमा अनुसरण करती हुई कमल कुछ देरन लिए जिस व्यक्तिनी ओरने आप न पर सनी वह था राजद्र। सतीशक गिना गिमान उधर लख्य ही नहीं गया था कि वर वह पुष्पेने दरगाजेके पास आ गडा हुआ था। वह भावाच्छत्रकी भौति निष्कल दृष्टिसे अपतक कमलकी ही आर देग रहा था, और अर भी गैर उखी तरह देगता रहा। उसका चेहरा एक बार देगकर फिर भूगना मस्जिद था। उमर शायद पनीम-दुखीसके लगभग होगी, रग गिलकुल साफ गोरा, सहसा देगनेने अस्वाभाविक-सा मालूम पडता है। ऊँचा प्रशस्त ललाट इसी उमरमें गल उड जानने कारण सामनेकी तरफ बहुत गडा दिग्गाह देता है। आँगें गहरी और रस छोटी-छोटी हैं जैसे जँधरे गिलमेंसे चूनेनी आँग चमक रही हों। नीचेका मोग आठ सामनेकी आर छुर पर माना जन्त करणने कगेर मकल्मकी गिनी तरह देबाये हुए है। सहसा देगनेसे ऐसा लगता है कि इन जागमोगे गवर चल्ना ही अच्छा है।

हरे द्रने कहा, “ये ही मेरे गित्र हैं राजेद्र—गिर गिर ही गहीं गलिन छोटे भाद जैसे। इतना कमठ कायकग, इतना गडा स्वदेगभक्त, इतना गिडर और साधुचित्त पुरुष मैंने दूमरा नहीं देगा। भाभीजी, इहींका गिर म उम गोज आपसे कर रहा था। यह जैसे हँसने-गेलते पाता है वसे ही हँसने-गलते पत्र देता है। आश्चर्य गनर आदमी है। अजिन गानू, इ हारो में आपने साथ दे रहा था भाग गनर करने लिए।”

अजित कुछ रहना ही चाहता था कि एर लडनेने आकर गनर दी, “अरय गानू आये ह।”

हरे द्र गिस्मित होकर बोला, “अरय गानू !”

अश्वने धरमें गुसते हुए कहा, “हाँ जी, हाँ—गुहारा, परम गिन अश्व

जुमार !” फिर सहसा चान्दर कहा, “हैं ! आज रात क्या है ? यहाँ तो सभी जन इन्द्र हैं ! आगु बाबूके साथ कारमें घूमने निकला था, सहसा सयाल आया, हरि घोषकी गोशाला तो जरा देखते जायँ । इसीसे चला आया, चलो, अच्छा ही हुआ ।”

इन सब बातोंना किसीने जमान नहा दिया, कारण उसम न तो कुछ जमान देने लायक था और न उसपर किसीने विश्वास हा किया । अतः न तो यह रास्ता ही है और न इधर वह कभी आता है ।

अभयने कमलकी तरफ देगकर कहा, “तुम्हारे यहाँ कल सपर ही जानेकी साब रहा था, लेकिन मजान तो मुक्त मालम नहा—अच्छा ही हुआ जो भेंट हो गद । एक गुम सनाद है ।”

कमल चुपचाप देखती र्णी, हरेद्रने पृछा, “गुम सनाद क्या है, सुनाओ तो सही । यह निश्चय है सपर जग गुम है तो गोपनाय ता होगी नहीं ।”

अभयने कहा, “नहा, ठिपाने लायक अग रर ही क्या गया है ! रास्तमें आज उस सिलाइकी मशीन बचनेवाले कम्बख्त पारसीसे भेंट हो गद जो उस दिन कमलकी तरफसे रुपये उधार लेने गया था । गाडी रोक्कर मामला पृछा गया ।” फिर कमलकी तरफ इशारा करने कहा, “आप उधारमें एर मनीन ररीद कर पतुद बतुद छीकर गच चला रही था ।—शिरनाथ मौजसे लापता है ।—मगर इन्कारके मुताबिक फ्रित तो दत्तपर चुकनी ही चाहिए, इसासे वह मशीन लीन ले गया । आगु बाबूने आज उसे पूरी कीमत देकर ररीद लिया है ।—कमल, कल सवेरे ही आदमी भेजकर मनीन मँगा लेना । खाने पहननेसे भी तग हो, हम लोगसे तो यह रात कहनी थी ?”

इसके कहनेकी बगर निपटुरतासे सबके सब ममाहत हुए । कमलके लापण्य हीन शीण चेहरेका कारण जानकर मार शर्मन अभिनाशतकना चेहरा लल हो उठा ।

कमलने मृदु कण्ठस कहा, “मेरी तरफसे कृतज्ञता जतानर उद मशीन वापस कर देनेकी कह दीज गा । अग मुझे उसकी जरूरत नहीं ।”

हरेद्रने कहा, “अभय बाबू, आप चले जाइये इस घरसे । आपकी मँने, बुलया नहीं था और न चाहा ही था कि आप यहाँ जायँ । फिर भी, आप चले

आये। आदमीनी ब्रूटेलिनी (पगुता) की क्या कहीं काइ हद ही नहीं ?”

कमलने सहसा मुँह उठाते ही देखा कि अजितकी दोनों जाँचे आँसुओंसे भर आइ हैं। बोली, “अजित मामू, क्या आपकी गाढा साथ है, कृपाकर मुझे पहुँचा दीजिएगा ?”

अजित कुछ बोला नहा, उसने सिफ़ सिर हिलाकर हाँ कर दी।

कमलने नीलमासे नमस्कार करते कहा, “अब शायद जल्दी भट न होगी, मैं यहाँसे जा रही हूँ।”

पृथ्वीना किसानो साहस नहीं हुआ कि कहीं ? नीलिमाने सिफ़ उसना हाथ लेकर अपन हाथमे दबा दिया और दूसर क्षण कमल हरेद्रको नमस्कार करके अजितके पीछे पाठे कमरेसे बाहर निकल गई।

१५

मोटरमें बैठकर कमल जयमनस्व-सी होकर जाकागरी ओर देख रही था। गाडी थमतो ही इधर उधर देखकर उसने पृथा, “यह कहीं जा गय अजित मामू, मेरे घरका रास्ता तो यह नहीं है ?”

अजितने उत्तर दिया, “नहा, यह घरना रास्ता नहा।”

“नहा है ? तो लाटना पड़ेगा आप ?”

“सो आप जान। हुकम करते ही लौट पड़ेगा।”

सुनकर कमल आश्चर्यम पड गई। इस अस्मृत उत्तरक कारण उतनी नहीं जितनी उसन कण्टनी अस्वाभाविकतासे वह प्रिचलित हो उठी। क्षण भर मौन रहकर उसने अपनेको दृढ़ किया और फिर हँसते हुए कहा, “राह भूलनका अपुरोध तो मैंने किया नहीं अजित मामू, जो सन्तोषनना हुकम मुझको ही देना होगा ? ठीक जगह पहुँचा देनेना दायित्व आपना है,—मेरा कतय है सिफ़ आपपर विश्वास किये रहना।”

“भगर दायित्व-बोधनी धारणामें भगर भूल कर बैठे होउँ कमल, ता ?”

“‘भगर’के ऊपर तो कोई बिचार चल नहीं सक्ता अजित मामू। भूलके बारेमें पहले नि मशय हो जाने दो, उगने बाद हमना बिचार करूँगी।”

अजितने अस्फुट स्वरमें कहा, “ता बिचार ही कीजिए,—म प्रतोशा कर रहा हूँ।” इसने बाद वह क्षण भर स्तब्ध रहकर सहसा मोड़ उठा, “कमल,

उस दिनकी रात याद है तुम्हें ? उस दिन भी ठीक ऐसा ही अंधकार था ।”

“हाँ, ऐसा ही अंधकार था ।” कहकर कमलने गाँजीका दरवाजा खोला, यह पीछेसे उतरी और अजितकी गलम सामनेकी साटपर जा बैठी । सुनसान अंधकार, रात्रि तिलबुल नीरव थी । कुछ दरतक दोनोंमसे कौन कुछ बोला नहीं ।

“अजित नाबू ?”

“हूँ ।”

अजितकी छातीके भीतर आँधो उठ रही थी, जगन देनेम बात उसकी मुँह की मुँहमें ही हिलग रही ।

कमलने फिर पृठा, “क्या सोच रहे ह, बताइए न ?”

अजितका कण्ठ काँपने लगा, बोला, “उस दिनका आगु नाबूक भगानका मेरा आचरण तुम्हें याद है ? उस दिन सोचा था कि तुम्हारा अतीत ही शायद तुम्हारा सभमे उडा जा है, मैं उसका साथ समझौता कैसे कर सकता हूँ ? पीछे की ही छायाको सामने उडाकर मैंने तुम्हारा चेहरा ढक लिया था और इस रातका भूल गया था कि सृष्ट घृमा करता है । मगर उमे जान दो—लेकिन आज क्या सोच रहा हूँ, तुम नहा समझ सकते ?”

कमलने कहा, “स्त्री होकर इसने रात भी न समझ सकेगी, मैं क्या इतनी निर्रोध हूँ ? राह जन भूछे, मैंने ता तमो समझ लिया था ।”

अजित धार धीरे उसने कंधेपर बायाँ हाथ रखकर चुप हो रहा । कुछ देर बाद उसने कहा, “कमल, माकूम हाता है, आज जन मैं अपनेका संभाल नहीं सकूँगा ?”

कमल हटकर नहा गयी । उसका आचरणम विस्मय या विद्वलताका नाम तक न था । महान स्वाभाविक गान्त कण्ठसे बोली, “इसम आश्रयको कोद बात नहा अजित नाबू, ऐसा तो हुआ ही करता है । लेकिन जाय तो सिफ पुरुष ही नहीं है, बाय निष्ठ शिष्ट पुरुष हैं । इसका बाद फिर मुझे कंधेमे उतारि एगा कैसे ? इतना छोटा काम तो जाय कर नहीं सकते ।”

अजित गाँजे स्वरमें बोला, “ऐसी जागडा तुम करती ही क्या हो कमल कि ऐसा काम करना ही पड़ेगा ?”

कमल हँस गी और बोली, “जायका म अपने लिए नहीं करती अजित हूँ सिफ आपने लिए । तो मुझे

या, सोच यही है कि करत नहीं उनेगा । सिफ एफ गतनी गलतीने उदले इतनी उनी सता आपन सिर लाद देनम मुझे तरस जाता है । अब नहीं, चालिए लौट चरें ।”

बात अन्तिते कानतक पहुँची, पर हृदयतक नहीं पहुँची । लहमे भरमें उसनी नयाका रून पागल हो उठा,—अपनी छातीने पास जारने उसे लाचकर मत कण्ठसे गल उठा, “मुझपर क्या तुम विश्वास नहीं कर सकती कमल ?”

क्षण भरक लिए कमलकी साँस रुक गई, गाली, “कर सकती हूँ ।”

“तो किसलिए लाटना चाहती हो कमल ? चला, हम चले चलें ।”

“चलिए ।”

गाली चलाने तक अजिता सहसा रुककर पृठा, “घरस साथ तने लयक क्या तुम्हारे पास कुछ भा नहीं ?”

“नहा । लेकिन आपने ?”

अजितकी सोचना पडा । जेस हाथ डालकर गाली, “रुपये जैसे तो कुछ साथम हैं नहीं,—उनका तो जबरत पढ़गी ।”

कमाने कहा, “गाडी बच देनेसे आसानासे रुपय आ जायेंगे ।”

अजितने जाक्षयक साथ कहा, “गाडी बेवूँगा ? मगर यह तो मेरी नहा है—आगु बाबूका है ।”

कमाने कहा, “इससे क्या ? आगु बाबू मारे लाना और घृणाक गाडीका नामतक जमानपर न लायगे । कौद चिन्ता मन काधिए—चले चलिए ।”

मुनकर अजित स्तब्ध हो रहा । उसका बायाँ हाथ अब भी कमलके कंधेपर था, वह निरसकर नीचे जा पया । बहुत देर चुप रूकर वह बोला, “तुम क्या मेरा मनक उठा रही हो ?”

“नहीं तो, सच कह रही हूँ ।”

“सच कह रही हो और सच ही समझ रही हो कि मैं गाडी चुरा सकता हूँ ? यह काम तुम खुद कर सकती ?”

कमलने कहा, “मनने न समनेपर अगर आप निभर करने अजित बाबू, तो मैं इसका जवाब देती । पराद चीज हडप लेनेकी हिम्मत आपमें नहीं है । चलिए, गाडी मुमानर मुझे घर पहुँचा दीजिए ।”

लौकते वक्त अजितने धीरस पृठा, “पराद चीज हडप लेनेकी क्या बहुत पडी

बात समझती हो तुम ?”

कमलने कहा, “बड़ो-छोटीनी बात नहा की मैने। यह साहस आपमें नहीं है, उस यही कहा है।”

“नहा, नहीं है, और उसने लिंग म लज्जाका अनुभव भी नहीं करता।” यह कहकर अजित जरा रुका और फिर गला, “कहि होता तो उसे मैं लज्जाका बात समझता और मेरा तो विश्वास है कि सभी शिष्ट व्यक्ति इस बातको स्वीकार करेंगे।”

कमलने कहा, “क्योंकि स्वीकार करना बहुत आसान है। उसमें बाहवाही जो मिलती है।”

“सिर्फ बाहवाही ही ? उससे ज्यादा कुछ नहीं ? शिष्ट और सत्कार नाम की क्या फोड़ चीच ही नहीं देखी तुमने कभी ?”

“अगर देखी भी हो, तो उसकी आलोचना अगर कभी भोगा आया तो और किसी दिन कर्हंगी, जाज नहीं।” और वह क्षण भर मौन रहकर बोली, “आपने तरफर अगर और फोड़ होता तो योग्यमे कहता कि ‘कमलने हडप लेनेकी कोणिकामें तो शिष्ट और सत्कारको समझ हुआ नहा ?’ मगर मैं ऐसा नहीं कह सकता, क्योंकि, कमल किसकी सम्पत्ति नहीं है। वह सिर्फ अपनी ही है, और किसीकी भी नहीं।”

“किसी दिन शायद हो भी नहा सकता ?”

“यह तो भविष्यकी बात है अजित ब्रह्म—आज कैसे इसका जराय दूँ ?”

“जवाब शायद किसी भी दिन नहा दे सकेगी। मालूम होता है, इसीलिए शिवनाथकी इतनी बड़ी निममता भी तुम्हें नहीं खटनी। बहुत ही आसानीसे उसे तुमने झाड़ फेंका।” कहकर अजितने जोरकी सारा ले ली।

मोटरने उजालेम दिखा कि सामने कद एरु बैलगाडिया खटा ह। पास ही शायद गाँव है, किसान जैनीकी तेसी गाडियाँ सडकर ढीलकर, रेल तरफर घर चले गये ह।

अजित सावधानीसे उस जगहको पार करके बोला, “कमल, तुम्ह समझना कठिन है।”

कमलने हँसर कहा, “कठिन कैसे ? ठीक ही तो समझे थे कि राह भूलते ही मुझे भुलाने ले जाया जा सकता है।”

“शायद वह समझना मेरी भूल थी।”

कमलने फिर हँसते हुए कहा, “रास्ता भूलना भूल, मुझे भुलाकर ? जाने की कोशिश भूल, और अपनी भी भूल ? इतना बड़ा भूलना बोझा आपका दूर होगा क्या ? अजित नाबू, अपनेपर श्रद्धा रखना सीखिए। इस तरहसे अपने सामने अपनेको छोटा मत बनाइए।”

“मगर अपनी भूलको जस्वीकार करना ही क्या अपनेपर श्रद्धा रखना है, कमल ?”

“नहीं, सो नहीं। पर जस्वीकार करनेकी भी एक रीति है। मसाल सिप अपनेको रेकर ही तो है नहीं। ऐसा होता तो फिर सब झकड़ ही भिट जाता। यहाँ और भी दस जनोंका बास है, उनकी भी इच्छा-निच्छा—उनके भी कामकी धारा हमारी देखसे जा टकराती है। इसीसे, अन्तिम फलफल अगर मनके माफिक न हो, तो उसे भूल जाकर धिक्कार देते रहना अपना ही अपमान करना है। अपने प्रति इससे बचकर अश्रद्धा, बताइए, आर क्या प्रकट की जा सकती है ?”

अजितने क्षण भर चुप रहकर पृछा, “लेकिन जहाँ सचमुचकी भूल हो ? शिनाथके सत्रधमें भी क्या तुम्हें आत्म पश्चात्ताप नहीं हुआ कमल ? और यही क्या मुझे तुम विश्वास करनेसे कहती हो ?”

कमलने इस प्रश्नका शायद ठीकसे उत्तर नहा दिया, बोली, “विश्वास करने न करनेकी गज तो आपकी है। उनसे विद्वद तो किसीके पास किसी दिन मैंने शिनाथत की नहा।”

“शिनाथत करनेवाली तुम स्त्री ही नहीं। पर भूलक लिए क्या अपने आप भी कभी अपनेको नहीं धिक्कार ?”

“नहीं।”

“तो इतना ही सिफ मैं कह सकता हूँ कि तुम अद्भुत हो, तुम असा धारण हो।”

इस मन्तयका कमलने कोई जवाब नहीं दिया, वह चुप हो रही।

दमेक भिाट रीत जानेक बाद अजित सहसा पूछ बैठे, “कमल, ऐसी भू-अगर फिर भी कर बैठूँ, तो भा क्या तुम्से भट होगा ?”

“‘अगर’का जवाब तो ‘अगर’से ही दिया जा सकता है अजित नाबू।

अनिश्चित प्रस्तावक निश्चित समझाने की आशा रहा करनी चाहिए।”

“अर्थात्, यही तुम्हारा विश्वास है कि यह मोह मेरा कलत्र टिन्नेगा नहीं?”

“मुझ लगता है, ऐसा होना कमल कम असम्भव ता नहा।”

अजित मन ही मन आहत होकर बाण, “मैं और चाहे जो भी होऊँ कमल, शिवनाथ नहीं हूँ।”

कमलने जवाब दिया, “सो म जानती हूँ अजित बाबू, और शायद आपसे भी ज्यादा जानती हूँ।”

अजितने कहा, “जानती होती तो यह विश्वास न कर लेतीं कि आज मैंने तुम्हें झूठसे बहाना चाहा था, इसमें सत्य कुछ भी नहा था।”

कमलने कहा, “झूठनी बात तो हो नहा रही अजित बाबू, मोहनी बात हा रही थी। ये दोनों एक चीज नहीं। आज मोहने बश होकर अगर आपने किसीको बहाना चाहा हा तो यन् अपनेको ही बहाना चाहा है। मुझको बहाना नहीं चाहा,—जानती हूँ।”

“पर अन्तम टगाद तो तुम ही जाता कमल। इसे निश्चित समझकर भी कि मेरा रातना मोह दिनक उजालेक कट जायगा तुमने साथ चलनेसे इनकार नहा किया? यह क्या सिर्फ उपहास ही था?”

कमल जरा हँस दी, “जॉन्क कर देख क्यों नहीं लिया? रास्ता खुला था, एक बार भी तो मने मना नहीं किया था।”

अजित जोरनी एक साँस छोडकर बोला, “अगर नहा किया ता म यही कहेंगा कि तुम्हें समझना घालपमें ही कठिन है। एक रात में तुमसे कहता हूँ कमल कि जैसे नारीका प्रेम हृदयको जाच्छत्र कर देता है, वेसे ही उसका रूपका माह भी बुद्धिको बेहोश कर डालता है। किया करे, पर इनमसे एक जितना उडा सत्य है, दूसरा उतना ही उडा असत्य है। तुम तो जानती थी कि यह मेरा प्रेम नहीं है, सिर्फ शक्ति मोह है। फिर कैसे तुम इसे पलावा देनेको तैयार हो गई? कमल, कुहरा चाहे जितने उड समारोहक साथ खूबने प्रनाशना कर दे, फिर भी, यह असत्य है। ध्रुव सत्य तो सूर्य ही है।”

कमल अ धनारम क्षण भर निनिमेष दृष्टिसे उसनी तरफ देखती रही, उसने राद शा त कण्ठसे बोली, “यह तो कविनी उपमा है अजित बाबू, कोई शक्ति नहीं, सत्य भी नहा। मालूम नहीं, किस आदिम कालमें कुहरेकी सृष्टि हुई थी,

पर ध्यान भी वह उसी तरह मौनरूढ़ है। सूर्यको उसने बार-बार टका है, और बार-बार श्रुता रहेगा। मातृम नहा सूर्य ध्रुव है या नहीं, पर कुहरा भी असत्य प्रमाणित नहा हुआ। दोनों ही नर हैं, और हो सकता है कि दोनों ही नित्य हों। इस तरह, भले ही मोह धणिक हा, पर धण भी तो असत्य नहीं। धण भरका सत्य केर ही वह बार-बार वापस जाया करता है। मातृती पूरणी आयु यूयमुत्तीनी तद्ग लगी नहीं, पर उसे असत्य कहकर कौन उदा सकता है? यही अगर आपकी शिकायत हो कि मैंने एक रातने मोहको उठावा क्यों देना चाहा था, तो मैं पृथ्वी हूँ कि जायुय कालनी लम्बाई ही क्या जानना श्रुतना यदा सत्य है।”

यह जानकर भी कि ये रात अजित समझ नहा रहा है, वह कहने लगी, “आपके लिए मेरी रात समझनेका दिन अब भी नहीं जाया। इसीसे शिवायके प्रति आपने ब्रधना सीमा नहीं, मगर भने उह धमा कर दिया है। इसी मुझे जरा भी शिवायत नहा कि तितना उनसे मैंने पाया है उससे ज्यादा मुझे क्यों नहा मिला।”

अजितन कहा, “यानी मनना श्रुतना निर्दिशार बना डाला है। अच्छा, ससारमें किसीने विरुद्ध क्या तर्क को भी शिवायत नहीं?”

कमल उसने मुँहकी जोर दग्नकर बोली, “है, सिफ एनक विरुद्ध।”

“निसने विरुद्ध, उताओ ता सही कमल?”

“क्या करगे आप पराइ बात मुनकर?”

“पराइ बात ? बोल भी हा, फिर भी कमसे कम निश्चिन्त हो सकूंगा कि मुरुपर तुम्हारा गुस्सा नहीं है?”

कमलने कहा, “निश्चिन्त होनेसे हा क्या आप खुश हो जायेंगे? पर उसने लिए अब समय नहीं रहा, हम लग जा पहुँच, गाढा राकिए, मैं उतर जाऊँ।”

गाडी रुक गई। अँधेम रुद्धकने तिनारे कोद लडा था, पास आते ही दोनों खान पद। अजित डरा हुआ बोला, “कीर?”

“मैं हूँ, राजेन्द्र। वही, जिसे आज हरे द्र भइयाने आश्रममें देगा था।”

“अच्छा, राजेन्द्र ! श्रुतनी रातम यहाँ कैसे ?”

“आप लोगोंकी ही बात देग रहा था। आप लोगन आनने बाद ही आगु बानूद यहाँसे आदमी जाया था आपको हँसने।” यह कहकर वह कलक-

की तरफ देखने लगा ।

“कमलने कहा, “मुझे डूँटनरा कारण ?”

उसने कहा, “आपने शायद सुना होगा कि चारों तरफ जारका एन्फ्लूएन्जा फैल रहा है, और यह त-से लोग मर रहे हैं । शिवनाथ नाथ बहुत ज्यादा बीमार है । अचानक उह में खोलीम लिफाफर जागु नाथूष घर पहुँचा जाया हूँ । आगु बाघूने सोचा होगा कि जाप जाभ्रमम हांगी, इससे वहाँ बुलाने भेजा था ।”

“अभी क्या बक्त होगा ?”

“शायद तीन बज चुके ह ।”

कमलने हाथ बटाकर गाडीना नरनाजा रोला जोर कहा, ‘भीतर बैठिए, रास्तेमें आपनो आभ्रमम उतारते चलेंगे ।’

अजितने एन गन्द भी मुँससे नहीं निजाला । काठने पुतलेकी तरह चुपचाप गाडी चलाता हुआ हरे द्रने घरने सामने जानर ठहर गया । राने द्रने उतरनेपर कमलने कहा, “आपनो धयवाद । मुझ गनर दनने लिए आज आपनो बहुत कष्ट हुआ ।”

“यह तो मेरा काम ही है । जरूरत होत ही गनर दीजिएगा ।” कहकर वह चला गया । न फोड़ भूमिका, न कोइ जाटम्बर—सीधे-सादे शब्दोम जता गया कि यह उसके बक्त-यके अन्तर्गत है । आज ही शामनो हरे द्रने मुँहसे इस लडबके विषयम जो कुछ उसन मुना था, सब याद आ गया । एक तरफ उसकी परीभा पास करनेकी असाधारण दक्षता, और दूसरी तरफ सफलताने सामने पहुँचते ही उसे त्याग देनेकी असीम उदासीनता । उमर भी कम, हाल ही यौवनम कदम रता है—और इसी उमरम ‘अपना’ कहनेनो कुछ भी हाथमें नहीं रता, पराये काममें सज षाँट दिया ।

अजित तबसे चुप ही था । यह मुननेने बाद कि रातके तीन बज चुके हें, किसी बातपर ध्यान देने लायक शक्ति उसम नहीं थी । एन असम्बद्ध काल्पनिक प्र-नोत्तर मालाने आपात प्रतिधातने नीचे इस निशाय अभियानकी निरवच्छिन्न बुस्तितासे उसका अत नरण काल हो उठा । जहाँ-न सम्भव है, काइ भी उससे कुछ पृठेगा नहीं, और हो सक्ता है कि पृठेकी हिम्मत भी किसीकी न पड़े, पर, मिर्फ अपनी इच्छा, अभिरुचि और निद्वेषनी तूलिकासे लोग अज्ञात घटनाकी कहानी आत्रोपात पुरीनी पुरी बना लेंगे । और इससे भी ज्यादा उसे

व्याकुल कर रहा था इस लज्जाहीन नारीकी निभय सत्यमादिताने । इस दुनिया
 में शूद्र गोल्लोनी इसे जायश्यकता ही नहीं । यह माना सारी दुनियाको सरदम
 डालने और लाडिलत करने लिए ही पैदा हुआ है ।

उधर उसे नहा मालूम कि शिवगाथकी बीमारीमें कौन और कैसे कैसे रोग
 धाये हाने । यह कल्पना करने कि इस सीसे सत्र लोग इतनी देर होनेका कारण
 पूछ रहे हैं, उसका खून ठण्डा हो गया । सट्टका उसे खयाल आया कि वह
 कमलसे घृणा करता है और इसीने उच्च या वासनने उसने आत्म विस्मृत
 उभक्तकी तरह भ्रमणकरके लिए हा सही, अपना होम खो दिया था । मन ही मन
 यह कहकर वह बार-बार अपनेका अभिशाप देने लगा कि जल्द इसकी उसे सजा
 मिलनी चाहिए ।

रोटते अन्दर घुसते ही उसकी नजर पड़ी खुली गिड़कास सामने खड़े हुए
 आतु वातूपर । गायद वे उसीकी प्रतीकाम उल्लिखित ह । गाडीकी आदृष्टसे
 नीचेका ओर देखकर बोले, "गलित जा गये ? साधम कौन है कमल ?"

"हाँ ।"

"जदु, कमलको सिननाथर समरेमें ले जाओ ।—मुता होगा गायद, वे
 बीमार हं ?" रहते रहते वे खुद ही उतर जाय, और बोले, "यह कतु बदलने
 का समय ऐसा तरार है कि जवानन चार तरफ बीमारी गुा हा गइ है और
 काफी लोग मर रहे हैं । मेरी अपना तरीयत भी आज समरेसे छीन नहीं, हरारत-
 की मालूम पट रही है ।"

कमल उद्विग्न होकर बोली, "तो आप जाग क्यों रहे हैं ? यहाँ गदनेय
 करौवालोंकी तो कभी उहाँ है ?"

"कौन है, मता तो ? डॉक्टर आकर देग भाल गये हैं, मुझे सोने भेजकर
 मणि खन ही पैग जाग रही है । पर मुझे नोंद ही नहा आती थी और तुम्हारे
 आनेम देर होने लगी ।—कमल, पतिगी बीमाथर समय भी क्या अभिमान
 रखा जाता है ? लडाद शगडा तो होता ही रहता है, पर तुमने सारतक नहीं
 ली कि तोय बार दिस कहाँ किस मकाम यह सुखारमें पडा हुआ है ? त्रि ।
 रद गम अच्छा नहीं हुआ, अर अदेला तुम्हारा तो सत्र भुगतना पन्गा ।"

मुनकर कमलको का आभय हुआ, और समझ गइ कि इस सल्लचित्त
 पतिको मत्तरती छोड़ गी बात मायम नहीं । वह चुप रही, आतु गाय उसके

अभिमानका शान्त करने में अभिप्रायने कहने लगे, 'हरेद्र नानून मुँहस सुना कि तुम घरपर नहा हो, तभी मैं समझ गया कि अन्ततने तुम्हें छोटा नहीं। वह खुद सूत्र घूमना पसन्द करता है, तुम्हें भी ले गया होगा। लेकिन सोचो तो जरा, अँधेरम अचानक कोद दुघटना हा जाती तो तुम लोग कैसी आफतमें पडते ?'

अन्तिकी छातीपरसे एक पत्थर सा उतर गया। आशु राबूके लिए वह सोचने लगा किसी बातकी बुरादकी तरफ मानो उनका मन जाना ही नहीं चाहता, निष्फुलप अन्त करण हरदम अजलङ्क गुभ्रतासे चमका करता है। स्नेह और श्रद्धासे उसने मन ही मन उह नमस्कार किया। लेकिन, कमलने उनकी सभ बातोंपर ध्यान नहीं दिया, शायद इसकी जल्द भी नहा समझी। उसने पूछा, "वे अस्पताल न जाकर यहाँ क्यों आये ?"

आशु नानूने आश्चर्यके साथ कहा, "अस्पताल ? यह दरतो, अभीतन तुम्हारा गुस्सा नहीं गया ?"

"गुस्सेकी बात नहीं कह रही आशु राबू, जो सगत ओर स्वाभाविक है, वही कह रही हूँ।"

"यह स्वाभाविक नहीं है, ओर सगत तो है ही नहा। हाँ, दतना मानता हूँ कि मणिका उचित था कि यहाँ न लाकर वह तुम्हारे पास भेज देतो।"

कमलने कहा, "नहा, उचित नहीं था। मणि जानतो है कि इलाज कराने की शक्ति नहा है मेरी।"

इस बातसे उह ओर एक बात याद आ गई ओर उससे वे अत्यन्त लज्जित से हो गये। कमल कहने लगी, "सिफ मनोरमा ही नहा शिष्याथ राबू भा जानते ह कि सेनासे ही रोग नहा जाता, दवा दालकी भी जल्द पडती है। शायद यह अच्छा ही हुआ कि गदर मेरे पास न जाकर मणिक पास पहुँचो। उनकी आयुका जोर समझिए।"

आशु राबू लज्जासे म्यान होकर सिर हिलते हुए बार बार कहने लगे, "यह बात नहा कमल,—सेना ही सब कुठ है। तीमारदारी सभसे बडी दवा है। नहा तो, डॉक्टर ने तो महज एक उपलक्ष्य ह।" उह अपनी स्वर्गीया पत्नीकी याद आ गई, बोले "मैं तो भुक्तभोगी हूँ कमल, तीमारी भुगतते भुगतते मने हमकी दिना मिल चुकी है। घर चला, तुम्हारी चीज है, जैसा तुम ठीक

समझोगी वैसा ही होगा। मेरे रहते दवा दास्की तकलीफ नहा होगी।” और उसे वे रास्ता दिखाते हुए आगे ले चले। अजित किन्तु यविमूढ़ होकर, गौर समझे ही उनसे साथ हो लिया। इस डरसे कि रोगाने कमरेमें शोर होनेसे कहीं उसने विश्राममें निम्न न हो, अपने दवे पाँव प्रवेश किया। देखा, शय्याके पास कुरसापर बैठी मनोरमा रात्रि जागरणकी त्रातिसे रागीकी छातीपर अपना थका हुआ मस्तक रखकर शायद अभी-अभी सो गई है और उसकी गर्दनमें परस्पर सन्नद्ध दोनों गोंहे डाले शिवनाथ भी सो रहा है।

इस स्वप्नातीत दृश्यपर अस्मात् जैसे ही पिताकी आँखें पडा, जैसे ही उनपर मानो घना धमारना जाल उतर आया। क्षण भर बाद ही वे वहाँसे भाग खड़े हुए। अजित और कमल जोर उठाकर परस्पर एक-दूसरेका मुँह ताकने लगे और उसने बाद जैसे आये थे वैसे ही चुपचाप बाहर चले गये।

१६

जाने आनेने रास्तेने पास ही एक छायादार ऋण्डा है। रोगीने कमरेसे निकलकर अजित और कमल वहाँ रुक गये। एक छोटी सी बिसे कँचकी लालटेन वहाँ झूल रही थी, जिसने अस्पष्ट प्रकाशमें स्पष्ट दीप्त पडा कि अजितरा चेहरा सफेद पक पड गया है, अस्मात् धका ग्राकर मानो सारा रून कहीं हट गया है। तीसरा कोई व्यक्ति वहाँ नहीं था फिर भी अजितने एक अनात्मिया शिष्ट महिलासे योग्य सम्मान दिखाते हुए कमलसे पूछा, “आप क्या अभी घर लौट जाना चाहती हैं? अगर जाना चाह तो मैं उसका इन्तजाम कर सकता हूँ।”

कमल उसका मुँहकी तरफ देखकर चुप रह गई। अजितने कहा, “इस मजानम अब तो आपका एक क्षण भी रहना टाक न होगा।”

“और आपका रहना टाक होगा?”

“नहा, मेरा रहना भी नहा। कल सवेरे ही मैं और कहीं चला जाऊँगा।”

कमलने कहा, “कहीं अच्छा है। मैं भी भी जाऊँगी। फिलहाल, इस कुरसीपर बैठकर रात बिता दूँगी, आप जाकर आराम कर।”

छाती कुरसीसी तरफ देखकर अजित बगल झाँकने लगा, सोला, “लेकिन—”

कमलने कहा, “लेकिन रहने दीजिए अजित मामू, उसका नहा शक्य

हे । तब वक्त न घर जाना ही सम्भव है और न आपने कर्ममें । आप जाइए, देर न बीजिए ।”

सबरे बेहरा आकर अजितको आगु बाबूने सोनेके कमरेमें बुला ले गया । अतक वे रातसे उठे भी न थे । पास ही एक कुरसीपर कमल बैठी थी, उसे पहले ही बुला लिया गया था ।

आगु बाबूने कहा, “तपीयत कल्से ही ठीक नहीं थी, आज मात्रम होता है मानो—अच्छा बैठो अजित ।”

उसके बैठनेपर वे कहने लगे, “मैंने सुना कि आज सबरे ही तुम जा रहे हो, पर तुम्ह रहनेके लिए भो मैं नहीं रहता, ठीक है,—गुड नाइ । भणियमें शायद कभी भट न हो, पर यह निश्चय समझो कि मने तुम्हें स्वान्त करणसे जाशीनाइ दिया है कि हम लोगोंको क्षमा करते तुम जीवनमें सुखी हो सको ।”

अजितने अतक उनके मुँहकी तरफ देखा नहा था, अन जनाइ देनेके लिए मुँह उठाते ही उससे कुछ रहते नहा गना । बल्कि यों कहना चाहिए कि अकस्मात् मानो वह अपनी रातको भूल गया । इस रातकी कल्पना भी न कर सका कि एक रातक कुछ ही धणाम किनामे इतना जबरदस्त परिवर्तन हो सकता है ।

जाइए रात्र सुद भी दो-तीन मिनट मान रहकर कमलसे कहने लगे, “तुम्ह बुलना तो लिया, पर तुम्हारी आँखोंमें आँसु मिलनेमें भी मेरा सिर नीचा हुआ जा रहा है । गारी रात मेरे मनमें क्या क्या होता रहा है—क्या क्या सोचता रहा हूँ सो मैं किससे कहूँ ?”

फिर जरा ठहरकर बोले, “अजने एक दिन कहा था कि शिपनाथ शायद तुम्हारे यहाँ अक्सर नहा रहते । उस रातपर मने ध्यान नहा दिया था, सोचा था कि वह शायद उसकी अत्युक्ति है—उसने पित्रेपत्नी ज्यादती है । तुम रुपया को कमीके कारण सकंठमें थी, तब उसका कारण मने नहा समझा था, मगर आज सब कुछ स्पष्ट हो गया है—कहा भी कोई सद्दह नहा रहा ।”

दोनों ही चुप हो रहे । थोड़ी देर बाद आगु बाबू कहने लगे, “तुम्हारे साथ मैं कई बार अच्छा बहार नहा कर सगा, पर उस दिन प्रथम परिचयक दिनसे ही मैं तुमपर स्नेह करने लगा था कमल । इसीमे, आज बार बार यही खयाल आ रहा है कि जागरा न आता तो अच्छा था ।”

बहते-बहते उनकी आँखोंमें आँसू जा गये, उहे हाथसे पोंछते हुए वे बोले,
“जगन्नीश्वर !”

कमल उठकर उनसे निरहाने जा बैठी, और माथेपर हाथ रखकर बोली,
“जापनी तो सुन्दर है आगु बाबू !”

आगु बाबूने उसका हाथ अपने हाथमें लेकर कहा, “रहने दो कमल, मैं जानता हूँ, तुम अत्यन्त बुद्धिमती हो। मेरा कोड एन्ड मिनाश तुम कर दो। मेरे घरमें उस आदमीका अस्तित्व मेरे सारे शरीरमें आग-सी लगाये दे रहा है।”

कमलने अजितकी जार दग्या, वह नीचेका सिख झुकाये बैठा है। उसकी तरफसे कोड इशारा न पाकर वह भ्रमभर मान रही, फिर बोली, “मुझे आप क्या करनेका कहते हैं ?” परन्तु कोड जवाब न पाकर वह क्षणपर चुप बैठी रही, फिर बोली, ‘मिनाश बाबूनी आप यहाँ रहना नहीं चाहते, पर वे बीमार हैं। इस हालतमें या तो उन्हें अस्पताल भेज दीजिए या फिर उनसे घर। और अगर आप समझते हैं कि मेरे घर भेजनेमें ठीक रहेगा तो वहाँ भेज सकते हैं, मुझे कोड आपत्ति नहीं, पर आप तो जानते हैं कि इलाज करनी शक्ति मुझमें नहीं, मैं जी जानसे सिर्फ संग्रह कर सकती हूँ, उससे ज्यादा कुछ नहीं।’

आगु बाबू कृतज्ञतासे भर उठे, बोले, “कमल, मायूम नहीं, पर ऐसे ही उत्तरकी मैंने तुमसे आशा की थी। यह मैं जानता था कि पातालकी जवाब देनेमें तुम खुद पर न हो सकोगी। तुम अपनी चीज अपने घर ले जाओ, शलाक्य सबकी तुम फिर मत करा, इसका भार मेरे ऊपर रहा।”

कमलने कहा, “पर इस विषयमें एक बात पहलेमें ही स्पष्ट हो जानी चाहिए।”

आगु बाबू चम्पे कह उठे, “तुम्हें कहनेकी जरूरत नहीं कमल, मैं जानता हूँ। एक न-एक दिन सारी गद्दगी दूर हो जायगी। तुम फाइ चिन्ता मत करो, मेरे जात जा इतना बड़ा अत्याचार तुमपर मैं नहीं दूँगा।”

कमल उनसे मुँहका तरफ देखती हुई फिर बैठी रही, कुछ बाली नहीं।

“क्या मान रही हो कमल !”

“मोच रहा थी कि आपसे कहनेकी जरूरत है, या नहीं। पर मायूम होता है कि जम्मा है नहीं तो कुछ भी स्पष्ट न होगा, उलझन बन्ती ही जायगी।

आपके पास रुपया है, हृदय है, दूसरोंके लिए खर्च करना आपने लिए कोई मुश्किल नहीं, लेकिन यह भ्रम अगर आपने अन्दर हो कि इस तरह आप मुझ पर दया कर रहे हैं, तो वह दूर हो जाना चाहिए। किसी भावने में आपकी ही हृदय भीग नहीं लूँगी।”

आशु बाबूने सिलाइकी मशीनकी रात याद आ गई, वे व्यथित होकर बोले, “मुझसे गलती अगर कभी हो भी गई हो, तो क्या उसके लिए क्षमा नहीं कर सकती?”

कमलने कहा, “गलती शायद इतनी तब नहीं की जितनी कि आप अब करने जा रहे हैं। आप मानते हैं कि शिम्नाथ बाबूना बचाना प्रकारान्तरसे मुझको ही बचाना है,—मुझपर ही अनुग्रह करना है। मगर अमलमें रात ऐसी नहीं। इसका याद आपकी जा चुका हो, कर सकते हैं, मुझे कोई आपत्ति नहीं।”

आशु बाबूने सिर हिलाते हुए कहा, “ऐसा ही गुस्सा आता है कमल, यह कोई अस्वाभाविक बात नहीं और न अयाय ही है। अच्छी बात है, मैं शिम्नाथको ही बचाना चाहता हूँ, तुमपर अनुग्रह नहीं करता। अब तो ठीक है न?”

कमलने चेहरेपर निरतिशय भाव दिखाइ दिया। उसने कहा, “नहीं, यह ठीक नहीं। आपका जो कि मैं समझ नहीं सकती तो फिर कोई उपाय नहीं। उह आप अस्पताल नहीं भेजना चाहते, तो हरेन्द्र बाबूने आश्रममें भेज दीजिए। वे बहुतोंकी सेवा किया करते हैं, इनकी भी करेंगे। आपका जो कुछ खर्च करना हो, वह कीजिएगा। मैं खुद भी बहुत ज्यादा धन गद हूँ, अब चलती हूँ।” इतना कहकर वह सचमुच ही जानेका तैयार हो गई।

उसकी बात और आचरणसे आशु बाबू मन ही मन क्रुद्ध हो उठे, बोले, “यह तुम्हारी ज्यादाती है कमल। तुम्हारे दोनोंके कल्याणके लिए जो कुछ मैं करने जा रहा हूँ, उसे तुम अकारण विवृत करके दग रही हो। एक ओर तो मेरे लिए लज्जाकी सीमा नहीं,—और मैं जानता हूँ कि इस कदाचारको अकुरने नष्ट किये बिना मेरी असीम ग्लानि बनी ही रहेगी,—दूसरी ओर यह भी सच नहीं कि मेरी लटकीका इससे सम्बन्ध है, इसीलिए मैं किसी तरह बच निकलनेका रास्ता देख रहा हूँ। शिम्नाथको मैं बहुत तरहसे बचा

सकता हूँ, मगर सिर्फ इतना ही मैं नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि ऐसे सफ़टके दिनोंमें तुम सगान्त करणसे उसकी सेवा करके उसे फिरसे पृथक् पा जाओ। इसीलिए मेरा यह प्रस्ताव है।—सिर्फ अपने स्वाधयय ही मैं ऐसा नहीं कर रहा हूँ।”

सतें सब सच थी, सफ़्ण और आन्तरिकतासे पृण। मगर कमलके मनपर कोई असर नहीं पडा। उसने कहा, “ठीक यही बात मैं आपको समझाना चाहती थी आगु बाबू। सेवा करनेसे मैं इनकार नहीं करती। चायके बग़ाचमें रहते हुए मैंने बहुतोंकी सेवा की है, इसका मुझे अभ्यास है। लेकिन मैं उन्हें फिरसे पाना नहीं चाहती, न सेवा करके, और न बिना सेवा किये। यह मेरी अभिमानकी जाग नहा, और न क्षुण्य ही है,—असलम हम दोनोना सम्बन्ध टूट गया है, उस मैं जाट नहीं सकती।”

जो कुछ उसने कहा, उसमें न तो किसी तरहकी गरमी थी न उच्छ्वास,—शिल्लुली सीधी सादा बात थी। परन्तु इसने आगु बाबूको दग कर दिया। क्षण भर बाद उन्होंने कहा, “यह नैसी बात कह रही हो कमल ? इस मामूली सी बातपर पतिको त्याग देना चाहती हो ? यह शिक्षा तुम्हें किसने दी ?”

कमल चुप रही। आगु बाबू कहने लगे, “बचपनमें यह शिक्षा तुम्हें चाहे निगन भा दी हो, उसने मात्र शिक्षा दी है, यह अन्याय है, असगत है,—यह मात्र अप्रगध है। चाहे किसी भी घरम तुम पैदा हो, तुम भारतीय क्या हो। यह माग तुम्हारा हमारा नहीं है,—इसे तुम्हें भुलना हा होगा। जानती हो कमल, एक दशका धम दूसर देशने लिए अधम है। और ‘स्व धममें मृत्यु भी भेय’ है।” कहते कहते उनकी आँग चमक उठी। और बात गतम करके वे हॉपने लगे। परन्तु जिसे लय करने ये बात कही गई वह रच मात्र मा विचलित नहीं हुए।

आगु बाबू कहने लगे, “यह मोह ही एक दिन हमें रसातलका आर ग्रीचे लिये जा रहा था। पर भ्रान्ति पकडाद द गद कुछ मनाशियोंकी दृष्टिमें। देगाशियोंकी धुलाकर बार-बार ये गिर एक ही बात कहने लगे—तुम लोग उमरका तरह जा कहा रहे हो ! तुम्हें किसी बातकी कमी नहीं, दीनता नहीं, किसी आगे हाय पसारनरी जन्म नहीं, गिर एक बार अपने घरकी तरफ मुड़कर देगा। पृथपुष्य तुम्हारे लिए सब-कुछ छोड गये हैं, सिर्फ एक

हाथ बन्धकर उठा भर लो । विशयतका तो सभी कुछ म अपनी आँतासे देग आया हूँ अर सोचता हूँ कि ठीक समयपर एसी सावधान-बाणी अगर वे नहीं घोषित कर गये होते, तो आज दशमी क्या दशा होती ? बचपनको सभी तो बात याद ह, —उफ्—शिक्षित लोगानी तब कैसी दशा थी ।” इतना कहकर उन्होंने स्वर्गीय मनारियाको लय करन हाथ जोड़कर नमस्कार किया ।

कमलन मुँह उठाकर दया नि अजित मुग्ध दृष्टिसे आगु बाबूजी ओर देख रहा है । कल्पना आदेशम माना उसे होगा ही नहा रहा,—ऐसी हालत थी ।

आगु बाबूजी भाग्येश अतन दवा नहा था, कहने लगे, “कमल, ओर कुछ भी अगर वे न कर जाते, तो भी, सिफ इतनपे ही कारण दशवासिथा के हृदयम वे प्रात स्मरणीय बने रहते ।”

“क्या सिफ इतनी ही बातके लिए वे प्रात स्मरणीय है ?”

“हाँ, सिफ इतनी ही बातके लिए । बाहरसे हटाकर सिफ घरकी तरफ आँग उठाकर दग्नेको कहा था,—इसीके लिए ।”

कमलने पृछा, “बाहर अगर प्रमाण हो रहा हो और पूर्व-आकाशम अगर सूर्योदय हो रहा हो, ता भी, पीठे मुड़कर पश्चिमन स्वदेशकी ओर देखना पड़ेगा ? और वही होगा स्वदेश प्रेम ?”

मगर यह प्रश्न शायद आगु बाबूजे कानोंतक नहा पहुँचा, वे अपनी ही झाकम कहते गये, “हमारे देशका धर्म, देशके पुराण इतिहास, दशका आचार व्यवहार, रीति नीति निदेशके दबावस उत्प होने जा रही थी, उसके प्रति हमारे अन्दर जो आज फिरसे श्रद्धा और विश्वास वापम आया है, सो सिफ उर्हीकी भविष्य दृष्टिका फल है । जातिके हिसाबसे हम ध्वसनी ओर बन्दे चले जा रहे थे, उससे बच जाना क्या मामूली बचना है कमल ? यह ज्ञान हम किसने दिया कि उसे फिरसे नय प्राप्त नियोे उगैर किसी भी तरह हम बच नहीं सकते,—बताओ तो ?”

अजित उत्तेजनाक मारे अरम्मात् उठ गडा हुआ, बोला, “मैंने कभी इसनी कल्पना भी नहीं की थी कि इन सब बातोंका विचार भी आपके मनम कभी स्थान पा सकता है । मुझे उडा भारी दुःख है कि अबतक मने आपको पहचाना नहा, आपक चाणोंम बैठकर कभी उपदेश नहीं लिया ।” वह और भी बहुत कुछ कहने जा रहा था, पर बीचमें विघ्न आ पडा । नौकरने आकर खबर

दी कि हरेन्द्र बाबू खगैरह भट करने जा रहे हैं और दूसरे ही क्षण हरे द्र सताश और राजेन्द्रने साथ आ पहुँचा। वहा, "माग्म हुआ कि पिबनाथ प्राण सा रहे हैं। जाते वक्त डॉक्टरक यहाँ भी होता आया हूँ। उनका रहना हे कि सीरीयग (गत्तनाक) नहीं, जल्दी आराम हो जायगा।" कहते हुए उसन कमलको नमस्कार किया और अपने साभियाके साथ एक तरफ बैठ गया।

आगु प्राबूने सिर हिलाया, पर उनकी दृष्टि थी अजितका तरफ, और उसीको लक्ष्य करने के गोले, "मेरा सारा यौवन विलासम गीता है, इस रातको तुम लोग भूल क्यों जाते हो? ऐसी बहुत सी चीजें ह जो नजदीकसे नहा लिंगाई देता, दूर जाकर गूढ होनेसे ही दिखाई देती ह। मैंने जो स्पष्ट देखा हे यह ही निश्चित मानसका परिवर्तन। इहा हरेन्द्रने आश्रमका हा देखो न, इनका जो अगर नगरम शांता प्रणाखाएँ विस्तार करनेका आयोजन है, उसके मूलम क्या वहा मानना नहीं है? विश्वास न हो, देहासे पृष्ठ देखो। वहा ब्रह्मचर्य, वहा समयकी साक्षा, वही पुरानी राति-नातिका पुन प्रवर्तन—यह सब हमारे उस अतीत कालकी पुन-प्रतिष्ठाका उद्यम नहीं तो और क्या है? उसीको अगर हम भूल जायँ, उसीने प्रति अगर हम अपनी आस्था गये बैठें, तो फिर आशा करनेके लिए हमारे पास राकी ही क्या रह जाता है? सपोमनका आदर्श सिफ हमारे हा यहाँ था। मसार छान डालनेपर भी क्या उमका जोड़ कहीं मिल सकता है अन्तित? किसी जमानेम जिन लोगोंने हमारे समाजका निर्माण किया था, हमारे ये शास्त्रकार यवसायी नहीं थे, सयासी थे, उनका दानको बिना किसी सहायक नतमस्तक होकर ग्रहण करनेमें ही हमारी चरम साधकता है,—यही हमारे कल्याणका भाग है कमल, इसका सिवा दुसरा कोई भाग नहीं।"

अजित राध हा रहा। सतीश और हरद्वज जाश्वरना टिकाना न रहा,—यह साहसी चाल चलनका जादमी जाज कह क्या रहा है। आर राजद्र तो समझ ही न पाया कि अजस्मात् क्यों और नैम यह प्रसंग उठ गया। सभीके मुँहपर एक निष्कपट श्रद्धाका भाव प्रस्तुति हो उठा।

स्वय वक्तानो भी कम आश्रय नहा हुआ। सिफ कहनेका शक्तिके लिए ही नहीं, रात्कि इच्छालिपि कि इस तरह रिशासे कहनका उर्दे पहले क्या मोना ही नहीं मिला,—उनका मनम एक तरहका अनिश्चरनीय वृत्तिका लहर दीडन लगी। क्षण भरक लिए ये क्षण भर पढ़नेका दुत्त भूल गये। बोले, "ममही कमल,

क्यों मैं तुमसे ऐसा अनुरोध कर रहा था ?”

कमलने सिर हिलाकर कहा, “नहीं।”

“नहा ? नहीं क्यों ?”

कमलने कहा, “सिर्फ यही एक समाचार आप परमानन्दके साथ सुना रहे थे कि विदेशी शिक्षाके प्रभावको दूर कर फिर पुरानी व्यवस्थाकी जार लौटनेका चेष्टा मिश्रितामें प्रचलित होती जा रही है। आपकी धारणा है कि इससे देशका कल्याण होगा, परन्तु कारण आपने कुछ भी नहीं बतलाया। बहुत-सी प्राचीन नीतियाँ एतद होती जा रही थीं, जो सभ्यता है कि यह सच हो कि उनका पुनरुद्धारका उपाग हो रहा है, मगर भला इसका प्रमाण क्या है आगु बाबू कि उससे हमारा भला ही होगा ?—कहाँ,—यह तो आपने बताया हा नहीं ?”

“बताया कैसे नहा ?”

“नहा, नहीं बताया। जो कुछ आप कह रहे थे, यह तो सभा सुधार विरोधी और प्राचीनताके अधस्तुतिभार कहा करते हैं। इसका कोई भी प्रमाण नहा कि सभी रूप वस्तुओंका पुनरुद्धार अच्छा ही होगा। मोहक तन्त्रमें बुरी चीजका पुनरुद्धार भी सत्कारमें होते देता जाता है।”

आगु बाबूने इसका जवाब ढूँढ़ न मिला, परन्तु अचिंतने कहा, “बुरी चीजका उद्धार करनेमें कोई शक्तिका क्षय नहीं करता।”

कमलने कहा, “बहुत लोग करते हैं। बुराई लिये नहीं, बल्कि पुरानी धम्नु मानकों स्वतः सिद्ध अच्छी चीज समझकर करते हैं। एक बात आपसे पहले ही कहना चाहती थी, पर आपने ध्यान नहा दिया। चाहे लौकिक आचार अनुष्ठान हो और चाहे पारलौकिक धर्म काम, अपने देशकी चीज समझकर उसे गले लगाये रहनेमें स्वदेश भक्तिकी बाहवाही तो मिल सकती है, पर स्वदेशक कल्याणके देवता उससे खुश नहीं किये जा सकते। यदि वे इससे नाराज ही होते हैं।”

आगु बाबू दग रह गये, बोले, “तुम कह क्या रही हो कमल ? अपने देशका धर्म, अपने देशका आचार अनुष्ठान त्यागकर यदि हम बाहरमें भोख माँगने लगे तो फिर अपना कहनेको हमारे पास बाकी ही क्या रह जायगा ? फिर हम सत्कारमें मनुष्यत्वका दावा करनेके लिए अपना क्या परिचय दगे ?”

कमलने कहा, “दावा खुद हमारे घर आ जायगा, परिचयकी जरूरत न

शेष प्रश्न

होगी। फिर विश्व-जगत् हम बिना-परिचयने ही जान जायगा।”

आगु बाबू व्याकुल होकर बोले, “तुम्हें तो मैं सुमंजस ही न समझ सकता हूँ।”

“समझनेकी बात भी नहीं आगु बाबू, ऐसा ही होता है।” इस चलनगीत समारंभमें प्रगतिशील मानव चिन्तको कदम कदमपर जा सत्य नित्य नये-नये रूपमें दिखाने देता है, उसे समी नहीं पहचान सकते। सोचते हैं, यह आपत्त कहाँसे आ गई? आपको उम्र दिनकी ताजमहलकी टायाव नीचे गिड़ी गिपानीरी याद है? आज कमलने भीतर उसे पहचानना भी नहीं जा सकता। मन ही मन कहते, निम्ने उस दिन देगा था वह गन् कहाँ? किन्तु यही मनुष्यका सच्चा परिचय है,—मैं तो यही चाहती हूँ कि हमेशा इसी भावसे लोगोंमें परिचित हो सकूँ।”

जरा ठहरकर फिर बोली, “यह तब त्रितयकी आँधीमें हमारी असल रात तो उड़ ही गई—मूल विषयसे हम बहुत दूर जा पड़े हैं। लेकिन मैं बहुत धनी हुई हूँ, अब जाती हूँ।”

आगु बाबूसे कुछ जवाब देने न बना, विह्वलकी भाँति देखते रह गये। इस स्त्रीको कहीं उन्होंने असत्य समझा और वहाँ निकल ही नहीं समझ पाया। उन्हें ऐसा लगने लगा कि अभी-अभी उसने जिस आँधीका जिक्र किया था, उसकी प्रवण्ड झलामें तिनकेकी तरह उनका सब तरहका आवेदन निवेदन उड़कर कहींका कहीं चला गया।

कमल उठ खड़ी हुई। अजितको इशारेसे बुलाकर बोली, “साथ लाये थे, अब चलिण न पहुँचा दीजिए।”

मगर आज वह मार सकाचने सिर भी न उठा सका। कमल मन ही मन जरा हँसकर जागे बनी और सहसा राजेद्रके कंधेपर हाथ रखकर बोली, “राजेद्र बाबू, तुम चलो न भाई, मुझ पहुँचा आओ।”

इस आवन्मिन भाइने सम्बोधनसे रातेद्रने विमित होकर एक बार उसकी तरफ देगा और उसने राद कहा, “चलिण।”

दरवाजेने पास जाकर कमल सहसा खड़ी हो गई, बोली, “आगु बाबू, अपना प्रस्ताव मैंने वापस नहा लिया है। उसी गतपर इच्छा हो तो भेज दीनिगा, मैं यथासाध्य कोशिश कर देऊँगी। बच जायँ तो अच्छा ही है, न बच तो उनका भाग्य।” इतना कहकर वह चली गई। उसके सन स्तंभ होकर बैठे रहे। अन्वय आगु बाबूकी आँगोंके आगे प्रमातका प्रकाश ही बिबण

और मिस्वाद हो उठा ।

आधे रास्तेमें राजेद्रोने मिदा ले ली और कहा, “म घण्टे भरम अपना एक काम निम्नानर वापस आता हूँ ।” कमलने जन्यमनस्कताक कारण हा शायद कोद आपत्ति नहीं की, या हो सजता हे नि और काद वनह हा । जन्नी जला घर पहुँचकर उसने दरजा नि सीनीगाले दरगाभेम ताला बन्द है, घर खोला नहीं गया है । रास्तेने उस तरफ मोदीकी दुकानमें तलाग करनेपर माग्म हुआ नि नौकराना रामार पड गद है, काम करने नहा आद और उसकी जाग नातिन सबेरे आकर घरकी चागी रख गद है ।

घर खोलकर कमल घरके काम धधेमे लग गद । एक तरहसे कलमे ही वर नगैर-खाये थी, उसने तय किया था नि झटपट किसी तरह कुछ बना-न्वाकर आराम करेगी, आराम करनेकी उसे सग्ल जरूरत भी थी, पर घरका काम इतना पडा था नि वह सतम ही नहा होता था । चार तरफ इतना नूडा-कर कट जमा हो रहा था नि उसे देखकर बह हैरान हो गद ।—इतना विश्रगलाम उसके दिन कट रहे थे नि इधर उसना ध्यान ही नहा गया था । आज जिन किसी चीजपर भी उसकी नजर पडी बहा मानो उसका तिरस्कार करने लगी । छतके नीचेसे पुराना चूना झडकर ग्राठपर आ पडा है, उस साफ करना जरूर है, चिडियोंके घासलोंका बचा हुआ ममाला मिजेनेपर पडा है, उसे भी साफ करना है चादर बदलनी है, तमियोने खोल बहुत मैल हो गये हैं, उह भी बदलना है टेबल कुरसी स्थानभ्रष्ट हो रही है, दरगाजपर पट पायदाजपर मिट्टी जमी हुई है, आदनेकी ऐसी हालत है नि साफ करते करते शाम हा जायगा दावातकी स्वाही खूब गद है कलमका पता ही नहीं पडका ब्लॉगिग पेपर लाफता है,—इस तरह जिधर आख उठाकर देगा उधर ही ऐसा गदगी भाखूम हुद कि उसे खुद ही लगा कि इतने दिनोंसे यहाँ कोद आदमी रहता है या और कोद ? नहाना खाना यो ही पडा रहा, जिधरसे उसे और कच दिन रात गया,—कुछ माखूम ही नहा पडा । सब काम निबटाकर जब यह नीचेसे नहा धाकर ऊपर आद तय शाम हो चुकी थी । इतने दिनोंसे वह निश्चित समझ रहा था कि यहाँ उमे नहीं रहना है । रहना सम्भर भी नहीं और उचित भी नहीं । महीनेक महीने निराया कहोंसे दिया जाय ? जाना ता पदगा हो, पर सिफ जानेक दिन तक पहुँचना ही मानो उसने लिण मुक्किल हा रहा था,—रातेने बाद सवरा

और गवारे रात आ आकर उमे बदम बतानेका समय रही दे गे थ ।

घरसे उस काइ ममता रही फिर भी विगलिये उठ दिन भर मेहनत करती रही, जसमात् इसकी क्या जरूरत आ पनी—श्री सराफी एक धुंधल-मा विज्ञाना उमक मनम घूम रही था । काम आटकर यह छज्जण जा पैटता जाइ गूल्य दृष्टि सटकी तरफ खरती हुइ न जाने क्या भूलनेका चागिदा करती, और फिर भीतर आकर कामम लग जाती । इमा तरह जाज उमका काम और दिन दोना खतम हुण । शि ता राज हा खतम जाता है, पर इग तरह नहा । शामन राद रती जलानर उसन खाद चला दी और महन समय बागान लिए एक कितान उठाकर बिस्तरक महारे पैटी-बेटी उमन पत्रे उलाने लगी । लेकिन आज उसकी थकावटका कोइ हद न थी, इसका पता भी नहा चला कि कन कितानने पत्रोंन साथ-साथ उसकी औंगोंने पलन रद हा गये । जय पता लगा तय कमरकी बत्ती बुझ चुकी था और गिटनामने अण्ण प्रकाशन आकर सारे कमरेको आरक्त कर दिया था । दिन चटन लगा, पर महरी नहीं जाइ । इग-लिए बासा तलाश करन उसकी भी खरर मुख लेनकी आवश्यकता मादम हुइ । कपड़े बदलकर बट निकल ही रही थी कि इतनेम जीनपर किसीने चल्नेकी आहट हुइ । उसका कलजा धडक उठा ।

वहासे किसीने पुचार, “र ह क्या ? जा सनता हूँ ?”

“आरण ।”

जो थाये, उनका नाम है हार्ड । दुग्गी सीचकर उसपर बैठ गये और बोले, “कहीं बाहर जा रही थी क्या ?”

“हाँ । जो बुलिया मरे यहाँ काम करती थी, उह बीमार है । उसीको देखने जा रहा थी ।”

“अच्छी खबर है । इफ्टण जाके सिगा और जुठ नहा । मादम हाता ह जागमे भी शायद एपिडिमिक काम (सक्रामक रूप) शुरू हो गया है । रन्थियोंम तो मौत भी शुरू हो गई ह । यदि भयुरा-वृदाउनकी तरह शुरू हुआ तो भागना पड़गा, या मरना पड़गा । बुलिया खता कहाँ है ?”

“मादम नहीं । मुता है कि यहाँ पाग हो कहा रहती है, हूँना पन्गा ।”

हरेदने कहा, “रती बुलिया सामास है, जरा सावधान रहिएगा । इधरकी खरर मिली होगी शायद ?”

कमलने गरदन हिलाकर कहा, “नहीं तो ।”

हरेंद्र उसने मुँहकी तरफ देग्नर क्षण भर चुप रहा, फिर बोला, “डरो मत, डरकी ऐसी कोद रात नहा । कल ही आना चाहता था, पर समय नहा मिला । हमारे अध्यक्ष गानू कालेज नहीं जाये, मुना है कि उनकी भी तनीयत सराब है । आगु गानू निस्तरपर पड़े, सो आप कल देर ही जाद ह,—उधर अगि नाश मश्याफो कल शामसे बुगार है, भाभीफा चेहरा भी देग्न कि सुखा सुगा सा हो रहा है । ये खुद कभी गीमार न पड जायँ ।”

कमल चुप बैठी उसकी तरफ देरती रही । इन सर सररोंपर गानो वह अच्छी तरह ध्यान ही न द सगी ।

हरेंद्र रहता गया, “इसन अलाया शिपनाथ गानू भा पडे हैं । इन्फुएजाका मामला है, कुछ कहा नहा जा सकता । अस्पताल भी नहा जाना चाहते । कल शामको उनर घरपर ही उह रिमून कर दिया गया है । आन एक बार जाकर सरर लेनी है ।”

कमल ने पूछा, “वहाँ है कौन ?”

“एक नोकर है । ऊपरकी कोठरीमें कुछ पजाबी रहते ह, जो टेकेदारीका काम करते ह । मुना है कि आत्मी अच्छे ह ।”

कमल एक उसास लेनर चुप रह गद । थोटी देर बाद बोली, “एक बार रातेद्र गानूको मेरे पास भेज सन्ते ह ?”

“भेज सकता हूँ, पर नह मिलेगा कहाँ ? आज तडनेसे ही निकल पना है । उधर कहाँ मोचियोंर मुहल्लेम जोरकी गीमारी फैल रही है, वह गया है उनकी सेवा करने । आश्रममें अगर राने जाया तो नह दूँगा ।”

“उह घर पहुँचाया किसने ? जाने ?”

“नहा, राजेद्रने । उमीने मुँहसे मुना कि पजारो लोग उनकी देख भाल कर रहे ह । फिर भी, वे कर या न करें, पर राजेद्रको जर कि पता लग गया है ता वह किसी रातभी त्रुटि नहीं होने देगा,—सम्भव है, खुद ही तीमारदारी करने लग जाय । एक रातका पका भरोसा है कि उसे रोग नहीं परुडता । पुत्सि न पनडे तो वह अनेला ही एन सौक सरार है । वह नेवल उहीं लोगसे घरराता है,—नहा तो उस काबू कर सने ऐगा तो दुनियाम नोद दिजाइ नहा दता ।”

“पक्के जानेकी आशका है क्या !”

“आशा तो की जाती है । कमसे कम इससे आश्रमकी तो रक्षा हो जायगी।”

“उहें कह क्यों नहीं दते कि चले जायें ?”

“यही तो मुश्किल है । कहनेसे उसी वक्त चला जायगा और ऐसा जायेगा कि फिर सर दें माग्नेपर भी वापस न आयेगा ।”

“न आवें तो नुकसान ही क्या है ?”

“नुकसान ? उमे तो आप जानती नहा, वगैर जान उस नुकसानका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता । आश्रम न रहे तो सहा जा सकता है, लेकिन मुझसे उसका नुकसान न सहा जायगा ।” इतना कहकर हरेद्र मिनट भर चुप रहा, फिर सहसा प्रसंग बदलकर बाल उठा, “एक बड़े मनेकी बात हो गई है । बिनाकी मजाल नहीं कि उसकी कल्पना भी कर सके । कल भाइ साहबने यहाँसे लौटकर रातरो पर आया तो देगता क्या हूँ कि अजित बानू पधारे ई । मैं तो डर गया कि आरिखर मामला क्या है ? बीमारी बट गई क्या ? मातूम हुआ कि नहीं एखो कोइ बात नहीं, बकस बिस्तर वगैरह सब साथ ले आये हैं । आश्रममें रहनेके लिए । इस बीचम सतीगुम उतकी बात पक्की हो गई है कि आश्रमक नियमानुसार आश्रमने कामम ही अपना जीवन वितायगे । यह उनकी प्रतिज्ञा है, इसमें कोइ भी व्यतिरिक्त नहीं हो सकता । ऐसे बड़ आदमी मिलें ता हमारे लिए अच्छा ही है, पर शका होती है कि भीतर कोइ गन्पड न हो । सनेरे आगु बाबुके पास गया, मुनकर उन्होंने कडा कि ‘सकल्य तो बहुत ही उत्तम है, पर भारतमें आश्रमोंकी कोइ कमी नहीं, बर आगरा छाडके और कहीं जाकर यह कृनि अवलम्बन करता तो मैं कुछ दिन और यहाँ टिका रहता । देगता हूँ, अर मुझे यहाँसे जाना ही पड़ेगा’ ।”

कमलने किमी तरहका आश्चय प्रकट नहा किया, चुप रही ।

हरेद्रने कहा, “उहींके यहाँसे साधा जा रहा हूँ, वापस जाकर अजित बाबूने क्या कहूँगा ?”

कमल समझ गई कि शिवनाथ बाबूकी स्थानान्तरित करनेके विषयमें बहुत बनेर वाद विवाद हो गया है । गायद प्रकटम और स्पष्ट रूपसे एक शब्द भी न कहा गया होगा, सब कुछ चुपचाप ही किया गया होगा, फिर भी इसमें सन्देह नहा कि कच्चातामें यह सब तरहक बलहको लौप गया होगा । परन्तु एक बात-

का भी उसने उत्तर नहीं दिया, जैसीनी तैसी चुप रही ।

हरेद्र कहने लगा, “भाद्रम होता है, आज रात्रिने सब कुछ मुन लिया है । शिवनाथका आपने प्रति जा आचरण हुआ है उसमे वं ममाहत हुए ह । लगभग जबरदस्ती ही उन्हें घरसे निदा किया है । मनोरमाकी गायद ऐसी दृष्टा नहा थी,—शिवनाथ उमने संगीतके गुरु ह,—पास रखर दलाज करानका ही उसना विचार था, पर वैसा हा नहा सका । अजित रात्रिने शायद इस पभना अवलमन करके ही झगडा कर डाला ह ।”

कमल जरा हँस दी, बोली, “आश्चय नहा । पर आपने यह सब मुना किससे ? रात्रेद्रने कहा था ?”

“रात्रेद्र ? भला रात्रेद्र कहेगा । वह ऐसा आदमा ही नहीं । जानता हागा तो मी न पतायेगा । यह मेरा ही अनुमान है । इसीसे सोच रहा हूँ जागिर समझौता तो होगा ही, फिर अजितको चिन्तानसे क्या लाभ ? चुपचाप रहना हा ठीक है । जितने दिन वह आश्रमम रहगा, हमारी तरफसे खातिर तपज्जहम तुद्रि न होगी ।”

कमलने कहा, “यही ठीक है ।”

हरेद्रने कहा, “अच्छा, तो अब चला । भाद्र साहवके लिए चिन्ता है, बहुत घाडमें घबरा जाते ह । समय मिला तो कल एक बार आऊँगा ।”

“जादएगा ।” कहकर कमलने उठर नमस्कार किया और कहा, “रात्रेद्रको भेजना न भूलिएगा । कहिएगा, में बडी मुसीबतमें पटकर बुला रही हूँ ।”

“मुसीबतम पडकर बुला रही ह ?” हरेद्र आश्चयने साथ बोला, “भेट होत ही उसी वक्त भेज दूँगा,—लेकिन यह मुसीबत क्या मुझसे नहीं कहा जा सकती ? मुझे भा आप अपना अट्टनिम बंधु समाझिएगा ।”

“सो समझती हूँ । लेकिन उहाका भेज दीजिएगा ।”

“भेज दूँगा, जरूर भेज दूँगा ।” कहकर हरेद्र आगे रात न पटाकर चला गया ।

तासरे पहर रात्रेद्र जा पहुँचा ।

“रात्रेद्र, मेरा एक काम करना होगा ।”

“कर दूँगा । पर कलतक तो मेरे नामके साथ ‘रात्रे’ था, आज वह भा

उठा दिया गया ?”

“अच्छा ही तो हुआ, हलचल हो गये। मनूर न हो कहो, जोड़ दूँ !”

“नहीं, कोई जबरत नहीं। मगर आपको र्म क्या कहकर पुकारा करूँ ?”

“सभी ‘कमल’ कहके पुकारते हैं और इससे मरे सम्मानकी हानि नहीं होती। नामसे आगे-पाठे बोझ लादकर अपनेको भारी बनानेमें मुझे लजा आती है। ‘आप’ रहनेकी भी जबरत नहा। मुझे सहज नामसे ही पुकार कर।”

इसने स्पष्ट जवाबका रचाते हुए राजेद्रने कहा, “मुझे क्या करना होगा ?”

“मेरा रंधु होना होगा। लोग कहते हैं, तुम दान्तिकारी हो। यह अगर सच हो तो मरे साथ तुम्हारी मित्रता अभय रहेगी।”

“यह जशय मित्रता मेरे किम् काम आयेगी ?”

कमल विस्मित हुई। यह मशय और उपेक्षाकी रनि उसने कानोंमें रतकी, बाला, “ऐसी बात नहीं कहना चाहिए। मित्रता जैसी चीज सत्कारम दुल्भ है, और मेरी मित्रता उससे भी ज्यादा दुल्भ है। जिसे पहचानते नहा, उसपर अधडा करने अपनेको छाटा मत रनाओ।”

मगर इस शिफायतने उस युवकको कुण्ठित नहीं किया, उसने मुसकराते चहरसे स्वाभाविक स्वरमें ही कहा, “अभद्राके कारण रहा,—मित्रताकी आवश्यकता नहा समझनेक कारण ही कहा था और अगर आप समझें कि यह चीज मरे काम आ सकती है, तो मे अस्वीकार भा नहीं करूँगा। लेकिन सोच यही रहा हूँ कि क्या काम आयेगी।”

कमलका चेहरा सुख हो उठा। जैसे किसी चालुक मारकर उसे अपमानित किया हो। वह उच्च शिथिता, अत्यन्त सुन्दरी और प्रखर बुद्धिरालिनी है। उसकी धारणा थी कि वह पुरुषर लिए कामनाका धन है, उसका निरूपट विश्वास था कि उसका हत तेज अपराजेय है। सत्कारम नारियोंने उससे प्रणा की है, पुरुषाने आत्तकी आगसे भन्म करना चाहा है, और अरशाका दौंग भी न किया हो सो बात नहीं, मगर यह तो कुठ और ही चीज है। आर इस युवकन सामने अपनी तुच्छता महसुस करन मानो वह जमीनम गड-गड गड। शिथनाधने उसे धोंगा दिया है, बचित किया है, मगर इस तरह दीनताका चोर उसने शरीरपर नच लपेग।

कमलने मनमें एक सदेह प्ररु हो उठा, उसने पृष्ठ, “मेरे सम्बधर्म

ही है। होते तो देशकी समस्या बहुत कुछ सहल हो जाती।”

जरा ठहरकर फिर बोला, “मगर मैं इस बजहसे नहीं जा रहा हूँ। आभम को भी दोष नहीं दे सकता। और चाहे जिसने मुँहसे निकल जाय, पर मेरे लिए चले जानेकी बात हरेन्द्र भइयाचे मुँहसे नहीं निकल सकती।”

“तो क्यों जा रहे हो ?”

“जा रहा हूँ अपने ही लिए। वह है जम्हरे देशका काम, पर मेरा उनसे साथ मत नहा मिलता, और न कामकी धारा ही मेल खाती है। मेल है सिर्फ प्रेमकी दृष्टिसे। हरेन्द्र भइयाको भी सहोदरसे प्रिय हूँ, उससे भी ज्यादा अपना हूँ। किसी दिन इसका व्यक्तिम भी नहा होनेका।”

कमलकी दुःखिता दूर हो गई। बोली, “इससे जम्हर और क्या हो सकता है राजेन्द्र ? मन जहाँ मिल गया, वहाँ मतका मेल न हो, न सही, कामकी धारा न मिले न सही, इससे क्या आता जाता है ? मन कोद एक ही तरहसे साँचगे, एक ही तरफका काम करने आर तभी एक साथ रहगे,—यह क्यों ? और हम अगर दूसरेके मतपर श्रद्धा न कर सकें, तो फिर शि का ही क्या हुद ? मत और काम दोना ही बाहरकी चीज हैं राजेन्द्र, एक मन ही सत्य है। आर, इन गहरकी चीजोंको ही बटा मानकर अगर तुम दूर चले जाओ, तो, तुम जो कह रहे थे कि तुम्हारे प्रेमम कोद व्यक्तिम नहीं होनेका, सो इस तरह तो उसे जस्वीकार करना होगा। यह जो फिताममें लिखा है कि ‘ऊयाके लिए काया छोटी,’ सो यह भी ठीक वैसी ही बात होगी।”

राजेन्द्र कुछ गेला नहीं, सिर्फ हँस लिया।

“हँसे क्या ?”

“हँसा इसलिए कि तब हँसा नहीं था। आपने अपने खुदके विगाहने मामलेम मनने मेलको ही एकमात्र सत्य स्थिर करने गह्य अनुष्ठानको बेमेल ‘कुठ नहा’ कहन उडा दिया था। वह सत्य नहा था, इसीलिए आज आप दोनाका सभ कुछ असत्य हो गया।”

“इसक मानी ?”

राजेन्द्रने कहा, “मनन मेलको में तुच्छ नहीं समझता, मगर उसीको अद्वितीय रहकर उच्च स्तरसे घोषित करनेकी भी आजकल एक ऊँचे ढगकी वैगन हो गई है। इससे उदारता और महत्ता दोनों ही प्रकट होती है, परन्तु

सत्य नही प्रकट होता। यह कहना गलत है कि सभारमें सिर्फ एक मन ही है और उसका बाहर जो कुछ है, सब छाया है।”

जगत्कर यह फिर कहने लगा, “आप अभी अभी विभिन्न मतवालोंके प्रति भ्रष्टा रूप करनेका हाँ पटो भारी गिना उठा रही थी, मगर आप जानती हैं कि सब तरहके भ्रष्टा कान गन सकता है? निम्न अपने मतका कोड गन नहीं, उही गन सकता है। गिनाके द्वारा विभिन्न मतकी चुपचाप उभे ग की जा सकती है, पर उसका भ्रष्टा नही का जा सकती।”

कमलकी अत्यन्त विस्मय हुआ, यह अवाक्य रूप गद। गनेन्द्र कहने लगा,— “हमारा ऐसा नाति नही है, गुन भ्रष्टाके हम सभारका सभनाश नही करते— विभिन्न मतपर भी नही,—उस भ्रष्टाको ताड काटकर चउनाचूर कर डालते हैं। यथा हम लगना काम है।”

कमलने कहा, ‘इसको तुम लोग ‘काम’ कहते हो?’

गनेन्द्रने कहा, “हाँ, कहते हैं। मतका कमल अगर हमारे कामका बाधा पहुँचाता रहे तो मनका मेल्के हम क्या करना है? हम चाहते हैं मतकी एकता, काम का एकता,—हमारे लिए भावाक विलासना कोड भी मूल्य नही गिना—”

कमल आश्चर्य चकित होकर बोला, “मेरा यन् नाम भी तुम्हें माडूम ही गया है?”

“हाँ। कमल नाम आदमीके व्यवहारका मूल ही उठा मूल है, मनका नहीं। मन हाँ ता बना रहे, अन्त करणका विचार अन्तयात्मी करेंगे, हमारा काम यावहारिक एकताका गिना नहीं चल सकता। यही हमारी उनीगी है,—इसके हम जान करले हैं। बाहरका अगर म्बरम मेल न हो तो केवल दो जनोंका मात्र भावने गनीउकी सृष्टि नही होती, यह का सिर्फ मालाहल ही बदलायेगा। राजका जो मेनाएँ मुड करती हैं, उनका बाहरका एकता ही राजकी शक्ति है। मनका उमे कोड मतलब नहीं। नियमका शासन सवम है—और यही हम लोगोंकी गति है। इसे लोग जाननके मात्रे गान लिए सुगन गुनाइ जा जाती है, गान कुछ नहीं। यह उन्मुगलका हाँ गमान्तर है।—नोगगले, गनी-येका,—गिनाकी, यही है उनका घर।”

मामा एक पुसना दृग-पुग म्बरान है। गनीं गुपनके उतरकर नानेका एक कोटरीम पहुँच। आदर गुनकर गिनागने जौव मोडके दगा, पर

दियेने धुँधले उजालेमे शायद पहचान न सना । धण भर बाद ही उसने ऑन्ध भींच लों और तद्राच्छन्न हो रहा ।

१७

चारा तरफ दग भाल्फर कमल सत हो गद । घरकी शकल क्या हो रहा है । महसा किसीने विश्वास नहा हो सकता नि यहाँ कोद आदमी भी रहता है । किसीके आनेकी आहट सुनाद दी और एन सतह-अठारह सालका लटना आ खडा हुआ । राजेद्रने उसका परिचय दते हुए कहा, “यह शिवनाथ राबूना नौकर है । पथ्य मनानेसे लेकर दना रिलानेतन सब इसीकी ड्यूमीं है । सूयास्ते ही शायद सोना गुरू किया था इसने, अभी उठन जा रहा है । रोगा के सम्बन्धम अगर कुछ उपदेश दना हा तो इसीको दाजिए । मादम होता है कि समझ तो जायगा, निलकुल बेनकूप नहा है । नाम कल पृठा तो था पर याद नही रहा । क्या नाम है रे ?”

“फगुआ ।”

“आज दना दा था ?”

लडकेने माय हाथनी दो उँगलियों दिग्गते हुए कहा, “दो खुराक दी ह ।”

“और कुछ दिया है ।”

“हाँ,—दूध भी पिला दिया है ।”

“बहुत अच्छा किया । ऊपरक पजाबा राबुओंममे कोद आया था ?”

लडकेने याद करने कहा, “शायद टापहरका एक घानू आये व ।”

“शायद ? तन तुम क्या कर रहे थे, सो रहे थे ?”

कमलने कहा, “फगुआ, यहाँ झाड़ू आइ कुछ है या नहा ?”

फगुआ सिर हिलाने झाड़ू लेने चला गया । राजेद्र बोला, “झाड़ूका क्या करगी ? उसे पीटगी क्या ?”

कमलने गम्भीर होकर कहा, “यह क्या मजाकदा वक्त है ? माया ममता क्या तुम्हारे निलकुल है ही नहा ?”

“पहले थी । फ्लड आर पेमिन रिलीफम उह झाड पोंठकर अलग फेंक आया ह ।”

फगुआ झाड़ू लेकर हाजिर हुआ । राजेद्रने कहा, “में भूगक मारे मरा

जा रहा हूँ, कहा जाकर कुछ ग्रा जाऊँ। तब तब झाड़ू और इस लट्टकिया जो उपयोग कर सकें, आप कीजिए, बापस आकर आपको मैं घर पहुँचा दूँगा। इतिहास नहा, मैं इन्हें दो घण्टे लौट आता हूँ।” कहकर वह जवानका परवाह किये जगैर ही चला गया।

शहरक किनारेका यह स्थान थोड़ी ही देरमें नि राध और निजन हा गया। जालोग ऊपर रहते हैं उनका कोलाहल और चलने फिरनेका शब्द भा बन्द हा गया। मादूम होता है कि व सब सो गये हैं। शिन्नाथनी गजर तेन कोई नहा आया। बाहर अँधेरी रात्रि आर भी गहरी होने लगी। जमीनपर कम्बल पिठा कर पगुआ ऊँघने लगा। गहर्का दरगाजा बन्द करीका समय हा रहा था कि सड़कपर साइकिक्का शणी मुनाह दी और दूमर ही धण दरगाजा धकलकर गनेद्र भीतर आ गया। उसने इधर उधर देखा और इस थोड़े-से समयमें सारे कमरम काफी परिगठन देगकर कुछ दर चुपचाप पडा रहा, फिर हाथनी पोन्ली बगलका तिसाहपर रगता हुआ बोला, “आपका जैसा साचा था तूमरी चियोंकी तरफ, पैसो आप नहीं हैं। आपका भरोसा किया जा सकता है।”

कमलन कुछ जगान नहा दिया, चुपकमे उसका मुँहकी आर देखा। राजेद्रने कहा, “इस गीचम आपने ता विस्तरतक बदल डाला है। और सब कुछ ता आरने दूँक-भोजकर निकाल लिया, पर इह उगारकर उसपर मुलाया कैसे।”

कमलने आदित्सेने कहा, “तरीबि मादूम हो, ता यह काम मुकिल नहीं।”

“मगर मादूम कैसे हो? मादूम हांनकी ता काह बात नहीं था।”

कमलने कहा, “मादूम करता क्या भिह उगहा लागान हाथकी रात है? व रगनम चाय बगारम नने द्रुत-से रोगियोंका मेरा की है।”

“अच्छा, यह बात है।” कहकर उसने चारों तरफ नजर दाटाह, फिर कहा, “आते वन साथमें कुछ गानेकी लेता जाया हूँ। देन गया था कि सुराहाम पाना है, लाजिए, ग्रा लीजिए, मैं पैठा हूँ।”

कमल उमके चेहरेका तरफ दगनकर जरा हँस ली, बोली, “गानेके गारमें तो मैं कहा नहीं था, अजानक यह बात मुझ कैसे गद।”

राजेद्र बोला, “बात सब है, सहा ता अजानक ही। जरा मेरा पेट भर गया, तब न जाने क्या पैसा लगा कि आपका भा भूग लगी होगी। आत वन दूसागने थोडा-सा लेता आया। तेर न फाजिए, गाने पैठिए।” कहकर वह

खुद ही मुगहा उठा लाया। पास ही कल्ददार गिलास रखा था, साला, “ग्लिण, गहरस इसे मान लज्जें।” कहता हुआ उमे गहर ले गया। वह कल ही जाग गया था कि इस घरम नहों क्या रखा है। लीगा, ता गोजकर खानुनफा दुमडा उठा लाया और बोला, “आपने बहुत उठा धरी की है, जरा मानपाप रहना अच्छा है। म पानी दंता हूँ, आप पहले हाथ धो लीजिए।”

कमलफा आने पिताकी याद आ गइ। उनमी भी बाताम इसी तरह रस कम कुठ नहीं होता था, मगर वे हार्दिकतासे भरी रहती थीं। उमने कहा, “हाथ धोनाम मुझ नोइ आपत्ति नहीं, पर ग्या नहा सकूंगी भाइ। तुम्ह तो शायद मालूम है कि म खुद अपन हाथस पनाकर ग्याया करती हूँ, और दगरे, यह सर कीमती अच्छी अच्छी मिगइयाँ भा म नहीं ग्याती। मरे लिए यत्न होनेनी जरूरत नहीं, मैं ता हमेनाकी तरह घर जाकर ही ग्याऊंगी।”

“तो फिर ज्यादा रात न करन जब घरही लौट चलिए, आपनो पहुँचा दें।”

“आप फिर यहा लौटकर आएंगे ?”

“हाँ।”

“कबतक रहिएगा ?”

“कमसे कम कल सबरेतक। ऊपरने पजारो भादयोर हाथ कुछ रुपये दे गया था, उनसे एक बार मुफात्रिला बगैर किये नहा हिलनेका। जरा थक गया हूँ, पर बसनी कुठ परगाह नहा। मुझ नहीं मालूम था कि इतनी लापरवाही होगी, उठिए, फिर तौंगा नहा मिगेगा, पैदल जाना पड़गा। लौटते वक्त मोचिया के मुहत्लेम भी जरा देखने जाना है। दोन मरनेकी रात थी, देखना है, उन लोगोंने क्या किया ?”

कमलको फिर उस बातना खयाल आ गया कि इस आदमीने हृदयम अनुभूति नामकी नोइ पला ही नहीं। लगभग य त्रसा काम करता है। न जाने कौनसी अज्ञात प्रेरण इसे बार बार कायम जोत देती है, और यह काम करता चला जाता है। अपने लिए नहीं, जोर शायद कोइ जाशा लेकर भी नहीं करता। काय इसने रक्तम और सारे शरीरमें जल नायुकी भौंति ही सहज स्वाभाविक हो गया है। और मना यह कि औरोंक आश्चर्यना ठिकाना नही, वे मोचते ह कि ऐसा होता कैसे ह ? कमलने पूछा, “राजेद्र, आप खुद भी तो डॉक्टर हैं ?”

“डॉक्टर ? नहा तो । सिफ जरा डॉकटरी स्कूलम कुठ दिन पडा या ।”

“तो फिर उन लोगका इलाज कौन करता है ?”

“यम ।”

“और आप क्या करते हैं ?”

“मैं उनसे कायमें मदद करता हूँ, उनका गुण-दोष परम भक्त हूँ ।”

कहकर वह कमलके विस्मयाच्छन्न चेहरेकी तरफ भ्रम भर देखता रहा, फिर जरा हँसकर बोला, “यम नहीं, वे हैं यम राज । उल्लिखारी है उसकी प्रतिभाकी जिसने राजा कहकर इतने पहले पहल अभिनन्दित किया था । सचमुच है तो राजा ही । यही दया है वैसा ही विप्रेरु । मैं होठ उल्टर कह सकता हूँ कि किन्व जगत्तम काँद अगर सृष्टिकृता है, तो वे उसकी सश्रेष्ठ सृष्टि हैं ।”

कमलने आहिस्तेसे पूछा, “आप क्या मजाक कर रहे हैं राजेश ?”

“कतई नहा । मुनकर सतीश भइया मुँह गम्भीर बना लेत ह, हर द्र भइया गुस्सा हा जाते ह, मुझे ‘सिनिक’ कहते हैं । और अपने आश्रमम उन सयन मिलकर वृच्छता, सयम, त्याग और अद्भुत कठोरताके तरह-तरहने अस्त्र शस्त्र पैनाकर माने यम राजक विरुद्ध विद्रोह घोषित कर रखा है । ये समयने हैं कि मैं उनका उपहास कर रहा हूँ । मगर सो बात नहा है । गराय दुःखियोंके मुहल्लोम ये जात नहा, अगर जाते तो मग विश्वास है कि वे भी मेरी तरह परम राज भक्त हा जाते और श्रद्धासे छुटकर यम राजका गुण गान करते, अकल्याण समझ कर उच गाली देते न फिरते ।”

कमलने कहा, “यही अगर तुम्हारा वास्तविक मत हो तो तुम्हें ‘सिनिक’ कहनाम बुराई क्या है ?”

“बुराईना विचार पीछे जागा । चली एक बार मेरे साथ मोचिवाके मुहल्लाम ? कतारकी कतार पडी है, सिफ आजकल एफ्टएचाना उनहस ही नहा—हैचा, चेचक, प्लेग—कोई भा रहाना भर मिलना चाहिए । आर्यधि नहा, पण्य नहा, सोनेके लिए विस्तर नहीं, दकनके लिए स्पटा नहा, मुँहम पाना दनके लिए आदमा नहा,—दयन हा यनायक घरग जाना पडता है कि जागिर रगना मिनाय कहाँ है ? पर उमा उक्त मिनाय नजर आ जाता है, चिन्ता दूर हा जाती है और मन ही मन कहन लगता हँ,—काँद डर नहा भाई, कोई डर नहा ।—समस्या चाँद कितनी हा गम्भीर कसा न हो, उसका समाधान

बिनपर जिम्मेदारी है वे जा ही रहे होंगे। जुदे-जुदे देशोंमें जुदी जुदी यमस्थायें हैं, पर हमारा इस देश भूमिभ सारीसारी जिम्मेदारी यमराजने ले रखी है, म्वय राजाधिराज यमराजने। एक हिसाबसे हम बहुत ज्यादा सौभाग्यवान् हैं। — लेकिन न जान कहॉसे यह सब बात निकल जाद। चलिए, बहुत रात होती जा रही है। बहुत-सा रास्ता पैदल तै करना है।”

“मगर तुम्हें तो फिर उगी रातने वापस भा आना है ?”

“सो तो जाना ही है।”

“जुदारा माची मुहल्ला है कितनी दूर ?”

“पास ही है, याने यहाँसे एक मोल्ह भीतर।”

“तो तुम सादकिल्लसे घूम आओ—म बैठी हूँ।”

राज-प्रको जाश्रय हुआ, रोला, “सो कैसे ! आपने ता दा दिनमे राया नहीं है ?”

“किसने दी तुम्हें यह ग्वर ?”

“अभी अभी रायालकी बात हो रही थी न, उसीस। पर ग्वर मने खुद ही प्राप्त भी है। आते वक्त आपका रसोदघर एक गार झाँककर दग्न आया था, आलू भात तैयार रगा था,—मटलोदका चेहरा देग्ननेमे सदेह नहा रहा कि वह गत गत्रिका रनाया हुआ है। अथात्, दो दिनमे आपका मोरा उपनाम चल रहा है। लिहाजा, या तो चलिए या फिर जा लाया हूँ उसे ग्वा लीजिए। आज हाथमे बनानका यदाना अग्नेष है।”

‘अग्नेष ?’ कमल जरा हँसकर बोली, “मगर मेरे लिए तुम्ह इतना सिर द्द कर्षों ?”

“मा नहा जानता। कारणकी अभी खुद ही तलाश कर रहा हूँ, पता लगते ही तापको ग्वर द दूँगा।”

कमल धाटी दर कुठ सोचती रही, उसका गद बोली, “जम्बर दना। गर मागा मत।” फिर कुठ तेर चुप रहकर उसने कहा, “रागेद्र, तुम्हारे आश्रमके भाग साहबनं तुम्ह बहुत कम पहचाना है, इससे वं तुम्ह उपद्रव समझते हैं। पर मैं तुम्ह पहचानती हूँ। लिहाजा, मुझे भी पहचान ग्यना तुम्हारे लिए जरूरी है। लेकिन, उसने लिए समय चाहिए, उद परिचय बाद रिगद करनेसे नहा होगा।” और फिर जरा स्थिर रहकर कहने लगी, “म खुद अपने हाथसे

तुम इतने ओठे हा सिफ इमीलिए, मने सह लिया, नहीं तो मुझम नहा सहा जाता ।”

शिवनाथ चुप रहा, कमल उससे चेहरेकी तरफ प्यत्रक देखती रही और बोली, “तुम जानते हो, मुझे सत्र सहन हुआ, पर तुम्हें धर्म निकाल देना मुझसे नहीं सहा गया । इगामे तुम्हारा मेरा करने जाइ थी,—तुम्हें रिशाने नहीं ।”

शिवनाथने धारे धारे कहा, “तुम्हारी इस दयात्र लिए म वृत्तज हूँ शिवानी ।”

कमलने कहा, “तुम मुझ ‘शिवानी’ कहने मत पुकारो, कमल कहने पुकारा करा ।”

“क्या ?”

“मुननेम मुझे घृणा हाती है, इमलिए ।”

“मगर एक दिन तो तुम इसा नामका सत्रसे ज्यादा पसन्द करती थी ।” कहते हुए शिवनाथने कमलका हाथ अपने हाथम ले लिया । कमल चुप रही । अपने हाथको लेकर खाचातानी करनेमें भी उसे सत्रोच मालूम हुआ ।

“चुप हा रही, जमान क्यों नहा लेती ?”

कमल धृपत्र चुप रही ।

“क्या सोच रही हो त्राआ न शिवानी ?”

“क्या सोच रहा हूँ, जानते हो ? सोच रही हूँ कि इन रातोंकी यात्र दिलनेवाला आत्रमी त्रितना त्रटा पागण्टी होना चाहिए ।”

शिवनाथका आँखोंम आँसू टलक जाये, उगन कहा, “पागण्टा मैं नहा हूँ शिवानी । एक दिन आयगा जब अपनी भूल तुम आप ही समझ जाओगी,— उस दिन तुम्हारे पत्रात्तापत्री सामा न रहेगी । क्या मैंने अलहदा कमरा किरायेपर लिया है—”

“लेकिन अलहदा कमरा त्रिगयपर लेनेका कारण तो तुमसे मने एक त्रा मा नहीं पृटा ? मने तो सिफ इतना ही जानना चाहता था कि यह रात तुम मुझे त्राकर क्या नहा जाये ? तुम्हें एक त्रिगत्र लिए भी मैं पत्रडरे नहीं रगती ।”

शिवनाथका आँखामे आँसू टलक पड़े, उसने कहा, “कहनेकी मुझ त्रिमत नहीं पटी शिवानी ।”

“क्यों ?”

शिवनाथ बुडतेकी आत्मीनने आँखें पाछता हुआ बोला, “एक तो रुपयात्री

गिरानी ? तुम गाथ रक्तर गहा आय ह ?”

“हाँ। तुम भी लाये है और तुम भी कल यहाँ पहुँचा गय ह। घरी ह।”

“नाम क्या है ?”

“गनेन्द्र।”

“तुम दाता क्या अभी एक ही मरानम रह रहे हा ?”

“शापित ता यहा पर रहा हूँ। मगर रह जायँ ता मरा भाग्य।”

“हूँ। उम यहाँ क्या लाइ हा ?”

कमल इमरा फोड़ पत्राव नहीं लिया। शिखनाथन भी फिर फाइ प्रभ नहा किया, ऑप मीन पत्रा रहा। उहुत दरतर सत्र रहनेक बाद गिरनाथन पृठा,
“यह बात तुमने किमक मुहस मुना कि भर साथ तुम्हाग फोड़ सम्बन्ध नहा रहा ? मर कहा है,—एसा लाग कह रहे ह क्या ?”

कमलन इम रातरा फाइ जमान गही दिया, किन्तु अरसी उगने खुद ही प्रन किया, “मुझम तुमने न्याय नहीं किया, मर मने इतर भल ही विश्वास न किया हा, तुम ता करत थे ? पर मुझ छाड्य चले आत वा यह बात तुम मुझम कह क्यों गही आय ? यही मोच रक्या था क्या तुमने कि मैं तुम्ह गौधर गक सकती हूँ या ग पीटर अथ गत्रा कर सकता हूँ ? एसा मर स्वभाव नहा, सा ता तुम अच्छी तरह जानत ही थे, फिर कह्य क्यों नहा आय ?”

शिखनाथ थानी दर गीर रहकर बाला, “कामनी झडटक मारे या राज गारफ ग्यातिर कुठ दिनोंन लिए अलग मरान लकर रहने लगना हा क्या त्यागना हा गया ? मर ता साचता था —”

शिखनाथनी बात मुँहकी मुँहम ही रह गइ। कमल मोचम हा बाल उठी,
“रहन दो, मर नहा जानना चाहता।” पर कहनेक साथ ही यह अपना उक्तना मर आप ही लजित हो गइ। कुठ दर चुप रहकर अपनको शान्त करक अन्तम बोली, “तुम क्या गचमुच ही गीमार थ ?”

“सच गहीं तो क्या शून ?”

“सचमुच ही अगर गमार थे ता गहाँ न जाकर आगु बानून घर निसीए गये ? तुम्हारे एक कामन तो मुझ यथा ही पहुँचाइ है, पर दूसरे कामन मर इतना अपमान किया है कि जिमनी हद नहीं। मर जानती हूँ, यह सुनकर कि मुझ तु र हुआ है तुम हँसोगे, पर यह जानना हा मरे लिए सान्वना है।

हथेलोंपर पाँव पसाकर वह पड़ रहा। सोला, "गैड धूप करने-करते पसीनेमें लपक्य हो गया हूँ,—पग्या-पग्या कुठ है क्या?"

रमल हाथमें पग्या लेकर सुरमी ग्राचन उसक सिराहने बैठ गई आंग बोली, 'म तयार कर रही हूँ, तुम सो जा जा। रागाके लिए दुश्चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं, वे अच्छे ह।'

"साह! तब तो सब तब तुम ही तुम समाचार है।" कहते हुए उसने आगे भींच ली।

१८

इस देशमें सिलिकुल नद बामारी नहीं है, 'डगू' या 'हड्डी तोड़' बुनारक नामसे यहाँवाले इने बहुत कुठ अन्न और उपहासकी दृष्टिसे देखने लगे हैं। लोगोंका यही धारणा था कि दस-तीन दिन तकलाफ देते सिवा उसका और कोई मह्य उद्देश्य नहीं होता।—परन्तु इसका किसीको बल्यनात्मक न थी कि सहसा ऐसी दुर्नियार मगमायक रूपमें उसका प्रकोप हो सकता है। लिटाना, इस तार अकस्मात् इसका अप्रतिम शक्ति की मुनिभित कठोरतासे लोग पढ़ते तो हतबुद्धिने ही गये, राज्य जिसमें जिधर बन सका, भाग गया हुआ। अपने और परायेमें ज्यादा भय भाव न रहा। बीमारकी तामारानी करना तो दूर रहा, मरने तक मुँहमें पानी देनेवाला भा बहुतान भाग्यमें न युवा। शहर और गाँव सब ही एक-सी दशा था। आगरा भाग्यम भा अन्यथा कुठ नहीं हुआ,—उस समृद्ध नन-बहुल प्राचीन नगरीकी शकल कुछ ही दिनोंमें सिलिकुल ही बल गद। स्कूल-बोलें वगैरे हा गये हैं, बाजार और मण्डियासी दूरानोंमें लगे लगे हैं, जमुनाका किनारा सुनसान है,—हिन्दू और मुसलमान शर साहवार गजाकुल नम गैरोंका आगवन सिलाय सटकापर सिलिकुल सताग है। किसी भी तरफ देखनेसे यहा मादम होता है कि मार भय आर आगजाके लिए जालमियोंकी ही रही सन्धि मनानों और पट पीधातककी शकल सूरत सिगड गद है। शहरकी पसा हालतमें चिन्ता, दुःख और गावकी ज्वालान कारण बहुतान साथ गहुँतोंका समशीता हो गया है,—वाणिज्य करके शतकीत द्वारा या मयन्य मानकर नहीं, सन्धि यो हा अपने आप। आज भी जो लोग जिदा हैं, अभीतब इस दुनियासे छुटे नहीं हुए, वे सभ मानो परस्पर एक-दूसरे

तगी, उसपर आये दिन बाहर जाता पढता पथर गरीदने । माल लादने उतार नेत्रे लिफ्ट स्टेशनके पास एक—”

कमल निम्नरम उठकर दूर एक कुरसीपर जा बैठी । “मुझ अपने लिए अब दुःख नहीं हाता । हाता है एक दूसरे आदमीके लिए । पर जान तुम्हारे लिए भी दुःख हा रहा है शिम्नाथ बाबू !”

रहुत दिन बाद फिर आज उसने नाम लेकर पुकारा । गेली, “देखो, कोरी रचनाओ ही मूल धन मानकर दुनियामें रोजगार नहा किया जा सकता । मेरे साथ, हो सकता है कि, फिर कभी तुम्हारा मुलाकात न हो, लेकिन मेरी तुम्हें याद आयेगी । जो होना था सो तां हो चुका, वह अब वापस नहीं आ सकता परन्तु भविष्यमें जीवनको और एक पहलूमें देखनेकी राशिष्ट करोगे तां हो सकता है कि तुम्हारा भला हो, तुम अच्छी तरह रहो ।”

कमलने उठी मुस्किराने अपने आँसू रोज । यह रताकर कि आशु बाबूने क्यों उमे अपने घरमें हटा दिया, उसका असली कारण क्या था,—वह इतनी बटी चोट, इतनी रात हा जानेपर भी उसे न पहुँचा सकी ।

बाहर गादकिल्का घण्टी मुन पटी । शिम्नाथ बिना कुछ बोते चुपचाप करपट उदलकर सो रहा ।

भीतर जाकर रात्रेदने धामे स्वरमें कहा, “अच्छा, मचमुच ही जाग रही हैं जाप । रोगीका क्या हाल है ? दग अब कुछ रिलाइ पिलाइ क्या ?”

कमलन सिर हिलाकर कहा, “नहा, कुछ नहा रिलाया ।”

रात्रेदने उँगलीसे इंगारा करव कहा, “चुप । नाद उचट जायगा,—नाद गराव होना अच्छा नहीं ।”

“नहीं । पर तुम्हारा मोचियाने क्या किया ?”

“व भले आदमा थे रात रग ली । मरे पहुँचनेके पहले ही यमराजने भैंसे आकर दो आत्माओंको ले गये, सरे दोना मुद्दोंको म्युनिशिपालिटीके भनोंके हनाले कर दुग्री पा लेंगा । आर भी आठ दस सॉस भर रहे ह, कल एक बार आपको ले जाकर दिग्ग लाऊंगा । जागा है, जापको पयात ज्ञान प्राप्त होगा । मगर आराम-कुरसीपर मेरा कम्वलका रिठोना नहीं है ? भूल गद ?”

कमलने कम्वल रिठा दिया ।

“ओ-वू—जानम जान आइ ।” कहकर उसने एक लम्बी सॉस ली और

हथेलीपर पाँच पमारकर बह पट रहा। बोला, "गौड धूप करने करने पसीनेमें लथपथ हो गया हूँ,—पग्या पग्या कुठ है क्या?"

कमल हाथमें पग्या लेकर सुरसा गीचके उसमें मिराहन पैट गद् और रोनी, "में तयार कर रही हूँ, तुम सा जाओ। गगाने लिये दुश्चिन्ता करनेका जरूरत नहीं, ये अच्छे हैं।"

"बाह ! तर तो सब तरफ तुम ही शुभ समाचार है।" कहते हुए उमने आम्र मौच ली।

१८

इस युगजा इस देशमें बिलकुल नई बीमारी नहा है, 'डगू' या 'हड्डी तोट' बुझारने नामसे यहाँवाले हमें बहुत कुठ भ्रमशा और उपहासकी दृष्टिसे देखते रहे हैं। लोगोंकी यही धारणा थी कि दो-तीन दिन तकलीफ देने पर सिरा उसका ओर कोई गहरा उद्देश्य नहा हाता।—परन्तु इसकी किसीकी बख्यनातक न थी कि सहसा ऐसी दुनियाएर मरामाराय रूपमें उसका प्रयोग हो सकता है। लिहाजा, इस बार अस्मात् इसकी अपरिमय शक्तकी सुनिश्चित कठोरतासे लोग पढ़ने तो हतबुद्धि-से हो गये, रादम जिसने जिधर मन सका, भाग पडा हुआ। अपने और परायण ज्यादा भेद भाव न रहा। बीमारकी तीमारदारी करना तो दूर रहा, भरने तक मुँहमें पानी देनेवाला भी रहूँतोंक भाग्यम न जुग। शहर और गाँव सबत्र ही एक-सी दशा था। आगरने भाग्यम भी अन्यथा कुठ नहा हुआ,—उस समुद्र तन-बहुल प्राचीन नगरीमें शकल कुठ ही दिनाम बिलकुल ही बदल गद्। स्कूल कॉलेज चल हो गये हैं, बाजार और मण्डिपाकी दूकानोंमें ताल लग गये हैं, जमुनाका किनारा सुनसान है,—हिन्दू और मुसलमान सब साहवाँस उकातुल रमन् प्रैरोंकी आगलने सिराय सटकोंपर बिलकुल सजाग है। किसी भी तरफ देखनेसे यही माइम होता है कि भारे भय और आशकाएर निर जादमियाकी ही नहीं रत्वि मरानों और पेट पैधातककी शकल खरत बिगड गद् है। शहरकी ऐसी हालतमें चिन्ता, दुःख और शरकी ज्वालान कारण रहवाने साथ रहूँतोंका समझौता हो गया है,—कोशिस करक गतचीन द्वारा या मध्यम्य मानकर नहीं, रत्वि यो ही अपने आप। आज भी जो लोग बिन्दा है, अभीतरक इस दुनियासे पुटे नहीं हुए, ये सभी मानो परस्पर एक-दूसरेके

परम आत्मीय हो गये हैं। बहुत दिनासे जिनमें बातचाततन पद थी, सहसा रास्तेमें भट्ट हाते ही उनकी भा आँगाम आँसू छलन जाते हैं।—किसाका भाइ मर गया है तो कि किसीका लडका, किसानकी स्त्री मर गई है तो किसीकी लडकी, नाराजीसे मुँह फेर लेनरी ताकत अर किसीमें नहीं रह गई,—कभी किसीसे बात हुद जोर कभी नह भी नहा हुद, चुपचाप मन ही मन एक-दूसरेका कल्याण कामना करके बिदा ले ली है।

मोचियोंन मुहल्लेम अर ज्यादा आदमा नहा बचे हैं। जितने मर उतन ही भाग गये ह। राकीक लिण राजेद्र जनेला ही काफी है। उनकी गति और मुक्तिका भार स्वयं उसने अपने निम्म ले लिया है। सहकारिणीन तौरपर कमल हाथ पेटाने आइ थी। उसीना उसको भरोसा था कि बचपनमें चायके बगीचेम बीमार बुलियोंका उसने मेरा की थी, पर दो ही तीन दिनम वह समथ गई कि उस पूँजीसे यहाँ काम नहीं चल सता। उ ५ मोचियाका यह पैमी दुदशा थी। भाषामें उमका गणन करन विवरण देना असम्भव है। शापडियोंम पॉन घरत हा सारा गरीर काँप उठता था,—कहा भी बैठनको जगह नहीं। वहाँ आनरु पहल कमल नहा जानती थी कि गदगी कैसा भयकर रूप धारण कर सता है। इन बातकी कल्पनाका भी वह अपने मनम स्थान न दे सती कि इन सबक मध्यम हरदम रहते हुण, अपनेना सावधानीसे उचाण रगकर, रागियोंका सेवा और दर भाल की जा सकता है। बडे दपके साथ वह राजेद्रक साथ यहाँ आइ था। दुस्साहसिकताम वह किसानम कम नहा थी,—समारकी किसी रातमे वह उरती नहा थी,—मोतसे भी नहा, आर उसने झुड भी नहीं कहा था पर यहाँ आकर उसने समझा कि इसकी भी एक सोभा है। कुछ दिनाम हा उरन मारे उसकी दहका खून सूखने लगा। फिर भी, त्रिलकुल ही दिवालिया होकर घर लाट आनेके पहले राजेद्र उम जाश्वासन दते हुए गार गार कहने लगा, “एमी निर्भाक्ता मो अपन जीवनम नहा रेगी। टाक कृपानक मुँहको ही आपन मेंभाल लिया। पर अर जरूरत नहा,—आप घर जाकर कुछ दिन आराम कीजिए। इनके लिण जो कुछ आप किये जा रही ह उसका कृण ये अपने जावन में न चुना सको।”

“और तुम ?”

राजेद्रने कहा, “इन रचे हुआको महायात्रा कराकर म भी भागूंगा।

न तो, क्या आप चाहता है कि इनक साथ मैं भी मर जाऊँ ?”

कमलेश जराब ढूँढ़े न मिला, भण भर उसकी तरफ देखाती रही, फिर चली आद। मगर इसके मानी यह नहा कि यह इन कई दिनोंमें अपने घर मिल चुक आ हा न सर्की हो। खोज बनाकर साथ ल जानने लिए उमे राज एक बार अपने घर आना पड़ता था। पर आज यह जानकर कि उमे फिर उम भवानक स्थानमें वापस न आना पड़ेगा एक ओर चमे उम तमन्गी हुई, वैमे हा दूसरी ओर अचत उद्वेगमे उमका साग जी भर उठा। आते वा वह राजद्रमे खानेके रागम पृष्ठना भूल गयी थी। मगर यह खुटि चाँचे कितनी ही पडी क्यों न हो, जहाँ उसे वह उठ आद है, उमर लगे कुछ नहा थी।

खुल काठेन बन्द होनेर समयमें हरद्वका ब्रह्मचर्याश्रम भी बन्द है। ब्रह्मचार्य गन्धर्वाका मित्री निरापद स्थानमें पहुँचा दिया गया है और देव रेखने लिए सतीश उनक साथ है। अविनाशका बीमारीक कारण हरेद्र खुद नहा जा सका। आज वह कमलेशे पर आया, आर नमस्कार करने बोला, “पौठ-छ रातमे रोज जा रहा हूँ, आपसे भेट ही नहा हाता। क्या था ?”

कमलेशे माचिखोर मुहल्लेका नाम लिया तो वह अत्यन्त विस्मित हुआ, गला, “वहाँ ? वहाँ ता, सुनते हैं, बहुत लाग मर रहे हैं। यह सलाह आपकी की किमो ? पर किसाने भी दी हा, अच्छा काम नहा किया।”

“क्यों ?”

“क्यों क्या ? यहाँ जानेके माना है ल्याभग आत्म हत्या। मैं तो यह सोच रहा था कि पिपनाथ बाबू आगरमे चले गये ह, सा शायद आप भी वहीं चली गद हांगी। पर गद हांगी अन्ध ही, कुछ दिनाके लिए ही, नहीं तो मरान वाली किये योग्य नहीं जाती—अच्छा राजेद्रका पता है कुठ ? वह क्या यहाँ है ना और कहा चला गया ? अचानक ऐसा गाता मारा कि को पता ही नर्न मिला।”

“उन्मे क्या आपका को ग्यास काम है ?”

“नहीं, ग्यास कामके माना जो साधारणत समझ जाते हैं, वैसा तो कोई काम नहा। फिर काम ही समक्षिए। कारण, मैं भी अगर उसका रोज गनर गना रद कर हूँ तो सिवा पुलिसक और कोर उमका आत्मीय जन नहा रह जाता। मुझे विश्वास है, आपको मारूम है कि यह क्यों है।”

कमलने कहा, “मुझे मालूम है। पर आपको बताने में कुछ फायदा नहीं। यह अनुसंधान करना अनुचित कुनूटल है कि जिसे घरसे भगा दिया है अब वह बाहर निकलकर कहाँ गया।”

हरेद्र कुठ देर चुप रहा, फिर बोला, “मगर वह मेरा घर नहीं, जाश्रम है। वहाँ उसे स्थान नहीं दे सजा। मगर इसको शिकायत दूसरे से मुँहसे सुनना भी मुझे गवारा नहीं। अच्छा बात है, मैं जाता हूँ। उसे पहले भी बहुत बार हूँड निकाला है, और इस बार भी हूँड लेंगा,—आप दखने नहा रख सकगा।”

यह बात सुनकर कमल हँस दी, बोली, “नैसा कि आप वह रूँ हँ हरेद्र बाबू, फिर अगर उह रँ टक रँगेंगी तो क्या आप समझते हैं कि उसमें मेरा कुछ दूर हो जायगा ?”

हरेद्र खुद भी हँस दिया, पर उस हँसाने से गिद बहुत-सी सध रह गई उसने कहा, “मेरे सिवा इस प्रश्न का जवाब देनेवाले आगरेमें और भी बहुतसे हैं। वे क्या कहेंगे, मादूम है ? कहेंगे—कमल, आदमी का दुख तो एक तरह का है नहीं, बहुत तरह का है। उनकी प्रकृतियों भी भिन्न हैं और दुख दूर करने के रास्ते भी भिन्न हैं। लिहाजा, उन दुखी लोगोंके साथ अगर कभी मुलाकात हो जाय तो बातचीत करके उहाँमें निणय कर लीजिएगा।” फिर वह जरा टहरकर बोला, “लेकिन असलमें आप भूल रही हैं। मैं उस दलना नहा हूँ। यथ परेशान करने में नहीं आया, क्योंकि, ससारमें जितने लोग आपपर सचमुच श्रद्धा रखते हैं, उहाँमें मैं भी एक हूँ।”

कमलने उसने चेहरेकी तरफ एक नजर डालकर धारेंसे पृछा, “मुझपर आप सचमुच श्रद्धा रखते हैं सो किस नोतिस ? मेरे मत या आचरण, किसीके भा साथ तो आप लोगोंका मेल नहीं।”

हरेद्रने उसा वक्त उत्तर दिया, “नहीं, कोई मेल नहा। मगर फिर भी मैं गहरी श्रद्धा रखता हूँ। क्यों ? यहा आश्रयका बात में अपने आपसे बार-बार पृछा भी करता हूँ।”

“कोई उत्तर नहीं पाते ?”

“नहीं। मगर विश्वास है कि किसी-न किसी दिन पा लेंगा जरूर।” फिर जरा टहरकर बोला, “आपका इतिहास कुछ-कुछ आपसे निजद मुँहमें सुना है, कुछ अजित राधूस मालूम हुआ है,—हाँ, आपकी मालूम होगा शायद,

शेष प्रश्न

वे अब हमारे आश्रम ही रहने लगे हैं।”
 कमलने सिर हिलाकर कहा, “सो तो आप पहले ही बता चुके हैं।”
 हरेंद्र कहने लगा, “आपके जीवन इतिहाससे विचित्र अध्याय ऐसी
 जगत् सरलतासे सामने जा गड़े हुए हैं कि उनमें सिद्ध सरसरी राय जाहिर
 करनेमें डर लगता है। जस्तज किन बातोंको बुरा मानना सीखा है, आपने
 बानने मानो उर्ध्व सिद्ध मामला दायर कर दिया है। इन बातोंका न्याय
 करनेगला कदाँ मिलेगा और उसका नतीजा क्या होगा सो मुझे कुछ भी नहा
 मात्र किन्तु भला बताइए तो सही कि इस तरहमे जो निभयतामे आ सकती
 है और शूषणकी कोट आवश्यकता ही नहा समझती, उनसे प्रति श्रद्धा सिधे
 गौर कैसे रहा जा सकता है।”

कमलने कहा, “निभयता आने सामने गटा हो जाना ही क्या कोट
 बहुत बटा काम है। दो वन वर्गोंकी कहानी क्या आपने नहीं सुनी? वे भा
 नीच सडकमे चलते थे। आपने नहा देखा, केविन मने चाय-यगीचोंक साहयोंको
 देगा है। उनका निभय, नि सबाच बेहयापन दंगकर दुनियामें लज्जाको भी
 लजा आती है। लज्जाको उर्ध्वने मानो गदनिया देकर गहर निराल दिया है।
 उनसे दु साहसकी तो सीमा नहीं,—मगर उनकी यह गत क्या श्राप्तीके लिए
 भदाकी चाज है।”

हरेंद्रको ऐसे उत्तरकी आज्ञा और चाह किसीने रही हो, इस सीसे नहीं
 था। सहसा मानो उसे कोट गत हूँ न मिली, रोला, “रह और गत है।”
 कमलने कहा, “सिने जाना कि और गत है? गहरसे मेरे पिताको भी
 लोग इर्ध्विने एक समझा करते थे। मगर मैं जानती हूँ, यह सच नहीं था।
 लेकिन सच तो सिन जानोपर ही निभर नहा है,—दुनियाके जागे उदका
 प्रमाण क्या है।”

हरेंद्र इस प्रश्नका भा उत्तर न दे सका और चुप रहा।
 कमल कहने लगी, “मेरा इतिहास आप करने मुता है, और वरु समझ
 है कि उम कहाँका परमानन्दय साथ उपभोग भी किया है। पर इस विषयमे
 आप मौन है कि मेरे काम सन अच्छे हुए या डरे, जानन मेरा परिन है या
 बरुणित,—मगर हाँ, वे काम गुनरूपमे न होकर सन लोकोका आँवोंसे सामने,—
 गदकी उर्धवा इर्ध्व नीने हुए है,—मर प्रति आपका श्रदाके आवश्यकता बा”

यही है। हरेद्र नाबू, दुनियाम जादमीनी श्रद्धा मने इतनी ज्यादा नहीं पाद कि लापरवाहीसे बिना कहे मुने उमका अपमान कर सकूँ पर आप मेरे सम्बन्धों जैसे जीर भी बहुत कुछ जानते हैं वैसे ही यह भी जान रगिए कि अभय बाबुजाकी अश्रद्धासे उत्कर यह श्रद्धा ही मुझे पीडा पहुँचाती है। अश्रद्धा मुझसे सही जाती है, पर इस श्रद्धाका भार मेरे लिए दुःसह है।”

हरेद्र पहलैनी तरफ हा श्ण भर मौन रहा। कमलन बाक्यासे,—ग्यासकर उमके कण्ठस्वरकी शान्त-कठोरतामे मन ही मन उसे अपने अपमानका रोष हुआ। थोड़ी देर बाद उसने कहा, “क्या इसपर आपकी विश्वास नहीं होता कि विचार और व्यवहारमे जनैक्य होते हुए भी विचार श्रद्धा की जा सकती है, नमसे कम न कर सकता हँ ?”

कमलने बहुत ही सरलतासे उसी उत्तर जवाब दिया, “ऐसा तो मने नहीं कहा हरेद्र नाबू कि विश्वास नहा हाता। मन तो सिर्फ यद्य कहा कि ऐसा श्रद्धा मुझे पीडा पहुँचाती है।” फिर जरा ठहरकर कहा, “जाचार और विचारने लिहाजसे अभय नाबू भार आपम कोद विशेष भेद नहा। उनम बहुत जगह अनात्म्यक और अत्यधिक कठोरता न होती ता आप सब एक से ही होते। और अश्रद्धाके लिहाजसे भी आप सब एक-से हैं। मेरे सिफ इम साहसने कि म लजा और सकोचने मारे छिपी छिपी नहीं फिरती, आप लोगाना आदर प्राप्त किया है। मगर इसकी कितनी ही कीमत् है हरेद्र नाबू ? रलिन, यह सोचकर कि आप लोग इसीके लिए अतन्त्र मेरा बाहनाही करते जा रहे हैं मेरे मनम एक जसचि ही पैदा होती है।”

हरेद्रने कहा, “इसके लिए साहसही अगर हो, तो क्या यह असंगत है ? साहस क्या दुनियाम कोद चीज नहा ?”

कमलने कहा, “आप लोग हर एक प्रश्नको इतना एजागी करने क्या पृच्छते हैं ? यह तो मने नहीं कहा कि साहस कोद चीज ही नहीं, मने तो नहा था कि यह बीज ससारम तुम्ह है और तुल्लभ होनसे ही यह आत्मम चकाचाध पैदा कर देती है। पर इसमे भी उड़ी एक आर चीज है, और यह चीज सहसा साहसे साहसने अभाव जैसी ही मालूम देती है।”

हरेद्रने सिर हिलात हुए कहा, “समझ नहीं सजा। आपकी बहुत-सी बात बहुधा मुझे पहली ही मालूम देती हैं, ऐसिन आजकी बात तो उन्हें भी लौप

गद हैं। मालूम होता है, आज आप बहुत ही अन्यमनस्क हैं। इसका आपसे कुछ खयाल ही नहीं कि किसका जनाम मिसे दिये चली जा रही है।”

कमलने कहा, “ठीक यही बात है।” फिर क्षण भर स्थिर रहकर बोली, “हो भी सकता है। सचमुचनी श्रद्धा पाना क्या चीज है, सो शायद जब तक मैं खुद ही नहीं जानती। उस दिन सहसा चाफ़ सी गद। हरेद्र बाबू, आप दुग्नी न हों, परन्तु उसने साथ तुलना करनेमें जोर सत्र बात आज परिहास सी ही मात्रम होती हैं।” कहते-कहते उसकी आँगोनी प्रग्गर दृष्टि टापाच्छत्र सी हो आद, और सारे चेहरेपर ऐसी एक स्निग्ध सजलता प्रगहित हा उठी कि हरद्वको अनुभव हुआ कि कमलनी ऐसी मूर्ति उसने पहले कभी देखी ही न थी। अत्र उसे जरा भी सगाय न रहा कि ये बातें कमल किसी अनुद्दिष्ट व्यक्तियों लख्य करन कह रही है। वह सिर्फ निमित्त मात्र है, और इमीलिए गुरुमें आगिस्तन सब कुछ उसे पहेली-सा मात्रम हो रहा है।

कमल कहने लगी, ‘अभी अभी आप मेरी हृदय निर्भाक्ताकी प्रगसा कर रहे थ,—जच्छी बात है, आपन सुना है कि शिनाय मुझे छोडने चले गये हैं।’

हरेद्रना सारे शमन सिर घुन गया, बाला, ‘हाँ।’

कमलन कहा, “हम दोनोंम मन ही मन एक शत थी कि सप्यथ सिच्छेदका दिन अगर कभी आयेगा तो सहज ही दोनों अलग हा जाएँगे। नहीं नहा,—किसी दम्तानेनपर लिया पनी करनेनी जरूरत न होगी,—यों ही।”

हरेद्रने कहा, “नूँ।”

कमलने कहा “सो तो आपने मित्र अत्रय बाबू है। शिनाय गुणी आदमी है, उनन सिद्ध मुक्त अपनी तरफम कोड बडी शिनायत नहा। और शिनायत करनेसे लाभ ही क्या है? हृदयकी अदालतम इक्तरफा पैमला ही होता है, उसका ता कोड अवील-कोड है नहा।”

हरेद्रन कहा, “इसने मानी यह हुए कि प्रेमके गिवा और किसी बधनको आप नहा मानती।”

कमलन कहा, “पहली गत तो यह कि हमारे मामलेम काद और बधा या या गहाँ, और नूरी, यदि हाता भी ता उसे मचूर करानेमें पायन क्या था? दहका जा हिम्मा सत्रसे बकाम हो जाता है उसके लिए गहरना बधन भरी बात हो उन्ता है। उसन द्वारा काम कराना ही मरसे ज्यादा ~~सकता~~

है।” कहकर क्षण भर वह चुप रही और फिर कहने लगी, “आप साचने हागे कि सचमुचका ब्याह नहीं हुआ, इसीसे ऐसी बात मुँहसे निकाल रही हूँ, हुआ होता तो न निकाल सकती। परन्तु यह बात नहीं है। हुआ हाता तो भी निकाल सकती थी, पर हाँ, तब इतनी आसानीसे इस समस्याका हल न कर पाती। नाकाम हिम्मा भा शायद देहसे जुड़ा रह जाता, और अधिकांश स्त्रियां सम्प्रथम जैसा होता है, मुझे भी उसी तरह जामरण उस दुःखका बोझालिये यह जिदगी बितानो पडती। मरच गई हरेद्र तानू, भाग्यसे छुटकारका दरगाजा खुला था, सो मुक्ति पा गई।”

हरदने कहा, “आपको शायद मुक्ति मिल गई। लेकिन इस तरह सभी अगर मुक्तिका द्वार खुला रगना चाह, तो ससारम समाज यथस्थाकी बुनयाद तक उगड जायगी। ऐसा कां नपा जो उम अस्थायकी भयकर मूर्तिसे कपनामें भी अन्तित कर सके। इस सम्भावनाको सोचा भी नहा जा सकता।”

कमलने कहा, “साचा जा सकता है, ओर एक दिन ऐसा आयेगा जब साचा जायगा। इसका कारण यह है कि मनुष्य इतिहासका शोष अध्याय अभी तक पूरा लिया नहा गया। एक दिनके किसी एक अनुष्ठानके जोरसे अगर उमका छुटकारका रास्ता सारे जीवनके लिए राक दिया जाय तो यह श्रेयकी व्यवस्था नहा माना जा सकता। ससारम सभी भूल चूकां सुधारकी यवस्था है, को उम बुरा नहीं बताता, फिर भी, जहाँ भ्रातिमी सम्भारना सबसे यादा है ओर उमका निराकरणकी आवश्यकता भी उतनी ही अधि है, वहा लागोने अगर सारे उपायोंको अपनी दृष्टासे बन् कर रगता हो ता वह अच्छा कंस मान लिया जाय, नताइए भला ?”

इस म्कारी तरह तरहकी टुटगाजाके कारण हरेद्रके मनम गहरा सहानुभूति थी—प्रिद्ध जालोचनाम वह जन्दी शामिल नहा होता ओर जब विरोधी दल तरह-तरहकी गवाहियाँ और प्रमाणासे उस हीन मावित करनेकी कोशिश करता, तब वह प्रतिपाद भी करता। विरोधी लोग कमलक प्रकट आचरण ओर पैगी हा निलज्ज उक्तियाकी नजार दे देकर जन धिक्कारते, तब हरेद्र तन युद्धम परास्त होकर भी जी-जानसे यह समझानेकी काशिश किया करता कि कमलक जीवनम हर्गिज यह सच नहीं हो सकता। कहा न कहा को एक निगू रहस्य है जा एक न एक दिन अन्त्य ही यन होगा। इसपर वे यग्यसे कहते, कृपाकर उसे बन्त

कर दीनिए तो प्रयासी बंगाली समाजम हम लोग उदनामीमे उच जायें । और यो कर्ष अ तय मानू हाता ता ब्रोधमे पागल होकर रहता, जाय लाग सभी समान है । भरे जैसा प्रियासका गात किमीमें भा नहीं है, आप लोग उसे अपना भी नहा सकते, छोड़ भी नया सकते । आजकल क ह्युठ उग्र प्रियायता प्रिचारोंने भूते आप लोगका प्रस्त कर रक्ता है ।

अग्निनाग कहत, "ये प्रिचार कमलने मुँहसे नय हा मुने हा, सो रात भी नहीं है अतय, मैंने तो ये पहलेस हा मुन रक्तर है । आज कलगी दो चार अँग्रेजीकी अनुवादित पुस्तकें पठ लेना ही हमने लिए काफी है । प्रिचारकी इसमें कोई परामात नहा ।"

अभय कटार हाजर पूछता, "तो प्रिगी परामात है ? कमलने रूपकी ? अग्निनाग बानू, हरद्व अग्निवादित गकरा है, उस माप प्रिया जा सकता है, अगर जाशय तो यह कि बुद्धिमें आकर आप लोगोंका और भी चाधिया गद ।" इतना कहकर वह अनगियोंमे जातु बावुरी तरफ देरना और रहता "भगर यह 'प्रेत-नाग' का उजाला है जातु बानू, सड़े कीचडसे रसरी पैनाइश है । गाप दिग्गद दे रहा है कि उस काचडम ही प्रिया दिन उहुताको रीच ले जाकर मारेगा यह, सिप अभयको वह भुलाभा नहीं दे सकता,—वही असल नकल पहचानता है ।"

जातु बानू मुसक्यकर रह जाते, पर अग्निनाग मारे मारे लाल तात हा जाते । हरद्व कहता, "जाय उड़ रहादुर इ अक्षय राधू, आपका अरजयकार हो । हम सब मिलने जर कीचडमें इयदियों लेन ल्या तय आप किनारेपर रादे राद वगले उजाकर नाभिणगा, हममसे कोई भी आपका निन्हा न करगा ।"

अतय जयाय देता, "निन्दामा काम म करता ही नहा हरद्व । गृहस्थ आदमी हूँ, मैं गहन-शाधी बुद्धिम समाजका मानकर चलता हूँ । न तो मैं व्याहकी कोई तर यागग करना चाहता हूँ और न दुर्गिग भरने चाहियत लकोंको जमाकर ब्रह्मगारी गिरी ही दिग्गता विरता हूँ । आधमम चरणोंकी धूलका उजन अर जरा बना लेनेका वाग्गिग उरो भइया, विर साधन भजनकी लिंग चिन्ता न करना हागी । देखते देखते साधका साध आधम प्रिधामिग

• Will o the wisp या लालकाने स्थानोंमें दस दस पैग हातेबाना और उल जोबाना प्रकाश जो एक नैर्गिक चमत्कार है ।

ऋषिका तपोवन हो उठेगा और गायद हमेंगाके लिए तुम्हारी एक कीर्ति रह जायगी ।”

अविनाश गुम्सा भूलकर जोरसे हँस पडते और निमल दबी मुसकानसे आशु बाबूका चेहरा चमक उठता । हरेन्द्रने आश्रमपर किसीकी भी आस्था नहीं थी, उमे सने एक यन्त्रिगत रामान्वयाली भर समझ रमा था ।

जराबम हरेन्द्र मारे गुम्सेन लाल हाकर कहता, “पणुक् साय तो युक्ति-तक चल नहा सगता, उमन लिए दूसरी विधि है । मगर, उसकी चवस्था करते नहीं बनती, इमीलिए आप चाहे त्रिसे साग मारते फिरते ह । छटे-बड, नीच ऊँच, स्त्री पुग्ग त्रिस्तीना भी खयाल नहीं करते ।” और यह कहत हुण अन्य दो चार जनोंको लभ्य करे कहता, “पर आप लोग इमे प्रश्रय क्या कर देत ह ? इतना बडा एक कुत्सित इगित भी मानो कोइ परिहासका विषय हा ।”

अविनाश अप्रतिभ से हाकर कहते, “नही नहा, प्रश्रय क्यों देन लगे, पर तुम जानते ही हो, अश्रयसे बालते वक्त उपयुक्त काल और क्षेत्रका ज्ञान नहीं रहता ।”

हरेन्द्र कहता, “यह काण्ड जान सच पृठा जाय ता, उसकी अपेक्षा आप लोगोको और भा कम है । मनुष्यक मनना चेहरा तो दिखता देता नहा भाद साह्य, नहा ता हँसी मजाक कम ही लोगोके मुँहसे शोभा देता । विवाहने वहाने शिवनाथने कमलको ठग लिया, मगर मेरा हठ विश्वास है कि उस धोखेको भी कमलने सत्यने समान ही मान लिया । गाहस्थिक लेने देनेन नये नुकसानका बरोडेडा करन उसने उसे लोगोकी निगाहम नीचे नहा गिराना चाहा । पर उसने न चाहनेपर भी आप लोग क्या छाडने लगे ? शिवनाथ उसने प्रमकी निधि हो सकता, पर आप लोगोका कौन है ? क्षमाका अपयय आप लोग न सह सके । यही है न आप लोगोकी घृणाका मूल कारण,—असल पूँजी ? सो उसीको भँजा भँजाकर आप लोगोसे जितना चलाया जाय, चलाइण, पर मै रिदा लेता हूँ ।” इतना कहकर हरेन्द्र उस दिन गुम्सा होकर चला गया ।

उसने मनम इस बातका हट विश्वास था कि किसी दिन कमलके मुँहसे यह बात यक्त होगी कि सैय विवाहको वास्तविक विवाह मानकर ही वह धागेसे छली गद थी । अपनी इच्छासे, मन कुठ जानते हुण एक गणिनाकी तरह उसने शिवनाथका आश्रय नहा लिया था । परन्तु आज उसन विश्वासनी यह भीत

मी मित्रों में मित्र मार । हरेद्र नोड अक्षय या जिरिताग नहीं था । रिता रिता भेदभाव नर नारी मरन प्रति उनकी तभीरतम एक तरहरी रिन्नुत जार रहरी ग्यारता थी । इसीलिए दग और दसपे कन्याणने लिए सन तरहरे अनुगनाम उसन वचनसे अपनेको लगा गया था । उसन ब्रह्मण्य आश्रम, उगना उदार दान, सन साथ जगता मर कुठ बाँटेना,—इत मरनी जहम उगना तरी उदार भावना काम कर रहा है आर उगनी ग्य प्रहृतिने ही उस गुग्ग कमलक प्रति भद्राचित कर रता था । परंतु इसकी उसन कन्यना भी उहाँ की था कि आज रह उगने मुँहपर उगन प्रभय उत्तरम एसा भवानक जगप द रटगी । भारतक धम, नीति, आचार,—उगने स्वातन्त्र्य आर विशिष्ट सभ्यताक प्रति हरेद्रन मनम अच्य स्नह और अपरिमेय भक्ति थी, फिर भी, लगना पराधा रता और वैयक्तिक कमजोरियाँके कारण उत्पन्न होनेवाले उगने स्वतंत्रताको भी वह अस्वीकार नहीं करता था । परंतु कमलक द्वारा एमी उम अज्ञाके साथ उसक मूर्भूत सिद्धान्तोंतकके अज्ञानकार किये जानन कारण उसनी चेतनाका सीमा नहीं रही । और इस बातकी याद करक कि कमलके पिता यूरोपीय थ और माता कुल्ग थी,—उसकी नगोंमें यभिचारना गूल डोल रहा है, मारे पृणाने वह मन ही मन स्याह पट गया । दो तीन भिगट चुप रहकर धीमे बोला, “तो अर जाता हूँ—”

कमल हरेद्रने मनके भावनों ठीकसे साह न मनी, सिप एक परिवर्तनपर उसका लभ्य गया । धारसे उसन पृछा, “मगर जिग कामने लिए जाये थ उसका तो कुछ किया ही नहीं ?”

हरेद्रने सिर उठाकर पृछा, “क्या काम ?”

कमलने कहा, “रानद्रकी गनर जानने जाये थ, पर गीर जाने हा चर जा रहे हैं । जल्डा, यहाँ उगन रहनेन कारण क्या आप लोगम बहुत भरी आलोचना हुगा करती है । सच बताइएगा ?”

हरेद्रने कहा, “यदि कभी हाती भी है ता उसमें गराक नहीं हाता । मरे लिए यहा काफी है कि वह पुँसिके हाथम न पड़ । उमे म पहचानता हूँ ।”

“लेकिन मुक्त ?”

“लेकिन आप तो ऐमी बातका खयाल करती नहीं, और न जाके एम विश्वास ही है ।”

कहकर वह बाहर जा ही रहा था कि कमलने उसे वापस बुलाकर कहा, “तोंगमें हम दोनों का साथ जानेसे शायद आश्रम में हितैषी लग नागज पागे। चलिए, पैदल ही चले चल।”

हरेद्र ने पीछे मुड़कर कहा, “इसका मानी !”

“मानी कुछ नहीं,—ऐसा ही। चलिए, चलो।”

१९

लगभग तीसरे पन्ने हरेद्र और कमल दोनों जागु रात्रूने घर पहुँच। ग्राटपर अधल्लेगी अस्थायी पड़े हुए अस्थायी घर मालिक उस दिनका ‘पायोनिअर’ पत्र रहे थे। कद दिनमें उड़ बुलार नहा है, अथवा शिमायतें भी दूर होती जाती हैं, मित्र शारीरिक कमजोरी अभीतर नहा गई। इन दोनों अन्तर पहुँचते ही वे अन्तर पंक्त, उठकर बैठ गथ जोर नितन खुद हुए सो उनका चेहरेसे साफ मायम हो गया। उनका मनम डर था कि कमल शायद अब न आयेगी। इसी हाथ बटाकर उसे ग्रहण करते हुए बोले, “जाओ, मेरे पास आकर बैठो।” और हाथ पकटकर उस अपनी रात्रू पास पड़ी कुरसीपर बिठाते हुए कहा, “बैसी हो, उताओ तो कमल !”

कमलने हँसते चेहरेसे जवाब दिया, “अच्छी ही हूँ।”

आशु रात्रूने कहा, “सा तो भगवान् का आशीवाद है। गहा ता जैसे कुदिन आये ह, उसमें यह साचा भी नहा जा सकता कि बाद अच्छी तरह होगा। इतने दिन थी कहा, उताओ तो ? हरेद्रने रात्रू ही पृठता हूँ जोर रोज ही वह जवाब देता है—घरम ताला पडा है, उनका कौद पता नहा। नीलिमासो शक हो रहा था कि तुम कुछ दिनांक लिए कहा बाहर चली गई ह।”

हरेद्रने उसका जवाब दिया, कहा, “जोर कही नहीं, इसी जागरम माचिया के मुहल्लेम सेवा कायम लगी हूँ था। आज भेट हो गई सा पत्र लया।”

आशु रात्रू भय वाकुल कण्ठसे गले, “माचियाँ मुहल्लेम ! पर अन्तरम खतर है कि यह मुहल्ला विलकुल उजाड हो गया है। इतने दिन उहाँ था ? अन्ली !”

कमलने सिर हिलाते हुए कहा, “नहीं, अन्ली नहा थी, साथम राजेद्र भी थे।”

सुनते हा हीं डने उसने मुँहकी तर्फ देगा, पर कुठ कहा नहा। इसका तात्पर्य यह था कि तुम्हारे बगैर वह हीं मने आगजा लगा लिखा था। इस बातको म नवा जानूँगा तो और कौन जानेगा कि जहाँ मैंना कतना जबरदस्त लम्बे हुए हो गया है, उदात्ते उन अमागाना छाटकर वह एक नदम भी इधर उधर नहा जा सकता।

आशु बाबूने कहा, 'अद्भुत आत्मी है यह लडका। उसे मने दा-सीनम न्यादा दपे नहा दगा, उसका शरम कुठ जानता भी नहा, फिर भी ऐसा लगता है कि वह किसी जर्जीब धातुका बना हुआ है। उसे ले क्या नहीं आ, सब पृष्ठना। अम्बगोंसे तो सब बात मायूम पटती नहा।'

कमलने कहा, "नहीं। लेकिन उसने आनेम अर भा देर है।"

"क्यों!"

"मुहल्ला अभीतर पूरफा पूर पतम नहा हुआ है। उनका प्रण है कि जो लोग अभी उचे हुए ह उन सबको रगाना किये बगैर वे वहाँम पुनी न हेंगे।"

आशु बाबूने उसका मुँहकी तर्फ दगत हुए पृष्ठ, "तो फिर तुम्हें कैम पुत्री मिल गइ ? क्या तुम्हें यहाँ फिर जाना पड़ेगा ? म मना तो नहीं कर सकता, पर यह तो बड़ी चिन्ताकी बात है कमल।"

कमलन सिर हिलात हुए कहा, "चिन्ताका का बात नहीं आशु बाबू, चिन्ता कहाँ नहा है, बताइए। पर मेरी घडीमें जितना चाना भरी थी वह पतम ही चुकी, आर तब म आइ हूँ। फिरसे यहाँ जानेका सामध्य मुझमें नहा है। अब अकले रात्रेद्र यहाँ रह गये ह। किसी किसीका शरीर-व्ययम प्रकृति ऐसा अनिष्ट चाभी भरकर दुनियाम भेज देती है कि न ठा वह अभी पतम ही होती है आर न वह यत्र हा कभा विगडता -। रात्रेद्र उठीमेंमे पुर है। तुम्हें तुम्हम ऐसा लगा कि इस भयानक मुहल्लम व जीत रहने मैंसे ? और कितने दिन जीते रहग ? यहाँसे जब अगला चली आ, ता मिगा भा तरह मेरी चिन्ता न मिटी, पर अब मुझे कोई डर नहीं है। न जात कसे म निश्चित समझ गइ हूँ कि प्रकृति ही खुद अपनी गन्से एंमोंको चित्पाय रखती है। नहीं ता गरीब दुनियाके शोषणम जब सादरका तरह मौत आ पुसती है तब उसकी धम-लीलाका गवाह कौन रहेगा ? जाज ही होने बाबूमे सब किम्सा कह रही थी। गिरनाथ बाबूके घरसे आगिरी रात जब लज्जाने फिर सुसाये चली आइ—"

आगु गानु यह व्रतान्त मुन चुप थ, बाले, “इसम तुम्हारे लिण लानकी क्या बात है कमल ? मुना है, उनकी सेवा करनेक लिण हा तुम गिना क अपने आप उनन घर पहुँच गद थी,—”

कमलना कहा, “लज्जा उस रातकी गहा आगु गानु ! लान ता मुहा तर हुइ जन मन दगना कि उद काँइ बीमारी हा नहा है,—मग गग इ,—किमी गहानेमे जाप लागीनी कृपा पाना ही उनना उलेय था जा सफल न हा पाया । आगिर आपां अपां घरम उह निवाल ही दिया ।—तर मेरा क्या हाल हुआ मो म आपकी समझा नहीं मकती । रात्र साथ था उस भी यह बात जता नहीं सरी,—सिफ किसान तरह रातने अधकारम उस दिन चुपचाप वहाँमे निकल आइ । रास्तेम बार बार गिर एक ही बातना खयाल आता रहा कि इम अत धुद्र कगाल आदमीको गुप्तेम आनर सजा देना न ता धम है और न इसम सम्मान है ।”

आगु बाबून गिस्मगपन्न होकर कहा, “कह क्या रही हो कमल ! गिर नाथकी बीमारी क्या सिफ एक गहाना था ? सच नहा थी ?”

परतु जसत्र देनेन पहले ही दरगानेने पास पेरका आहट मुनकर सग्ने उधर देगा कि नालिमा आ रही है । उसन हाथम दूधना कटोरा है । कमलने हाथ उठाकर नमस्कार गिया । उसने हाथका कटोरा पलगथ सिरहाने तिरपाइपर रखकर प्रतिनमस्कार किया, आर यह समझकर कि इन लोगकी बातचीतम उमने बाधा पहुँचाइ है, खुद मुछ न बोलकर एक तरफ बैठ गइ ।

आगु बाबून कहा, “लकिन यह तो कमजारी है कमल ! यह चीज ता तुम्हारे स्वभावके साथ मेल नहा सती । मैं खबर साचता था कि जा काय अनुचित है, जा मिथ्याचार है, उस नुम माफ नहीं करता ।”

हरेद्वने गहा, “इनक स्वभावका ता मुस पता नहा, मगर मोची मुहल्लको मात देगकर इनका धारणा बदल गइ है, आर यह खबर इहासे मिली है । पहले इनक मनम चाहे जो बात रही हो, पर अब कसाने भी गिलाफ शिकायत करनमें ये नाराज ह ।”

आगु गानुने कहा, “मगर उसने जो तुम्हारे प्रति इतना बडा अत्याचार किया, उसका क्या होगा ?”

कमलने मुँह उठाते ही देखा कि नीलिमा उसकी तरफ एकटक देख रही है ।

बचपन सुननेके लिए वही मानो सबसे ज्यादा उत्सुक है। नहीं तो, शायद वह चुप रहती, इरेट्रने नितना कहा है उमने ज्यादा एक शब्द भी नहा कहती। उमने कहा, “यह प्रश्न मेरे लिए अब असंगत मानूस होता है। सिफ इसके लिए कि जो नहीं है, वह क्यों नहीं, ऑसू बहानेमें मुझे शरम आती है, इस बातपर हसगडा करनेमें कि नितना वे कर सने उससे ज्यादा उहोंने क्यों नहा किया, मेरा सिर झुक जाता है। आप लोगसे सिफ तनी प्रार्थना है कि मेरे दुभाग्यको लेकर उनसे खान्धातानी न करें।” इतना कह उसने मानो सहसा फरकर कुरसीकी पीठसे सिर टेक दिया और ऑगे माच लीं।

घरकी नीरप्रता भग की नीलिमाने। उसने ऑंगने इशारेसे दूधका कटारा दिगाते हुए आहिन्तेमे कहा, “यह जो रिलजुल ही ठडा हुआ जा रहा है। दूध, पा सखग या नहा, नहा तो फिरमे गरम कर लानेके लिए कह दूँ।”

आगु बाबूने कटारा मुँहसे लगाकर जरा-सा पिया और फिर रफ दिया। नीलिमाने मुँह उठाकर देखा और कहा, “टाल रगनेस काम नहा चलेगा, डॉक्टरकी यमन्या में तोडने नहीं दूँगी।”

आगु बाबू ये हुए से होकर मोटे तकियर सहारे पड रहे, बाल, “यह बात तुम्हें भूलनी नहा चाहिए कि डॉक्टरस भी बडा व्यवस्थारक है हमारा अपना शरीर।”

“मैं नहीं भूलती, भूल जाते ह आप खुद।”

“सो तो मेरी उमरका दोष है नीलिमा, मेरा नहीं।

नीलिमाने हँसते हुए कहा, “सो तो है हा। दाप लादन लायक उमर पानेमें अम भा आपको बहुत दरु है।—अच्छा, कमलको लेकर हम जरा उस कमरेमें जा रही हैं, गप गप करगी, आप ऑंग सीचकर जरा आराम कीजिए। क्यों! जायें!”

आगु बाबूकी गायद ऐसा इच्छा नहीं थी, फिर भी उह भूमति लेनी पडी, बोले, “मगर एकदम तुम लोग चने मत जाना, बुलानेसे मुन लेना।”

“अच्छी बात है। चलो जी छोट बाबू, हम लोग बगलवाले कमरेमें चलकर बैठें।” यह कह नह सनको गाय लेकर चली गई। नीलिमाकी बात स्वभावतः हा मधुर होती ह और कहनेक टंगम भी ऐसा एक विशिष्टता हाता है जो मरुत ही दिगाद दे जाती ह परन्तु आजके ये घोड़े-से गन्ध मानो उससे भी

बन्कर आग निकल गये। हरेद्वारे उधर ध्यान नहीं दिया, पर कमलन गौर किया। पुरुषकी दृष्टि जो नहा आया, वह पन्नाइ दे गया स्त्रीकी दृष्टिमें। नालिमा तीमारदारी करने आर है, आर यह भी टाऊ है कि साधारण लागाका दृष्टि इस बीमार आदमीकी तन्दुरुस्तीकी तरफ ग्रास साधना रगनेम काइ आश्चर्यकी बात नहीं, मगर उन साधारण जनाम कमलका गुमार नहीं किया जा सकता। नालिमाकी इस अत्यन्त सावधानीकी अपूर्व विग्धतासे मानो उस एक अचिन्त्य विरमयका सामना करना पया। विरमय सिफ एक तरफसे नहीं, बहुत तरफसे हुआ। ऐमे सदहको कि सम्पत्ति माहने इस विधवाका मुग्ध कर किया है, कमल अपनी कल्पनाम भी न्यान न दे सनी, क्योंकि नीलिमावा इतना परिचय तो यह पा ही चुकी थी। आगु बाबूक यौवन और रूपका प्रभ ता इस मामलेमें सिफ असगत ही नहा बल्कि हाम्यकर है। तब फिर इसका पता कहाँ मिलेगा, मन ही मन कमल उमरी ग्राज करने लगा। इससे अलावा एक पहलू और भी है। यह है आगु बाबूका अपना पहलू। लोगोंका हल विश्वास था कि इस सरल और सलाक्षित भणे आदमीक हृदयन नीचेकी गहराइम पनी प्रेमका आदर्श ऐसी अचंचल निष्ठाप साथ नित्य पूजित हाता आ रहा है कि किसी दिन कोइ भी प्रलेभन उसपर दाग नहा लगा सकता। जिस दिन मनारमाकी मौका मृत्यु हुआ थी,—उस समय आगु बाबूकी उमर ज्यादा न थी, तबतक यौवन बीता नहा था,—उसी दिनसे उस लोकान्तरित पनीकी स्मृतिसे उपाडकर मनीनकी प्रतिष्ठा करनेके लिए घरवालों और दृष्ट मित्रोंन प्रयत्न करनेम कुठ उठा नहीं रक्वा था, मगर फिर भी उस दुर्भग दुगका द्वार तोडनेका कौशल किमीको भी हूँ नहा मिंग। ये सग बात कमलने बहताने मुँहसे मुनी था। और, दूसरे कमरम आकर वह अन्यमनस्क सी चुपचाप बैठी सिफ पही सोचने लगी कि नीलिमाके इस मनोभावका लेशमात्र भी इस आदमीके ध्यानम आया है वा नहा? अगर आया हो, तो दाम्पत्यक जिम सुकठोर मतनी वे अत्याज्य धमनी तरह एकाग्र सावधानीके साथ आजीवन रथा करते आये ह, आसक्तिकी इम नवनाग्रत चतनासे वह लेशमात्र विशुद्ध हुआ है वा नहा ?

नौकर चाय रोटी और पल धगैरह दे गया। अतिथियाके नामने उन सबको रगती हुद नीलिमा तरह तरहकी बात करन लगी। आगु बाबूकी नीमारी, उनका तन्दुरुस्ती, उनकी सहज सजनता और बच्चा जैसी सरताने छोटे मोटे विवरण,

आर इसा तरहनी ओर भी पहुँच गी बात जो इधर बढ़ निनाम उसकी विगाहने गुप्त है। आताये नीरपर हरेद्र न्त्रियाय लिए लाभनी चीज था, उमर सामद-प्रक्षोक् उत्तरमें नीलिमाकी शक्ति उच्चमित जावंगमे शतमुखी होकर फूट निकली। उमरे कहनेनी आ तरिकतास हरेद्र ऐसा मुग्ध हुआ कि उसे फिर ध्यान ही नहा रहा कि जिम माभाका उसने अविनाशक घर देगा है वह यही है या नहीं। यह परिणत यौवनना सिग्ध गाम्भीय, यह कौतुकपूर्ण उज्ज्वल परिमित परिहास, वैधयना वह सीमित सयम बातचीत, वह सुपगिचित स्वभास,—यह मरना सब इही क दिनाम छोट-छोटकर जो अस्मित शान्तातामे शान्तिनी तह प्रगल्भ हो उठा है, सो क्या उसकी वही भाभी है ?

बात करते-करते नीलिमाकी कमलपर नजर पड़ी, देखा कि चायके प्यात्रेमें मुट लगानेने मित्रा उसने और कुछ खाया नहा है। क्षुण्ण स्वरमें उसकी उलाहना तन ही कमलने हँसते हुए जयार लिया, “इतनम ही मुझे भूल गद क्या ?”

“भूल गद ? इमने माती ?”

“इसने मानी यही कि मरे खाने-पीनेनी बात आपना याद नहीं रही है। मैं तो मरत कुछ खाती पीती नहा।”

“और हार अनुशोध करनपर भी उमम पर नहा पडता।” हरेद्रने और पीछेमे जोर दिया।

उत्तम कमलने कैसे ही हँसत हुए कहा, “यह दप तो मैं उठा करती हरेद्र शाय, कि इस दडम कोद परिवतन नग हो सकता, पर हाँ, यह मानती हूँ कि साधारणत इस निषमना मुझे अभ्यास हा गया है।”

रास्तेमें निरलनर कमलने हरेद्रसे पूरा, “अर आप जा कहाँ रहें ह, बताइए न ?”

हरेद्रने कहा, “इलिए मत, आपने घर नहीं जाऊँगा, पर जहाँमे आपकी लाया हूँ वहाँ न पहुँचा दूँ तो अनुचित होगा।”

तब काफी रात हो चुकी था, गलम लगेगोंका जाना जाना नहास सरार था। चलते-चलते अस्मात् अत्यंत धानडनी तरह कमलने दर दसा एक हाथ अपने हाथमें लेते हुए कहा, “चलिए म साथ। उचित अनुचितका विचार आपना कितना सूदम हो गया है, परीक्षा दीजिएगा।”

हरेद्र मारे सनेचने व्यस्त हो उठा। स्पष्ट देनेने लगा कि यह

नहीं हुआ। इस तरह राममें जल्ना गायम गानो रही, आर अगर कार परिचित कदाय गामा आ पण तो गामा जिहारा न रगा परन्तु बगेर क्के हाग गुण लेारी ज गामा क्क्यास्ताया भी यह गाम रगा न न द गता। मामला बहुत भर हुआ और उगे मरुतवा भरण मानवर ही वह उगव परर दरयागेर ज पुरेगा। जज उगा रिग मोगी ता कमला कहा, “तना जन्दी कादरी है। आभममें अजित बाबूक गिता ता और काइ है रही।”

हरद्वारा कहा, “रही। आज ई भी रही है, मरुती गरीम दहली गय है, गामा क्क लीज आयग।”

कमला पूछा, ‘यक गायम क्या। आभमम रगादरा रगादरा ता क्याथा है नरा।’

हरद्वारा कहा, “रही, हम लाग अगे लाय। बतात है।’

“अमान आप आर अजित बाबू।”

“हो। पर आप हेंगती क्या है। गिनयत गराव नहीं बतात हम लाग।”

“अजित बाबू रही है, इगलिण पर जाकर आपना खुद ही बताकर गारा हागा। मर हायसी गामा अगर आपना पूणा न हा ता मरी क्की इन्टा है कि आपना गिनयत करे। रायम मर हायकी।”

हरद्वारा अत्यन्त धुण्य हाकर कहा, “यह तो क्की बजा बात है। आप क्या सनमुव ही गमसती है कि म पूणाग नामनुव कर सात्ता हूँ।” और यह क्षण भर चुप रहकर गाला, “आपना यह जनाममें मना काइ कगर रही रग छाडी है कि जा लाग आपनी वास्तवमें भ्रजाकी दृष्टिमे देखते है, म उहीमम एक हूँ। मेरी तरफमे आपति गित इतनी ही है कि बवक्त म आपना तस्लीफ नहीं देता गदता।”

कमला कहा, “गो आप खुद ही दंग लीजिगगा, मुस कोइ गारा तस्लीफ नहीं होगी। आदप।”

रगाइ बताते हुए कमला कहा, “मरी तैयारियाँ बहुत मामूली है, लेकिन आभमम आप लोमाका जा कुछ रग आइ हूँ उसे भी प्रपुर नहीं कहा जा सक्ता। लिहाजा, मुस भरागा है कि यहाँ अगर गाने-पीनेकी षोद तस्लीफ भी हा, तो आरकी तरह वह आपनी असह्य न होगी।”

हरद्वारा खुस होकर जराव दिया, “हमारे यहाँ राने पीनेकी चयस्था

दोप प्रश्न

बही है जो आप देर आइ है। सचमुच ही हम लोग बहुत कष्टके साथ रहते हैं।”

“मगर रहते क्या है ? अजित बाबू बड़े आदमी हैं, आपकी अपनी अवस्था भी ऐसी बुरी नहीं,—फिर कष्ट पानेकी तो कोई बज्र नहीं।”

दरेद्रने कहा, “बनहूँ तो हो, जरूरत तो है ही। मेरा विश्वास है कि इस जरूरतको आप भी समझती हैं और इसीलिए आपन अपने सम्बन्धों भी बही व्यवस्था कर रानी है। लेकिन, अगर थोड़ा बाहरपाला जाश्वयके साथ आपसे इसका कारण पूछ बैठे तो उसे क्या आप इसका कारण बता सकती हैं ?”

कमलने कहा, “बाहरपालोंको भन्ने ही न उता सकूँ, पर भातरपालेको तो उता ही सकती हूँ। उत यह है कि मैं सचमुच ही बहुत गरीब हूँ, अपने भरण पोषणके लिए कमानकी जितनी मुझमें शक्ति है उतमें इससे ज्यादा नहीं किया जा सकता। पिताकी मुझे कुछ भी नहा दे जा सके, पर ने मुझे दूसरोंके अनुग्रहसे उचनेका यह बीज मात्र दे गये हैं।”

दरेद्र उसने मुँहकी तरफ सुपचाप देगता रहा। इस विदेशी कमल केभी निम्नाय है, वह जानता है। सिर्फ रुपये पैसोंके लिए हा नहा, समाज, सम्मान, सदानुभूति,—किसी तरफ भी ताकनेके लिए उसका पाम कुछ उठा है। मगर, इस सत्यका भी वह याद किये बगैर न रह सता कि इतनी जरूरतसे नि सहा यता भी इस रमणीकी लेशमान दुनल नहीं कर सनी है। आज भी वह किसीसे भीय नहा माँगती, बल्कि भीय लेती है। जो गिनगाय उसनी इतनी बडी दुगतिका मूल कारण है, उसे भी दान करने लायक पूँजी अरतक उसकी यतम नहीं हु। और दरेद्रन शायद साहस और सात्वना देनेके अभिप्रायसे हा उसने कहा, “आपके साथ मैं तन नहा करना चाहता कमल, मगर इसने सिवा मैं और कुछ सोच भी नहीं सकता कि हमारी तरह आपकी गरीबी भी वास्तविक नहा है, एक बार भी आप चाहें तो आपका यह दुःख मरीचिकाकी तरह बिला जा सकता है। पर ऐसी इच्छा आपमें नहीं है, कारण, आप भी जानती हैं कि स्वेच्छामे ग्रहण किये हुए दुःखको ऐश्वर्यसे समान भोगा जा सकता है।”

कमलने कहा, ‘हाँ, भोगा जा सकता है। मगर क्यों, आप जानते हैं ? क्याकि वह अनावश्यक दुःख है,—क्योंकि वह दुःखना सिर्फ एक अभिनय

है। सभी अभिनयों में थोड़ा-बहुत कौतुक रहता है, इसलिए उसका उपभाग करनेमें कोई बाधा भी नह।” इतना कहकर वह खुद कौतुकसे हँस पड़ी।

उसका हँसना सहसा न जाने कैसा बसुरा-सा मालूम पड़ा। इस योग्यता मुनकर हरेद्र श्वण भर चुप रहा, फिर बोला, “मगर यह तो आप मानती हैं कि बहुतायतके भीतर जीवन तुच्छ होने लगता है, दुःख दैन्यमसे गुजरकर मनुष्यका चरित्र महान् आर सत्य हा जाता है।”

कमलने ‘स्त्रोत्र’ परसे कड़ाही उतारकर नीचे रख दी और एक दूसरा बरतन चलाकर कहा, “सत्य बननेके लिए उधर भी तो थोड़ा बहुत सत्य रहना चाहिए हरेद्र बाबू! आप लोग उड़े जादमी हैं, गान्धर्व आपनों कोई कमी नहीं, फिर भी छद्म अभावकी तैयारीमें यत्न हैं। और फिर उसमें अजित बाबू भी जा मिले हैं। आपके आश्रमकी फिलासफी मेरी तो कुछ समझमें आती नह, पर इतना समझती हूँ कि गरीबीके कष्ट भोगनेकी विडम्बनासे कभी महत्त्वको नहीं पाया जा सकता हाँ, पाया जा सकता है तो थोड़ा-से दम्भ और अहम्भयताको। संस्कारोंसे अंधे न होकर जरा आँख खोलने आप देय तो यह चीज स्पष्ट दिखाने दे जायगी। इसने दृष्टान्तके लिए भारत भ्रमणकी जरूरत न होगी।—पर बहस अभी ठाड़िए, रसोई बन चुकी, आप खाने बैठिए।”

हरेद्रने हताश होकर कहा, “मुश्किल तो यह है कि भारतवर्षकी फिलासफी समझना आपके बूतेसे बाहरकी बात है। आपकी शिराओंमें स्पष्ट रक्त बह रहा है।—हिंदुओंका आदर्श आपकी दृष्टिमें तमाशा ही मालूम देगा।—दीजिए, क्या बनाया है, खानेको दीजिए।”

“दती हूँ।” कहकर कमलने आसन दिखा दिया। जरा भा नाराज नह।

हरेद्र उसकी तरफ देगकर सहसा बोल उठा, “अच्छा, मान लीजिए कि कोई अगर वास्तवमें अपना सत्र कुछ दान कर सचमुचके अभाव आर दैन्यमें अपनेको घसीट लाये,—तब तो अभिनय कहकर उसका मजा नह। किया जा सकता ? तब तो—”

कमलने बीचमें ही रोन्ते हुए कहा, “तब फिर मजा नह,—तब तो सचमुचका पागल मानकर उसके लिए सिर धुन धुनकर रोकना समय आ जायगा। हरेद्र बाबू, कुछ दिन पहले मैं भी कुछ-कुछ आप ही जैसा विचार

किया करता थी, उपनासके नश्वरी तरह मुझे भी उसने मोहित कर रखा था, पर अब वह सशय मेरा जाता रहा है। गरीबी या अभाव इच्छासे आवे या इच्छाक विरुद्ध आवे, उसमें गप करने लापर कुठ नहीं होता। उसने भातर है शून्यता, उसने भीतर है कमजारी और उसने भीतर है पाप। अभाव शून्यता कितना हीन आर कितना छोटा बना देता है, सो मैंने अपनी आँसोंने देखा है, हम महामाराम मोचियॉक मुहल्लेमें जाकर। आर भी एफ आदमाने यह देखा है, व इ आपने मित्र राजेद्र। पर उनसे तो कुछ मिलनेका नहा,—जसामके गहर जगलकी तरह क्या क्या वहाँ छिपा हुआ है, काइ नहीं जानता। म अकसर साचा करती हें कि आप लागोंने उहाको रिदा कर दिया। कहात है न, मणि पकसर कौंचके दुफुके गिरहमें राँध लेना,—आप लागोंने टाक वही किया है। जापन भीतर कहामे भा निषेध नहीं पाया ? आश्रय !”

हरेद्रने उत्तर नहा दिया, चुप रहा।

आशयजन मामुली था, पर कमलने कम जतनमे अतिथिको गिलाया ना कहा नहा जा सकता। ग्याने बैठा तो हरेद्रको गार-वार नीलिमा भाभानी याद आन लगी। नारीत्वज्ञ शान्न माधुय और पुचिताक आदगरी दृष्टिमे वह नीलिमामे बडकर, और क्लिष्टा भी न मानता था। मन ही मन बोला—
“दिना, सम्कार, रुचि आर प्रवृत्तिको देखते इन दोनोम चाहे कितना ही भेद क्यों न हो, पर सेवा और ममतामें दोनों बिल्कुल एक-ही है। असलमे वे बाहरकी चीज ह, इसलिए विषमताका अन्त नहीं आर तप भी गतम नहा हाता, परन्तु नारीका जो बिल्कुल अपनी चीज है, जो सप तरहक मतामतक घरेके गहरनी वस्तु है, नारीक उम गूल अन्त करणका रूप देखनेमे आँस एक दम जुडा जाती ह। नाना कारणोंसे आज हरेद्रको भूग न थी, सिफ एकका प्रसन्न करनेके लिए ही उसने तूतेसे गहर रग लिया। कौइ एफ तरकारी ‘बहुत अच्छी लगी है’ कहकर उमन उसने रतनरा बिल्कुल साफ कर दिया। बोला,
“बहुत बार असमयम जा जाकर भाभीरा मैंने ठीक इसी तरह नाचा दम कर दिया है, कमल !”

“किसरा नीलिमाका ?”

“हाँ।”

“उसके नाकम दम जाता था !”

“जम्बरू, पर मानती न थीं।”

कमलने हँसकर कहा, “सिर्फ आपकी ही नहीं, सभी पुरुषोंकी ऐसी मोटी अक्ल हुआ करती है।”

हरद्वन बहसक दगपर कहा, “मने अपनी आँखोंसे देखा है।”

कमलन कहा, “सो म जानती हूँ। और इस आँखों देलनक घमण्डमें ही आप लोग मरे जा रहे है।”

हरद्वन कहा, “घमण्ड आप लोगोंने भी कम नहा। तब भाभी खाये बिना रह जाती, उपासी रात बिता दर्ती, फिर भी हार नहा मानती।”

कमल चुपचाप उसक मुँहकी तरफ देखती रही। हरेद्वन कहता रहा, “आप खाँसके आँसुवाँसे मोटी अइ ही हम लोगोंने सदा बनी रहे,—इसामें ज्यादा फायदा है। आप लोगकी सूक्ष्म बुद्धिकी डाहसे उपासे मरना हमें मन्ूर नहा।”

कमलने इस बातका भी कुछ जवाब नहीं दिया। हरद्वन बाला, “अबसे म आपकी सूक्ष्म बुद्धिकी भी नीच नीचमें परीक्षा लिया करूँगा।”

कमलन कहा, “सो आप नहा ले सकेंगे, गरीब हानेसे आपने मुझपर क्या आ जायगी।”

सुनकर हरद्वन पहले तो ललित-सा हुआ, फिर बोला, “देखिण, इस बातका जबाब देनेम जमान रुकती है। क्या, जानती हैं? जिसे राज-रानी होना जोभता, उसे यह कगालपना अच्छा नहा मात्रम दता। मालूम होता है, आपकी गरीबी दुनियाकी तमाम अमीर स्त्रियोंका मन्त्रक उडा रही है।”

बात तीरकी तरह कमलने कलेजेम जा लगी। हरेद्वन कुछ और कहना चाहता था कि कमलने उस रोन्ते हुए कहा, “आप जीम चुने हों तो उठिए। उस कमरम जाकर सारी रात गप्प सुनूँगी, तबतक इस कमरेका काम खतम कर दूँ।”

थोटी दूर बाद सोनक कमरम आकर कमलने कहा, “आज आपकी भाभी का सारा इतिहास मुने बगैर आपने ओढ़ूँगी नहा, चाहे नितनी ही रात क्या न हो जाय। मुनाइगा?”

हरेद्वन सकटम पच गया, बोला, ‘भाभीकी सारी रातें तो मैं जानता नहीं। उनक साथ पहली जान पहिचान मेरी इसी जागरमें हुई है जनिनाश भइयाके घर। वाम्बनम उनने सम्ब धम मुझे लगभग कुछ भी नहीं माइम। ता कुछ

यहों लोग जानते ह, उतना ही मैं जानता हूँ । मिय एन रात शायद सखारम सबसे ज्यादा जानता हूँ, और वह है उनकी जन्मक शुभ्रता । जे उनक पति मरे थे तब उनकी उमर उन्नाम-तीस सालना थी । भाभीने उए मयान्त बरगसे पाया था । वह स्मृति अतक पुँगी नहीं हे आर न कभा पुँउ ही रहती है,—जीवन अन्तिम दिातक वह अभय गनी रानी । पुग्गाम जइ आगु गानुनी रात उठती है—मैं मानता हूँ, उनकी निद्रा भी असाधारण है—लेकिन—'

“हरेद्र गानु, रात बहुत हो गई है, अब तो आपका घर जाना ही नहीं सकता,—इसी कमरेमें आपन लिए निस्तर कर हूँ ।”

हरेद्रने आश्रयसे पूछा, “इसी कमरेम ? और आप ?”

कमलने कहा, “मैं भी यहा सोऊगी । आर ना कोई कमरा है नहीं ।”

हरेद्र मार गरमने पीला पड गया । कमलने हँसते हुए कहा, “आप ब्रह्मचारी जो हैं । आपकी भी क्या डरनेका कोई कारण हो सकता है ?”

हरेद्र स्तब्ध होकर एकटक उसके चेहरेकी तरफ देखता रह गया । यह कैसा प्रस्ताव है, उसमें कल्पना करते भी न रना । स्त्री होकर मुँहस यह बात निकली कैसे ?

उसकी हृदसे ज्यादा विह्वलताने कमलकी धका दिया । उसने कुछ क्षण चुप रहकर कहा, “मेरी ही गल्ती हुई, हरेद्र बाबु, अपने घर जाइए । इसी कारण आपकी अछाम भद्राकी पात्री नीलिमानो आश्रमम जगह नहा मिली, जगह मिली तो आगु गानुके घरम । सुने घरमें अनात्मीय नर-नारीका स्वि एक ही समय आपको मालूम है,—पुरुषके निम्न आगत मिय औरत ही है, उमर गारेम इससे ज्यादा पनर आपतक आजतक गना पहुँची ।—ब्रह्मचारी हो जान पर भी गना । जाइए, अब दर न कीजिए, आश्रम जाइए ।” इतना कहकर वह खुद ही बाहरके अँधेरे परण्टमें जाकर अदृश्य हो गई ।

हरेद्र मूटका तरह दो तीन मिनट गड़ा रहा, फिर धीरे धीरे नीचे उतर गया ।

भाराका रूप शान्त हो गया है, कहीं कदा दो एक तय आनमण होनेकी बात सुनी ता जाती है, पर ऐसे गतगनाक रूपम नहा। कमल घरम पैगी मिलाइका काम कर रही थी, इतनम हरेद्र आ गया। उसन हाथम एन पोन्ली थी, उम पाग ही जमीनपर रखने हुण थाला, “आपनी मेहात देग बर तमाता करनम गरम लगती है मगर आदमी भी ऐसे बेहया ह कि भट होत ही पृष्ठत ह, ‘उन गया ?’ म साफ साफ तारा दे देता हूँ कि अभी बहुत तर है। बहुत जन्री हो ता कहिण, कपडा वापस ला दूँ। मगर मजेकी बात तो यह है कि आपन हाथकी चीन निमन एन बार बरता यह जीर कहीं सिलाना नहा चाहता। यह दखिण न, लालाजीक घरम उनका नौकर फिर गरद रामका थान जीर तमूनफा कुरता द गया है,—”

कमलन सिलाइपरसे आंग उठाकर कहा, “ले क्या लिया ?”

“लिया क्या या ही ? कह दिया है कि छह महानेसे पहले नहीं होगा,— उमपर भी राची हा गया। बाला, छह महीने राद ता मिल जायगा ? काइ हन नर्न। यह दागण न, सिलाइक स्पयेतक हाथपर रख गया है।” कहते हुण जयममे उसन एक नोटम मुडे हुण स्पये निकाल कर कमलके सामने पटक दिये।

कमलन कहा, “इतना ज्यादा काम आता रहा तो, मं देखती हूँ, मुझे आदमी रखना पन्गा।” फिर उमने पोन्ली खोलकर पुराना पजारी कुन्ता उठाकर दखा और कहा “किसा बड़ी दुकातका सिला हुआ माछम होता है,—बडे कारीगरका काम है,—मुखमे ता ऐसा सात न बनगा। कीमती कपडा है, गराव हो जायगा, इसे गापम दे दीजिएगा।”

हरेद्रन आन्चय प्ररु करते हुण कहा, “आपसे बरकर कारीगर और भी है क्या काइ ?”

“यहों न हो, कलफत्तेम तो है। वहाँ भेन देनेको कहिए।”

“नहीं नहीं, सो नहीं होगा। आपसे जैसा रने वैसा रना दीणिण, उमोसे काम चल जायगा।”

“बनगा नहीं हरेद्र राबू, रनता तो रना देती।” कहकर वह अस्मात् हँस पडी, बाली, “अजित राबू रर आदमी ह जीर गौकीन मिजाज ठहरे एसा वैसा रना देनेसे उनमे पहना रने जायगा ? यथर्म कपन्ता गराव करनते काट पायटा नहीं, आप वापस ले जाइए।”

हरेद्रको अत्यन्त आश्चर्य हुआ, उसने कहा, “कैसे जाना कि यह अजित बाबूका है ?”

कमलने कहा, ‘मैं क्यातिव जो जानती हूँ। गरद रेणुमका धान, पेगमी ग्या और फिर उह महीने बाद मिले तो भी कोई हज नहा।—यहाँके लाला गग ऐसे मूल नहीं होते हरेद्र बाबू। उनसे कह दीजिएगा कि उनका कुरता नाने लायक योग्यता मुझमें नहा है, म तो मिफ गरीगने सस्ते दामके उपदे हा सीना जानती हूँ। यह नही सी सखती।’

हर द्र मन्त्रमें पड गया। अन्तम बोला, “उतना बडी इच्छा है कि आपका हाथका मिला हुआ कुरता पहन। लेकिन, आप नहीं जान ग जायें और यह न मन्त्र बैठ कि हम लोग किमा तरह आपकी महायता करनेका कोशिश कर रहे हैं, जससे म बहुत दिगने जसे ल्य नहीं रहा था। उतम कहा था कि कम दामका कोट मामूली कपडा दें। पर ने राजी नहीं हुए। बोले, यह कोट मेरी रोक्का पहननकी मिगनद थोड़े ही है। यह तो कमलने हाथकी सिली हुद चीज है जो मिफ किमी मिग्रेप पक्के दिग पहनेनेके काम आयगी और रक छोडी जायगी। जस समारम उनसे बल्कर आपपर गायद ही कोद दूसरा श्रद्धा करता हो।”

कमलने कहा, “कुठ दिन पहले उनने मुँहसे शायद ठीक इमम उल्टी बात ही बहुताने मुनी हागी। गीक है कि नही। जरा कोशिश कर ता शायद आपकी भी स्मरण हो सकता है। जरा याद कर देखिए न।”

कुछ ही दिन पहलेकी बात थी, हरेद्रका सब याद था। वह कुछ लजित-मा होकर बोला, “शुद्ध नहा, मगर ऐसी धारणा तो एन दिन गहुठानी थी। गायद जयले आगु बाबूनी मने ही न हा, लेकिन उह भी एन दिन विचलित हाते देगा गया है। सुद मुझको ही दसिए न,—आज तो कोई प्रमाण पेग करनेकी जम्मत नना, पर उस दिनकी कमौटीपर आज भी अगर कोई मेरा भक्ति श्रद्धाकी जाच करने लग तो प्रताइए मैं वहाँ गवडा हो सकूँगा।”

कमलने घृणा, “रानेद्रका पता लगा।”

हरेद्रने समझ लिया कि यह हृदय-सम्यग्धी आलाचना, पहलकी तरह, आज फिर स्थगित रही। जसने कहा, “नहा, अबतक तो नहीं लगा। उम्माद है कि कहासे आ ल्यन होगा तो लग जायगा।”

कमाने कटा, “शो ता म जानना चाहता नगें, मन तो आपम मिए इतना ही पता लगानेको कहा था कि वह पुगिना मेहमात हुआ है या नहा।”

हरद्वन कहा, “शो ता पता लगा लिया। फिलहाल उसने हायम ता बचा हुआ है।”

मुनकर कमल निश्चिन्त तो नहा हो गयी, पर उसे कुछ तगल्या ऊनर हुए। पृष्ठा, “ब कहाँ गये ह आर कय गये ह, मोनिवान मुहन्नेम त्रा जा करक क्या उाका पता नहा लगाया जा सकता ?—हरेद्र राबू, उनक प्रति आपना रोह कितना है सो म जानती हूँ, इस रासम पृष्ठाना यादती हागी पर इधर नइ दिनोंसे भरा ऐसी दशा हो गइ है कि इसक मिरा जीर कुछ सोच ही नहा सकती।” इतना कहकर उसने ऐसी याकुल हम्मि हरेद्रकी आर दना कि वह विगिमत हा गया। पर दूसरे ही भाण वह ऑन नीची करक पहलेना तरह अपन मिलाइक कामम लग गइ।

हरेद्र चुपचाप सडा रहा। सड़-सड़ उसर मनम एक एक करक कइ प्रभ उठते रहे आर कुतूहल भा हाता रहा,—मुँहस शकाने भी निबलना चाहा, पर उमने अपनका हर बार सँभाल लिया। किसी तरह बह तय नहा कर पाया कि इस पृष्ठाके मतीजा क्या होगा। इस तरह पाँच-सात मिनट गत जानकर कमाने सुद ही बात की। मिलाइको एक तरफ रखकर समाविना एक सोंग लेकर उसने कहा, “रहने दो, अब नहा करती।” मुँह ऊपर उठाते ही जाश्रय के साथ गेली, “यह क्या ? सड़ क्या ह ? कुर्ग रीचकर नडा भी न्या गया आपने ?”

“बैठनेका तो नहा नहा आपने।”

“अच्छ र ! कहा ना, सो बँठगे भी नहा ?”

“नहीं, गौर बडे बैठना उचित नहीं।”

“मगर सड़े रहनेके लिए भी तो मन नहीं कहा, फिर सड़ क्या ह ?”

“ऐसा अगर आप कहती ह तो भरा न सडा होना ही उचित थ। अपना कसर मरू करता हूँ।”

मुनकर कमल हँस दी। गेली, “ता में भी अपना कसर मान लेती हूँ। अब तक अयमनस्य रहना मेरा अपराध है। अब बँटिए।”

हरेद्र कुसा रीचकर उसपर बैठ गया। कमल सहसा जरा गर्भीर हो

शेष प्रश्न

गद। एक बार कुछ सोचा, फिर बोली, "देखिए हरेन्द्र रावू, मैं जानती हूँ और आप भी जानते हैं कि जयलक्ष्मी इतने अन्दर कुछ है नहीं। फिर भी बात गप्पती ही है। यह जो मैं ब्रेटनेने लिख कहा भूल गए,—जो आदर अतिथियों देना चाहिए था यह नहीं दिया,—हजार घनिष्ठताये होते हुए भी मैं नहीं कहती,—मगर फिर भी न जान क्या मनमें कुछ गप्पता ही है। मनुष्यता यह संस्कार जानने का नहीं जाना चाहता, नहीं न-कहा थोड़ा-बहुत रह ही जाता है।—क्यों, टीका है?"

हरेन्द्र इसका मतलब न समझ सका, आश्चर्यसे साथ उगरे मुँहका तरफ देगता रह गया। कमल कहने लगी, "इसका मतलब न जाने कितना आया हा रहा है और मजा यह कि शमीनी लोग सबसे ज्यादा भूलते हैं। क्यों, है न यही बात?"

हरेन्द्रने पूछा, "यह सब आप मुझसे यह रही है, या अपने आपसे? अगर मेरे लिए हा तो जरा और सुलसा कर चाहिए। यह पढ़े-नी मर मगजम पुग नहीं रही है?"

कमल हँसने लगी, बोली, "हूँ तो पहला हा। सीधा-सरल रास्ता हाता है, मादम हा तरा होता कि नियति ऑग्य लाल कर रही है। चान्ते-चलने टाकर लगती है और उँगलीसे गून निरलन लगता है, तब नहीं जाकर होगा जाता है कि आप जरा दगसर चलना चाहिए था। क्यों, है न यही बात?"

हरेन्द्रने कहा, "रास्ते में तो यह टाक है। कमल कम आगने रास्ते में तो जरा होर सँमालकर ही चाना अच्छा,—ऐसा दुगनाएँ आभरने-लकड़ों पर प्राय गप्पती है। मगर पहली हा रह गद, भातग मालन तो कुछ समझमें नहीं आया?"

कमलने कहा, "उमका बाद चार गग हरेन्द्र रावू। "ता दनेसे हा युगा बातोंका मतलब समझमें नहीं जा जाता। मुझसे हा लिख न, मुझ ता रिगन बताया नहीं, फिर भी स्तार गमलनम मुझ सोर अटचन नहीं हुए।"

हरेन्द्रन कहा, "इसका मतलब यह है कि आप भाग्यवती हैं और मैं अभाग्य। या ता ऐग भाषामें कहिए कि गांधारण आरुगक दिमागमें भी पुग जाय या फिर रहने दीजिए, कुछ मत बोलिए। चाना आति-राजीवी लख,

जितना दूमे खोलना चाहता हूँ उतनी ही यह उलझती जा रही है। जगत अशेष विरोधसे गुरु होकर वन्य अन्न वहाँ जाकर रुका है, इसका जोर-छोर तहा मिला। ये सब बात क्या आप राजेन्द्रकी याद करके कह रही हैं? उसे मैं भी तो जानता हूँ, सहल बना करके वह तो गायद कुछ कुछ समझ भी सकूँ। नहीं तो, फिर इस तरह एक स्वप्नमय आदमीकी वक्तृता सुनते सुनते मुझे अपनी बुद्धिपर विश्वास ही न रह जायगा।”

कमल हँसते मुँहसे बोली, “निम्नी बुद्धिपर? मेरापर या अपनीपर?”

“दोनाकी ही।”

कमलने कहा, “सिफ़ राजेन्द्रकी ही नहा। माद्रम नहा क्या, सबरमे आज मुझे सभीकी याद आ रही है—आगु राबू, मगोरमा, अश्वय, जविनाग, नीलिमा, शिखनाथ,—यहोतर कि अपने पिताजीकी—”

हरेद्रन टोका, “इस तरह नहा चल सकता। आप फिर गम्भीर होती जा रही हैं। आपका माता पिता स्वर्ग गये हैं, उनको इस मामलेमें घसीटना मुझसे नहीं सहा जायगा। हॉ, जो जिन्दा है उनकी बात कीजिए। आप राजेन्द्रकी बात कहना चाहती थी,—उसीकी कहिए, मैं सुनूँ। यह मेरा मिन है, उसे मैं जानता हूँ, पहचानता हूँ, प्यार भी करता हूँ,—मेरा विश्वास कीजिए, मैं चाहे आश्रम चलाता होऊँ या और कुछ करता होऊँ, आपकी धोखा नहा दूँगा। ससारमें जोर लोगानी तरह मैं भी प्रेमकी कहानी सुनना पसन्द करता हूँ।”

कमलकी गम्भीरता सहसा हँसोम परिणत हो गई, उसने पूछा, “सिफ़ दूसरोंकी ही सुनना पसन्द करते हैं? उससे जागे कुछ नहा चाहते?”

हरेद्रने कहा, “नहीं। मैं प्रह्लाचारियोंका पण्डा हूँ, अपना दल सुन लेगा तो मुझे रा ही जायगा।”

सुनकर कमल फिर हँस पड़ी, बोली, “नहा, वे नहा लायगे। मैं उसका उपाय कर दूँगी।”

हरेद्रने सिर हिलाते हुए कहा, “आप नहा कर सक्ती। आश्रम तोड़कर भाग जानेपर भी मेरा दुटारा नहीं है। अश्वयन एक बार जब कि मुझे पहचान लिया है, तब जहाँ भी मैं जाऊँगा वहाँ मुझे वह समागपर लगावे ही रखेगा। इससे अच्छा यह है कि आप अपनी ही बात कहें। राजेन्द्रको आप अपने मनसे किसी तरह भुला ही नहा सक्ती,—उसकी बातने सिखाय और काद

बात सोच ही नहा सक्ता, तो फिर वहाम शुरू काजिए । किस तरह उस अभागे जकरका आप दतना चाहने लगी ह, य' सुनकी मुझ रजा साध है ।”

कमलने कहा, “टाक यही प्रभ मैं बार-बार अपनेस भा कर रही हूँ ।”

‘कुठ पता नहा पा रहा ह ?”

“नहा ।”

“पानेका रात भी न'ना, और मुझ विश्वास भी नहीं होता कि यह सच है ।”

“क्यों, विश्वास क्यों नहा होना ?”

“रैर, ओटिए इस गानका । गायद एक बार मैं कह भा चुका हूँ कि 'ससे भी अच्चे 'कैण्टिडेट' (उम्मीदवार) मौजूद ह । आगिरा गिणर करनेके पहले उनर 'रगों' (दरख्वास्तों) पर भी जरा नजर डाल दक्विएगा । यही प्राथना है ।”

“मगर बेसोपर रेचल अनुमानक आधारपर तो विचार किया नहीं जा सकता इन्द्र बाबू, बाकायदा गवाह और प्रमाणोंको जरूरत होती है । सो कौन दाखिर करगा ।”

“ये खुद हा करेंगे । गवाह और सुवृत्तके लिये व तैयार हँ, पुकार हाते ही दाखिर हो जायेंगे ।”

कमलने कुछ जराय नहीं लिया, ऊपर मुँह उठाकर दम्बा और हँस दी ।

उमने बाद पूरे और अधूरे साथ कपड़ोंका एक एक करके ठोकस घड़ी का, गद्द एक बतनी टोर्नीमें जँचाकर रख दिना आर उन्नर खडा हो गद् । बाली, “आरका गायद चाय पीनेका बन हो गया इन्द्र बाबू, जरा-सा चाय बनाकर ल आऊँ, आप बैठिए ।”

इन्दरने कहा, “बैठा तो हूँ ही । लेकिन आप तो जानती हैं, चाय पानेके लिये मुझे फोद पन बेरक नहा । मिठे ता पा लेता हूँ, न मिठ तो कोई बात न'ना । 'सक लिये आपसो तकाल उठानेकी जरूरत नहीं । एक रात आपसे पूछूँ ।”

“सुनाम ।”

“रहुन गिनासे आप किनार यहाँ गद् नहीं,—सो क्या जान बूझकर जाना बद कर दिया है ।”

कमलका आशय दुजा, बाली, “नहा ता । मुझ इसका खपाल ही नहीं ।”

“ता फिर चलिए न, आज जरा आंगु बाबूके मकानतक घूम आबें । बे

सचमुच ही मरुत खुग हागे । जय वे शमार थे तर एक मार आप गद बी, अर तो वे अच्छे हो गये हैं । मिय डॉक्टरने मना कर लिया है कि बाहर नहीं निकलें । नहीं तो शायद वे निमी दिन खुद ही यहाँ आ उपस्थित होते ।”

कमलने कहा, “वे न आव ता बाद आश्वयरी बात नहा । जाना ता मुझे ही चाहिए था, लेकिन कामरी झझटसे जा नहीं सरी । उठी गल्ला हो गद ।”

“तो आज ही चलिण न !”

“चलिण । मगर गाम होने दाणिण । आप बैठण, चटसे एक प्याल चाय बनाये लाती हैं ।” इतना कहकर वह बाहर चली गद ।

शामके छुटपुटेम दोनों घरसे निकल पड़ । रास्तेमें हरेद्रने कहा, “जरा दिन रहत चलते ता अच्छा रहता ।”

कमलन कहा, “नहा, जान पहचानना शायद कोद देय लेता ।”

“भले देय लेता । इन सय माताकी जब मैं परवाह नहीं करता ।”

“पर म तो करती हूँ ।”

हरेद्रने ममशा कि मजाक किया जा रहा है, वह बोला, “लेकिन जान-पहचानवाले ही अगर मुनेंगे कि आप मरे साथ अनेली निकलनेम आजकल सकोच करने लगी ह, ता ये क्या साचगे ?”

“शायद यहा साचगे कि मने मजाक किया होगा !”

“मगर आपको जो पहचानता है वह क्या और कुठ सोच सक्ता ह ? बताइए !”

अबनी बार कमल चुप रही ।

जवाब न पाकर हरेद्रने कहा, “आज आपनो क्या हो गया है, माखम नहा, सब कुठ दुसा य हा रहा ह ।”

कमलने कहा, “जो समझनेका नहा है उस न समझना ही अच्छा है । राजेद्रको भूलना चाहकर भी भूलती नहीं । इसका सयसे ज्यादा भान हाता है आपके आगेपर । उसरु लिए आभ्रमम स्थान नहीं हुआ,—हालों कि किमी पेटके नीचे पटे रहनेमे भी उसका काम चल जाता, सिफ मने ही वहाँ रहने नहा दिया और आदरके साथ म उसे बुला लाद । मेरे घर आया,—कहासे भा उसके मनको षोड स्वावट नहा आइ । हवा और प्रकाशकी तरह उसके आनेपर भी

शोप प्रश्न

मन दिशाएँ खुली रहीं, पुरुषका मानो एक नया परिचय मिला। यह सोचनेकी मुझे समय हा नहीं मिला कि यह अच्छा है या बुरा,—शायद समझनेमें देर न लगे।”

हरेन्द्रने कहा, “यह बड़ी भारी सान्त्वना है।”

“सान्त्वना क्यों है ?”

“सो नहीं मालूम।”

फिर कोद भी कुछ नहीं बोला, दोनों ही न जाने कैसे अन्यमनस्क-से बने रहे। हरेन्द्रन शायद जान बूझकर हा जरा घुमावना रास्ता अख्तियार किया था। जब वे जागु गाबूके घर पहुँचे तब ग्राम बीने बहुत देर हो चुकी थी। भीतर जानेके लिए खर देनेकी जरूरत न थी, पर पाँच-छह दिनसे हरेद्र आ नहा सका था इसलिए नौकरको सामन पाकर बोला, “गाबू साहबकी तबीयत अच्छी है ?”

उसने नमस्कार करते कहा, “जा हाँ, अच्छी है।”

“अपने कमरेमें ही हैं क्या ?”

“नहा, ऊपरके सामनेवाले कमरेमें सपने साथ बैठे रात कर रहे हैं।”

जीनेपर चरते कमलने पूछा, “‘मन’ कौन।”

हरेन्द्रने कहा, “भाभी तो है ही, और भी शायद कोई होगा,—मान्द्रम नहीं।”

परदा हटानर भीतर घुसते ही दोनाना जरा आश्चर्य हुआ। एसे-स और चुन्टकी तेज गंधने एक साथ मिलकर कमरेकी हवाको भारी कर दिया था। नीलिमा मौनद गहीं थी, जागु गाबू रडी आराम-सुरमीन हथेलीपर पैर फैलाये चुन्ट पी रहे थे और पाग ही साँपेपर सीधी बैठे एक अपरिचित महिला बात कर रही थी। कमरेकी आन-हवासी तरह ही उसने मुँहका भाव भी तेज था। बगालिन थी, पर रँगला बोलनेकी उसमें कचि नहा थी, और शायद आदत भी न हो। हरेद्र और कमलने कमरेमें बंदम रगत हो सुन लिया कि वह अनगल गौजी बाल रही है।

जागु गाबूने मुँह उठाकर दगा। कमलपर निगाह पन्न ही उनका सारा चरग ध्यानमें उलझल हो उठा। शायद एक बार उसने कैनेकी भा कोशिश की, पर महंगा पैठा नहीं गया। मुँहका चुक पकर गाने, “आओ कमल,

आओ ।” और अपरिचिता रमणाको निर्दिष्ट करके बोले, “ये मेरी एक रिश्ता दार हैं । परसा आइ ह, सम्भर है इह कुछ दिन यहाँ रग भी सकँ ।”

जरा ठहरकर फिर बोले, “बला, ये कमल हैं । मेरी लडकानी तरह ।”

दोनोंने दोनोंने लिए हाथ उठाकर नमस्कार किया ।

हरेद्रने कहा, “और म !”

“ओ हो, तुम ता रह ही गये । ये हरेद्र हैं, प्रोपेभर अभयने परम मित्र । बाकी परिचय यथासमय होता रहेगा,—चिन्ताकी काद बात नहा हरट ।” और कमलको इशारते पास बुलाते हुए बोले, “यहाँ मेरे पास आओ कमल, तुम्हारा हाथ लेकर कुछ देर चुप बैठा रहूँ । इसके लिए कद दिनासे मेरा जा तडपडा रहा है ।”

कमल हँसती हुई उनसे पास जाकर बंठ गई और दोनों हाथ बटाकर उभन उनसे मोटे भारी हाथको अपनी गोदम रग लिया ।

आगु बाबूने पूछा, “सा पीकर आइ हो क्या ?”

कमलने सिर हिलाकर कहा, “नहीं ।”

आगु बाबूने छोटी-सी एक साँस लेकर कहा, “पूछनेसे पायदा ही क्या ? यहाँ तुम्हें पिला ता सकता नहा ।”

कमल चुप रही ।

२१

बलाक मुँहनी तरफ देखकर आगु बाबू जरा हँसे और बोले, “क्या, वणन मेरा मिल तो गया ? इसे बुदापेकी ‘एक्स्ट्रावगन्स’ (बुद्धभस) कहकर मजाक उडाना तो तुम्हारा ठीक नहा हुआ, अब तो मान गई ।”

महिला चुप रही । आगु बाबू कमलका हाथ हिलाने डुलाने लगे आर बाल, “इस लडकीको बाहरसे देखकर जैसा आश्चर्य होता है, भीतरसे देखकर वन ही दग रह जाना होता है । क्या हरेद्र, ठीक है न ?”

हरेद्र चुप रहा कमलने हँसते हुए जवाब दिया, “ठीक है कि नहा, इसम सदेह है, लेकिन किसीने अगर बुबापेकी ‘एक्स्ट्रावगन्स’ कहके आपके कामांज मजाक किया हो तो इतना तो बखरके कहा जा सकता है कि वह ठीक नहीं है । माना ज्ञान आपका इस दुनियामें अचल है ।”

“ओह, ऐसा है ?” आगु बाबूने गम्भीर स्नेहके स्वरमें कहा, “जानता हूँ कि इस घम में तुम्हें कितना पिला कुठ भी न सकूँगा, पर यह तो उताओ अपन घर तुमने क्या क्या ग्याया है ?”

“जो रोज़ ग्याया करती हूँ वही ।”

“फिर भी, मुन्ने तो सही ! बेला सोच रही थी कि यह भी मैंने उता-चटाके कहा है ।”

कमलने कहा, “यानी मेरे नियमों मेरी अनुपस्थितिमें बहुत कुठ चचा हो चुकी है ?”

“सो तो हुए है,—अस्वीकार नहीं कहूँगा ।” इतनमें चोंकीकी खाबीमें एक छोटा काट लिये हुए बेहरा आ गया । उसकी लिंगावटपर सबकी निगाह पड़ गई और सभीका आश्चर्य हुआ । उस घम अजित एक दिन घरके लडकेकी तरह था पर अब आगलेमें रहने हुए भी वह नहा आता और शायद यही स्वाभाविक है । हम न जानेकी लज्जा और सनाचर द्वारा दोनों तर्फसे ऐसा एक व्यसन उठ खड़ा हुआ है कि उसका इस अप्रत्याशित आगमनसे सिर्फ आगु बाबू ही नहीं, उपस्थित सभी जरा चौंक में पड़े । आगु बाबू के चेहरेपर उद्वेगनी एक गहरी छाप पड़ गई,—बोले, “उह इसी कमरमें ले आ ।”

थोड़ी देर बाद अजित जा पहुँचा । एक साथ इतने परिचित और अपरिचित जनाकी उपस्थितिकी सम्माननाका विचार या आशंका उमने नहीं की थी ।

आगु बाबूने कहा, “बैठा अजित । अच्छे ता हा ?”

अजितने सिर हिलाते हुए कहा, “जी हाँ । आपकी तारीफत अब कैसी है ? अब तो अच्छी मादूम होती है ?”

आगु बाबूने कहा, “सीमासे तो अच्छी हो गई मादूम होती है ।”

परस्परका कुशल प्रदानाकर यहा गतमें हो गया । कमल न होती तो शायद और भी दा एक बात हा सकती थी, परन्तु चार आँसुं हानने डरसे अजितने उभर कमलकी ओर आँसु उठाकर देगनेका साहस ही नहीं किया । दो-तीन मिनटतक सब लोग चुप रहे । इन्ड्रेड समय पहले बोला, पूछा, “यहाँ आया क्या अभी साथ घमसे हा आ रहे ह ?”

कुछ बोलनेका मौका पाकर अजितने जीमें जा जा गया । बोला, “नहीं, ठीक साधा नहा आ रहा हूँ, आपको ग्योजन हुए जरा घम फिरकर आ रहा हूँ ।”

आओ ।” और अपरिचितता रमणीको निर्दिष्ट करके बोले, “ये मेरी एक रिश्तेदार हैं । परसों आइ हैं, सम्भव है इन्हें कुछ दिन यहाँ रग भी सँ ।”

जरा ठहरकर फिर बोले, “बेला, ये कमल हैं । मेरी लडकीनी तरह ।”

दोनाने दोनोंप लिए हाथ उठाकर नमस्कार किया ।

हरेद्रने कहा, “और म ?”

“आ हो, तुम तो रह ही गये । ये हरेद्र हैं, प्रोपमर अभयने परम मित्र । बाकी परिचय यथाममय होता रहगा,—चिन्तार्थी कोइ बात नहा हरड ।” और कमलको इशारेसे पास बुलात हुए बोले, “यहाँ मेर पास आओ कमल, तुम्हारा हाथ लेकर कुछ दर चुप बैठा रहँ । इसन लिए कद दिनासे मरा जो तड़पटा रहा है ।”

कमल हँसती हुई उनन पास जाकर बैठ गई और दोनों हाथ उठाकर उमन उनके मोटे भारी हाथको अपनी गोदमें रग लिया ।

आगु बाबूने पृछा, “खा पीकर आइ हो क्या ?”

कमलने स्तिर हिलाकर कहा, “नहीं ।”

आगु बाबूने छाटी-सी एक सॉस लेकर कहा, “पृछनेसे फायदा ही क्या ? यहाँ तुम्ह गिला तो सकता नहा ।”

कमल चुप रही ।

२१

बलाके मुँहकी तरफ देखकर आगु बाबू जरा हँसे और बोले, “क्या, वणन मेरा मिल तो गया ? इसे बुढापेकी ‘एकस्ट्रावेगन्स’ (बुन्भस) कहकर मजाक उडाना तो तुम्हारा ठीक नहीं हुआ, अब तो मान गई ?”

महिला चुप रहा । आगु बाबू कमलना हाथ हिलाने डुलाने लगे और बोले, “इस लडकाका बाहरसे देखकर जैसा आश्चर्य होता है, भीतरमे दग्बर वैम ही दग रह जाना हाता है । क्या हरेद्र, ठीक है न ?”

हरेद्र चुप रहा, कमलने हँसत हुए जवाब दिया, “ठीक है कि नहा, इसमें सदेह है, रेकिन किसीने जगर बुढापेकी ‘एकस्ट्रावेगन्स’ कहके आपके कामोरा मजाक किया हो तो इतना तो बेखटक कहा जा सकता है कि वह ठीक नहीं है । मात्रा ज्ञान आपका इस दुनियामें अचल है ।”

शेष प्रश्न

“ओह, ऐसा है ?” आगु बाबूने गम्भीर स्नेहके स्वरमें कहा, “जानता हूँ कि इस घरमें मैं तुम्हें तिला पिला कुठ भी न सकूँगा, पर यह तो प्रताओ अपने घर तुमने क्या क्या ग्वाया है ?”

“जो रोज ग्वाया करती हूँ वही ।”

“फिर भी, मुनू तो सही ? बेग सोच रही थी कि यह भी मैंने ग्वा-चढाके खा है ।”

कमलने कहा, “यानी मेरे पिपयम मेरो अनुपस्थितिमें बहुत कुठ चचा हो चुकी है ?”

“सो तो हुद है,—अस्वानर नहीं करूँगा ।” दतनेम चाँदीनी खाकीमें एक गेग गट लिये हुए बेहरा जा गया । उगनी लिफाफपर सगरी निगाह पड गद और समीको आचय हुआ । इस घरम जजित एक दिन घरने लडके की तरह था पर अग आगेम रहते हुए भी यह नहा आता और शायद यही स्वामात्रि है । इस न जानेकी लज्जा और सकोचने द्वारा दोनों तरफसे ऐसा एक व्यवधान उठ खडा हुआ है कि उमने इस अप्रत्याशित आगमनसे खिर्क आगु बाबू हा नहा, उपस्थित सभा जरा चौंक मे पड । आगु बाबूने चेहरेपर उद्वेगकी एग गहरी छाप पड गद,—बोले, “उहूँ दशा कमरेमें ले आ ।”

थोनी देर गद अजित जा पहुँचा । एक साथ इतने परिचिन और अपरिचित जनाकी उपस्थितिनी सभामाना विचार या आशका उसने नहीं की थी । आगु बाबूने कहा, “बैठो अजित । अच्छे तो हो ?”

अजितने सिर हिलते हुए कहा, “जी हाँ । आपनी तरीयत अब कैसी है ?”

आगु बाबूने कहा, “नीमार तो अच्छी हो गइ मादूम होती है ।”

परस्परना कुशल प्रश्नोत्तर यहा खतम हो गया । कमल न होती तो शायद और भी दो एक गतें हो सकती थी, परन्तु चार आँतों होनेसे इरसे अजितने उधर कमलनी ओर आँग उठाकर देखनेना साहस हो नहा किया । दो-तीन मिनटतक गग लोग चुप रहे । हरेद्र समने पहले बोला, पृठा, “यहाँ आप क्या अभी सीधे घरसे ही आ रहे ह ?”

कुछ बोल्नेना मौका पाकर अजितके जीम जा आ गया । बोला, “नहीं, ठीक साधा नहा आ रहा हूँ, आपको खोजते हुए जगधूम फिरकर आ रहा हूँ ।”

“मुझे खोजते हुए ? क्या काम है ?”

“काम मेरा नहीं, और एक सज्जनका है। वे रात्रेद्रकी खोजमें दोपहरमें गायद चार गार आ चुके। उनमें प्रैठनेके लिए कहा था, पर वे रात्री नहीं हुए। स्थिरतासे प्रैठकर प्रतीभा करना गायद उनको सहन नहा है।”

हरेद्रने शक्ति होकर पूछा, “था कोन ? देखनेमें कैसा था ? कह क्यों नहीं दिया कि यहाँ नहा है ?”

अजितने कहा, “यह गबर ता उट दे चुका हूँ। पर शायद उन्होंने गिनाम नहा किया।”

हरेद्रका चहरा उद्विग्नतामें भर उठा, वह उठ गडा हुआ और कमन्गी घर पहुँचानेका भार आगु बाबूपर डाटकर चला दिया। उसने चले जानपर आगु बाबूने कहा, “कमल, इस लटने रात्रेद्रको मने दो तीग गारसे ज्यादा नहीं देखा,—बिना किसी सकटमें पडे उसने दगुन ही नहीं होते, पर ऐसा लगता है कि उससे म काफी स्नेह करने लगा हूँ। मालूम नहीं, कौन सी महामुन्य वस्तु वह अपने साथ लिये फिरता है, और मजा यह है कि हरद्रन मुँहसे सुना करता हूँ कि वह बिल्कुल ‘चाइन्ट’ (= बेजद, जयवस्थित) है, पुलिस उसे मदेहनी दृष्टिमें देखती है। टर रहता है, न जाने कब क्या उपद्रव गवा कर प्रैठ और शायद उसकी खबर भी न मिले। यही दस्तो न, निम्नानो पता ही नहीं लग रहा है कि अचानक कहीं गायद हो गया।”

कमल पूछ प्रैठी, “अचानक अगर मालूम हो जाय कि वे सकटमें पड गये है, तो आप क्या करगे ?”

आगु बाबूने कहा, “क्या उल्लेगा, सो जगाम तो सिर्फ तभी दिया जा सकता है, अभी नहा। बीमारीने दिनोंमें नीलिमाने और मने उसने बहुत से निस्से हरेद्रने मुँहसे सुन है। दसराथ लिए सचमुच ही अपने जापको निस्स तरह क्लिी कर दिया जा सकता है,—समर्पित किया जा सकता है,—मुनते सुनते मानो उसकी तसगीर-सी पिच जाती थी सामन। मगयान्से प्राथना है कि उसपर कभी कोद आगत विपत न आने।”

ऊपरसे किसीने कुठ ता कहा, पर मन ही मन शायद समीने इस प्राथनामें गाय दिया।

कमलने पूछा, “नीलिमाका आन देस नहा रही हूँ ? गायद काममें

यन्त होंगी ?”

आगु बाबू ने कहा, “काम-काजी ठहरें, दिन-रात काम धंधेमें ही लगी रहती हैं, मगर आज सुना है कि सिर-दर्दसे बिस्तरपर पड़ी हैं। तथीयत शायद कुछ ज्यादा खराब है। नहा तो पटे रहनेका उनका स्वभाव नहीं। अपनी आग्रासे देने बगैर विश्वास नहीं किया जा सकता कि कोई आदमी लगातार इतनी सेवा — रतना परिश्रम कर सकता है।”

फिर धाण भर चुप रहकर कहा, “अधिकांशने साथ मेरी जान-पहचान आशेमें हुई। रोच बीचमें जाता-आता रहा हूँ। कितना सा परिचय है। फिर भी भाव सांचता हूँ कि ससारमें अपन-परायेका जो यत्रहार चल रहा है, वह कितना अघटीन है। दुनियामें अपना परया कोई नहीं। कमल, यह कोई नडो जानता कि समाग्य इस महासमुद्रके उहावम पन्कर कौन कहासे बहता हुआ पाम आ जाता है और कौन बहकर दूर चला जाता है।”

फिर उस अपरिचित स्त्री बलाने सिवा दानो ही समझ गये कि यह बात किसका लय करन और किस दुग्ने कही गइ है। आगु बाबू कुछ कुछ मानो अपने मन हां मन कहने लगे, “इस बीमारीसे उलनेने बादल ससारकी बहुत सी चीज मानो कुछ दूसरी ही तरहकी नजर आने लगी है। ऐसा लगता है कि क्या तनी स्त्रीचा-तानी बाँधा बाँधी और इतना भले-सुनेका वाद विवाद किया जाता है। क्यों मनुग्य अपने चारों तरफ बहुत-सी भूर्ला और बहुत से धोरताका जमा करके स्पेच्छासे अंधा बन रहा है। जब भी उसे बहुत युगाका अज्ञात सत्य हूँद निकालना होगा, तब कहीं वह सच्चे अर्थोंमें मनुग्य हो सकगा। जानन्द तो नहा, बल्कि निरानन्द ही माना उमकी इस सम्पना और भद्रताका अन्तिम लय बन गया है।”

कमल आश्रयसे उनकी तरफ देवती रही। यह बात नहीं कि उनकी बात का मतलब वह बिना किसी सग्यन समझ रही हो। उसे ठाँक ऐसा लगना था जैसे कि बुहरन राँच किसी आगतुक्का चहरा अस्पष्ट-सा दीवता हो, मगर पैरोंकी चाल पिलकुल परिचित हो।

आगु बाबू खुद ही रुके। शायद कमलकी विरिमत दृष्टिने उह अपनी तरफसे चला दिया, “तुम्हारे साथ मुझ और भी बहुत-सी बात करनी है कमल, किसी दिन फिर आना।”

“आऊगा । आज जाती हूँ ।”

“अच्छा । गाड़ी नीचे पड़ा है, तुम्हें वह पहुँचा देगा, इसीसे वामुदेवना छुट्टी नहा दी है । अजित, तुम भी साथ क्यों नहा चले जाते, लाटते वक्त तुम्हें आश्रमम उतारता आयेगा ?”

दोनों नमस्कार करके बाहर निकल आये । बला साथ-साथ गाड़ीतरफ जाइ, पोली, “आपने साथ रातचीत करनेका आज वक्त नहीं रहा, मगर अबनी किस रोज जायगी, मैं नया छोड़ूँगी ।”

कमलने हँसकर सिर हिलाते हुए कहा, “यह मेरा सौभाग्य है । लेनिन डर लगता है, परिचय पाकर वहाँ आपका मत न बदल जाय ?”

मोटरमें दोनों जनों पास पास बैठे । चाराहेमे मुटते वक्त कमलने कहा, “उस दिनकी रात भी ऐसी ही अँधेरी थी,—याद है ?”

“हाँ, याद है ।”

“और उस दिनका पागल्पन ?”

“सो भी याद है ।”

“मैं रानी हो गई थी, सो याद है ?”

अजितने हँसकर कहा, “नहा । मगर आपने जो व्यग्य किया था सो याद है ।” कमलने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, “व्यग्य किया था ? नहा तो ।”

“जरूर किया था ।”

कमलने कहा, “तो आपने गलत समझा था । रौर, उमे छोड़िए जाऊ तो व्यग्य नहीं कर रही ? —चलिए न, आज ही दानो जन चल द ?”

“धुत् । आप बड़ी शरार है ।”

कमलने हँसकर कहा, “शरार कैसी ? बताइए, मेरे कैसी गान्त सी गी खी कहों मिलेगी ? जवानक हुकम किया, कमल, चलो चल, आर मैं उस वक्त राजी होकर पोली, चलिए ।”

“लेनिन वद तो सिफ मजाक था ।”

कमलने कहा, “अच्छा, मजाक ही सनी, लेनिन बताइए, जवानक एसा क्या कसूर हो गया जा ‘तुम’ छोड़कर अब ‘आप’ कहना शुरू कर दिना है ? कितनी मुसीबतसे दिन काट रही हूँ, मला—आप ही लोगोंने कपटे सा सीकर किसी तरह पेट चला रही हूँ,—और आपने पास रुपयोंका गुमार

नहा,—पर एक दिन भी आपने मरी मुधि ली ? मनोरमा एसी तनलीपम पडल नो क्या आपसे रहा जाता ? देखिए, दिन रात भेहनत मजदूरी कर कर फितना दुबली हो गई हैं !” इतना कहकर जैसे ही उसने अपना गायों हाथ अजितने हाथपर रखा जैसे ही अजित चौक पडा और उसका सारा शरीर सिहर उठा । अक्षुब्ध स्वरमें उसने मुँहसे कुछ निरला ही चाहता था कि कमल सहसा अपना हाथ उठाकर चिल्ला उठी, “डायवर, रोको रोको, यहाँ पागल तानने पास कहाँ आ पड़ ? गाड़ी घुमा लो । अँधरेमें कुछ खयाल हा नहीं रहा ।”

अजितने कहा, “हाँ, तुमूर अँधरना ही है । तसली सिप यहा है कि चाहे टम्पर हजार अन्याय होता रू, पर बचारा प्रतिपाद नहा कर सक्ता । इस अधिभारसे यह उचित है ।” और यह हँस लिया । मुनकर कमल भा हँस दी, गला, “सो तो ठीक है । लेकिन न्याय विचार ही ससारमें सब कुछ नहा है । यहाँ अन्याय अधिचारके लिए भी स्थान है, इसीसे आजतक दुनिया चल रही है, नहीं तो न जाने वह कम्पनी कू गद होती ।—डायवर, गरा ।”

अजितने दरवाजा खोल दिया । कमल सटकर उतरकर गली, “अँधरका दशसे भी बत्तर एक और अपराध है अजित बानू, उसमें अन्ते जानेमें डर मालूम होता है ।”

इस दशारेपर अजित पीच उतरकर पास जा गटा हुआ । कमलने डायवर से कहा, “अब तुम घर जाओ, इह जानेमें अभी कुछ देर होगी ।”

“नो कैसे ! इतनी गतम मुझे गाड़ी यहाँसे सिन्गी ?”

गाड़ी चली गई । अजित गेला, “मुझे मालूम है, कोद भी इन्तनाम न हागा । मुझे अँधरेमें तीन-चार माल पैदल बत्तर हा जाना पन्गा । और अभी मैं आपसे पहुँचाकर आसानीसे घर जा सकता था ।”

“नहीं जा सकते थे । कारण, उगैर गिलाये मैं आपका उम जाश्रमना अधिश्चितताम नहा भेज सकता । चलिष्ट, आइए ।”

धरपर नौरानी आन बत्ती जलाये गट दंग रही थी, पुकारने ही उसने दरवाजा खोल दिया । ऊपर गसोई धरम जाकर कमलने उछी सुन्दर आत्मनको गिडात हुए अजितने बैठनेके लिए कहा । सामान सब तैयार था, स्त्रोत्र जलाकर कमलने रोड चला दी, और पास ही गैर गेली, “यसे ही और एक दिनकी गत बाद है ।”

“जरूर ।”

“अच्छा, उस दिनने साथ आज कहाँ क्या पक है, बता सकते हैं ? बताइये तो देग ?”

अजित कमरेमें इधर-उधर देखकर याद करनेकी कोशिश करने लगा कि कहाँ क्या था ।

कमलने हँसते हुए कहा, “उधर रात भर भी ढूँढक न बता सकगे । किसी दूसरी ही तरफ देखना पड़ेगा ।”

“किधर, बताइए तो ?”

“मेरी तरफ ।”

अजित सहसा मारे शरमने सजुचित सा हो गया । आहिस्तसे बोला, “एक दिन भी मने आपका मुँह अच्छी तरह नहा देखा । और सब देखा करते थे, पर मालूम नहीं क्यों, मुझसे देखते नहीं बनता था ।”

कमलने कहा, “ओराके साथ आपमे यही तो पत्र है । वे जा दख सने उसका कारण यह था कि उनकी दृष्टिमें मेरे प्रति सम्मानना भाव नहीं था ।”

अजित चुप रहा । कमल कहने लगी, “मने तय किया था कि जैसे भी होगा आपकी रोज निज़ालेंगी । मुझे आशा नहीं थी कि आज राबून् घर आज आपसे भेंट हो जायगी, पर गयोगसे जब भेंट हो गई तब जान लिया कि पकड ही लाऊँगी । भोजन कराना तो महन एक छोटा सा उपल य है, इसलिए भोजन कर चुकनेपर भी झुंठी नहीं मिलेगी । आज रातको मैं आपको कही भी न जाने दूँगी, इसी घरमें बंद कर रखूँगी ।”

“पर इससे आपकी फायदा क्या होगा ?”

कमलने कहा, “फायदेकी बात पीछे बतलाऊँगी, पर आप मुझसे ‘आप’ करते हैं, तो सचमुच ही मुझे यथा होती है । एक दिन ‘तुम’ कहके बोलते थे,—उस दिन मने निहोरा नहीं किया था, आपने ही इच्छासे कहा था । आज उसे बदल देने लायक कोई भी फुसूर मने नहा किया है । रुठकर अगर उत्तर न दूँ, तो आप ही कष्ट पायगे ।”

अजितने सिर हिलकर कहा, “हाँ, शायद पाऊँगा ।”

कमलने कहा, “‘गायद’ नहीं, निश्चयसे पायगे । आप आगरे आये थे मनोरमाके लिए । पर वह जब इस तरहसे चली गद तर करने सोचा कि अर

शेष प्रश्न

आप एक क्षण भी यहाँ नहा ठहरेंगे। मिन एक म ही जानती थी कि आप नहीं जा सकेंगे।—जच्छा, इस रातपर कि म आपनो प्यार करती हूँ, आप निद्राम करत ह ?”

“नहा, नहा करत।”

‘जरूर करत हूँ। इमते आपने जिल्लाप मेरो गहुत-सी नालिदा ह।”
अजितने कुनहल्ले साथ कहा, “गहुत-सी नालिदा? एक आध मुनाओगी भी?”
कमलने कहा, “मुनाऊँगी, इमलिए तो मने जाने नहा दिया। पहले अपनी बात कहती हूँ। और कोद चारा नहीं, इससे गरीबोंने कपटे सीजर अपनी गुजर करती हूँ,—यह सब मुझे सख है। पर इमलिए कि सक्कम पटी हूँ, यह कैसे सहा जा सकत है कि आपने भी कुस्ते सीजर दाम लें?”

“पर तुम निसीका दान तो लेती नहीं हो।”

“नहा, दान मैं निसीका नहा लेती,—यहॉतर कि आपना भी नहा। लेकिन दानके मिया क्या ससारम और देनेका कोद रास्ता खुला ही नहा। आपने आकर जोर देकर क्यों नहीं कहा कि कमल, यह काम म तुम्ह नहा करन हूँगा। मैं उसका क्या जवाब देती? हुदैयसे आज अगर मेरी मेहनत मचूरा करके गानेकी शक्ति जाती रहे तो फिर आपने जीते जी भी क्या मैं दर दर भीम माँगनी पहेंगी?”

इस ददभरी बातने अजितको याकुल कर दिया, उसने कदा, “यह नहा हो सकत कमल, मेरे जीते जी यह असम्भव है। तुम्हारे विपनमें मने एक दिन भी इस तरह नहा सोचा। अरु मा मानो मनमें यह बात पैन्ती नहीं कि लिस कामको हम सब जानते ह, यही तुम हो।”
कमलने कहा, “जोर लोग चाहे जो जात रह, पर आप क्या उहाँमने एक हूँ? उनसे ज्यादा कुठ नहा।”

इस प्रश्नका उत्तर नहा मिला। गायद अत्यन्त कठिन होकर काण्ण, और इसके बाद दोनों चुप हो रहे। गायद, दोनोंने यह अनुभव मिया कि दूसरेस पृष्ठनेकी ओश्या यह रात अपने ही पृष्ठनेकी ज्याग जरूरत है।
पितना सा रोधना था। तैयार होनेमें देर न लगी। रात-राते अजितने गम्भीर होकर कहा, “फिर भी, मजा यह कि पाग चाद कितना ही म्पया क्या त हो, तुम्हारा कमाइका जत हाथ पसारके गावे बगैर निसीको छुटकारा

मिलता, और तुम न किसीका लेती हो न किसीका ग्याती हो,—फोद सिर पटा कर मर जाय, तो भी नहा।”

कमलने हँसकर कहा, “आप ग्याते ही क्या हँ ? इसने जलावा आपने सि भी क्या पटका है ?”

अजितने कहा, “सिर पटकनेकी अच्छा बहुत बार हुआ है। और तुम्हारा ग्याता इसलिए हूँ कि जरूरदस्तीम तुमसे जीत नहा पाता। आज मैं अगर कहूँ कि कमल, आजसे मैंने तुम्हारा सारा भार अपने ऊपर ले लिया, यह उच्छ-वृत्ति जन मत करा, तो सम्भव है कि तुम काद ऐसी बात कह बैठो कि मेरे मुँहसे फिर दूसरा काद वाक्य ही न निकले।”

कमलने कहा, “यह बात क्या कही थी कभी आपन ?”

“शायद नहीं थी।”

“और मैंने सुनी नहीं वह बात ?”

“नहीं।”

“ता आपने सुनने लायक तरीकेसे नहीं कही। शायद, मन ही मन सिफ अच्छा ही की,—मुँहसे वह जाहिर नहीं हुआ।”

“अच्छा, मान लीजिए, आज ही अगर कहूँ ?”

“आर मैं भी अगर कहूँ कि नहीं ?”

अजितने हाथका कौर नीचे रखते हुए कहा, “यही तो मुश्किल है। तुम्ह एक दिनके लिए भी हम लोग समझ नहा सके। जिस दिन ताजमहलने सामने पहले देगा था, उस दिन भी जैसे तुम्हारी बात समझमें नहीं जाद, जैसे ही आज भी हम लोगाने लिए तुम ‘रहस्य’ ही बनी हुई हो। अभी तुमने कहा था कि मेरा भार संभाल ला और अभीकी अभी कह रही हो नहीं।”

कमल हँस दी, बोली, “ऐभी ‘नहा’ जरा आप भी कह दगिए न ? नहीं कि आज ता साया है, फिर अभी न साएँगे,—देखूँ, जैसे आपकी बात रहती है ?”

अजितने कहा, “रहगी कैसे ? जगेर खिलाये तुम तो छोडोगी नहा।”

परन्तु अपनी बार कमल नहा हँसी। शांत भावसे वाली, ‘आपने लिए मेरा भार उठानेका समय अभी नहा आया। जिस दिन आयेगा उस दिन मेरे मुँहसे भा ‘ना’ नहा निकलेगा। रात उदती जा रही है, आप खा लीजिए।”

शेष प्रश्न

“जाता हूँ। वह दिन कभी आयेगा या नहीं, उता सक्ती हो ?”
 कमलने सिर हिलते हुए कहा, “सो में नहा उता सक्ती। जगजग आपकी
 खुद ही एउ दिन खोज लेना पड़ेगा।”
 “इतनी गति मुझमें नहीं है। एउ दिन बहुत गोजा था, पर मिला नहीं।
 इस जागसे कि जगजग तुम्हींमें मित्रेगा, मैं हाथ पसारे बैठा रहूँगा।”
 इसने बाद वह चुन्चाप खाने लगा। थोड़ा देर बाद कमलने पूछा, “इस
 घरके होने हुए भी जचानक हरे-दूने आश्रममें रहने क्यों पहुँचे ?”
 अजितने कहा, “कहीं न-कहीं तो पहुँचना ही था। तुम खुद ही जानती हो,
 जागर छोड़कर मैं कहा जा नहीं सकता था।”

“तु जानती हूँ न ?”

‘हाँ, जानती तो हो ही।’

“और यही अगर सच हो, तो सीधे मेरे पास क्यों न चले आये ?”

“अगर आता, तो सचमुच हा जगह दे देती ?”

“सचमुच तो आये नहीं। नैर, इसे छोड़िए, पर हरे-दूने आश्रममें तो

अमुविधाआका जोर-झोर नहीं, —यही उनकी साधना टहरी, —मगर इतनी
 अमुविधाएँ आप जैसे सह लेते ?

“मादरुम नहा, कैसे सह लेता हूँ, पर आज मुझे उन सब बातों का मनमें
 गयाल भी नहीं आता। अब तो मैं उहामेंने एक हा गया हूँ। हो सक्ता है कि
 यहा मेरा भविष्यका जगजग हो। अतक चुप भी नहीं बैग था। आत्मी
 भेनकर जगह-जगह आश्रम कायम करनेका कोशिश करता रहा हूँ—रीन
 चार जगहसे उम्मीद भा मिली है, —नी चाहता है, एउ बार खुद जाऊ
 घूम जाऊँ।”

“यह सगह आपकी दो रिस्ने ? हरे-दूने गायद ?”

अजितने कहा, “अगर दी भा हो तो निष्पाप होकर हा दा है। देनाका
 सननाग जिन लोगाने अपनी आँगोंमें देना है, —दारिद्र्यना निन्दु दुग,
 धर्महीनताकी गहरी ग्लानि, कमजोरोमें उत्यत दयनाय भाक्ता—”

कमल गीचमें ही गोल उठी, “हरे-दूने यह सब देना होगा, मैं इनकार नहा
 करती, पर आपने निरु तो ये सब मुनी हुद बात ह। अपना आँगोंसे तो
 आपका कभी कुछ देनेना मौका मिला नहीं ?”

“पर रात तो ये सब ठीक है ?”

“सच नहा है, भा म नही कहती, पर उसन प्रतिनारका उपाय क्या इन आश्रमाकी प्रतिष्ठा है ?”

“नही क्या ? भारतरपन मानी सिफ उत्तरमें हिमालय और ताना ओर समुद्रसे घिरा हुआ थोडा गा भूखण्ड ही ता नहा ? यहाँकी प्राचान सभ्यता, यहाँकी धार्मिक शिक्षता, यहाँकी नैतिक पवित्रता, न्याय निष्ठाकी महिमा,— यही तो भारत है। इसीमे इसका नाम है देवभूमि, इस अत्यन्त हीन दशासत बचानेके लिए तपस्याके सिवा और क्या माग है ? ब्रह्मचर्य व्रतधारा निष्कलक बच्चाके लिए जीवनमें साधन होने और धन्य होने—”

कमलने उस रोक दिया, बाल उठी, “आप जीम चुन हों ता हाथ मुँह धोकर उठिए, उस कमरेमे चलिए—उठिए, अब नहा ।”

“तुम नही राओगी ?”

“म क्या दोनों वक्त राती हूँ जो राऊँगी ? चलिए ।”

“पर मुझ तो आश्रम वापस जाना है ।”

“नही, नहा जाना है, उस कमरेमे चलिए । बहुत सी बात आपसे मुझ सुानी है ।”

“अच्छ, चलो । लेकिन बाहर रहनेका हमारा नियम नहा है—नितनी हा रात क्या न हो, आश्रममे वापस जाना ही पढ़गा ।”

कमलने कहा, “वह नियम दीक्षित आश्रमवासियाके लिए है, आपन लिए नहा ।”

“मगर लोग क्या कहगे ?”

इस उतलेगमे कि लाग क्या कहत है, कमलना धैय छूट जाता है । उसने कहा, “लोग सिफ आपसी निंदा ही करगे, रशा नहा कर मरते । जा रना कर सकेगी उसने निन्हा आपकी कोई डर नही । आपने ‘उन लाग’ मे म कहा ज्यादा आपकी अपनी हैं । उस दिन आपने साथ चलनका कहा था, पर मैं जा नहा सकी,—आज दगैर चले मेरा काम नही चलेगा । चणिए उस कमरेमे, मुझमे कोई डर नही । मैं उननी जातिकी नही हूँ जा पुन्यन भोगकी ही वस्तु ह । उठिए ।”

उस कमरेमे ले जाकर कमलने अजितन लिए बिलकुल नये कपडास पलग-

शेष प्रदन

पर सुन्दर निस्तर कर दिये और अपने लिए जमीनपर मामूली सा मिठौना कर लिया। फिर उठकर बाहर जाते हुए उसने कहा, "मैं अभी आतो हूँ। दसरे मिनट लगगे, मगर आप सो मत जाइएगा।"

"नहा।"

"नहीं तो मैं झकझोरकर जगा दूँगी।"

"उसकी जरूरत नहीं होगी कमल, नाद मेरी आँखोंमें उठ गई है।"

"अच्छा, उसकी पराशा हो जायगी।" कहकर वह कमरेसे बाहर चली गई। रसोदरे ने तब यथास्थान उठाके रचना, जूट रतन रण्टेमें धरना, घर गृहस्थीके ऐसे ही सब छोट मोटे काम जो बाकी थे उन्हें उसने पूरा किया, तब जाने कहा उसकी छुट्टी हुई।

सुने कमरेमें कमलन हाथमें उठे जतनसे निष्ठाद गुप्त सुन्दर शय्यापर बैठ कर सहसा उसने एक गहरी साँस ली। इसका खास बौद गहरा कारण नहीं था, किन्तु मनके अंदर 'अच्छा लगने'की एक वृत्ति थी। हो सकता है कि उसमें थोड़ा-सा कुदृष्ट भी मिला हुआ हो, पर आग्रहका उत्ताप नहीं था। मादम हाता था कि माना एक दान्त आत्मका मधुर स्वप्न सुपनेसे उसने सारे शरीरमें फैल गया है।

अजित धनाढ्य घरकी सत्तान है, जससे विलासने अन्दर ही बह इतना बना हुआ है, परन्तु दरदरे ब्रह्मचर्य-आत्ममें भरती होनेसे मादसे गरीबी और आत्म निग्रहने तुम मागस भारतीय वैशेष्यकी मर्मोपलक्षितवा एकाग्र साधनाने उधरसे उसकी दृष्टि हटा दी है। गहसा उसकी नजर तर्कियेपर पड़ी, देगा कि उसकी ग्लोबीपर चारों तरफ पीले रंगमें छोटे चद्रमालिकाएँ फूल कंदे हुए हैं। मिठौनेकी चादरना जा कोना नीचे लटक रहा है उसपर सफ़द रेशम से बनी हुई निष्ठा अज्ञात लताकी तसरीर बनी हुई है। जरा-सी कारगरी था,—मामूली बात, जान जाने और कितने आदमियोंपर घर हागी। पुरमतेके बत कमलन इसे अपने हाथसे काला है। देगकर अजित मुग्ध हो गया। हाथस उभे हिला हुआ रहा था कि कमलन बाहरका काम निरगकर कमरमें आ पड़ी हुई। अजित उसने चेहरेकी तरफ देगकर गाल उठा, "बाह, बहुत सुन्दर है!"

कमलन आभयने स्वरमें कहा, "क्या सुन्दर है! यह क्या?"

“हाँ, आर यह पीले रंगने फूल । तुमने अपने हाथसे काटे हैं, न ?”

कमलने हँसते हुए कहा, “गुन पृञ्ज । अपने हाथसे नहा काटती तो क्या राजारमे कारीगर बुलाकर तैयार कराती ? आपको चाहिए ऐसा ?”

“नहीं, नहा, मुझे नहीं चाहिए । मैं क्या करूँगा ?”

उसने दम आकुल और सलज इनकारसे कमल हँस पडी, बाली, “आश्रम म जाकर इसपर साइएगा और कोद पृठे तो कहिएगा कमलने रात भर जागकर दमे बना दिया है ।”

“धुत् !”

“धुत् क्यों ? ये रात चीज काद अपने लिए थोड़े ही बनाता है, दूसरे ही किसी आदमीन लिए बनाइ जाती है । तफलीफ सेलकर जो फूल काटे थे सो क्या अपने सानेने लिए ? एक न एक दिन कोइ न कोइ आता ही, उसीने लिए ये चीज उठाने रग दी थी । सबरे जन आप जाने लगगे तत्र ये आपने माथ रग दूँगी ।”

अबकी गार अचित्त भी हँस दिया, गेला, “अच्छा कमल, तुमने क्या मुझे विलकुल ही भ्रम समझ रगा है ?”

“क्यों ?”

“क्या इस बातपर भी म विश्वास कर रूँ कि तुमने मेरी ही याद करने ये रात चीज तैयार की थी ?”

“क्यों नहा करेगे ?”

“इसलिए कि रात सच नहा है ।”

“पर अगर कर्हे कि म सच कह रही हूँ, ता विश्वास करगे, कहिए ?”

“जरूर करूँगा । मगर तुम्हार भजाकनी कोइ हद नहीं,—कहा भो तुम्ह द्विचकिचाहट नहीं होती । उस दिनकी मात्रपर घुमनेकी रात याद आते हा लज्जानी हद नहीं रहती । यह बात दूसरी है, पर इसना मुझ भरोसा है कि मनाकने सिनाय और किसी रातने लिए तुम झूठ नहीं गेलोगी ।”

“अगर म कर्हे कि गाम्नाम मने मजाक नहा किया, विलकुल सच कह रही हूँ, तो विश्वास करगे ?”

“जरूर करूँगा ।”

कमलने कहा, “अगर करे तो आज :

बात ही कहूँगी । तर

तक गजेन्द्र नहीं आया था, अयात्, आश्रमसे निकलकर तबतक उसने मेरे यहाँ आश्रम नहीं लिया था। मेरी भी दशा थी। आप लोगोंने मिलकर जब मुझे घृणासे दूर कर दिया,—इस परदेशमें जब किमाफ पास जाकर पट होनेका उपाय नहा रहा, तबता ही,—उन गम्भीर दुःखके दिनाका ही यह काम है। गायद मुझे कभी मालूम भी न होता कि उस दिन ठीक किसी याद करके ये पूल काटे थे।—लगभग भूल ही चुकी थी, मगर आज फिर विद्यत वक्त भवानक ऐसा लगा कि नहा-नहा, उसपर नहा,—जिसपर कोई किसी दिन सो चुका है उसपर मैं आपकी हगिज नहीं मुला सफती।”

“क्यों नहीं मुला सफती ?”

“मादूम नहीं क्यों, जैसे कोई धका देकर यह बात कह गया हा।” कहकर वह क्षणभर मौन रही और फिर बोली, “उसी समय सप्ताह इन चीजोंकी याद आद कि ये एकसम ररती ह। आप तब बाहर हाथ मुँह धो रहे थे। इस तरह कि आप शठमे आ पहुँचगे, मने जदी जन्दी रह निकालकर पिठाना शुरू कर दिया। तब मर जाम पहले-पहल यह पथाल आया कि उस दिन किसी याद करके रात भर जागकर यह पूल पत्ती बल कानी थी वर आप ही थ।”

अजित कुछ बोला नहीं। सिर्फ एक रगीन आभा उसर चेहरेपर दिवाइ था और उसी क्षण गिलीन हा गइ।

कमल खुद भी कुछ दर चुप रही, फिर बाला, “चुप मारे क्या सोच रहे ह, बतादए न ?”

अजितने कहा, “सिर्फ चुप ही मार हँ, कुछ सोच नहीं रहा हँ।”

“इसकी वजह ?”

“वह ? तुम्हारी बात सुनकर मरी छातीक भीतर मानो आँधी-सा उठ खडी हुद ह। सिर्फ आँधी ही,—न ता आया आनद और न बँधी आशा ही।”

कमल चुपचाप उसकी तरफ लगा की। अजित धार धीरे कहने लगा, “कमल, एक किसी कहता हँ, सुनो। मेरी माँका एक बार हमारे यह दरता राधाकम्पनीने पूजावाले कमरमें मूर्ति धारण करके दशन दिये और माँक हाथसे भाग लेकर सामने बैठकर ग्याया। यह उनकी अपनी आँवों देगा रात थी, फिर भा घम हम लोगोंमें कोई उसपर विश्वास नहीं कर सता। मने समझा कि भानो होगा, मगर हमारे इस अविश्वासका दुःख उहें मरत दमतक बना रहा।

आज तुम्हारा बात मुनकर मुझे यही बात याद आ रही है। मैं जानता हूँ कि तुम ढ़ंगी नहा कर रही हो, मगर फिर भी, मरी माँकी तरह तुमसे भी कहीं बड़ा मारी गलती हो गई है। मनुष्यके जीनाम ऐसा बहुत-सा समय चला जाता है जब वह अपन मध्य-धम अँधरम रहता है। फिर शायद नहसा एक दिन आँख खुलती है। मेरा भा यही हाल है। यां ता मैं अतन्त दुनियाम और भी बहुत जगह घूमता रहा हूँ, लेकिन सिफ इस जागरम आकर ही मने टीनसे अपनेना पहचाना है। मेरे पास है तो सिफ रुपया है और वह भी पिनाकी कमादना। इसक सिना ऐसी पाद भी चीज मेरी अपनी नहीं, जिसक लिए तुम मरी गैर जानवारीम मुझम प्रेम कर सकती।”

कमलने कहा, “रुपयाकी कोई फिर त कीजिए आप। आश्रम-वासियोंका जब कि एक मरतना उसका पता चल गया है तब उसका सब व्यवस्था ब ही कर डालेंगे।” कहने-कहत वह जरा हँसी और फिर बोली, “लेकिन ओर सब तरफसे आप ऐसे नि स्व हँ सा इसकी खबर मैंने क्या पदले खाक पाइ थी ? अगर पाद होती तो क्या कभी प्रेम करने आती ? इसक सिना आपके स्वभावकी भलाइ बुराइ समझनेका वक्त हा कहाँ मिला था मुझे ? मनमे सिफ एक सद्दह था जिसका पता नहीं चल रहा था, पर अभी अभी दसेक मिनट हुए, अचेली बिस्तरके सामने गडी थी कि अकस्मात् काइ ठीक तब मेरे कानम आकर मुना गया।”

अजितने गहरे आश्चर्यक साथ पृछा, “सच क रहि हो ? सिफ दसेक मिनट हुए ? पर अगर सच हो तो यह पागल्पन है।”

कमलने लहा, “पागल्पन ता है हा। दसीते तो आपने कहा था कि मुझ और कहीं ले चलिए। ऐसी भोर ता मने माँगो नहा कि ब्याह करके मेरे साथ घर गृहस्थी कीजिए।”

अजित अत्यन्त कुण्ठित हो गया, बोला, “भीग क्यों कहती हो कमल, यह भीग माँगना नहीं है, यह तुम्हारा प्रेमका अधिकार है। मगर अधिकारका दावा तुमने नहा किया, माँगी परी चीज जो पानीक बुदबुदेकी तरह जापायु है, और उसीकी तरह मिथ्या।”

कमलने कहा, “हो भी सकता है कि उमकी आयु कम हो, मगर इससे वह निराला नहीं होगी ? आयुकी दीघताको ही जो सत्य समझकर जकड़े रहना चाहते

हैं, मैं उनसे नहीं हूँ।”

‘पर इस आनन्दमें तो कुछ भी म्यायित्व नहीं, कमल !’

‘न रहे। लेकिन जो लोग, इस डरते कि असली फूल जन्दीसे सूख जाते हैं, देखते रहनेवाले नकल फूलोंका गुच्छ बनाते और फूलदानीमें सजाकर रखते हैं, उनके साथ मेरे मतका मेल नहीं ग्यता। आपसे पहले भी मने एक बार टीक यही बात कही थी कि किसी भी आनन्दमें म्यायित्व नहीं है। म्यायी हैं मिय उस आनन्दका म्णम्यागी दिन और वे दिन ही ता मान-जीवनके चरम मचय हैं। उस आनन्दको बाँधने चले कि वह मरा। हमीसे म्याहम म्यायित्व ता है, पर उसका आनन्द नहीं। दु सह म्यायित्वकी माटी मसी गलेमें बाँधकर वह आनन्द आत्महत्या करके मर मिटता है।’

अजितको याद आया कि ठीक यही बात उसने पहले भी कमलके मुँहसे सुनी थी। मिय मुँहकी बात ही नहा है यह,—यही उसका अन्त करणका विश्वास है। मिवनायने उससे म्याह नहा मिया, मित्तु धाग्या दिया था, इस बातकी लैकर एक दिनके लिए मा उसने कोई मियायत नहा की। क्या नहीं की ? आज यह पहले पल्ल अजितने मिया मिसी मशयके समझा कि इस धालेम कमलकी अपनी भी राय थी। समार मरको माना जातिका इस प्राचीन और पवित्र मस्कारके प्रति इतनी जबरदस्त अमशाने कारण अजितका मन धिकारसे मर उठा।

क्षणमर मौन रहकर वह बोला, “तुम्हारे सामने मव करना मुझे शोभा नहीं देता। पर तुमसे अब मैं काह बात मियाऊँगा नहा। ये लोग कहते हैं कि मसारम कामिनी काञ्चनना म्याग ही पुरुषना सबम बडा पुरुषाय है। बुद्धिकी तरफमे मैं इसपर विश्वास मरता हूँ और यह भी मानता हूँ कि इस साधनाम म्मिदि प्राप्त करनेकी अपेक्षा और कोई महत्तर वस्तु नहीं। काञ्चन मेरे पास काफी है, उसकी मुझे इच्छा नहा, परन्तु जब म सोचता हूँ कि मुझे अपने सम्पूर्ण जीवनम न को प्यार करनेवाला मिया और न कोई मिल्नेगा, तब मेरा हृदय मानो सूख जाता है। और डर लगता है कि हृदयकी इस कमजोरीकी शायद म मरते दमतर न जीत सकूँगा। माग्यमें यही अगर मिसी दिन घग, तो मैं म्माम्रम छोडकर कहीं चला जाऊँगा। पर तुम्हारा आधान ता उससे भी बत्कर मिया है। उस पुकारका मैं अनुकूल जवाब न दे सकूँगा।”

“इसे आप मिथ्या क्यों कह रहे हैं ?”

“मिथ्या तो है ही। मनोरमाका आचरण भगवत आता है, क्योंकि वास्तवमें कभी उसने मुझे प्यार नहा किया, किन्तु शिवनाथन प्रति शिवानीका प्यार तो मैंने अपनी आँपासे देगा है। उस दिन माना उसकी मोह सीमा ही नहीं थी, पर आज उसका निशानतन मिट गया है।”

कमलने कहा, “आज यह अगर मिट ही गया हो, तो उस दिनका क्या सिफ मेरा छल ही आपकी निगाहमें आया था ?”

अजितने कहा, “सो तो तुम्हीं जानो, पर आज मुझे लगता है कि नाराक जीवनमें इससे बचकर मिथ्या ओर कुठ है ही नहा।”

कमलकी दृष्टि प्रसर हो उठी, उसने कहा, “नारी-जीवनन सत्यासत्य निणयका भार नारीपर ही रहने दीजिए। उसन निणयका दायित्व पुरुषको लेनेकी जरूरत नहा—न मनोरमाका और न कमलका। इसी तरहसे ससारमें न्याय चिरकालसे मिडभित हाता आ रहा है, नारी असम्मानित होती रही है और पुरुषका चित्त मफीण और कल्पित होता गया है। इसीसे इस झूठ मामलेका आजतक फैसला नहा हुआ। अविचारसे सिफ एक ही पक्ष क्षतिप्रस्त नहीं होता अजित बाबू, दोनों पक्षोंका समनाश हाता है। उस दिन शिवनाथने जा कुछ पाया था, दुनियाक बहुत कम पुरुषोंक भाग्यमें उतना बदा होता है पर आज वह नहीं है। यह तक उठाकर कि क्यों नहा है, पुरुष अपने भोट हाथमें मोटा डण्डा घुमाकर शासन भले ही कर ले, पर उस पा नहा सक्ता। उस दिनका होना जितना बडा सत्य था, आजका न होना भी ठीक उतना ही बडा सत्य है। क्योंकि शठताकी पत्नी गुदडी आढाकर इसे टक देनमें शरम आती है, इसी बजहसे पुरुषने विचारसे यह हा गया नारी जीवनका सत्रसे बडा मिथ्या ? क्या इसी सुत्रिचारकी आशासे हम आप लोगोंका मुँह ताका करती हैं ?”

अजितने जवाब दिया, “मगर उपाय क्या है ? जो इतना धणम्यायी है, इतना धणभगुर है, उसे इससे ज्यादा सम्मान मनुष्य देगा ही क्या ?”

कमलने कहा, “देगा नहा, यह मैं जानती हूँ। हमार आँगाक किनार जा फूल खिलते हैं उनका जीवन एक आकसे ज्यादा नहा। उससे बल्कि वह मसाला पीसनेका मिल-लोट्टा कहीं ज्यादा टिकाऊ है,—कहा ज्यादा दीपस्थायी है। सत्यकी जाँचना इससे ज्यादा मजबूत माप दण्ड आप लोग और पा ही कहाँ

सकते हैं !'

“कमल, यह युक्ति नहीं है, यह तो सिर्फ गुस्सेकी रात है।”

“गुस्सा किस बानसों अजित नानू ! सिर्फ स्थायित्व के ही जिनका कारोबार है, वे इसी तरह नीमत आँसू करते हैं। मेरे जाहानपर जो आपसे 'हाँ' कहते नहीं आना, उसकी जड़म भी यही सशय है। दम्तगत करके जो चिरकालके लिए बंधन नहा लेना चाहती उसपर आप विद्वान्त करके निम तरह ! फूलको जो नहा जानता उसने लिए वह मिल् लोदा ही सयस उदा सत्य है, क्योंकि उस सिल्लोडेन सयसतर शड जानेकी जाशरा नहीं है। फूलकी आयु मिल् एक छाकनी है और सिल लोदा हमेशाके लिए है। रगतघरकी जम्बरतने मुताबिक वह हमेशा रगत-रगतकर मसाला पास दिया करेगा,—रोटी मिल्नेके लिए तगराकाका उपकरण जा ठहरा वह, उसपर भ्येसा मिया जा सकता है। उसने न हानसे ससार बम्वाद हो जायगा”

अजित उसमें मुँहकी तरफ देखता हुआ बोला, “यह व्यंग्य किसलिए कमल ?”

कमलके कानातरु शायद यह प्रश्न पहुँचा ही नहा, वह मानो अपने आप ही कहने लगी, “मनुष्य यह समझ हो नहीं पाता कि हृदय लोहेसे बना नहा होता,—इस तरह निश्चित निभयतासे उसपर सारा मोक्षा नहा लोदा जा सकता। उसमें दुःख न होता हो मो रात नहा,—पर यही हृदयका धम है, यही उसका सत्य है। फिर भी यह रात नहीं भी नहा जा सकती और न मानी हा जा सकती है। इससे नगर अनीति ससारमें और क्या है ? इसीसे तो किसी की समझम न आया कि शिशुनाथकी जैसे म सयान्त परणसे धमा कर सनी हैं ? रो-शकर यौवनमें लोगन उनका समझम जा जाता, पर यह उनसे नहीं सहा गया अरुचि और अरहेलनासे सारा मन उनका नहुआ हो गया। पेडने पत्ते सुरवेने शड जाते हैं और उनके धतकी नये पत्ते आकर भर देते हैं यह तो हुआ मिथ्या आर बाहरकी लता मर जातेपर भी पेडसे लिपनी रहता है,—कसने चिपनी रहती है, यह हो गया सत्य ?”

अजित एक मनने मुन रहा था, उसकी रात सतम होते ही एक गहरी सॉन छोडकर बोला, “एक रात हम लाम अक्सर भूल जाया करते हैं कि असलमें तुम हमारी अपनी नहीं हो। तुम्हारा रूज, तुम्हारा सस्कार, तुम्हारी सारी शिक्षा विदशनी है। इसने प्रचण्ट सधातकी बाबर तुम किसी तरह ऊपर उठ नहीं

सक्तीं और इसी जगह हमारी तुम्हारे साथ निरन्तर गन्त होती है। रात बहुत हो गई कमल, इस निष्फल हागड़ेको बन्द करो।—यह आदम तुम्हारे लिए नहीं है।”

“कौन-सा आदम ! आपसे ब्रह्मचर्य आश्रमना ?”

इस तानेरी चोटसे अजित मन ही मन गुस्सा हो गया, बोला, “अच्छा, सो ही सही। लेकिन इसे तुम नहीं समझोगी कि इसका गूढ तत्व विदेशियोंके लिए नहीं है।”

“जापकी शागिर्दी करनेपर भी नहा।”

“नहीं।”

अरकी कमल हँस पड़ी, मानो अरब वन पहलेशी रही ही नहीं। बोली, “अच्छा, यह तो बताइए कि उन साधुओंके अड्डेमेंसे जापका नाम कैसे कबूचा सकती हूँ ? वास्तवमें यह आश्रम मेरी आँखना मूँटा बन गया है।”

अजित विस्तरपर पड़ रहा, बोला, “रात्रेद्रको जुलाकर तुमन अनायास ही जगह दे दी।—तुम्हें कुछ भी हिचकिचाहट न हुई,—क्या ?”

“हिचकिचाहट क्यों होती ?”

“इन सब बातोंकी तुम परवाह ही नहीं करती क्या ?”

“क्या परवाह नहा करती ?—आप लागान मतामतकी ?—सो तो नहा करती।”

“अपने सम्बन्धमें भी शायद कभी किसी बातसे डरती नहा ?”

कमलने कहा, “यह तो नहीं कह सकती कि कभी डरती ही नहीं, पर ब्रह्मचारीसे डर किस बातना ?”

“हूँ।” कहके अजित चुप हो गया।

फिर कुछ देर बाद एकाएक बोल उठा, “बेंचुआ मिट्टीने नीचे अँधेरेमें रहता है, वह जानता है कि बाहरके उजाटेमें निरालनेमें उसका उचना मुद्रिणल है,—उसे लील जानने लिए बहुतसे मुँह पाये फिर रहे है। छिपनेसे सिवा आत्म रक्षाना और कोण उपाय उसे मालूम नहा। पर तुम जानती हो कि आदमी बेंचुआ नहा, यहाँतक कि औरत होनेपर भी नहीं। शास्त्राम लिखा है, अपने स्वरूपको जान लेना ही परम शक्ति है,—और तुम्हारा यह अपना स्वरूप ज्ञान ही तुम्हारी असल शक्ति है,—क्यों है न ठीक ?”

कमल कुठ गली नहा, चुप रही ।

अजितने कहा, “स्त्रियाँ जिस चीजको अपने इहजीवनका सख्त समझती हैं, उसपर तुम्हारी ऐसी एक उद्दज उल्लासिनता है कि चाहे काह नितनी ही निन्दा किया करे, वह तुम्हारे चाय तरफ आगकी चहारदीवारी बनकर प्रतिक्षण तुम्हें ग्नाया करती है । तुम तब पहुँचनेके पहले ही वह निन्दा खुद जलकर भग्म हो जाती है । अभी-अभी तुम मुझसे कह रही थीं कि जो पुरुषके भोगकी वस्तु है उनकी जातिनी तुम नहीं हो । आजकी रातमें तुम्हारे साथ आमने सामने बैठकर उस बातका अर्थ स्पष्ट होता आ रहा है । मैं यह भी समझ रहा हूँ कि लोगोंकी निन्दा प्रशंसाकी अज्ञा करनेकी हिम्मत तुम्हें कहाँसे मिला करती है ।”

कमलने कृत्रिम आश्चर्यसे मुँह ऊपर कर कहा, “आपको हुआ क्या है अजित बाबू, रातें तो आज बहुत कुछ ज्ञानवानाकी-सी कर रहे हैं ?”

अजितने कहा, “अच्छा कमल, सची बताओ, तुम्हारे लिए मरा मतामल भी क्या और सजानी तरह ही तुच्छ है ?”

“पर यह बात जानकर आप क्या करेंगे ?”

“कमल, अपनेको शक्तिमान समझकर मैंने कभी तुम्हारे आगे घमण्ड नहीं किया । वास्तवमें भीतर भीतर मैं जितना कमबोर हूँ उतना ही असहाय भी । किसी कामको ओरसे कर डालनेकी ताकत ही नहा मुझमें ।”

कमल हँसते गली, “सा तो मैं आपसे बहुत ज्यादा जानती हूँ ।”

अजितने कहा, “मुझे क्या लगता है जाननी हो ? लगता है कि तुम्हें पाना जितना सरल है, गँवा देना भी उतना ही आसान है ।”

कमलने कहा, “यह भी मुझे मालूम है ।”

अजित अपने मन ही मन सिर हिलाकर बोला, “यही तो मुश्किल है । तुम्हें आज पा लेना ही तो सर कुल नहीं है । धर दिन अगर इसी तरह गँवा देना पडा तो क्या होगा ?”

कमलने शान्त कण्ठसे कहा, “कुठ भी न होगा, उस दिन गँवाना भी ऐसा ही सहज हो जायगा । जिनके दिनतक पास रहूँगी, उतने दिन आपको वही चिया सिखाया करूँगी ।”

अजित भीतरसे चारु पडा । बोला, “पिलायतमें रहते हुए मैंने देखा है कि वहाँवाले नितनी आसानीसे,—कितने मामूली कारणासे हमेंगाने लिए निन्दित्र

हो जाया करते ह। मनम सोचता हूँ, क्या उह जरा भी चोट नहा लगती ? और यही अगर उनके प्रेमना परिचय है तो वे सम्यताका गव कैसे किया करते हैं !”

कमलने कहा, “अजित बाबू, गहरसे अरुवारोंमें वह जितना सहज दीखता है, असलमें वह उतना सहज नहीं है। मगर फिर भी, मैं तो यही कामना करती हूँ कि नर नारीका यह परिचय ही किसी दिन जगतमें प्रनाश और हवाकी तरह सहज-स्वाभाविक बन जाय।”

अजित चुपचाप उसके मुँहकी तरफ ताकता रह गया, कुठ बोला नहीं। उसने बाद आहिस्तेसे दूसरी तरफ मुँह फेरफर लेते ही, मादूम नहीं क्यों, उसकी आँखोंमें आँसू भर आये।

शायद कमल ताड गई। उठकर वह पलगने सिरहानेके पास जा बैठी और उसके माथेपर हाथ फेरने लगी, मगर सान्त्वनाका एक शब्द भी उसने मुँहसे नहीं निकाला।

सामनेकी खुली हुई पिडकीसे दिराइ दिया कि पूथना आकाश स्वच्छ होता आ रहा है।

“अजित बाबू, सोनेका अरु शायद समय नहीं रहा।”

“नहीं, अब उठता हूँ।” कहकर वह आँसू भीचता हुआ उठकर बैठ गया।

२२

आशु बाबूने शायद अपने पिधाताके आगे भी कभी इससे ज्यादाका दावा न किया होगा कि वे ससारके साधारण आदमियोंभसे एक ह। जैसे शान्ति आनन्दके साथ उहोंने अपनी बडी भारी पैतृक धन-सम्पत्तिको ग्रहण किया था वैसे ही अपने पिराट्ट देह मार ओर उसने साथी बात रोगको भी साधारण दु खके रूपमें स्वीकार कर लिया था। और इस सत्यको उहोंने सिफ बुद्धिसे ही नहीं, किन्तु, हृदयसे भी अनुमन किया था कि ससारके सुख दु ख पिधाताने केवल उहाको लभ्य करन नहा गड़े हैं तन्कि वे अपने नियमानुसार हुआ करते हैं, और इसनी प्राप्तिने लिए भी उह कोइ तपस्या नहीं करनी पडी,—उनमें यह बात स्वाभाविक सस्कारके रूपमें आइ है। उस दिन, जिम

दिन कि आकस्मिक स्त्री वियोगनी दुष्टनासे सारा ससार उनका दृष्टिमें फीका और सूखा दिग्गद् दिया था, जैसे उन्होंने अपने भाग्य देवताको हजार धिकारोंसे लालित नहीं किया, वैसे ही आज भी जब कि उनकी अत्यन्त स्नेहकी पूर्वी मनोरमाने उनकी तमाम आशा-वामनाओंमें आग लगा दी, वे सिर धुन धुनने रोने नहीं बैठे। शोभ और दुःसह नैराश्यने बीच भी उनके मनम न जाने कौन मानो अत्यन्त परिचित कण्ठसे बार-बार कहता रहा कि यह ऐसा ही होता रहता है, ऐसे बहुत दुःख मनुष्योंके भाग्यमें बहुत बार आये हैं। ऐसे ही ससार चलता है। इस सुख दुःखकी परम्परामें कोढ़ नवीनता नहा है,—यह उतनी ही सनातन है जितनी कि सृष्टि। उपनते हुए शोककी लहरोंको फिरसे नवीन बनाने और ससारमें उन्हें पैला देनेमें न तो कोढ़ पीछप है, और न इसकी कोढ़ जरूरत ही है। इसीसे, सब तरहके दुःख अपने आप गान्त होकर उनके भीतर चारों तरफ ऐसी एक स्निग्ध प्रसन्नताकी घेष्टनी बना लेते हैं कि उसने भीतर पहुँचते ही सबका सब तरहका बोझ मानो अपने आप ही हल्का और अकिञ्चित्कर हो जाता है।

इसी तरह आगु बाबूकी सारी जिन्दगी मीठी है। आगरम आकर अनेक उलट-पट्टोंके बीच मी उसमें कोढ़ फर नहीं आया, पर इधर कइ दिनोंसे इसी निस्मरा कुठ फर्क-सा लोगोंकी निगाहमें आने लगा है। अकरमात् देखनेमें आता कि उनके आचरणमें धैर्यनी कमी अधिकाश स्थानोंपर दमी रहना नहीं चाहती। मालूम होता है कि गतवीतम अफारण ही रूपापन आ जाता है, यहाँतक कि नीकर चाकरोतकी उनका कोढ़-कोढ़ मन्तय तीष्ण और अद्भुत-सा सुनाह पड़ता है। पर ऐसा क्यों हो रहा है, यह भी सोच निकालना मुश्किल है। रोगकी ज्यादातीम भी उनमें ऐसी विकृति आ जाना अविश्वास्य मालूम देता, फिर भी अब व जल्ते हो गये हैं। परन्तु कारण कुछ भी क्यों न हो, जरा ध्यानसे देखा जाय तो मालूम होगा कि उनके अन्तस्तलम मानो आग जल रही है और उसनी चिनगारियाँ कमी-कमी गहर प्रकट हो जाता है।

आज तक उन्होंने साफ-साफ जाहिर तो नहीं किया, पर मालूम होता है कि अब उनने आगरेमें रहनेके दिन खतम हो गये। शायद जरा और स्वस्थ होनेकी देर है। उसने गद सहसा जैसे एक दिन यहाँ आ पहुँचे थे वैसे ही अबानक एक दिन चल देंगे।

शामने वक्त आजकल बहुतसे पदाधिकारी प्रगाली सञ्जन मुलाकात करने और राजी-खुशी पृष्ठने आ जाया करते हैं। सखीक मजिस्ट्रेट साहब, राय बहादुर, सदरआला, कॉलेजरी अध्यापक मण्डली, नाना कारणोंसे जो आगरा छोड़ नहीं सने हैं वे, हरेद्र, अजित और प्रगाली मुहल्लेने वे लोग जो आनन्दके दिनोंमें बहुत-सा पुण्याय मास आदि खा गये हैं,—कोई-न-कोई आते ही रहते हैं।

आता नहीं ता सिफ जशय, सो भा इसलिए कि यहाँ वह है नहीं। महा मारीने शुरू होते ही वह सखीक देश चला गया है और शायद भीमारी शान्त होनेकी रातरकी बाट देर रहा है। कमल भी नहीं आती। उस दिन जो आइ थी, उसने राद फिर नहीं जाद।

आशु बानू मजलिस्सी आदमी हैं, फिर भी पहलेकी तरह उन वे मजलिस्में शरीक नहीं हो पाते,—मौजूद रहनेपर भी लगभग चुप बैठे रहते हैं। उनकी स्वास्थ्यहीनताका खयाल करके लोग आनन्दके साथ उह माफी भी दे दते हैं। एक दिन जो काम मनोरमा किया करती थी, उन वे रिस्तेदार होनेसे बेलाको ही करने पड़ते हैं। आतिथ्यमें कहीं कोई त्रुटि नहीं होती। बाहरके लोग आकर सिफ उसका रस ही लेते हैं, और शायद मजलिस् रातम होनेपर परितृप्त चित्तसे इस निरभिमान रहस्वामीको मन ही मन धन्यवाद देते हुए आश्रयके साथ सोचते हैं कि आव भगतकी ऐसी त्रुटिशूय व्यवस्था इस शोमार आदमीसे रोजमरा कैसे बन पड़ती है।

पर, 'कैसे बन पड़ती है' का इतिहास छिपाया छिपा ही रह जाता है। नीलिमा सपके सामने निकलती नहीं, इसकी उसे आदत भी नहीं और न वह निकलना पसन्द ही करती है। परंतु परदेकी ओटम होते हुए भी उसकी जाग्रत दृष्टि इस घरम सपत्र प्रति रण ग्यास रहा करती है। वह दृष्टि जैसी निगूनी होती है वैसी ही नीरव। शिराओंम प्रचहमान रक्तधारकी तरह वह नि शब्द प्रगाह शायद आशु बाबूको छोड़कर दूसरा कोई अनुमन भी नहीं कर पाता।

शीत ऋतुका प्रथमाद्ध गीत चला है, परंतु फिर भा चाने किसी भी कारणने हो, इस सारु जाटा उतना कडायेना नहीं पडा। लेकिन आज सबसे ही थोड़ी थोड़ी बया हो रही है, और शामने वक्त तो रसूज जोरसे मेह परसने लगा। ऐसे मेहमें इसकी कोई सम्भायना ही न रही कि बाहरसे कोई आ सकेगा। घरकी

खिड़कियाँ अश्रमयमें ही बंद कर दी गई हैं और आधू बानू पैरोपर दुशाला डाले आश्रम-कुरखीपर पट कोद किताय पढ़ रहे हैं। बला शायद कुछ पिरकितवे कारण बोल उगी, "इस अभागे दशम सभी कुछ उल्टा है। कुछ दिन पहले— 'पूत या जुला' महीनमें जब यहा आद थी, तब बचाने लिए देशभरमें एसा जबरदस्त हाहाकार मचा हुआ था कि बगैर आँगों देखे उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। इमीसे सोचती हूँ कि ऐसे कठोर शुक् देशमें जादभी ताजमहल बनाने पड़े सो किस अहमदीपर ?"

नीलिमा पास ही एक कुरखीपर बैठी कुछ सी रही थी, बगैर आँग उठाये ही उसने कहा, "इसका कारण बना सभी जान सकते हैं ? सब नहीं जान सकते।"

बेलाने सरल शिक्तसे घूँगा, "क्यों ?"

नीलिमाने कहा, "तमाम उही चीज आदमीने हाहाकारमेंने ही पैदा होती है, अतएव जो लोग संसारके आमाद प्रगोदमें ही मगन रहते हैं उन्हें यह सूझ ही कैसे पड़ सकता है ?"

उसका यह जवाब ऐसे कल्पनातीत रूपमें कठोर था कि छिप बेल ही नहा, बल्कि आगु बानू तक आश्रय-चकित हो गये। उन्होंने निताबपरसे मुँह उठाया तो देखा, नीलिमा पूरखत् सीनन काममें लगी हुई है। मानो, यह बात उसन मुँहसे बतद निकली ही नहीं।

एक तो बेल कल्हाप्रिय स्त्री नहीं, और दूसरे वह मुगिजिता है। उसने बहुत कुछ देखा-सुना है और उमर भी शायद पैंतीसने उपर पहुँच चुकी है, किन्तु सयग-सतकृतास उसने अपने यौवनने लावण्यने आज भी पश्चिमनी जोर दलने नहीं दिया है,—अधम्मात् ऐसा मालूम होता है कि शायद वह वैसा ही बना हुआ है। रंग उज्वल है, चेहरेपर एक विशिष्ट रूप है, पर गौरसे दगनेसे मालूम हो जाता है कि बोमलताने अमावने माना उसे रुखा बना रखा है। आँगोंकी छि हास्य नीतुकसे चकल चकल है, पिरन्तर पहले पिरना ही जैसे उसका काम है,—किता भी चीनपर स्थिर हाने लायक न तो उमम भार है और न तल देशमें बोट जड ही। आनन्द-उत्सवम ही वह गामती है, सहसा दु गने बीच आ पडनेसे घर-मालिकको लज्जामें पडना पडता है।

जब बेलकी विमूर्तताका भाव दूर हो गया तब शृण भरने लिए सारे श्रोधने

उसका चेहरा तमतमा उठा। पर नाराज होकर झगडा करना उसकी शिशा और सौजन्यके खिलाफ है, इसलिए उसने अपनेको संभालते हुए कहा, “मुझपर कटाक्ष करनेसे कोई लाभ नहीं। सिर्फ इसलिए ही नहीं कि यह अनधिकार-चचा है, बल्कि हाहाकार करते फिरना चाहे जितनी बड़ी ऊँची बात क्यों न हो, वह मुझसे करते नहीं बनती, और उससे कोई अभिज्ञता सच्य करनेमें भी मैं असमर्थ हूँ। मेरा आत्म-सम्मान शान बना रहे, उससे उत्कर में कुछ नहीं चाहती।”

नीलिमा अने काम ही लगी रही, कुछ जयाब नहीं दिया।

आगु गाबू भीतरसे क्षुण्ण हो गये थे, पर इस डरसे कि बात आगे न बड़े व्यस्त होकर बोल उठे, “नहीं नहीं, तुमपर कोई कटाक्ष नहीं किया बेला, इसमें कोई शक नहीं कि बात उ होने साधारण भावसे ही कही है। नीलिमाका स्वभाव तो मुझे मालूम है, ऐसा हो ही नहीं सकता, मैं तुमसे कहता हूँ न, ऐसा हर्गिज नहीं हो सकता।”

बेलाने सक्षेपमें सिर्फ इतना ही कहा, “न हो यहा अच्छा है। इतने दिनसे एक साथ रह रही हूँ, ऐसा तो मैं सोच ही नहा सकती।”

नीलिमाने ‘हाँ ना’ कुछ भी जयाब नहा दिया, अपने काममें वह ऐसी तमय रही मानो उस जगह और कोई है ही नहीं। कमरेमें बिल्कुल सघाटा छा गया।

बेलाके जीवनका एक इतिहास है जिसे यहाँ देना आवश्यक है। उसके पिता बकालतरा पेशा करते थे, पर अपने पेशेमें वे यश या धन दोनोंमसे कुछ भी प्राप्त न कर सके थे। उनका धर्म क्या था, कोई भी नहा जानता, और समाजकी दृष्टिसे भी देखा जाय तो वे हिन्दू, ब्राह्मण या मिस्तान किसी समाजको मानकर न चलते थे। लडकीने वे बहुत ज्यादा प्यार करते थे, और उन्होंने सामर्थ्यके बाहर खच करके उसे शिक्षा देनेकी काशिश की थी। यह हम पहले ही बता चुने हैं कि उनकी वह कोशिश बिल्कुल यथ नहीं हुई। ‘बेला’ नाम उन्होंने अपने शौकसे रक्खा था। किसी समाजको न माननेपर भी एक दल तो उनका अपना था ही। सुन्दरी ओर शिक्षिता होनेकी वजहसे बेलाका नाम उस दलमें सबकी जवानपर चढ गया, और इसलिए उसे धनी पात्र मिलनेमें भी देर न हुई। वे हाल ही पिलायतसे कानून पास करके लौटे थे। कुछ दिन देला माला और परस्पर मन निररने पररनेका सिलसिला चलता रहा, उसने बाद कानूनने अनुसार रजिस्टरी करके ब्याह हो गया। इस तरह कानूनके प्रति गहरे

अनुरागका एक अक खतम हुआ। दूसरे अक्रमें भोग विलास, साथ-साथ देश भ्रमण, पृथक्-पृथक् वायुपरिवहन,—आदि ऐसी ही बहुत-सी बात हुई। दोनों तरफसे तरह-तरहकी अपवाहें सुनी गई, परंतु उनकी आलोचना यहाँ अप्रासंगिक होगी। लेकिन उनमें जो अरा प्रासंगिक था, वह शीघ्र ही प्रकट हो गया। वरुण हाथों हाथ पकड़ा गया और कन्या-पुत्र विवाह विच्छेदका मामला दायर करनेकी सोचने लगा। मित्र-मण्डलीमें आपसमें समझौता करानेकी कोशिश हुई, किन्तु शिषिता बेला नर-नायिक समानाधिकार-सत्त्वकी सबसे बड़ी पण्डा थी। लिहाजा उसने इस असम्मानके प्रस्तावपर कतई ध्यान नहीं दिया। पति बेचारा चरित्रका दृष्टिसे चाहे जैसा भी हो, आदमीने लिहाजसे बुरा नहीं था, स्त्रीको वह शक्ति और सामर्थ्यके भाषिक प्यार ही करता था। उसने गर्भमें साथ अपना कसूर मजूर करके अदालतकी दुर्गतिसे छुटकारा पानेके लिए हाथ जोड़कर धमा प्रायना की, पर स्त्रीने धमा नहीं दी। अन्तमें बड़े दुःखपूर्ण ढंगसे पैसला हुआ। एकमुद्दत नगद और रखने पहननेके लिए मासिक खर्च देना कबूल करके उसने किसी तरह मामलेसे अपना पिण्ड छुड़ाया। और इधर दाम्पत्य युद्धमें विजय पाकर बेला भद्र स्वास्थ्यकी मरम्मतके लिए शिमला, मसूरी, नैनी आदि पावत्य प्रदेशोंमें दपके साथ सैर करने चल दी। उस बातको आज लगभग छह-सात साल हो गये। इसके थोड़े ही दिन बाद उसके पिताका देहान्त हो गया। इस मामलेमें उनकी राय नहा थी, कि इससे वे अत्यन्त ममाहत भी हुए थे। जानु बाबूकी स्वर्गीया पत्नीने साथ उनकी कोई दूरका रिश्ता था और उसी सम्बन्धसे बेला जानु बाबूकी भी रिश्तेदार थी। उसने ब्याहमें भी जानु बाबू निमंत्रित होकर गये थे, और उसके पतिसे भी परिचित होनेका उन्हें मौका मिला था। इस तरह वह रिश्तोंके सिलसिलेमें बेला आगरा आई थी, न बिलकुल गैर होकर आई थी और न निराश्रित होकर ही। तुलनामें इसी जराह नीलिमाके साथ उसका काफी अन्तर था।

पिर भी, हालत इससे बिलकुल उल्टी हो गई थी। इस विषयमें कि इस घरमें किसका कहाँ स्थान है, घरके किसी व्यक्तिको रच मात्र भी सन्देह न था। पर उसका हेतु जैसा अज्ञात था, कर्तृत्व भी वैसा ही अविस्वादी था।

बहुत देरतक मौन रहकर बेलाहीने पहले बात की, कहां, “यह मैं मानती हूँ कि साफ-साफ कुछ नहीं कहा, पर इस विषयमें मुझे जरा भी सन्देह नहीं कि

मुझे धिक्कारनेके लिए ही नीलिमाने ऐसी बात कही है।”

आगु बाबूके मनम भी शायद सदेह न था, फिर भी निरमयन स्वयम उर्हाने पृछा, “धिक्कार ? धिक्कार किस लिए बला ?”

बेलाने कहा, “जापसो तो सत्र कुठ मालूम है। निन्दा करनेवालाकी उस दिन भी कमी नहीं थी, और आज भी नहीं है। परन्तु अपने सम्मानकी, — सम्पूर्ण नारी जातके सम्मानकी रक्षाके लिए उस दिन भी मैंने किसीकी परवाह नहीं की, और आज भी नहीं करूँगी। मैं अपनी इज्जत आरू लोकर पतिनी घर गृहस्थी चलानेकी राजी नहीं हुइ थी, इसलिए उस दिन ग्लानि प्रचारका काम सबसे ढढकर खियोंने ही किया था, और आज भी उहीके हाथसे निस्तार पाना मेरे लिए सबसे कठिन हो रहा है। मगर चूँकि मैंन अनुचित काय नहीं किया, इसलिए उम दिन भी जैसे मैं नहा डरी, आज भी उसी तरह निडर हूँ। अपनी विवेक बुद्धिने आगे मैं विलकुल चोरी हूँ।”

नीलिमाने खिलाडपरसे आगु नहा उठाड, किन्तु आहिस्तेसे कहा, “एक दिन कमल कह रही थी कि विवेक बुद्धि ही सभारमें सबसे बड़ी चीज नहीं है। विवेककी दुहाई देनेसे ही समस्त उचित अनुचितकी मोमासा नहीं हो जाती।”

आगु बाबूने आश्रयमें आकर कहा, “वह कहती है क्या ?”

नीलिमाने कहा, “हाँ। कहती हैं कि वह तो सिर्फ मूर्खोंके हाथका अछ है। आगे पीछे दोनों तरफ चलाया जा सकता है,—उसका कोई ठाक ठिकाना नहीं।”

आगु बाबूने कहा, “जो कहती है, उसे कहने दा, पर ऐसी बात तुम अपने मुँहसे न निमालो नीलिमा।”

बेला ने कहा, “इतने ढडे दुस्साहसको बात तो मैंने कभी सुनी ही नहीं।”
आगु बाबू क्षण भर मोन रहकर धीरे धीरे कहन लगे, “दुस्साहस तो है ही। उसने साहसका अंत नहीं। वह अपने नियमपर चलती है, उसकी सत्र बातें न सत्र समय समझमें आती हैं और न मानी ही जा सकती हैं।”

बेला ने कहा, “अपने नियमपर तो मैं भी चलती हूँ आगु बाबू। इसीसे बाबूजीकी भी मनाही न मान सकी। मैंने पतिनो त्याग दिया, पर फिर न झुना सकी।”

आगु बाबूने कहा, “इसमें शक नहा कि यह गहरे पश्चात्तापका विषय है,

परन्तु तुम्हारे पिताके सम्मति न देनेपर भी मुझसे तो मिना लिये रहा नहीं गया ।

बेलाने कहा, 'धक्क (= धयवाद), सो मुझे याद है आगु राबू ।'

आगु राबू गेठे, "उसनी गजह थी । स्त्री पुरुषपर समान दायित्व और समान अधिकारपर मैं पूरा विश्वास करता हूँ । हमारे हिन्दू समाजम एक बड़ा भारी दाप यह है कि सौ-सौ अपराध करनेपर भी पतिगो याय विचार या दण्डका डर नहा, और तुच्छसे तुच्छ दोगमर स्त्रीको दण्ड देनेके हजारों भाग खुले हुए हैं । इस व्यवस्थानो म एक दिग्ने लिये भी उचित नहा मान सका । इसीसे बेलाक पिताने जन मेरे पास राय जाननेके लिये चिट्ठी लिखी थी, तब मैंने उत्तरमें यही बात कही थी कि हालाँ यह कोई शोभाकी बात नहीं और न सुननी ही, परन्तु वह अगर अपने असचरित पतिको सचमुच ही त्याग देना चाहती है, तो उसे मैं अनुचित कहकर मना नहीं कर सकता ।"

नीलिमाने अट्टमि प्रिस्मयसे जाँर उठाकर प्रश्न किया "आपने सचमुच यही बात जवामें लिखी थी ?"

"सचमुच नहा ता क्या ?"

नीलिमा मन्त्र हो रही ।

उस निस्तब्धतामें आगु राबूको न जाने कंसी एक प्रकारको जशान्ति-सी माहूम हाने लगी । उन्होंने कहा, "इसमें आश्रय करोगी तो ऐसी कोई बात नहीं नीलिमा । तल्लि न लिखना हो मेरी तरफसे अनुचित हाता ।"

फिर जरा ठहरकर कहा, "तुम मुद भी तो कमलका पही मक्त हो, उताओ, वह खुद ऐसी हालतम क्या करती ? क्या जगार देती ? हमसे तो उस दिन जन बेलासे उसका परिचय पराया था, तब इस बातपर मने जार दिया था कि कमल, तुम्हारी तरह विचार करने और तुम्हारी तरह साहसका परिचय देनेम मैंने सिफ एक ही लडकीना देगा है, और वह है यह बेला ।"

नीलिमाकी आँगें सहसा यथासे भर आद । बाली, "वह देवारी दिग समाजसे बाहर,—पदाँतन कि म्तीने बाहर पडी हुई है । उसे जाय लोग क्यों घसींते हैं ?"

आगु राबू यस्त हो उठे, गेठे, "गहा-नहीं, घसींतेनी बात नहा नीलिमा, यह तो सिफ एक उदाहरण देना है ।"

नीलिमाने कहा, "यही तो घसींतेना है । अभी-अभी आपने कहा था कि

उसकी सत्र बात सत्र समय समझमें भी नहीं आती और न मानी ही जा सकती है।—माना कुठ नहीं जा सकता, सिर्फ उदाहरण ही दिया जा सकता है ?”

आशु बाबूको अपनी बातमें दोपसी षोड बात नजर नहा आ रही थी। वे क्षुण्ण कण्ठसे बोले, “किसी भी कारणसे हो, आज तुम्हारा मन शायद बहुत ही अस्वस्थ हो रहा है। इस समय किसी विषयकी आलोचना करना ठीक नहीं।”

नीलिमाने इस बातपर ध्यान नहीं दिया, यह गोल उगी, “उस दिन आपने इनके विवाह विच्छेदमें अपनी राय दी थी और आज बिना किसी सकोचके कमलका दण्ड दे रहे हैं। इनकी सी हालतमें कमल क्या करती सो तो वही जाने, मगर उसके दृष्टांतका वास्तवम अनुसरण करनेके लिए आज इन्हें कुली मजदूरोंके कपडे सी करके अपनी गुजर करनी पडती,—सो भी शायद हमेशा नहीं जुटते। कमल और चाहे जो करती, पर जिस पतिको वह लाञ्छन लगाकर घृणासे छोड़ देती उसीके दिये हुए अन्नमा ग्रास मुँहमें देकर ओर उसीके दिये कपडोंसे आबरू बचाकर हरगिज न जीना चाहती। अपनेको इतनी छोटी या ओछी बनानेके पहले वह आत्म हत्या करने मर जाती।”

आशु बाबू जवाब क्या देते ? वे तो भावाविष्ट से हो रहे, और बेला ठीक बज्राहतकी भांति निश्चल हो रही। नीलिमाके दिन हँसी मजाकम ही कट जाते हैं, सबका मुँह ताकना ही मानो उसका काम है, दोनोंमसे कोई भी इस बातको कयासमें न ला सका कि वह सहसा इस तरह निमम हो सकती है।

नीलिमा क्षण भर स्थिर रहकर फिर गौली, “आप लोगोंकी मजलिसमें मैं नहीं बैठती, लेकिन लोगोंको लेकर जो सत्र तरहकी आलोचनाएँ हुआ करती हैं वे मेरे कानोतक पहुँच जाती हैं। नहीं तो शामद में कोई बात कहती भी नहीं। कमलने एक दिनके लिए भी शिश्नाथनी निन्दा नहा की, एक भी आदमीके आगे अपना दुखडा नहीं रोया—क्या, जानते हैं ?”

आशु बाबूने विमूढकी भाँति पूछा, “क्या ?”

नीलिमाने कहा, “क्यों, सो कहना यथ है। आप लोग समझ नहा सँगे।” फिर जरा ठहरकर कहा, “आशु बाबू, यह एक अत्यन्त मोटी बात है कि पति-पत्नीका अधिकार समान है मगर इसने मानी यह न सोचिएगा कि स्त्री होकर स्त्रियोंकी तरफसे इस दावेका म प्रतिवाद कर रही हूँ। प्रतिवाद मैं नहीं करती, मैं जानती हूँ कि वह सत्य है, मगर साथ ही यह भी जानती हूँ कि

सत्य-सत्य चिल्लानेवाले एक सत्य पिलासी गिरोहने नर-नारीके मुँहके द्वारा और तरह-तरहके आन्दोलनोंसे उस सत्यको ऐसा गन्दा कर दिया है कि आज उसे भिष्या कहनेको ही जी चाहता है। आज मेरी हाथ जोड़के प्रार्थना है कि सरके साथ मिलकर आप कमलने विषयमें कोई चर्चा न किया करें।”

आगु बाबूने जवाब देना चाहा, पर उनने कुछ कहनेके पहले ही वह सिगाइकी चीज़ें लेकर भीतर चली गई।

तब कुछ विस्मयसे एक लम्बी उसीसे नेकर आगु बाबू सिफ यह कहकर रह गये, “उमने कब क्या मुना है मालूम नहीं, पर मेरे विषयमें यह दिलकुल असत्य दोषारोप है।”

राह्र कुछ देरके लिए बसा रुक गई थी, किन्तु ऊपरने मेघाच्छन्न आकाश ने घरके भीतर असमयमें अघकार पैला दिया। नौकर जब रत्ती जला गया तब आगु बाबूने फिर एक बार पुस्तक उठाकर आँगोके सामने रख ली। हर छापेने अक्षरोंमें मन लगाना सम्भव न था और इधर बेलाके साथ आमने-सामने बैठकर बातचीत करना और भी असम्भव मालूम दिया।

हठनेमें भगवान्ने दया की। एक ही छतरीमें रास्ते भर धक्कमधक्का करते हुए इच्छुप्रतधारी हरेन्द्र, अजित आँधीकी तरह कमरेमें आ पुसे। दोनों जने आधे-आधे माँग चुने थे। हरेन्द्र बोला, “भाभी कहाँ हैं !”

आगु बाबूके मानो चाँद हाथ लग गया। उनको विश्वास नहीं था कि आजने दिन कोई आयेगा। साम्रह उठके बैठ गये और स्वागतने स्वरमें बोले, “आओ अजित, बैठो हरेन्द्र—”

“बैठता हूँ। भाभी कहाँ हैं !”

“ओह ! दोनोंके दोनों खून माँगो मालूम होते हो।”

“जी हाँ वे हैं कहाँ !”

“बुलवाता हूँ।” कहके आगु बाबू ज्यों ही पुकारनेका उद्योग किया कि भीतरसे परदा हटाती हुई नीलिमा स्वय ही बाहर निम्न आइ। उसने हाथमें दो चोटियाँ और एक बुरता था।

अजितने कहा, “यह क्या ! आप ज्योतिष भी जानती हैं क्या !”

नीलिमाने कहा, “ज्योतिष जाननेकी जरूरत नहीं लालाजी, पिटकीसे ही दण लिया था। एक टूटी छतरीमें जिन तरह एक-दूखेकी तकलीफका रसका

रखते हुए तुम दोनों चले आ रहे थे, उसे एक में ही क्यों, शायद शहरभरके लोगोंने देखा होगा।”

आशु बाबूने कहा, “एक छतरीमें दो दो जने ? तभी तो लोगोंको भौंगना पडा है।” और व हँस दिये।

नीलिमाने कहा, “शायद दोनों जने समानाधिकार-तत्त्वपर विश्वास करते हँ, अन्याय नहीं करते—इसीसे छतरीका ठीक ठीक बँटवारा करके रास्ता चल् रहे थे। लो लालाजी, कपटे बन्द लो।” कहते हुए उसने कपड़े हरे-दरने हाथम दे दिये।

आशु बाबू चुप रहे। हरे-दरने कहा, “धोतियाँ तो दो दे दीं, लेनिन कुरता एक ही है ?”

“कुरता बहुत पडा है लालाजी, एकसे ही काम चल जायगा।” कहकर वह गम्भीर बनने पासकी कुरमीपर बैठ गई।

हरे-दरने कहा, “कुरता आशु बाबूका है, लिहाजा इसम दो ही क्यों, और चार जने समा सकते हँ, मगर तब इसे मसहरीकी तरह लटकाना पडगा, यह पहना नहीं जा सकेगा।”

बला अरक्तक विषण्ण मुखसे चुपचाप बैठी थी, हँसी रोक न सकनेके कारण बाहर उठके चली गई और नीलिमा रिडकीने बाहर देखती हुए चुप बैठी रही।

आशु बाबू छद्म गाम्भीर्यसे साथ कहने लगे, “नीमारीमें पडा पडा सूखने आधा रह गया हँ हरे-दर, अब तुम लोग टोको मत। देखते नहीं, औरतोंको वैसा बुरा मालूम हुआ, एक तो उठने शहर चली गई और एखने मारे गुत्तेने मुँह फेर लिया।”

हरे-दरने कहा, “टोना टाकी नहा की आशु बाबू, बिराटकी महिमा गाइ है। टोना टाकीका दुःप्रभाव तो सिर्फ हमारे जैसी नर जातिनो ही विपत्तिम डाल सकता है, आप लोगोंको छू भी नहीं सजता। अतएव, चिरस्त्र्यमान हिमा लयके समान यह देह अभय रनी रहे, स्त्रियों नि शक हों, और मेह पानीके पढाने समागत जनोंके भाग्यम जो दैनन्दिन मिषनादि बढा है उसम आज भी रचमात्र कमी न हो।”

नीलिमाने शर मुँह उठाया और हँस दी। “पडाका स्तुतिना तो अनादि कालसे चला आ रहा है छोटे देवरजी, वही निर्दिष्ट धारा है और उसम तुम

सिद्धहस्त हो, पर आज जरा नियममे व्यतिक्रम करना पड़ेगा आज छोटोंकी खुशामद बगैर किये इतर जनोंके भाग्यम भिण्डनी जगह कोग शून्य पड़ेगा ।”

बेबा बरामदेसे लौटकर भीतर जा बैठी ।

हरेद्रने पूछा, “क्यों भाभी !”

गम्भीर स्नेहसे नालिमाकी आँखें भर आई, बोली, “ऐसी मीठी बात बहुत दिनोंसे सुनी नहीं है भाई, इसीसे सुननेको जी उभाता है ।”

“तो गुरु घर दूँ क्या !”

“अच्छा अभी रहने दो । पहले तुम लोग उस कमरेमें जाकर कपड़े बदल लो, मैं कुरता भेने देती हूँ ।”

“भगर कपड़े बदल चुकनेके बाद ! फिर क्या होगा ?”

नीलिमाने हँसते हुए कहा, “फिर कोणित करने देवूँगी कि इतर जनाने भाग्यसे अगर कहींसे खाने-पीनको कुछ लुटा सवूँ ।”

हरेद्रने कहा, “तकलीफ उठाने कोणित करनेकी जरूरत न पड़ेगी भाभी, सिर्फ एक बार आँख सालके देल भर लीजिएगा । आपकी अनपूणानीकी दृष्टि जहाँ पड़ेगी, वहीं अनका भाण्टार निकल पड़ेगा । चलो अजित, अब थोड़ा फिरकी बात नहीं, हम लोग तब भीगे कपड़े बदल आयेँ ।” कहकर अजितको वह हाथ पकड़न बगलने कमरेमें खान ले गया ।

२३

अजितने कहा, “पानी थमनेका तो थोड़ा लक्षण नहीं दिगाइ देता !”

हरेद्रने कहा, “नहीं । लिहाजा फिर हम दोनोंको उसी दूटी छतरीमें सिरसे सिर भिटाकर समानाधिनार तत्त्वकी सत्यता प्रमाणित करते हुए अचकार मागमें चल दगा और अन्तमें आश्रम पहुँच जाना चाहिए । अमर्य ही उसके बादकी चिन्ता नहीं रही,—उसे यही पूरा कर चुके हैं, लिहाजा, फिरसे एक बार भीगे कपड़े बदलना और सो जाना रह जायगा ।”

आधु धानू व्यग्र होकर बोले, “ता फिर तुम लोगोंने पेट भरके ही क्यों नहीं जीग लिया !”

हरेद्र कह उठा, “नहीं नहीं, रहने दीजिए,—इससे क्या हुआ—आप इतक लिए कोर चिन्ता न कर ।”

नीलिमा पहले तो खिलखिलाकर हँस पड़ी, उसके बाद शिकायतके स्वरम बोली, “लालाजी, क्यों यों ही रोगी आदमीकी व्याकुलता बढ़ा रहे हो ?” फिर आशु बाबूसे बोली, “ये सन्यासी आदमी ठहरे, तैरागीगीरीम पक्के हो गये हैं,— लिहाजा खाने पीनेकी तरफ इनकी जुटि किसीके नजर नहीं आ सकती । हाँ, अजित बाबूके लिए जरूर सोच है । इनका आजका खाना देखकर समझा जा सकता है कि ऐसे ससगमें भी ये जल्दी पक नहीं पाये हैं ।”

हरेद्रने कहा, “शायद मनम पाप होगा, इससे । फकड तो जायँगे ही किसी न किसी दिन ।”

अजितका चेहरा मारे शरमके सुरत हो उठा, बोला, “आप न जाने क्या कह रहे हैं हरेद्र बाबू ।”

नीलिमा क्षण भर हरेद्रके मुँहकी तरफ देखती रही और बोली, “तुम्हारे मुँहपर फूल-चन्दन पड़े लालाजी, ऐसा ही हो, उनके मनमें थोडा-बहुत पाप हो और किसी दिन फकड़े जायँ तो मैं कालीघाट जाकर ठाठसे पूजा दे आऊँ ।”

“तो फिर तैयारियाँ करना शुरू कर दीजिए ।”

अजित बहुत ही नाराज हो गया, बोला, “आप क्या बाहियात बक रहे हैं हरेद्र बाबू,—बडा भद्दा मालूम होता है ।”

हरेद्रने फिर कुछ नहीं कहा । अजितके मुँहकी तरफ देखकर नीलिमाका कुतूहल तीव्र हो उठा, पर वह भी चुप रही ।

इसके कुछ देर बाद हरेद्रने नीलिमाको लक्ष्य करके कहा, “हमारे आश्रम पर कमल बहुत नाराज हैं । आपको शायद याद होगा भाभी !”

नीलिमाने सिर हिलते हुए कहा, “हाँ, है । अब भी उनका वही रुत है क्या ?”

हरेद्रने कहा, “वही रुत नहीं, बल्कि उससे भी जरा बढ़ गया है,—इतना पक्क है ।” फिर बोला, “और सिर्फ हम ही लोगोंपर नहीं, सब तरहकी धार्मिक संस्थाओंपर उनका आत्यंतिक अनुराग है । चाहे ब्रह्मचर्यको ले लीजिए, चाहे वैराग्यकी बात कीजिए या इश्वरकी चचा कीजिए, सुनते ही अहेतुक भक्ति और प्रीतिकी बहुलतासे ये अग्निवत् हो उठती है । और मिजाज अनुकूल हो तो बूटों और बच्चों के खेलमें भी कौतुकका आनंद लेनेमें वे असमथ नहीं । कमल ही समझिए ।

बला चुप बैठी सुन रही थी, बोल उठी, "हस्तर भी उनक लिए लडकोंका सेल है और आप उहाने साथ मेरी तुलना कर रहे थे, आशु बाबू ?" इतना बहसर उसने एक तरफसे सरने मुँहकी जोर देया, पर किसीकी तरफसे कोई उत्साह नहीं मिला। उसका रुना स्वर किसीने कानतक पहुँचा या नहीं, सो भी ठीक समझमें नहीं आया।

हरेद्र कहने लगा, "और मजा यह कि उनके अपने अदर एक ऐसा निर्द्वन्द्व सयम, नीरव मिताचार और निशक तितिक्षा है कि देखके आश्चर्य होता है। आपको शिवनाथना मामला तो याद होगा आशु बाबू ! वह हम लोगोंका कौन था ? फिर भी इतना बग अन्याय हमसे सहा नहीं गया, और दण्ड देनेकी आकाशासे हमारे मनके भीतर आग जल उठी। पर कमलने कहा, 'नहीं !' उसका उठ दिनका चेहरा मुझे स्पष्ट याद है। उसनी 'नहीं' में विद्वेष नहीं था, जलन नहीं थी, उपरसे हाथ बगकर दान देनेकी श्लाघा नहा थी, और क्षमाका दम्भ भी नहीं था,—उसका दाक्षिण्य मानो अविद्वृत करुणासे भरा हुआ था। शिवनाथने चाहे कितना ही बडा अन्याय क्यों न किया हो, फिर भी, मेरे प्रस्तावर कमलने चौंकर सिप यही कहा—'छि छि,—नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।' अथात् एक दिन जिसे उसने प्यार किया है उसके प्रति निभमताकी तुच्छताकी वह कल्पना ही न कर सकी, और सगकी निगाहके ओझल उसने सग दोष चुपनेसे त्रिलकुल पोंछकर फरक दिये। उसमें न कोई कोशिश थी न चञ्चलता थी, और न शोकाच्छन्न हाहाकारका कोई भाव था,—मानो पहाडके शिखरपरसे जलकी धारा लीलामात्रमें स्वत ही वह आई हो।"

आशु बाबूने एक गहरी साँस ली और कहा, "सच्ची बात है।"

हरेद्र कहने लगा, "पर मुझ ज्यादा गुस्ता तप आता है जब वह सिर्फ हमारे आदरकी ही नहीं बल्कि हमारे धर्म, इतिहास, श्रुति, नैतिक अनुशासन आदि सगकी प्रजाकमें उडा देना चाहती है। मैं जानता हूँ कि उसने गरीबों उल्टे प्रिदेशी बून है और मनम भी वैसी ही उपद्राके साथ पर धर्मना भाव प्रचहित है, फिर भी उसने मुँहने सामने सडे होकर जवाब नहीं दे पाता। उसके कहनेमें न मालूम वैसी एक टढ निश्चयनी दीप्ति फूट निकलती है कि मालूम हाता है मानो उसने जीवनने तपको खाज लिया है। शिग्रावे जरिये नहीं, और न अनुभव-उपलक्षके जरिये ही, बल्कि ऐसा लगता है कि उसके जैसे

वह आँगासे साफ-साफ प्रत्यक्ष दृश्य रही हो।”

आपु तबू खुश होकर बाले, “ठीक यदा बात मेरे भी मनमें अनेक बार आइ है। यही वजह है कि जैगी उसरी बातें ह वैसे ही उग्रन काम ह। वह अगर असत्य भी समरी हो, तो यह असत्य भी गौरवपूर्ण हो उठा है।” फिर जरा ठहरकर बाले, “दंगो हर-द्र, एक तरहसे अच्छा ही हुआ जो वह पास्तदा चला गया। उसको हमें ताककर रगनेसे न्यायकी मयादा नहीं रहती। सुअरये गतेम मातीना मालाकी तरह यह भी अपराध होता।”

हर-द्रा पहा, “और फिर, दूसरी तरह ऐसा माया ममता है कि सिफ एव भाभीको छाडकर म और मिसा खीना उग्रन समान नहीं पाता। सेगमें एसी समक्षिण जैसे लक्ष्मी। शायद पुण्योसे बहुत सी बातोंमें बहुत बड़ी होनेके कारण ही वह अपनेको उनके सामने ऐसी साधारण बनाये रखती है कि आश्रय होता है। मता छुटकर माता पैरंपर लोट जाना चाहता है।”

नीलिमा ने हँसते हुए कहा, “लालाजी, तुम पहले जनममें शायद किसी राजरानीके स्तुति पाठन थे इसीसे इस जनमम भी वह सस्वार दूर नहीं हुआ। लटने पानेना वाम छाडकर अगर यह राजगार करते तो इससे कहीं ज्यादा आराम पाते।”

हरे-द्र हँस दिया, बोला, “क्या कल्ले भाभी, मैं सरल सीधा आदमी हूँ, जो मनम सोचता हूँ वही कह डालता हूँ। लेकिन, आप इन अजित बाबूसे पूछ दगिए जरा, अभी आस्तीन चलाकर मारनेना तयार हो जायेंगे।—भरे हो जायँ, पर जिन्दा रहा तो देख लीजिएगा किसी टिा—”

अजित मुद्र कण्ठसे गोल उठा, “आह, आप क्या कहते हैं हरे-द्रबाबू, आपन आश्रममे तो मालूम होता है, अर चला ही जाना पड़गा किसी दिन।”

हरे-द्रने कहा, “सो म जानता हूँ। पर जरतक गय नहीं ह तबतक तो सहन करना पड़गा।”

“तो आप कहते जाइए जो तबीयतमें आवे, म जाता हूँ।”

नीलमाने कहा, “लालाजी, तुम अपने ब्रह्मचर्याश्रमको उठा क्यों नहा देते ? तुम भी बच जाओ और लडनाकी भी जान रचे।”

हरे-द्रने कहा, “लटने तो बच सकते हैं भाभी, पर मेरे रचनेकी कोई आशा नहा कमसे कम अक्षयन जीते जो तो कतद नहा। वह मुझे यमराजके हवाले

किये वगैर पीठा नहा डोहनेका ।”

आगु बाबूने कहा, “तब तो, माछूम होता रे, अशयसे तुम लोग टरते हो ?”

“जी हाँ, डरते हैं । विप खाना सहज है, पर उसने कटाक्ष हलम करना असाध्य है । इफ्टएखामें इतने आदमी मर गये, पर वह नहीं मर । ठीक वत्तपर भाग गया ।”

सत्र हँस पडे । नीलिमाने कहा, “अक्षय गानूसे म बोलती नहा, पर अरकी गार बाहर निकलकर तुम्हारी तरफसे मैं क्षमाकी भांग माँग लूँगी । भीतर ही भीतर जल भुनकर ग्वाक हुए जा रहे हो ।”

हरेद्रने कहा, “हम लोग ही तो पकडे जायेंगे भाभी, आप लोग तो सत्र जलने भुननेके परे पहुँच चुकी हैं । विधाताने आगकी सृष्टि सिफ हम ही लोगोंको जलानेके लिए की थी, आप लोग उसने इलाकेसे बाहर ह ।”

नीलिमा गारे शमने मुग हो उठी, पौली, “और नहां तो क्या ।”

बेलने कहा, “ठान तो है । बाहर तो हैं ही ।”

क्षण मर सत्र चुप रहे । अजितने कहा, “उस दिन टोर इसी विषयपर एक पत्नी सुन्दर कहानी पडी थी ।” फिर आगु गानूकी तरफ देखकर पूछा, “आपने नहीं पत्नी क्या ?”

“कौन-सी, याद तो नहा पडता ।”

“आपन जो मासिक पत्र विलायतसे आते है, उहमिसे किसीमें है । किसी फ्रान्सीसी लेखिकाकी कहानीका अंग्रेजी अनुवाद है । लेडी डॉक्टर अपने परिचयमें कहती है, “मैंने यौवन पार करके प्रौढत्वमें कदम रक्ता है ।”—यह है मामनेने शैलपर—” कहता हुआ वह पत्रिका उठा लाया ।

आगु बाबूने पूरा, “कहानीका नाम क्या है ?”

अजितने कहा, “नाम जरा अजीब-सा है—“एक दिन जिस दिन मैं नारी थी ।”

बेलने कहा, ‘इसने मानी ? लेखिका अत्र पुरुषोंमें शामिल हो गई है क्या ?’

अजितने कहा, “लेखिकाने आप-सीती लिखी है और गायद डॉक्टर होनेकी वजहसे नारी देहके प्रम विकासका जो चित्र साचा है वह कहीं-कहीं नचिको चोट पहुँचाता है । जैसे—”

नीलिमा चटसे बोल उठी, “जैसे’ रतानेकी जरूरत नहा अजित वावू रहने दीजिए।”

अजितने कहा, “रहने दीजिए। मगर उहोंने नारीने भीतरका, यानी उसक हृदयका जो चिन रसींचा है वह मधुर न होते हुए भी आश्चर्यजनक है।”

आशु वावूको कुतूहल हुआ, बोले, “अच्छी रात है अजित, जरा कुठ काट-छाँट करके सभेपमें सुनाओ तो सुन। मेह भी अभी रुना नहीं और रात भी ज्यादा नहा हुइ।”

अजितने कहा, “कहानी बहुत बड़ी है, इसलिए काट-छाँट कर ही पढ़ी जा सकती है,—आप चाहें तो पीछे पूरी पढ़ लीजिएगा।”

बेलाने कहा, “पढ़िए, जरा सुन। कमसे कम वक्त तो कटेगा।”

नीलिमाके मनमें आइ रि उठकर चली जाय, पर जानेका कोई रहाना न मिलनेके कारण वह सकोचके साथ बहा पैठी रही।

बच्चीने सामने बैठकर अजित किताब खोलकर कहने लगा, “गुरू-शुरूम जरा भूमिका सी है, उसे सभेपमें कह देना जरूरी है। जिसनी यह आत्म कहानी है वह सुन्दरी है, मुशिक्षिता है और बड़े घरनी लडकी है। चरित्र निष्कलक था या नहीं, इसका कहानीमें स्पष्ट उल्लेख नहीं है, पर इतना नि सदेह समझम आ जाता है कि अगर उसक कोई दाग किसी दिन किसी कारणसे लगा भी हो तो वह बीबनन प्रारम्भम,—बहुत दिन पहले लगा हागा।

“उस दिन उसनी वहुतोंने चाहा था,—एकने तो समस्याका दोइ हल न पाकर आत्म हत्या कर ली और एक चला गया समुद्रके उस पार कनाडामें। चला तो गया, पर आशा न छोड सना। दूरने कृपा भिगा माँगते हुए उसने इतनी चिद्धियों लिखीं कि उह अगर इकट्ठा किया जाता तो एक समूचा जहाज भर जाता, लेकिन जगबकी आशा उसन नहीं की, और न जगप पाया ही। उसने त्राद एक दिन दोनोंमें मुलाकात हुइ। देखते ही सहसा मानो वह चौंक पडा। इस बीच पन्द्रह वष गीत गये थे, जोर इमनी उसे धारणा ही नहा थी कि जिसे वह पचीम सालनी युवती दरगजर प्रिदंग चला गया था उसकी उमर अब चालीस सालनी हो गइ है। कुशल प्रश्न अनेक हुए, उलाहने भी कम पैग नहीं किये गये, परतु पहले ऑप चार होने ही उसनी ऑपोंने कोनोंसे जो चिनगारियों निकलने लगती थीं और उमत्त-कामनाका जो वझायात समस्त

ईदर्योंके बंद दरवाजोंको तोड़कर बाहर निकलना चाहता था,—आज उसका कोई चिह्नतक वहाँ दिखाद नहीं दिया। अत्र वह न जान करका स्वप्न-सा मादम देने लगा। द्विष्योंको और सब विषयोंमें घोखा दिया जा सकता है, पर इस विषयमें नहीं।—यहासे कहानी शुरू होती है।” कहकर अजित आगे पत्नेके विचारसे कित्तारके पत्नेपर झुम पटा।

आतु याकूने टोकते हुए कहा, “नहीं नहीं, अँग्रेजी नहा*अजित, अँग्रेजी नहीं। तुम्हारे मुँहसे हिन्दीमें कहानीना सहज भाव रहित मीठा लग रहा है, तुम नाकीका हिन्सा भी इसी तरह कहते जाओ।”

“मुझसे उनेगा कैसे ?”

“बनेगा, उनेगा। जैसे अभी कह रहे थे वैसे ही कहते जाओ।”

अजितन कहा, “हरेद्र राशुकी तरह मुझे भापाका ज्ञान नहीं, भापाके दोषसे अगर साराका सारा बडुजा ही जाय तो उसमें मेरी ही असमथता समझिएगा।” इसके बाद वह कमा कित्तारके पत्नेकी तरफ देखकर आर कमी उगैर देखे ही कहने लगा।

“फिर वह घर पहुँची। उस आदमीको उसने कमी प्यार नहा किया था और न करना चाहा था, रतिक, सवात ररणसे उसने हमेशा यही प्रार्थना की थी कि भगवान् किसी दिन उसे मोह मुक्त कर दें,—उसे इस निष्फल प्रार्थने दाहते छुटारा दे दे,—असम्भव वस्तुके लुब्ध जाश्वासनसे वह अब तकलीफ न पाये। देखा गया, कि भगवान्ने इतने दिनों बाद उसकी वही प्रार्थना मजूर की है। कोई बात नहा हूइ, अगर फिर भी इतना ता नि सदेह समझमें आ गया कि वह बन्नाटा वापस जाय या न जाय, पर दानतासे प्रणयकी भीय मौंगकर न अत्र वह खुद ही निरन्तर दुःख पायेगा और न उसे ही दुःख देगा। दुःसाध्य समस्यानी आज माना अन्तिम मीमांसा हो गई। हमेशासे ‘नहा’ कहकर यराय वह स्त्री अस्वीकार ही करती आई है, और आज भी उसमें व्यतिक्रम नहा हुआ, किन्तु यह अन्तिम ‘नहा’ आज आइ उलटी तरफसे। उस स्त्रीने इसनी स्वप्न भी कल्पना नहीं की थी कि दोनों ‘नहीं’ में इतना जखरदल प्रपेद होगा। पुरुषोंकी लोभ्य दृष्टिने हमेशा उसे परेशान ही किया है, लज्जामे पीडित ही किया है,—जात ही उसी दिशासे अगर उसे मुक्ति मिली हो, और शरीर धमने कारण उसके अस्तमाय

यौवनो अगर पुरुषाकी उदीत कामना, उमाद और आसक्तिवा रास्ता रोक दिया हो, तो इसम शिवायतकी कौन-सी बात है ? मगर फिर भी, घर लौटते समय, रास्तेमें मानो आज सारा विश्व-संसार उसे बिलकुल अपरिचित मूर्ति धारण करके दिखाद देने लगा । प्रेम नहीं, हृदयमें एकान्त मिलनेकी व्याकुलता नहीं,—ये सब तो दूसरी बातें हैं, बड़ी बातें हैं । किन्तु आजने पहले उसे इसकी क्या गहर थी ? जा गयी नहीं, जो रूपज हैं, अगुम हैं, असुन्दर हैं, अत्यन्त धनरथायी हैं,—उन सब कुत्सित बातोंके लिए भी उस नारीने अविज्ञात चित्तने नीचे इतना बड़ा आसन बिठा हुआ था । और उनने कारण पुरुषकी विमुक्तता उसे ऐसे निम्न अपमानसे आहत कर सनती है !”

हरेद्रो कहा, “अजित कहते तो वद अच्छे ढंगमें हैं । कहानीको सब ध्यानसे पढ़ा है ।

झियाँ चुपचाप बैठी सिफ देखती रहों, उन्होंने कुछ राय जाहिर नहीं की ।

आगु बाबूने कहा, “हाँ । उसने बाद, अजित ?”

अजित कहने लगा, “फिर उस महिलाको अचानक खयाल आया कि सिफ एक ही पुरुष तो उसे नहा चाहता था, बहुत-से लोग बहुत दिनोंसे उससे प्रेम करते आ रहे थे, प्रार्थना करते आ रहे थे,—उस दिन उसकी जरा सी मुसकान और मुँहके एक शब्दके लिए उनकी व्याकुलताकी हद न थी । प्रतिदिनके प्रत्येक पदक्षेपमेंसे वे न जाने कहाँसे और किस जमीनको फोड़कर बाहर निकल आते थे । पर वे सब भी आज कहाँ गये ? कहाँ भी तो नहा गये—अब भी तो कभी कभी दिरगाइ दे जाते हैं । तो क्या उसके अपने कण्ठका स्वर बिगड़ गया है ? उसकी हँसीका रूप बदल गया है ? अभी अभी उस दिनकी बात ही तो है,—दस पाँच बरस, सो ऐसे कितने दिन हो गये ?—इतनेमें क्या उसका सब कुछ बीत गया, सब कुछ लो गया ?”

आगु बाबू सहसा बोल उठे, “गया कुछ भी नहीं अजित, गया हो तो गायद उसका यौवन,—उसकी माँ होनेकी शक्ति रखा गई होगी ।”

अजित उनकी तरफ देखकर बोला, “यही बात है । कहानी आपने पढ़ी थी ?”

“नहा ।”

“नहीं तो ठीक यही बात आपने कैसे जान ली ?”

नीलिमाने कहा है, “कहा जा सकता है। कारण, वह तो कोई सालोंकी गिनतासे स्त्रियोंके जीवना हिसाब नहा है, इस बातका और चाहे जो भूल जाय, पर स्त्रियोंने भूलनेसे काम नहा चलेगा कि यौवनका आयुष्माल अत्यन्त ही कम है।”

अजित सिर हिलाकर और खुश होता हुआ बाला, “ठीक यही उत्तर उसने सुद दिया है। कहा, “आजसे समाप्तिनी शोप प्रतीक्षा करते रहना ही होगा। अशिक्षित जीवनका एकमात्र सत्य है। मैं जानती हूँ कि इसमें कोई सान्त्वना नहीं, जानद नहीं, आशा नहीं,—फिर भी उपहासनी लजासे तो तब ही जाऊँगी। ऐश्वर्यका भग्न स्तूप आज भी गायद किसी अभागिनी मन हर सद, परतु वह मुग्धता जैसे उसने लिए विडम्बनाक सिगा कुछ नहीं, वैसे ही मेरे लिए भी वह मिथ्या है, झूठ है। यह मुझसे नहीं होगा कि रूपका सचमुचका प्रयोजन सतम हो चुका है, उसीको नाना प्रकारसे, नाना वामभूपासे सजाकर कहूँ कि ‘सतम नहा हुआ’ तथा अपनेको और दूसरोंको धोरा देकर ठगती फिरूँ।”

इसपर और किसीने कुछ नहीं कहा, सिफ नीलिमा बोल उठी, “बहुत सुन्दर है। ये शब्द उसने मुझे बहुत ही सुन्दर लगे अजित बाबू।”

और सर्वोंकी तरह हरेद्र भी खूब ध्यानसे सुन रहा था वह इस मन्तव्यसे खुश न हुआ, बोला, “यह आपका भावावेगका उफान है भाभी, खूब सोच विचारके नहा कहा आपने। ऊँची डालपर सेमरका फूल भी सहसा सुन्दर दीख पडता है, फिर भी फूलोंके दरगारम उसकी कोई बदर नहा। रमणीकी देह क्या ऐसी तुच्छ चीज है कि इसने सिवा उसका और कोई उपयोग ही न हो ?”

नीलिमाने कहा, “नहीं है, सो ता लेखिनाने कहा नहीं। यह आशका उसे खुद भी थी कि अभागे जादमियोंकी आशयकता आसानीसे नहीं मिटती।”

फिर जरा हँसकर कहा, “और उफानकी जो बात कह रहे थे छोटे बाबू, सो अक्षय बाबू मौजूद नहीं, वे होते तो समझ जाते कि उफानकी व्यादती किस ओर है।”

हरेद्रने जमान दिया, “आप गाली गलौज करती रंगी तो मैं ऊन जाऊँगा, सो नहा होगा भाभी।”

सुनकर आतु बाबू खुद भी जरा हँस दिये, बोले, “वास्तवम हरेद्र, मुझे भी ऐसा लगता है कि इस कहानीमें लेखिनाने स्त्रियोंके रूपके वास्तविक प्रयो

जननी तरफ ही इशारा किया है।”

“भगर, क्या यही ठाक है ?”

“ठोक नहीं, यह बात मुनियाजा तरफ देखते लयाल करना कठिन है।”

हरेद्र उत्तेजित हो उठा, कहने लगा, “मुनियाजी तरफ देखकर आप चाहे कुछ भा लयाल करें, मनुष्यजी तरफ देखकर इसे स्वीकार करना मेरे लिए भी कठिन है। मनुष्यका प्रयोजन जगत्का साधारण प्रयोजनका धार करने बहुत दूर चला गया है, उसके तो उसकी समस्या ऐसी विचित्र, ऐसा दुर्बुद्ध होती जा रही है। इसीमें तो उसकी मयादा है आगु गानू, कि चलनासे जाकर उसे अलग नहीं किया जा सकता ?”

“सो हो सकता है। कहानीका ताका हिस्सा क्या है, मुनाओ वो अतिव।”

हरेद्र धुण्ण हो गया, गाथा देते हुए गोग, “सो नहीं होगा आगु गानू। यह र्म नहीं होन दूगा कि इस बातको तुच्छ समझकर आप जगत् देनेसे बच जायें। या तां मेरी बात स्वीकार कीजिए या फिर मेरी गलती दिया दीजिए। आपन बहुत कुछ देला है, बहुत पला है,—बहुत उद विद्वान् ह आप,—यह मुझसे नहीं सहा जायगा कि इस अनिर्दिष्ट टीली-गाली बातकी संधमेंसे मामी जीत जायें। कष्टिए ?”

आगु गानू हँसते हुए गोट, “तुम ब्रह्मचारी आदमी टहरे,—रूपने विवेचनमें धार भो जाओ ता इसमें तुम्हारे लिए लज्जाकी कोद बात नहा हरेद्र।”

“नहीं, सा मैं नहीं मुनेगा।”

आगु गानू धण भर चुप रहे, फिर धारे धीरे बोले, “तुम्हारा बातको अप्रमाणित टहरानेके लिए कभर गौधकर बरस करनेमें गुझे शम आती है। बाम्नामें यही अच्छा है कि नारीक रूपका निगुण अथ अपरिहृष्ट ही रहे।” फिर जरा चुप रहकर गोट, “अनितकी कहानी सुनने सुनते मुझे बहुत दिन पहलेकी एक दु पका कहानी याद आ रही थी। बचानमें मेरे एक अंग्रेज मित्र थे, वे एक पोलिश स्त्राको प्यार करते थे। लड़की बहुत हा सुन्दर थी, छानाआका पियानो खिपाकर जीविना चलाती थी। सिर रूप ही नहीं, आंख गुणोंस गुणपती भी थी। हम सभी उनकी शुभ कामना करते थे और निश्चित जाते थे कि उनके विवाहमें नही भी कोई विघ्न न आयेगा।”

अजिाने पूछा, “निघ्न कैसे आया ?”

आशु बाबूने कहा, “सिर्फ उमरनी बातपर। देशसे एक दिन उसनी माँ आ पहुँची। उसीने मुँहसे बातों ही बातामें जचानक पता लगा कि उसकी उमर पैंतीस पार कर चुकी है।”

सुनकर सप चौंक पड़े। अजितने पूछा, “उस महिलाने क्या आप लोगसे अपनी उमर छिपाई थी ?”

आशु बाबूने कहा, “नहीं। मेरा विश्वास है कि पृथ्वीपर वह छिपाती नहीं, —उसकी ऐसी प्रकृति ही न थी—मगर पृथ्वीनेनी बात निमीके ध्यानमें ही न आई। उसकी देहनी गठन ऐसा थी चेहरेकी ऐसी मुकम्मल थी या और ऐसा मधुर कण्ठस्वर था कि कभी किसीको आशंका ही न हुई कि उसकी उमर तीसमें ज्यादा हो सकती है।”

बलाने कहा, “आश्चर्य है। आप लोगमेंसे किसीने क्या आँस ही न थी ?”

“थी क्यों नहीं। मगर दुनियाने सभी आश्चर्य आँखोंसे नहा पकड़े जा सकते। इसे उसीना एक दृष्टान्त समझो।”

“और उस आदमनी उमर क्या थी ?”

“वह मेरी ही उमरका था,—तब शायद अट्ठाइस उन्तीससे ज्यादा न होगी उसकी उमर।”

“फिर ?”

आशु बाबूने कहा, “फिरनी घटना अत्यन्त सन्निहित है। उस युवकका सारा हृदय एक ही क्षणमें उस प्रीता रमणीने विरुद्ध मानो पापाग बन गया। उस बातको जमाना प्रीत गया, पर आज भी खयाल करता हूँ तो मनमें एक तरहकी टीस उठती है। कितने आँसू, कितनी हाय हाय, कितना जाना-आना, कितना मनाना-रिश्ताना होता रहा, पर उसका मनसे उस नफरतका जरा भी हिलाया हुलाया नहा जा सना। इन बातके आगे वह और कुछ सांच ही न सका कि यह याह असम्भव है।”

क्षण भर सभी चुप रहे। नीलिमाने पूछा, “मगर बात इससे टार उल्टी होती तो शायद असम्भव न होता ?”

“शायद न होता।”

“पर ऐसा ब्याह क्या उस देगाम एक भी नहीं होता ? ऐसे पुरुष क्या वहाँ हैं ही नहीं ?”

आशु बाबूने हँसते हुए जवाब दिया, “हूँ क्यों नहा। इस कहानीकी लेखिकाने शायद उस तोरसे ऐसे पुरुषको लक्ष्य करके ‘अभागो’ विशेषणका प्रयोग किया है। लेकिन अब रात तो बहुत हो गई आजित, इसका अन्त क्या है ?”

अजितने चौंकर उनकी ओर देखा, और कहा, “मैं आपकी ही कहानीकी बात सोच रहा था। इतना प्रेम होते हुए क्यों वह उसे ग्रहण नहीं कर सता ? इतनी बड़ी सत्य वस्तु किधरसे कैसे एक क्षणमें झूठी हो गई ?—जिदगी भर शायद वह महिला यही सोचती रही होगी, ‘एक दिन, जिस दिन मैं नारी थी।’ इसके पहले शायद उस विगतयौवना नारीने कभी इस बातकी चिन्ता भी न की होगी कि नारीत्वकी प्रासंगिक समाप्ति नारीने बिना जाने ही क्या और कैसे हो जाती है।”

‘लेकिन तुम्हारी कहानीका क्या ?’

अजित शान्त भावसे बोला, “रहने दीजिए। यौवनका वह शोष अभीतरक नि शोष नहीं हुआ,—अपने शोर दूसराने आगे खियोंकी इस प्रतारणाकी वरुण कहानीने साथ कहानी सतम होती है। अब आज रहने दीजिए, फिर किसी दिन सुनाऊँगा।”

नौलिमाने सिर हिलाते हुए कहा, “नहा नहा, इससे तो पत्निक उसे असमाप्त ही रहने दीजिए।”

आशु बाबूने हँसिं हँसिं मिली थी, वेदनाके साथ बोले, “दान्तमम खियोंके लिए यही समय निसर्ग जीवन होनेके कारण सबसे बुरा होता है। इसीसे शायद असहिष्णु, कपटी, पर उद्विग्न, —यहाँतक कि निष्ठुर होकर उन देवके पुरुष इन अविवाहिता प्रौढा खियोंसे उचकर चलना चाहते हैं नौलिमा।”

नौलिमाने हँसकर कहा, “ऐसा कहना ठीक नहीं आशु बाबू, नरि या कहिए कि तुम जैसी पति पुत्रहीना अभागी खियोंसे उचकर चलना चाहते हूँ।”

आशु बाबूने इसका फोड़ जवाब नहीं दिया, पर दुःखके स्वीकार कर लिया। बोले, “पर मजा तो यह है कि जो पति पुत्रके सौभाग्यवती हूँ, वे स्नेह प्रेम और सौंदर्य माधुर्यसे ऐसी परिपूर्ण हो उठती हूँ कि उद पता भी नहीं लग पाता कि जीवनका इतना बड़ा मुकट-काल क्या और किस रास्तेसे निकल गया।”

नौलिमाने कहा, “उन माध्यमवर्तियोंसे मैं डार नहीं करती आशु बाबू, ऐसी

प्रेरणा आज्ञात्मक भाव कभी नहीं आता, पर भाग्यके दापसे जो हमारी तरह भगिन्यानी सारी आशाओंको जगत्कलि दे चुकी हैं, उता सकते हैं कि उनके भाग का निदश निग तरफ है ?”

जागू बाबू कुछ देरक तो राध हुण बैठे रहे, फिर गले, “इसने जवाबमें मैं सिफ पढ़ोंकी बातकी प्रतिबन्धन मात्र कर सकता हूँ नीलिमा, उससे ज्यादा मुसम प्रती नहीं। वे कह गये हैं कि दूसरोंके लिए अपनेको उत्सग कर देना चाहिए। सकारण त ता दु रावा ही अभाव है और न आत्मनिन्दनन दृष्टा तों का अग्रद्वार है। यह सच मं भा जानता हूँ, —परन्तु इसे मं आज तक नि मशय होकर नहीं जान पाया कि इसफ भीतर नाराका सचमुचना निरदरुद्ध फल्याणमय आनन्द है या नहीं।”

हरेद्रन पृष्ठा, “यह सद्दह क्या आपका गुरुसे ही था ?”

जागू बाबू मन ही मन कुछ कुण्ठित से हुण, जरा ठहरकर बोले, “ठीक याद नहीं पड़ता हरेद्र। मनोरमाना गये तत्र दो-तीन दिन हुण होंगे। मन बोशिल था और शरीर निदश। इसी पुरसीपर चुपचाप पडा था, अचानक दखा कि कमल जा पहुँची है। आदरसे बुलाय उमे पास बिठाया। मेरी यथाकी लगाहको सारधानीसे बचाते हुण उसने निरल भी जाना चाहा, पर वह निरल नहा सकी। बाता ही बातोंम कुछ ऐसा प्रसग उठ सडा हुआ कि फिर उस कुछ होश ही न रहा। तुम लोग तो उसे जानते ही हो, जा भी कुछ प्राचीन है उसपर उसे वैरी प्ररल विवृणा है। उस झक्झकर ताट डालना ही माता उसका ‘पैशन’ (= उत्कट इच्छा) है। मन गराही नहीं दना चाहता, हमशाका सकार मारे डरने सिमुड जाता है। फिर भी जगत् हूँदे नहीं मिलता और हार माननी पडती है। या है, उस दिन भी मैंने उसन सामने खियोंक आत्मोत्सगका उल्लेख किया था, मगर उसने उसे मगूर ही नहा दिया। कहने लगी, ‘खियोंकी बात मैं आपसे ज्यादा जानता हूँ। वह प्रवृत्ति उनम है तो पर वह उनके भीतरकी पृणतासे नहा आती, आती है सिफ यथास, और उठती है हृदय खाली करके। वह तो स्वभाव नहा अभाव है और अभावने आत्मोत्सगपर म कानी-कौडीना भी विश्वास नहा करती।’ मेरी तो समझमें ही न आया कि इसना क्या जवाब दूँ, फिर भी मने कहा, ‘कमल, हिन्दू सभ्यताकी मूल वस्तुसे तुम्हारा परिचय होता तो आज शायद तुम्ह म समझ देता कि त्याग और विसजनकी दीशामें सिद्धि प्राप्त

करना ही हमारा मरसे बड़ी सफर है और इसी मार्ग का जावलम्बन कर हमारी कितनी ही विधवा स्त्रियों जीवनकी सरोक्ष साधकता अनुभव कर गई है। इसपर कमल हँसकर बोली, 'करते हुए देखा है आपने 'एक आध माम तो उताड़िए' मुझे नहीं मालूम था कि वह ऐसा प्रश्न कर बैठेगी, बल्कि मन तो यह सोचा था कि शायद वह बातको मान लेगी। म बड़ चकरमें पड़ गया—'

नीलिमा गोल उठी, 'यूँ ! आपने मेरा नाम क्यों नहीं उता दिया ! याद नहा आइ होगी शायद ?'

वैसा कठोर पारहास है। हरद्व और अजिताने सिर झुका लिया, और बेलाने दूसरी तरफ मुँह पंर लिया।

आगु बाबू कुछ अप्रतिम सं तो हुए, पर, उन्होंने यह चाहिर नहीं होने दिया, बोले, 'नहा, याद ही नहीं आइ। जॉरोंके मामनेकी बीजगर जैसे कमी कमी नजर नहा पड़ती जैसे ही। तुम्हारा नाम ले लेनेसे सचमुच ही उसका मामूल बवार हो जाता, किन्तु तब यह याद ही नहीं आया।'

'तब कमलने कहा, 'मुझ जिस शिक्षाका आपने उलाहना दिया है, खुद आप लोगोंके सम्बन्धमें भी क्या वह सोल्हा आने सच नहीं है। सायनतारा जो आइडिया सचपनसे ही लटकियोंके दिमागमें आप लोग भरने आये हैं, उसकी रती हुए बातोंको ही तो ये अपने साथ दुहराकर सोचा करती हैं कि शायद वही सत्य है। नतीजा यह होता है कि आप लग भी घोग्या पाते ह और आत्म प्रसादके यथ अभिमानसे वे खुद भी मर मिटती हैं।'

'इतना कहक वह फिर बोली, 'सहमरणकी यात ता आपने ध्यानमें आनी चाहिए। जो स्त्रियाँ जलने मरती थीं आर जो उदें प्रेरणा दिया करते थे, दोनों ही पक्षोंका दम्भ उस दिन यह सोचकर आनाशसे ज छूटा था कि वैधाय जीवनके इतने उड़े आदरका दणन्त सखारमें और है कहीं।'

'इसका मैं क्या उत्तर देता, कुछ समझमें ही न आया। मगर उसने उत्तरकी अपेक्ष भी नहीं की, खुद ही कहने लगी, 'उत्तर है हा नहीं, दने क्या।' फिर जण ठहरकर मेरे मुँहकी तरफ देखने बोली, 'लगभग सभी देशमें आत्मोत्सग शब्दसे एक तरहका बटुयास और गहमाचीन पारम्परिक माह है। उस मोहका नशा जिसे चला है, उसकी दृष्टि परलोककी अकाधार अवरु भी इस लोककी सहीग साधारण बन्तुको दक देनी है,—यह उसे सोचने ही नहीं देती कि उसमें

नर और नारी इन दोनोंमेंसे किसीने सस्कार उससे मानो कान पकड़वाके मनमा लेते हैं,—उसी तरह जिस तरह कि लगभग सहमरणको उन्होंने मनवा लिया था। बस अब और नहीं, मैं जाती हूँ।' कहकर उसे सचमुच ही चले जाते देखकर मने 'यस्त होकर कहा, 'कमल, प्रचलित नीति और समस्त प्रतिष्ठित सत्यको अपराधसे चूरा झूग कर देना ही मानो तुम्हारा मत है। यह शिक्षा जिसने तुम्ह दी है उसने जगत्का कल्याण नहा किया है'।

“कमलने कहा, 'मेरे पिताने दी है'।

“मने कहा, 'तुम्हारे ही मुँहसे मुना है कि वे शानी और विद्वान् आदमी ये। यह बात क्या उन्होंने कभी तुम्ह सिखाई ही नहीं कि अततक सर्वस्व दान करने ही आदमी सत्य रूपमें अपनेको पाता है! स्वेच्छासे दुःख स्वीकार करनेमें ही आत्माकी यथाथ प्रतीक्षा है।'।

“कमलने कहा, 'वे तो यही कहा करते थे कि आदमीका सख चूस लेनेका जिन्होंने पड्यत्र रच रक्खा है,—जिह दुःखना अनुभव नहीं, वे ही दुःख स्वीकार करनेकी महिमा गानेमें पचमुग हो जाया करते हैं। वह दुःख ससारके दुर्लभ्य शासनका नहा है,—वह तो मानो उसे स्वेच्छासे जान बूझकर बुला लाना है,—अथहीन शोककी चीन्की तरह महज एक लडकोंका रोठ है वह। उससे बड़ा नहीं'।

“मं तो आश्चर्यसे हतबुद्धि-सा हो गया। बोला, 'कमल, तुम्हारे पिता क्या तुम्हें शुद्ध भोगका मन ही दे गये हैं, और जगत्म जो कुछ महान् है, उसपर अभ्रद्धासे अवज्ञा करनेको ही कह गये हँ?'

“कमलने इस तरहके दोषारोपकी शायद मुझसे आशा नहीं की थी। उसने क्षुण्ण होकर उत्तर दिया, 'यह आपकी असहिष्णुताकी बात है आगु राबू। आप निश्चित जानते हैं कि कोई भी पिता अपनी कन्याको ऐसा मत्र नहीं दे जा सकता। मेरे पिताके प्रति आप अनिचार कर रहे हैं। वे साधु पुरुष थे।'।

“मने कहा, 'जैसा कि तुम कह रही हो, यदि वास्तवमें यह शि ग वे तुम्ह दे गये हों तो उनक प्रति सुविचार करना भी कठिन है। मनोरमाकी मृत्युके बाद अथ किसी स्त्रीको जो मं प्यार न कर सता इसे सुनकर तुमने कहा था कि यह चित्तकी कमजोरी है, कमजोरीको लेकर गत्र नहीं किया जा सकता। मृत पत्नीकी स्मृतिके सम्मानको तुमने निष्फल आत्म निग्रह' कहने उपेक्षाकी दृष्टिसे

देखा था । समयन कोइ माना ही उस दिन तुम्हारे प्यानम नहा आये थे ।’

“कमलने कहा, ‘आज भी नहीं आत आगु बाबू । जो समय उद्वत आम्पालनसे जीवनन आनन्को म्लान कर देता है वह तो कोइ चीज ही नहीं,—महज मनकी एक लीला है—उसे रॉधनेकी जरूरत है । सीमा मातकर चलना ही तो समय है ।—गतिनी स्थधामें भी समयनी सीमाको लॉप जाना सम्भर है । तत्र फिर उसे उतनी इज्जत नहीं दी जा सकती । यह रात क्या आपने कभी विचारने र्हा देगा कि अति-सयम भी एक तरहका असयम है ?’

“विचारके नहीं देगी, यह सच था । इसीसे विचारने देगनेकी बात चटसे याद आ गइ । मने कहा, ‘यह तो सिर्फ तुम्हारी रातोकी आदुगरी है, उसी भोगकी चकालतसे भरी हुइ । पर आदमी जितना ही प्पादा जफड पनइके भोग को लील जाना चाहता है, उतना ही उसे खो रैठता है । उसकी भोगनी भूख तो मिटती नहीं,—बल्कि निरन्तर अतृप्ति ही बन्ती चलती है । इसीसे हमारे शास्त्रार कह गये हैं कि उस मागम शान्ति नहा हे, तृप्ति नहा है, उससे मुक्ति की जाग व्यर्थ है । उनका कहना है कि ‘न जातु काम कामानामुपभोगेन शाम्यति, हरिया कृष्णवर्त्म्य भूय एवमभिनदते ।’ आगमें धी देनेसे जैसे वह और भी जोरसे जलने लगता है, वैसे ही भोग-उपभोगोंके द्वारा कामना बढ़ती ही जाती है, कभी घटता नहीं ।’

हरेद्र उठिम होत्रर बोल उठा, “उसके सामने गार-वाक्य आप क्यों कहने गये ? हाँ, फिर ?”

आगु बाबूने कहा, “तुमने टीक कहा । सुनर रह हँस पड़ी और गेली, ‘शास्त्रमें ऐसी रात है क्या ? सो तो होगी ही । उहँ यह भी तो मालूम था कि ज्ञानकी चचासे ज्ञानकी दृष्टा बढ़ती है, धमनी साधनासे धमनी प्यास भी उच्चोत्तर रटती जाती है, पुष्यके अनुशीलनसे पुष्यका लोभ भी क्रमश उग्र होता जाता है—मालूम होता है मानो अभी बहुत गाका है । इसकी भी ठीक वही हालत है । यह कामना भी गान्त नर्हा होती । इसलिए, इस क्षेत्रमें भी वे लोग क्या यही आशेष नहा कर गये ?—उनम त्रिंन था, शायद इसलिए ?’

हरेद्र, अजित, बेल और नीलिमा चारोंके चारों हँस पड़ ।

आगु बाबू गेले, “हँसनेनी बात नहीं । लडकाक प्पहास और व्यग्यसे माना में इतवाक् हो गया, अपनेकी सँभालर गेला, ‘नहीं, ...’

अभिप्राय नहा, वे तो यही निर्दश कर गये हैं कि भागसे वृत्ति नहीं हो सकती, कामनासे निवृत्ति नहीं हो सकती ।’

“कमल जरा रुझकर बोली, ‘मादम नहीं, ऐसे बाहुल्यका दगित वे क्या कर गये ? यह क्या बाजारम पेटकर ‘याना’ के गान सुनना है या पटोसीके घरका ग्रामोफोन है जो रीचम हा मादम हा जायगा कि जान दां, काफी वृत्ति हो चुकी, अत्र जरूरत नहीं । इस वृत्ति-अत्रसिकी असल सत्ता तो बाहरके भोगम हे नहीं, उसमा स्रोत तो है जीवनके मूलम । वहासे वह हमेशा, जीवनकी आशा, आनन्द और रस जुटाया करती है और शास्त्रका धिक्कार-थर्य होकर दरवाजेपर पडा रह जाता है—उसे छूतन नहा पाता ।’

“मैंने कहा, ‘सो हा सकता है, मगर है ता आखिरकार वह शत्रु ही, हमें उसे जीतना तो चाहिए ही ?’

“कमलने कहा, ‘मगर शत्रु कहने गाली देनेसे ही तो वह ओटा न हो जायगा । प्रवृत्तिने लिये पके पट्टेने अनुमार वह दरलदार है,—उसने किस स्वत्वको कब कौन सिर्फ विद्रोह करके ही उडा सका है ? दु रसे घनराकर आत्महत्या करना तो दु रको जीतना नहीं है ? फिर भी मजा यह कि ऐसी ही युक्तियोंने बलपर आदमी जकल्याणके सिद्धद्वारपर शान्तिमा रास्ता टटोलता फिरता है । इससे शांति तो मिलती नहा, स्वस्थता भी चली जाती है ।’

“सुनकर मुझे ऐसा लगा कि शायद वह सिफ मुझको ही कौंच रही है ।” इतना कहकर वे धण भर चुप रहे, फिर कहने लगे, “और न जाने मेरा कैसा जी हो गया कि मुँहसे बटसे निकल पडा, ‘कमल, तुम अपने जीवनपर तो एक बार विचार कर देखो ।’ बात मुँहसे निकल जानेके बाद खुद मुझे ही अपने कानोंको खटकी । कारण, कटाक्ष करने लायक उसने पास कुछ था ही नहा,—कमलको खुद भी जाश्रय हुआ, पर वह न तो गुस्सा हुआ, न रूठी, शान्त चेहरसे मेरी तरफ देखती हुई बोली, ‘मैं प्रतिदिन ही विचार देखती हूँ आशु शम्बू । दु ख नहा पाती हूँ सो म नहीं कहती, पर मैंने उस दु रको ही जीवनका चरम नहीं मान लिया है । शिवशायरी जो कुछ देना था वे दे चुके, मुझे जो मिलना था सो मिल गया,—आनन्दक वे छोटे-छोटे धण ही भर मनमें मणि माणिक्यकी तरह संचित हैं । न तो निपल मानसिक दाहसे मैंने उह जलाकर राक किया और न सखे शरनेन नीचे रीते हाथ पसारकर भोत माँगनेके लिए

ही खड़ी हुई। उनके प्रेमना शायु जब खतम हो चुकी, तो शान्त मनसे मैंने उन्हें निन्दा दे दी, पठतावे और शिक्षायतन धुँसे आकाश माला करनेकी मेरी प्रवृत्ति ही नहा हुई। इसीसे उनके सम्बन्धमें मेरा उस दिनका आचरण आप लोगोंको अभिदूत-सा लगा। आप लोगोंने सोचा था कि इतने बड़े अपराधको कमलने माफ कैसे कर दिया? मगर मेरे मनम उस दिन उनके अपराधसे यह कर अपने ही दुर्भाग्यकी बात ज्यादा आई थी।”

“सुनते-सुनते मुझ ऐसा लगा कि मानो उसकी आँसूसे आँसू छल्ला आये हैं। हो सनता है कि सब हो, या शायद मेरी भूल हो। उस वक्त मेरा हृदय मानो वेदनासे ढँठ गया,—उसमें और मुझमें प्रभेद ही नितना-सा था। मैंने कहा, ‘कमल ऐसे मणि माणिक्योंका सचय मैंने भी अपने मनम किया है, वही तो मेरे लिए सात राज्योंका धन है,—अब हम लोग किसने वाले लोभ करने जायँ रतलाओ?’

“कमल चुपचाप देगती रह गई। मने पूजा, ‘इस जीवनमें क्या अब तुम और किसानो प्यार कर सकती हो कमल? इस तरह समस्त देह मनसे अगीकार कर सकती हो और निचीरो?’

“कमलने अविचलित कण्ठसे जवाब दिया, ‘कमसे कम निन्दा तो यही आशा लेकर रहना पड़ेगा आगु बाधू। असमयम रादलोंकी ओटमें आज अगर सूर्य अस्त हो गया-सा मात्स दे, तो क्या बह अधकार ही सत्य हो जायगा और बल प्रभातमें जदण प्रकाशसे अगर आकाश छा जाय तो क्या अपनी आँसूको बन्द करने यह कह दूँगी कि यह प्रकाश नहीं है, अधकार है? जीवनको क्या ऐसे ही बच्चोंने गेल-रोलम खतम कर दूँगी?’

“मन कहा, ‘रात तो सिफ एक ही नहीं होती कमल, प्रभातम प्रकाश खतम करने यह तो दुःख भी आ सकती है?’

“उसने कहा, ‘जाया कर। तब भी प्रभातपर विश्वास करके फिर रात पिता दूँगी।’

“मैं तो मारे आश्रयने सन्न होकर बैठा रहा,—कमल चली गई।”

“बच्चोंका गेल! सोचा था, शोषमेंसे गुजरकर हम दोनोंकी चिन्ता धारा शायद एक ही मोतमें मिल गई है। परन्तु देखा कि नहीं, सो रात नहीं है। जमीन आसमानका एक है। उसने दृष्टिकोणसे तो जीवनका जय ही खतम है,—

हम लोगोंके साथ उसका कोई मेल ही नहीं। वह न तो अदृष्टमो ही मानती है और न अतीतकी स्मृति उसने आगेका रास्ता ही रोकती है, उसका लिए अनागत ही सब कुछ है,—जो आजतक आया नहीं है। इसीसे उसकी आशा भी लितनी दुर्निवार है, आनन्द भी उतना ही अपराजेय है। सिर्फ इसी वजहसे कि किसी गैरने उसका जीवनको धोखा दिया है, वह अपने जीवनको धोखा देने या बचिबत रखनेके लिए किसी तरह तैयार नहीं।”

सुनके सब चुप रहे।

उठते हुए दीप निश्वासको दबाकर आगु बाबू फिर कहने लगे, “विलक्षण लडकी है। उस दिन नफरत और पठतावेका ठिकाना न रहा, पर साथ ही यह बात भी मन ही मन स्वीकार किये बिना न रहा गया कि वह सिर्फ बापसे सीखकर रटी हुई भाषा नहीं है। जो कुछ उसने सीखा है, विलकुल निश्चय होकर पूरी तरह खुद ही सीखा है। ऐसी विशेष उमर भी नहीं, पर फिर भी मास्टर होता है कि अपनी आत्माको उसका दृष्टी उमरमें पूरी तरह उपलब्ध कर लिया है।”

फिर जरा ठहर कहने लगे, “और बात भी सच है। वास्तवमें जीवन कोई बच्चाका खेल तो है नहीं। भगवान्का इतना बड़ा दान इसलिए नहीं आया। ऐसी बात भी भला में कैसे कह सकता था कि कोई एक आदमी किसी दूसरेके जीवनमें विफल हो गया तो उसी शून्यताकी जिदगी भर जब धोपणा करता रहे?”

बेलाने आहिस्तेसे कहा, “बात तो बड़ी सुन्दर है।”

हरेन्द्र चुपकसे उठके सड़ा हो गया, बोला, “रात काफी हो गई, मेह भी कम हो गया,—आज इजाजत मिले।”

अजित भी उठ सड़ा हुआ, कुछ बोला नहीं। आर दोनों नमस्कार करने साहर हो गये।

बेला सोने चली गई। नीलिमाको छोटे मोटे दो एक काम करने बाकी थे, पर आज वे यों ही अधूरे पडे रहे आर अन्यमनस्ककी तरह वह भी चुपचाप चल दी।

नीरुरकी प्रती रामें आगु बाबू आँखोंपर हाथ धरे पडे रहे।

बड़ा भारी भवान था। बेला और नीलिमाके सोनेके कमरे आमने-सामने थे। दोनों कमरोंमें बच्ची जल रही थी, इतनी सजनी सब रातें और आलोचनाएँ

एने नि सग कमरोंम पहुँचनेके बाद मानो धुँधली-सी हो गई, फिर भी, परम आश्चर्यकी बात यह है कि कपड़े बल्लनेके पहले दपणने सामने जाकर राठे होनेपर दोनों नारियोंके मनमें, एव ही समयमें, ठीक एक ही प्रश्न उठ उठा हुआ 'एक दिन, जिस दिन मैं नारी थी !'

२४

दस-बारह दिन हुए कमल आगरा छोड़कर वही बाहर चली गई है, और इधर आगु बाबूको उसकी सख्त जरूरत है। थोड़ी बहुत चिन्ता तो सभीको हुई थी, पर उद्वेगके काले बादल स्वते ज्यादा हरे-द्रके ब्रह्मचर्य-आगमने माथेपर बैठेराये। ब्रह्मचारी हरे-द्र और अजित व्याकुलताकी प्रतिस्पर्धामें ऐसे सूखने लगे कि शायद उनका 'ब्रह्म' भी खो जाता तो ऐसे परेशान न होते। अन्तम उन्होंने एक दिन उसे दूँ ही निकाला। यन्ना अत्यन्त साधारण थी। कमलना चायके बगीचेका एक घनिष्ठ परिचित फिरगी साहज उहाँका नाम छोड़कर टूँडलामें रेल्वेकी नौकरी करने आया है, उसने स्त्री नहीं है, दो दाढ़ छात्नी एक जोटी लडकी है। बड़ी परेशानीमें पड़कर यह कमलको टूँडला ल गया है। उसकी घर गृहस्थी ठीक करनेमें कमलको इतनी देर लग गई। आज सबसे वह घर लौटी है और तीसरे पहर उसके लिए मोटर भेजकर आगु बाबू बाट देस रहे हैं।

सिखाइ करते-करते नीलिमा सहसा बोल उठी, "उस आदमाके घरम स्त्री नहा, एक नन्ही-सी लडकीके सिवा और कोद औरत भी नहीं,—फिर भी उसने घर कमलने आसानीसे दस-बारह दिन रिता दिये।"

आगु बाबूने बड़ी मुँकिलोंसे सिर घुमाकर उसकी तरफ देखा, पर वे गमस्त न सके कि इस बातका तात्पर्य क्या है।

नीलिमा मानो अपने मन ही मन कहने लगी, "वह तो, मादम होता है, नदीकी मछली है जिसके पानीमें भीगने-न भीगनेका कोई प्रश्न ही नहीं उठता, पाने-पहननेकी उसे चिन्ता नहीं,—बिल्कुल स्वाधीन है।"

आगु बाबूने सिर हिलाते हुए मृदु कटसे कहा, "बान तो कतीर-करीर ठेसी ही है।"

"उसने रूप-शौचनकी सीमा नहीं, बुद्धि भी पैसी ही अनन्त है। उस गने-द्रके साथ उसकी कै दिनकी जान-पहचान थी, मगर उपद्रवके काले का

कहीं उसे जगह नहा मिली, तो उसे भी उसने पिना किसी सफ़ाचके अपने घर बुला लिया। किसीके मतामतकी परमाहने उसके कतव्यमे पिन्च नहीं डाला। जो किसीसे नहीं पना, उसे यह बड़ी आसानीसे कर गुजरी। सुनकर ऐसा लगा जैसे सार उससे छोटे हो गये हैं,—इसने लिए दूसरी औरतोंको न जाने कितनी कितनी बातोंका खयाल रखना पडता है।”

आशु बाबूने कहा, “खयाल तो रखना ही चाहिए नीलिमा !”

बेलाने कहा, “हम भी चाह तो वैसी ही बेपरवाह और स्वाधीन बन सकती हैं।”

नीलिमाने कहा, “नहीं, नहीं बन सकती। म भी नहा बन सकती, और आप भी नहीं। कारण, दुनिया हमपर जो स्याही उडेल देगी उसे धो पोंछकर साफ कर डालनेकी शक्ति हम लोगमें नहा है।”

जरा ठहरकर नीलिमा कहने लगी, “वैसी दृच्छा एक दिन मेरी भी हुई थी, इससे सब ओरसे मैंने इस बातको सोच देखा है। पुरुषोंने बने हुए अविचार और अत्याचारसे हम जल जल मरी हं ओर कितनी जली हैं यह कह नहीं सकती,—सिफ जलना ही सार हुआ है।—पर समाजके इस अत्याचारका असली रूप कमलको देखनेके पहले हमें कभी नहीं दिखाद दिया। स्त्रियोंकी मुक्ति, स्त्रियोंकी स्वाधीनता तो आजकल हरएक स्त्री पुरुषकी जबानपर है, पर वह जबानके आगे एक कदम भी आगे नहीं जाती। सो क्या, जानती हैं ? अब मालूम हुआ है कि स्वाधीनता तब निचारसे नहीं मिलती, न्याय और धर्मकी दुहाइ देनेसे भी नहा मिल सकती, मभामें सट होकर पुरुषोंके साथ कलह करनेसे भी नहा मिलती,—असलमे स्वाधीनता जैसी चीज कोइ किसीको दे ही नहीं सकता,—लेने देनेकी वह चीज ही नहीं। कमलको देखते ही दीग जाता है कि यह स्वाधीनता हमारी अपनी पूणतासे, आत्माने अपने निस्तारसे, स्वत ही आती है। बाहरसे अण्डेका टिलना तोडकर भीतरके जीमनो मुक्ति देनेसे बह मुक्ति नहा पाता,—गन्धि मर जाता है। हमारे साथ यहापर उसका पार्थक्य है।”

फिर बेलाने बोली, “अभी जो वह दस बारह दिनने लिए न जाने कहाँ चली गई, सनके डरना ठिकाना न रहा, पर यह आशका किसीको खप्नमें भी न हुई कि ऐसा कोइ काम वह कर सकती है जिससे उसकी इज्जतपर गटा लगे ? बताइए, हम होती तो आदमीने दिलेमें इतना जपरदस्त विश्वासका जोर कहाँ

पाता ! यह गौरव हम कौन देता ! न पुत्र ही देते, न औरत ही ।”

आगु बाबू आश्रयने साथ उसके मुँहकी तरफ श्रुण भर देपते रहे, फिर गले, “वास्तवमें यह सब है नीलिमा ।”

बेलाने पूछा, “लेकिन उसका पति होता तो यह क्या करती ?”

नीलिमाने कहा, “उसकी सेवा करती, रसोइ बनाती पिलाती, घर-द्वार झाड़ती-बुहारती, बच्चे होते तो उनकी परवरिश करती, और क्या करती ? अभी तो वह अकेली है और ग्ये-पैसेसे भी तग है, नहीं तो वैसी हालतमें, मैं तो समझती हूँ, समयने अमागमें यह हम लोगोंसे भिलने-जुलनेतक न आ सकती ।”

बेलाने कहा, “तब फिर ?”

नीलिमा, “तब फिर क्या ?” कहकर हँस दी और गौली, “घरका काम काज नहीं कर, तगी या गिकायत कुछ रहे नहा, हरदम सैर-सपाटा करती फिरें,—क्या यहा स्त्रियाँकी स्वाधीनताका मान दण्ड है ? स्वयं विधाताके भी काम-काजना अन्त नहा, लेकिन कोद क्या इस कारण उन्हें पराधीन सोचता है ? इस ससारमें हमारी खुदकी मेहनत मशकत भी क्या कुछ कम है !”

आगु बाबू गहरे आश्रयने साथ मुग्ध दृष्टिसे उसकी तरफ देपते रहे । असलमें इस टगती को गत अरतक उन्होंने नीलिमाने मुँहसे नहीं सुनी थी ।

नीलिमा कहने लगी, “कमल पैठी रहना ता जानती ही नहीं, तब वह पति पुत्र और घर-गृहस्थाने कामोंमें तल्लोन हो जाती,—आनन्दकी जल धाराकी तरह घर-गृहस्थी उसने माधेपरसे गही चला जाती, उस पता भी न पड पाता । मगर जिस दिन समझती कि पतिका काम वास्त बनकर उसके सिरपर सवार हो गया है, उस दिन मैं सौगंध ग्याकर कह सकती हूँ कि उसे ससारमें कोद एक दिनने लिए भी पनडफर नहीं रख सकता ।”

आगु गानू आदित्सेमे गौले, “सो ही ठीक है । ऐसा ही मालूम होता है ।” इतनेमें परिचित मोटरका हॉर्न सुनाद दिया । बेलाने खिडकीसे गॉककर देखा और कहा, “अपनी ही गाडी है ।”

थाडी देर गद नौकर गती खाने जाया और कमलके जानेकी खबर दे गया । कद दिनसे आगु गानू उसीकी प्रतीक्षा कर रहे थे, मगर फिर भी खतर पाते ही उनका चेहरा अत्यन्त म्लान और गम्भीर हो गया । अभी-अभी वे आराम-कुरसीपर साधे होकर बैठे थे, अब फिर पीठ टेककर लेट गये ।

भीतर आकर कमलने सबको नमस्कार किया, और आगु बाबूके पासकी कुरसीपर जाकर बैठ गइ। बोली, “मैंने सुना कि आप मेरे लिए बड़े व्यस्त हैं, जिसे मालूम था कि आप लोग मुझे इतना चाहते हैं,—नहीं तो जानेके पहले अवश्य ही आपको खबर दे जाती।” कहते हुए उसने आगु बाबूका थियिल हाथ बड़े स्नेहके साथ रीचकर अपने हाथमें ले लिया।

आगु बाबूका मुँह दूसरी ओर था, और अब भी वह उधर ही रहा। उसकी वृत्तिका वे कुछ भी उत्तर न दे सके।

कमलने पहले तो समझा कि उनके सम्पूर्ण स्वस्थ होनेके पहले ही वह चली गइ थी और अबतक कोई खबर-सुध नहीं ली, इसीसे उनका यह अभिमान है। फिर उसने उनकी मोटी उँगलियोंमें अपनी चम्पाकी क्लीसी उँगलियाँ उलझाते हुए जानने पास मुँह ले जाकर चुपनेसे कहा, “भेरी गलती हुई है, मैं माफी माँगती हूँ।” भगर इसका भी जब कोई जवाब नहीं मिला, तब उसे सचमुच ही बड़ा आश्चर्य हुआ और साथ ही डर भी लगा।

बेला जानेके लिए कदम उठा चुकी थी, रुके होकर उसने विनयने साथ कहा, “अगर मालूम होता आप आयगी, तो आज मालिनीका निमंत्रण मैं हगिन स्वीकार न करती, लेकिन अब तो न जानेसे उन लोगोंको बड़ी निराशा होगी।”

कमलने पूछा, “मालिनी कौन ?”

नीलिमाने जवाब दिया, “यहाँने मैजिस्ट्रेट साहबकी स्त्री,—नाम शायद तुम्हें याद नहा रहा।” फिर बेलाकी तरफ मुखातिब होकर कहा, “सचमुच ही आपका जाना जरूरी है। नहाँ जानेसे उनकी गानेकी सारी महफिल बिल्कुल मिट्टी हो जायगी।”

“नहीं नहीं, मिट्टी नहीं होगी,—मगर हाँ, रज जरूर होगा। सुना है कि उन्होंने और भी दो चार सज्जनोंको आमन्त्रित किया है। अच्छा तो, आज तो वहीं जाती हूँ, फिर और किसी दिन बातचीत होगी। नमस्कार।” कहकर वह जरा कुछ व्यग्रताके साथ बाहर चली गइ।

नीलिमाने कहा, “अच्छा ही हुआ जो आज उनका बाहर निमंत्रण था, नहीं तो सब बातें खुलासा करनेमें द्विचकिचाहट होती। अच्छा कमल, तुम्हें मैं ‘आप’ कहती थी या ‘तुम’ कहके पुकारती थी ?”

कमलने कहा, “‘तुम’ कहके। मगर मैं तो कोइ ऐसे निवासनम नहीं गद थी जो इस बीचमें ही भूल जातीं।”

“नहीं, सिर्फ जरा खटका हो गया था। जीर होनेकी बात भी है। रैर, इसे जाने दो। सात आठ दिनसे तुम्हें हम लोग ढूँढ रहे थे। हमारा यह सिर्फ खोजना ही नहीं था बल्कि मेरी तो यह तुम्ह पानेने लिए मन ही मनरी तपस्या थी।”

परतु तपस्याका शुभक गाम्भीय उसने चेहरेपर न था, इसलिए, अट्टरिम स्नेहने मीठे परिहासनी कल्पना करके कमल हँसती हुई बोली, “इस सौभाग्यका कारण ! मैं तो सबकी परित्यक्ता हूँ जीजी, शिष्ट-समाजका तो कोइ मुझे चाहता तक नहीं।”

उसका यह ‘जीजी’का सम्बोधन बिल्कुल नया था। नीलिमाने आँसु सहसा भर आई, पर वह चुप रही।

आशु बाबूसे न रहा गया, उसकी तरफ मुँह करके बोले, “शिष्ट-समाजको जरूरत होगी तो इसका जवाब वही देगा, लेकिन मैं जानता हूँ, जीवनमें किसीने अगर वास्तवमें तुम्हें चाहा है तो नीलिमाने ही चाहा है। इतना प्रेम तुमने शायद किसीका भी न पाया होगा कमल।”

कमलने कहा, “सो मैं जानती हूँ।”

नीलिमा चंचल पैरोंसे उठ खड़ी हुई। कहीं जानेने लिए नहा बल्कि इसलिए कि इस दृगकी आलोचनामें व्यक्तिगत इशारेसे वह हमेशा कुछ अस्थिर-सी हो जाया करती है बहुतसे मौकोंपर प्रिय जनाको इससे गलतफहमी हुई है, फिर भी, ऐसा ही उसका स्वभाव है। बातको शत्रुपट दबाकर उसने कहा, “कमल, तुम्हें आज दो खरों सुनानी हैं।”

कमल उसने मनका भाव समझ गद, हँसने ली, “अच्छी बात है, सुनाए।”

नीलिमाने आशु बाबूकी तरफ इशारा करके कहा, “ये शरमके भारे तुमसे मुँह छिपाये हुए हैं, इससे मने ही भार लिया है सुनानेका। मनोरमाके साथ शिष्टनाथका न्याह होना स्थिर हो गया है,—पिता और भावी दाम्पत्यकी अनुमति और आशीर्वाद पानेके लिए दोनोंने पत्र दिये हैं।”

सुनते ही कमलका चेहरा फक पड़ गया, पर उसी क्षण अपनेको संयत्ते

हुए उमने कहा, “इसमें इनके लिए लज्जाकी क्या बात है ?”

नीलिमाने कहा, “इनकी लज्जा ही इसलिए। और चिट्ठी पानेके बादसे इन कई दिनोंमें इनके मुँहसे सिर्फ एक ही बात बार-बार निकली है कि आगेमें इतने जादमी मर गये, भगवान् ने मुझपर दया क्यों नहीं की ! अपनी जानमें किसी दिन कोई अनुचित काम नहीं किया, इसीसे इनका अनन्य विश्वास था कि इश्वर मुझपर भी सदाय है। और यह अभिमानकी व्यथा ही मानो इनकी सारी वेदनाओंसे उठ गई है। मैंने सिवा किसीसे कुछ कह नहा सके हैं, रात दिन मन ही मन सिर्फ तुम्हारे पुकार रहे हूँ। शायद, इनकी धारणा है कि सिर्फ तुम ही इससे परित्राणका रास्ता बता सकती हो।”

कमलने धुक्कर देखा कि आशु बाबूकी मिची आँगोंके कोनोंसे आँसू टपक रहे हैं, हाथमें उन आँसुओंको चुपचाप पोंछकर वह खुद भी स्तब्ध हो रही।

गुह्त देर बाद गोली, “एक सत्र तो यह हुए और दूसरी ?”

नीलिमाने कुछ परिहासके तगपर बात कहनी चाही, पर ठीकसे कहते नहीं पना, बोली, “मामला जरा अचिन्तित जरूर है, पर ऐसा कुछ भयकर नहा। हमारे मुकर्जी महात्म्यने स्वास्थ्यके विषयमें सत्र कोई गुह्त चिन्तित थे, सो वे स्तब्ध हो गये हैं और उससे बाद उनके भाइ और भाभीने मिलकर उनकी इच्छाके सत्रथा विरुद्ध जरूरन् उनका ब्याह कर दिया है। और बड़ी शर्मने साथ उन्होंने यह सत्राद आशु बाबूको अपने पत्रमें लिखा है,—बस।” इतना कहकर अबकी बार वह खुद ही हँसने लगी।

उसकी इस हँसीमें न तो सुख ही था और न कौतुक ही। कमल उसके मुँहकी तरफ देखकर गोली, “दोनों ही ब्याहकी सत्ररें हैं। एक हा गया है, और एकका होना तय हो गया है—लेकिन मेरी पुकार क्या हुए ? इनमेंसे किसीको भी तो मैं रोक नहा सकती ?”

नीलिमाने कहा, “पर, रुनवानेकी कल्पना करके ही शायद ये तुम्हें हूँट रहे थे। लेकिन मैंने तुम्हें नहीं ढूँढा वहन, मैं तो काय मनसे भगवान् से यही चाह रही थी कि भेंट होनेपर तुम्हारी प्रसन्न दृष्टि प्राप्त कर सकूँ। इस देशमें स्त्रीके रूपमें लज्जा लेकर भाग्यको दोष देने चहुँ तो उसका चिनारा न खोज पाऊँगी, अपनी बुद्धिके दोषसे मायना और ससुराल दोनों ही खो दिये हैं,—उसपर उपरी नुकसान जो हुआ है उसका विवरण नहा दे सकूँगी।—अब वहनोइका

आश्रय भी जाता रहा ।” फिर आगु बावूनी तरफ इशारा करते कहा, “इनसे तो दया-दायित्वयमी हृद ही नहा, जितने दिन ये यहाँ ह, किसी तरह दिन कट ही जायेंगे, मगर उसके बाद मुझे अपकारक सिना अपनी आँखोंसे आगे और कुछ नहीं युक्त रहा है । सोचा है, अमकी मार तुम्होंसे जगह देनेको कहूँगी, और न मिली तो मर जाऊँगी । अब पुण्योंसे कृपाभिन्ना माँगती हुई नदीने कृपकी तरह घाट घाट टकराती हुन जायुन अन्ततक प्रतीति न कर सकूँगी ।” कहते-कहते उसका स्वर भारी हो आया, पर आँखाका पानी उसने किसी तरह बपरलस्ती दवा लिया ।

कमल उसने मुँदरी तरफ देखकर सिफ जरा हँस दी ।

“हँसी क्यों ?”

“इसलिए कि हँसना जगार देनेकी ओक्षा सहज है ।”

नीलिमाने कहा, “सा जानतो हूँ, पर आजकल बीच-बीचमें न जाने कहाँ अटाय हो जाया करती हो ?—डर तो इस बातका है ।”

कमलने कहा, “घोती गहूँ अटारन लेकिन जरूरत पडनेपर मुझे हँसने नहीं जाना पड़ेगा जीजी, म ही आपनो देश भरमें हँसने निकल पड़ूँगी । इस प्रिययमें आप निश्चिन्त रह ।”

आगु बावूने कहा, “अब इसा तरह मुझे भी अमय दा कमल, म भी जिससे इनकी तरफ निश्चिन्त हो सकूँ ।”

“आदेश दीनिए, म आपने लिए क्या कर सकती हूँ ?”

“तुम्हें और कुछ नहीं करना होगा कमल, जो करना होगा म खुद ही करूँगा । मुझे सिफ इतना उपदेश दो कि पिताके कतयने तिलाफ म कोद अपराध न कर बैठूँ । इतना ही नहीं कि इस ब्याहमें म सिफ राय ही नहीं दे सकता, बल्कि म उसे होने भी नहीं दे सकतो ।”

कमलने कहा, “राय आपका है, सा आप नहा मी द । पर ब्याह नहीं हाने दगे, सो कैसे ? लडकी तो आपनी रडी हा चुकी है ।”

आगु बावू अपनी उचेजाको दया न कर, कारण, यह बात उनने मनमें भी दिन-रात चक्कर घाटती गही है कि अम्बीकार करनेका कोद उपाय नहीं । गेते, “सो म जानता हूँ । लेकिन लडकीको मी मालूम होना चाहिए कि बापसे वशा नहीं हुआ जा सकता । सिफ मरामत ही मेरी अपना चीज नहीं कमल,

सम्पत्ति भी मेरी अपनी है। आशु वैद्यकी कमजोरीके परिचयका ही लोगाने अभ्यास हो गया है, पर उसका एक दूसरा पहलू भी है,—उसे लोग भूल गये हैं।”

कमलने उनके मुँहकी तरफ देखकर खिग्ध कण्ठसे कहा, “आपने उस पहलूको लोग भूले ही रहें तो अच्छा, आशु जानू। लेकिन, अगर ऐसा न हो, तो क्या उसका परिचय सत्रमे पहले अपनी लटकानो ही देना होगा ?”

“हाँ, अबाध्य लडकीको।” वे क्षण भर चुप रहकर बोले, “वह मेरी मातृ हीन एकमात्र सन्तान है, किस तरह मन उसे आदमी बनाया है, इसे वे ही जानते हैं जिन्होंने पितृ हृदयकी सृष्टि का है। इसकी मार्मिक व्यथा कितनी गंभीर है, उसे अगर मुँहसे यत्न किया जाय तो उसकी प्रकृति सिर्फ मेरा ही नहीं, बल्कि सत्रके पिताका जो पिता हैं उनतकका उपहास करने लगेगी। इसने सिना इने तुम समझ भी कैसे सकती हो। लेकिन पिताका स्नेह ही नहीं है, कमल, उसका कर्तव्य भी तो है ? शिवनाथका मैं पहचान गया हूँ। उसका सत्यानाशी ग्राससे लडकीको नचानेका इसका सिना और कोद रास्ता ही मुझे नजर नहीं आता। बल उन लोगोंका चिट्ठीम लिख दूंगा कि इसने ग़द मणि मुझसे एक कौड़ीकी भी आगा न रखे।”

“पर उस चिट्ठीपर अगर वे विश्वास न करें ? अगर सोच लें कि यह गुस्सा ज्यादा दिन न रहेगा,—एक दिन आप अपनी गलतीका खुद ही मुधार लगे,—तब ?”

“तब वे उसका पल भोगेंगे। लिपनेकी जिम्मेदारा मेरी है, विश्वास करनेका दायित्व उनपर है।”

“यही क्या आपने वास्तवम तब किया है ?”

“हाँ।”

कमल चुप बैठी रही और प्रतीक्षामें सिर ऊपर उठाए ध्यातु बाधू खुद भा कुछ देरतक चुप मन ही मन व्याकुल हो उठे। बाले, “चुप हो रही कमल, जवाब नहीं दिया ?”

“कहाँ, आपने तो काद प्रश्न कहा किया ? उसारमें यह यत्रथा तो प्राचीन कालसे हो चली आ रही है कि एकक साथ जर दूसरक मतका मेल नहीं गाता, तो जो शक्तिशाली होता है वह कमजोरको दण्ड देता है। इसमें कहनेकी क्या

रात है ?”

आगु बाबूके धोभका सीमा न रही, बोले यह तुम्हाग कैसी रात है कमल ! सन्तानके साथ पिताका शक्ति-शरी प्रका सम्बन्ध तो है नहा, जो उसने कमजोर होनेके कारण ही म उसे दण्ट देना चाहता हूँ ! कठोर होना कितना कठिन है, सा सिर्फ पिता ही जानता है, फिर भी मैंने जो इतना बडा कठोर सख्य किया है वह सिर्फ इसलिए कि उसे गलतीसे उवा लूँ। सचमुच ही क्या तुम इसे समझ नहीं सकी हो ?”

कमलने सिर हिलाते हुए कहा, “समझ तो सही हूँ, पर अगर आपकी बात न मानकर वह भूल ही जर बैठे, तो उसका दु रा भी तो पही पायेगी। अगर उस दु राको दूर न कर सके तो इसलिए क्या आप गुम्बमें आकर उसने दु राके मोसको और भी हजार गुना बना देना चाहेंगे ?”

फिर जरा ठहर कर कहा, “आप उसने सर आत्मीयासे उतर परमात्मीय हैं। जिस आदमीको आपने बहुत ही बुरा समझ लिया है क्या उसीने हाथ अपनी लडकीको हमेशाके लिए नि म्ब निरुपाय करक विसर्जित कर दगे ?— किसी दिन लौटनेका बोद रास्ता ही किसी तरफसे खुला न रहन देंगे ?”

आगु बाबू विह्व दृष्टिसे सिफ देगते रह गये, एक शब् भी उनने मुँहसे न निकला—सिर्फ देगते-देगते उनकी दोनों आँसोंसे आँसु-जोंकी गडी-गडी बूँदें टुलफ पडीं।

कुछ देर इसी तरह रात जानेपर उठान अपनी आस्तीनसे आँसों पोंछी और रुके हुए कण्ठको साफ करने धीरे धीरे सिर हिलाकर कहा, “लौटनेका रास्ता अभी ही है, बादम नहीं। पतिको त्यागकर जो लौटना है, जगदीश्वर कर नि वह मुझे अपनी आँसुसे न देगना पड़े।”

कमलने कहा, “यह अनुचित है। श्लि, मैं तो यह कामना करती हूँ कि भूल अगर उसे कभी अपनी आँसुसे दिखाइ दे जाय, तो उस दिन उसने सगोधनका माग किसी भी तरफसे बन्द न रहे। इसी तरह तो मनुष्य अपनेको सुधारते सुधारते आज मनुष्य हो सता है। भूलने तो काद डर नहीं आगु बाबू, जबतक कि दूसरी तरफका माग खुला है। वह माग आँसुका सामने रुन्द दिखाइ देना है, तमा तो आज आपका आधाकाकी सीमा नहा है।”

मनोरमा उाकी बन्धा न होकर अगर और कोद होती तो यह सीधी-सी

रात सहजहीमें उनकी समझमें आ जाती, परन्तु एकमात्र सन्तानमें भयङ्कर भविष्यकी निम्सन्दिग्ध दुर्गतिकी कल्पनाने कमल सम्पूर्ण आवेदनको रिफल कर दिया।

उन्होंने अनुनयमें स्वरमें कहा, “नहीं कमल, इस व्याहको रोकनेसे सिवा और कोई रास्ता मुझे नहीं मुझाई देता। इसका कोद भी उपाय क्या तुम नहीं बता सकती?”

“में?” उनकी इशारा इतनी देर बाद कमलकी समझमें आया, और उसीको स्पष्ट करनेमें उसका स्निग्ध कण्ठ क्षण भरने लिए गम्भीर हो उठा, पर वह सिर्फ एक ही क्षणके लिए। नीलिमाकी तरफ नजर जाते ही उसने अपनेको सँभालते हुए कहा, “नहीं, इस विषयमें काइ भी सहायता मैं आपकी न कर सकूँगी। नहीं जानती कि उत्तराधिकासे वचित करनेका डर दिखानेसे वह डरेगी या नहीं। पर अगर डर जाय तो मैं कहूँगी कि आपने खिला पिलाकर और स्कूल कालेजकी कितायें रटानर लडकीको बड़ा भले ही किया हो पर उसे मनुष्य नहीं बनाया। उस अभायको दूर करनेका सुयोग देवने आज ला ही दिया हो, तो मैं उसने बीचमें अन्तराय बनने क्यों जाऊँ?”

रात आगु बाबूको अच्छी नहीं लगी, उन्होंने कहा, “तो क्या तुम यह कहना चाहती हो कि रोकना मेरा कर्तव्य नह।”

कमलने कहा, “कमसे कम डर दिखानर रोकना तो नहीं। फिर भी मैं इतना कह सकती हूँ कि अगर मैं आपकी लडकी होती और शायद बाधा पाती, तो इस जीवनमें फिर कभी आपपर श्रद्धा न कर सकती। मेरे पिता मुझे इसी तरहसे गढ गये हैं।”

जागु बाबूने कहा, “इसमें कोई असम्भन रात नह। कमल, तुम्हारे कल्याण का माग उन्होंने इधर ही देखा होगा। पर मुझे नह। दीखता। फिर भी, मैं पिता हूँ कमल, मैं स्पष्ट देस रहा हूँ कि शिवनाथसे वह यथाथ प्रेम नह। कर सकती,—यह उसका मोह है। यह मिथ्या है और जिस दिन इस क्षणस्थायी नशेकी खुमारी दूर होगी उस दिन मणिके दुःखका अन्त नहीं रहेगा। मगर तब उसे बचाओगी कैसे?”

कमलने कहा, “नशेमें ही चिन्ताकी बात है, पर जब नशा दूर हो जायगा और वह स्वस्थ हो जायँगी, तब तो फिर डरकी कोद बात रह नहीं जायगी। तब

शेष प्रश्न

तो वह स्वस्थता ही उनकी रक्षा करेगी।”

आपु गावूने अन्वीकार करते हुए कहा, “यह सब गतचीतना दौन-येच है कमल, युक्ति नहीं। सत्य इससे बहुत दूर है। भूलका दण्ड उसे बड़े रूपमें पाना ही होगा,—काल्पिते जोरसे उससे उने दुष्टकारा नहीं मिल सकता।”

कमलने कहा, “दुष्टकारेकी बात मने नहा कही आपु गावू ! मैं जानती हूँ कि भूलका दण्ड पाना ही पडता है। पर उस दण्ड पानेमें दुःख है, लज्जा नहीं, क्योंकि मणिने किसीको ठगना नहीं चाहा। यहाँ भरोसा आपको मने दिलाया चाहा था कि भूल मालूम होनेपर वह अगर जहाँनी तहाँ लौट जाना चाहे, तो उसे सिर नीचा करने न आना पड़े।”

“फिर भी तो भरोसा नहीं हो रहा है कमल। मैं जानता हूँ, उसे भूल मालूम पड़े बिना न रहेगा,—लेकिन उसने बाद भी तो उसे लम्बे समयतक जिंदा रहना है, तब जीयेगी क्या लेजर ? किस आधारपर दिन काटेगी ?”

“येमी बात न कहिए। मनुष्यका दुःख ही यदि दुःख पानेका अंतिम परिणाम होता, तो उसका कोई मूल्य नहीं था। एक तरफना नुकसान दूसरी तरफ के भारी लाभसे पूरा हो जाता है, नहीं तो, मैं ही भग्न आज कैसे जी सक्तो ? बल्कि आप तो यह आशीवाद दीजिए कि किसी दिन भूक अगर मालूम पड़े तो वह अपनेको मुक्त कर ले सके, तब उसे कोई लोभ, कोई भय राहुग्रस्त न कर सके।”

आपु गावू चुप हो रहे। जगज देनेमें उन्हें हिचकिचाइ-सी हुई, पर स्वीकार करनेमें वे भी ज्यादा हिचकिचाये। बहुत देर बाद बोले, “पिताकी दृष्टिले मैं मणिका भविष्य-जीवन अ धकारमय देख रहा हूँ। इसपर भी तुम क्या यही कहोगी कि वास्तवमें मुझे दनावट न डालना चाहिए, और चुपचाप मान लेना ही मेरा कर्तव्य है ?”

“मैं माँ होती तो अवश्य मान लेती। उसने भविष्यकी जागृकासे शायद आप जैसी ही यथा पाती, फिर भी इस तरीकेसे दनावट डालनेको तैयार न होती। और यह भी मुझे स्वीकार करना होगा कि मैं तब मन ही-मन कहती कि इस जीवनमें जिस रहस्यके सामने आकर आज वह खड़ी हुई है वह मेरी समस्त दुश्चिन्ताओंसे बढकर है।”

आपु गावू फिर कुछ देर मौन रहे, और बोले, “फिर भी मैं न समझ

सका कमल । शिवनाथका चरित्र और उसकी सभी दुष्टियोंका हाल मणि जाती है,—एक दिन इस घरमें आन देनेमें भी उसे आपत्ति थी, मगर आज जिस सम्मोहनसे उसका हिताहित शान,—उसकी सारीकी सारी नैतिक बुद्धि टूँक गई है वह यथार्थ प्रेम नहीं है, वह जादू है, वह मोह है—यह असत्य, चाहे जैसे भी हो, दूर करना ही पिताका कर्तव्य है ।”

अबकी बार कमल एन्तदम स्तब्ध हो रही । इतनी देरमें जाकर दानोंकी चिन्ता धाराक मौलिक भेदपर उसकी दृष्टि पड़ी । इन दोनों चिन्ता धाराओंकी जाति ही अलग जलग है, और चूँक यह भेद तककी चीज नहीं है, इस कारण धन तरफकी इतनी जालोचना और गतचित्त विलगुल विपल सिद्ध हुई । कमल इस गतचित्तो समझ गई कि जिस तरफ उनकी दृष्टि लगी हुई है उधर हजारों वप देसते रहनेपर भी इस सत्यका साक्षात्कार नहा हो सकता, और समझ गई कि इसमें वही बुद्धिकी जाँच, वही हिताहित ग्राध, वही भले बुरे और मुरत दु सका अतिसतर्क हिसाब, वही मजबूत नीय डालनेके लिए इजीनियर बुलाना है,—इसने सिना और कुछ नहीं । गणित पैलाकर ये लोग प्रेमका फल या नतीजा निकालना चाहते हैं । अपने जीवनम आगु बाबूने अपनी पत्नीको अत्यन्त एकांत भावसे प्रेम किया था । उनकी खोकी मरे जमाना बीत गया, फिर भी आजतक शायद उस प्रेमकी जड उनके हृदयम शायिल नहीं हुई ।—ससारमें इसकी तुलना बहुत कम मिलती है ।—फिर भी यह सब कुछ सत्य होते हुए भी, यह मानना पडता है कि ये हे दोना भिन्न जातीय ।

इन दोनों धाराओंकी भलाद बुराईका प्रश्न उठाकर बहस करना निष्फल है । अपने दाम्पत्य जीवनम एक दिनके लिए भी पत्नीके साथ आशु बाबूका मत भेद नहीं हुआ,—हृदयमें मालिन्य तरुने स्पश नहीं किया । निर्भिन्न शान्ति और अविच्छिन्न मुरत चैनने साथ जिनका दीर्घ विवाहित जीवन बीता है उनके गौरव और माहात्म्यको भला कौन मर कर सकता है ? ससारने मुरवचित्तसे उनका स्तव गान किया है, उनकी दुलभ कहानियाँ लिखकर कवि अमर हो गये हैं, और अपने जीवनमें इसीको प्राप्त करनेकी व्याकुलतापूण वासनासे मनुष्यक लोभकी सीमा नहा रही है । जिसकी नि सदिग्ध महिमा स्वत सिद्ध प्रतिश्रासे चिरकाल अविचलित है, उसे कमल तुच्छ करेगी किस बिरतेपर ? किन्तु मनोरमा ? जिस दु लील अभागके हाथ अपनेको वह विसजन करनेकी तैयार

है, उसका सब कुछ जानने हुए भा संपूर्ण जानने में गहर कदम उठाते हुए उसे हर नहा मालूम होता । ८ उसमें परिणामकी चिन्तासे पिता शान्त है, इष्ट मित्र दुःखित है,—सिर्फ वह अकेली निःशक्त है । आशु बाबू जानते हैं कि इस विवाहमें सम्मान नहीं है, यह शुभ भी नहीं है—वचनापर इसकी नाँव है । यह स्वल्पकाल-व्यापी मोह जिस दिन दूर हो जायगा, उस दिन आजीवन लज्जा और दुःख रक्खनेको जगह न रहेगी । हो सकता है कि आशु बाबूकी यह चिन्ता सत्य हो, किन्तु यह बात आशु बाबूको यह जैसे समझावे कि सब कुछ सोनेके बाद भी इस प्रवृत्त लड़कीके पास जो बहुत राकी रहेगी वह पिताने शान्ति मुसमय दीप-स्थायी दाम्पत्य जीवनकी अपेक्षा बड़ी है । परिणाम ही जिसकी दृष्टि-म मूल्य निणयका एकमात्र मान दण्ड है, उसने साथ तब कैसे चल सकता है ? कमलके मनमें एक बार आया कि कहे, आशु बाबू, माह भी मिथ्या नहा है । हो सकता है कि कन्याके विवाहाशमें धन भरके लिए भी चमक जानेवाली विजलीकी रेखा नीतिकी तुलनामें आपके हृदयमें प्रतिष्ठित अनिवापित दीप गिराओ भी लौं जाय । पर उससे यह कहते नहीं बना और वह चुप बैठी रही ।

पिताने कतब्यके सम्यग्धमें अपना जल्पन्त स्पष्ट अभिमत प्रकट करने जाशु बाबू उत्तरकी प्रतीक्षामें अधीर हो रहे थे, परन्तु कमलको जैसे ही निरुत्तर और सिर झुकाये बैठे देख उनकी समझमें आ गया कि वह वाद विवाद नहा करना चाहती । मालिष नहीं कि उसके पास शब्द नहीं, बल्कि इसलिए कि अत्र इसकी जल्परत नहीं । पर इस तरह एकके चुप हा जानेसे तो दूसरेके मनमें शान्ति नहीं आती । बाल्यमें इस प्रौढ आदमीके गहरे अन्त करणमें सत्यने प्रति एक वास्तविक निष्ठा है । एकमात्र सन्तानमें भारी सुर दिनाकी आगवासे लज्जित और उद्भ्रान्त चित्त के मुँहसे चाहे कुछ भी क्यों न कहें, पर गालमें बल-प्रयोगको वे घृणाकी दृष्टिसे ही देखते हैं । कमलको उन्होंने जिनना देखा है, उतना ही उनका आश्चर्य और भ्रमा वर्ती गद है । लोभ-दृष्टिमें वह हेय है, निन्दित है शिष्ट-समाज द्वारा परित्यक्त है, समाजोंमें शरीक होना उसे निमज्जना नहा मिला, फिर भी इस लड़कीकी नीरव अवज्ञाका उन्हें सबसे ज्यादा डर है, उनके सामने उनका सकोच नहीं मिलता ।

आशु बाबूने कहा, "कमल, तुम्हारे पिता यूरोपियन थे फिर भा तुम" उस देशमें नहीं गद हो । मगर मने उन लोगोंमें बहुत दिन बिताये हैं,

बहुत कुछ देखा है। बहुत-से प्रेमके विगाहोत्सवोंमें भी जब कभी निमात्रण मिला है, आनन्दके साथ शामिल हुआ हूँ, और जब वह सम्बन्ध अनादर और अनाचारसे टूटा है, तब भी मने आँसू पोंछे ह। वहाँ जाता तो तुम भी ऐसा हाँ देसतीं।”

कमलने उनकी तरफ मुँह उठाकर कहा, “बगैर गये भी देखा करती हूँ आगु बाबू। सम्बन्ध विच्छेदकी नजीर उस देशमें प्रतिदिन पुजीभूत हुआ करती है—और होनेकी बात भी है,—मगर जैसे यह सच है, वैसे ही उन नजीरोंके द्वारा वहाँके समाजके स्वरूपको समझनेकी कोशिश भी भूल है। विचारकी यह पद्धति ही नहीं आगु बाबू।”

आगु बाबू अपनी गलतीको समझकर जरा अप्रतिभ हुए। इस तरह इसके साथ तक नहा चल सकता, सोले, “उसे जाने दो, पर हमारे अपने देशकी तरफ भी जरा गौरसे आँख पसारकर एक बार देखो। जो प्रथा चिरकालसे चली आ रही है, उसके सृष्टिकर्ताओंकी दूरदर्शिताको भी जरा देखो। यहाँ घर-कन्यापर दायित्व नहा होता, दायित्व होता है माँ बाप और गुरुजनोंपर। इसी कारण विचार-भुद्धि यहाँ आवुल-असयमसे भ्रष्ट नहीं हो जाती, बड़े बूढ़ोंकी एक शान्त और अविचलित भगल भावना जीवन भर सदा उनके साथ बनी रहती है।”

कमलने कहा, “मगर मणि तो भगलका हिसाब लगाने नहीं बैठी आगु बाबू, उसने चाहा है प्रेम, एकका हिसाब बुतुर्गोंकी सुयुक्तियोंसे मिला जाता है, पर दूसरेका हिसाब हृदयके देवताके सिवा और कोई नहीं जानता। लेकिन मैं बहस करने यथामे आपको परेशान कर रही हूँ।—जिसने घरमें पश्चिमकी लिट्टनीक सिवा और सब लिट्टकियों बन्द हैं, वह प्रभातमें सूचना आनिभाव नहीं देस पाता, देख पाता है सिफ संध्याका अवसान। परन्तु संध्याक उस चेहरे और रगका सादृश्य मिलाकर अगर वह प्रभातपर तरु करता रहे तो सिफ बात हा बनेगी, भीमासा नहीं हो सकती। मुझे लोमन रात हुए जा रही है, अज जाती हूँ।”

नीलिमा अतक चुप थी। इतनी देरतक इतनी बातें हुई, पर किसी मा गलत उसने योग नहीं दिया अज धोली, “मैं भी सब बात तुम्हारी साफ साफ नहा समझ पाइ कमल, पर इतना महसूस कर रही हूँ कि घरकी और लिट्टकियों भी खोल देना चाहिए। पर यह तो आँवोंका दोष नहीं,—

शेष प्रश्न

दोप है उन्द सिड्जियोंका । नहा तो, जिधर खुला है उधर मृत्युवाल्पयत्त सदे खड़े देखते रहनेपर भी, जो दिग्गद दे रहा है, उसको छोटकर कभी कोद चीज दिग्गद नहीं देगी ।”

कमल उठने लगी हो गद तो आगु बाबू व्याकुल कण्ठसे कह उठे, “जाओ मत कमल, और जरा बैठो । मुँहम अन्न नहीं जाता, आँसोंमें नींद नहीं,— लगातार छातीके भीतर ऐसा कुछ हो रहा है कि तुम्हें मैं समझा नहीं सकता । तो भी, और एक बार कोशिश कर देखूँ, तुम्हारी बातें अगर सचमुच ही समझ सकूँ । तुम क्या यथाथ ही कह रही हो कि मैं चुप रहूँ, और यह मही घटना हो जाने दी जाय ?”

कमलने कहा, “मनोरमा यदि वाम्बयमें उनसे प्रेम करती है तो मैं उसे मद्दा नहीं कह सकती ।”

“मगर यही तो मैं तुम्हें सौ-सौ बार समझाना चाहता हूँ कमल, कि यह मोह है, यह प्रेम नहीं,—यह गलती उसनी दूर होगी ही होगी ।”

कमलने कहा, “सिफ गलती ही—सिफ मोह ही दूर होता है सो नर्हा आगु बाबू, सचमुच प्रेम भी सगारमें नष्ट हो जाया करता है । इसीसे अधिकाग प्रेमके विवाह क्षणस्यायी हो जाते हैं । इसलिये उस देशकी इतनी बदनामी है और इतने विवाह विन्डेदके मामले वहाँ चला करते हैं ।”

मुनकर आगु बाबूको सहसा मानो एक प्रकाश दिग्गद दिया, उच्छ्वसित आग्रहके साथ वे कह उठे, “यही कहो, यही कहो । यह तो मैं अपनी आँव्वासे देग आया हूँ ।”

नीलिमा अमाक् होकर उनका तरफ देखती रही ।

आगु बाबूने कहा, “मगर हमारे देशकी विवाह प्रथा ? उसे तुम क्या कहोगी ? यह तो सारी जिन्दगी नहीं दूरता ।”

कमलने कहा, “दूरनेनी बजह भी नहीं आगु बाबू । वह तो अनभिज्ञ यौवनका पागल्पन नहीं, बहुदर्शी बद् बूदाका हिसारसे क्रिया गया कारोबार है । स्वप्नका मूलधन नहा,—आँव्वा-देखी पक्के आदमाकी जाँच-पड़ताल की हुद रालिय चीज है । गणित करनेमें कोद साधातिक गलती जगतन न हो गद हो तमतक उसमें दरार नहीं पडती । क्या इस देशमें और क्या उस देशमें, सभी जगह वह वही मजबूत चीज होती है,—जिन्दगी भर बन्नकी तरह ।”

रहती है।”

आगु बाबू एक उसाँस लेकर स्थिर हो रहे, कोई उत्तर उनकी जगानपर न आया।

नीलिमा चुपचाप देख रही थी अब उसने धीरेसे पूछा, “कमल, तुम्हारी बात ही अगर सच हो, सचमुचका प्रेम भी अगर भूलने प्रेमके समान ही टूट जाता हो, तो मनुष्य खड़ा काहेपर होगा ? उसने पास आशा करनेके लिए फिर बाकी क्या रह जायगा ?”

कमलने कहा, “जिस स्वर्गासनी मियाद निपट चुकी है, रह जायगी उसीकी एकान्त मधुर स्मृति और रह जायगा उसीने बगलमे यथाका समुद्र। आगु बाबूने मुल और गान्तिनी सीमा नहीं थी, लेकिन उससे अधिक उनकी और पूँजी नहा है। भाग्यने जिहें इतनी-सी पूँजी देकर विदा कर दिया है, उनके लिए हम सिवा क्षमा करनेके और कर ही क्या सकती हैं जीजी ?”

फिर जरा ठहरकर बोली, “लोग बाहरसे सहसा ऐसा समझ लेते हैं कि गया, अब सप गया और इष्ट मित्रोंके डरका ठिकाना नहीं रहता। फिर तो वे दोनों हाथोंसे उसका रास्ता रोक्ना चाहते हैं और निश्चित समझ लेते हैं कि उनने हिसाबके गहर सिवा शून्यके और कुछ है ही नहीं। पर शून्य नहीं होता जीजी। सब चला जानेपर भी जो बच जाता है, वह मणि माणिक्यकी तरह मुट्टीमें ही जा जाता है। मगर हाँ, दशकोंका दल जब देखता है कि चीजोंकी भरमारसे रास्ता भरने जुलूम तो निकाला नहीं जा सकता, तब वे उसे धिक्कारते हुए अपने अपने घर लौट जाते हैं और कहते हैं, यही तो सपनाश है।”

नीलिमाने कहा, “कहनेका कारण है कमल, असलम मणि माणिक्य सपके नहीं होता, और न वह सर्व साधारणक लिए है। पाँउसे लेकर चोटीतक सोने चाँदीके गहने मिले बिना जिनका मन ही नहीं भरता, वे तुम्हारे उस मुट्टीभर मणि माणिक्यकी बदर नहा समझेंगी। जिह बहुत चाहिए वे गौंठपर बहुत सी गौंठ लगाकर निश्चिन्त हो सकते हैं। उनके लिए बहुत-सा बोध, बहुत-सा आयोजन, बहुत-सी जगह धिरनी चाहिए, तब कहीं वे चीजनी कीमतका अन्दाज लगा सकते हैं। पश्चिमका दरवाजा खोलकर सूर्योदय दिखानेकी कोशिश यथ होगी कमल, नन्द करा यह चचा।”

आश बाबूके मुँहसे फिर एक दोन निश्वास निकल पड़ी, धीरे धारे गोले,

“व्यथ क्या होगी नालिमा, यथ नहीं होगी। अच्छा बात है,—न हो तो मैं चुप ही रहूँगा।”

नीलिमाने कहा, “नहा, सो आप मत कीजिएगा। सत्य क्या सिध कमलने पिचारोंम ही है, और पिताका शुभ बुद्धिमें नहीं है। उंसा हो ही नहीं सकता। कमलने लिए जो सत्य है, मणिने लिए वह सत्य नहीं भी हो सकता है। स्त्रीके दुश्चरित्र पतिको त्याग देनेम चाहे जितना भी सत्य हो, यह मैं जोरके साथ कह सकता हूँ कि बलाके पति-परित्यागमें रत्ती भर भी सत्य नहीं। सत्य न तो पतिने त्यागनेमें है, और न पतिनी दासी-वृत्ति करनेम,—ये दोनों ही सिध दायें-बायेंके रास्ते हैं, गन्त-य स्थान तो अपने आप हूँद लेना पडता है, तब करके उसका पता नहीं लगाया जा सकता।”

कमल चुपचाप उसनी ओर देखती रही।

नीलिमा कहने लगी, “सूचना उदय होना ही उसका सब कुछ नहा है, उसका अल होना भी उतना ही महत्व रखता है। रूप और यौवनका आकर्षण ही अगर प्रमत्ता सख्त होता, तो लटफाफ सम्बन्धमें आपनी दुश्चिन्ताकी चोड़ जरूरत ही न थी,—मगर ऐसा नहा है। मैंने जितायें नहीं पढ़ी, ज्ञान बुद्धि भी कम है, तफसे मैं तुम्ह समझा नहीं सकती लेकिन मुझ मायम होता है कि असल चाजका पता तुम्हें अर्थात्तर मिला ही नहीं। श्रद्धा, भक्ति, स्नेह, विश्वास,—इहें बढाइ करके नहीं पाया जा सकता, बड़ दु रसे और गहुत देरम ये दिग्गइ देते हैं। मगर जर दिरताइ देते हैं कमल, तब रूप याचनका प्रसन्न जाने कहीं मुँद छिपाकर हुनक जाता है, कुछ पता ही नहीं पडता।”

ताश्न-बुद्धि कमल एक धणम यह समझ गइ कि उपस्थित आलोचनाम उसका यह कथन अप्राप्त्य है। यह न ता प्रतिवाद ही है और न समथन ही, ये सब नालिमाकी अपनी बात हैं। उसने देगा कि उबच्चल बीगलाकम नालिमा क दिरते हुए घने काले गालोंकी श्यामल शायाने उमने चेहरपर एक अकल्पित मुदरता ला दी है और उसकी प्रगान्त आँसुओंकी सजल दृष्टि सखरुण स्निग्धतासे ऊपरतक लगलभ भर उठा है। कमलने मा ही मन कहा, यह पूछता यथ है कि यह नवीन सूयादन है या घने हुए उसका अस्त-गमन, रक्तिम आमासे जाकाशनी जा निशा आज रगौन ही उठी है,—पून-व्यभिचर दिग्गइ निगय किये गिता ही उमर लिए मेरा श्रद्धान साथ नमन्कार है।

दो-तीन मिनट बाद जागु बाबू सहसा चानकर बोले, “कमल, तुम्हारी बातें मैं फिर एक दफे अच्छी तरह विचार कर देखूँगा, पर हमारी बातोंकी भी तुम इस तरह अवज्ञा मत करना। अनेकानेक मानवोंने इसे सत्य मानकर स्वीकार किया है, अस्तव्यने द्वारा कभी इतने आदमियोंको नष्ट नहकाया जा सकता।”

कमलने अन्यमनस्वकी भाँति जरा हँसकर सिर हिला दिया, लेकिन जवाब दिया उसने नीलिमाको। बोली, “जिस चीजस एक बच्चेको बहकाया जा सकता है, उसीसे लाख बच्चोंको भी बहकाया जा सकता है। सरयाका बट जाना ही बुद्धि मरनेका प्रमाण नहीं, जीजा। एक दिन जिन लोगोंने कहा था, कि नर नारीने प्रेमका इतिहास ही मानव सभ्यताका सभस सत्य इतिहास है, उहीने सभसे बढकर सत्यका पता पाया था, मितु जिन लोगोंने यह घोषणा की कि पुत्रके लिए भायाकी आवश्यकता है, वे म्त्रियोंका सिफ उपमान ही करके शान्त नहा हुए, बल्कि अपने बड़े होनेका रास्ता भी वे चिरकालके लिए बदल कर गये। और चूँकि उस असत्यपर ही उन्होंने नारी भीत उठाई थी इसलिए आज तक भी उनकी सत्तानको दुर्गका कोई किनारा नहीं मिला।”

“पर यह बात मुझे क्या कह रही हो कमल ?”

“क्योंकि, आज मुझे आपको ही जतानेकी सबसे ज्यादा जरूरत है। हमें चाटु वाक्योंमें नाना अलंकार पहनाकर जिन लोगोंने यह प्रचार किया था कि मातृत्वमें नारीकी चरम साधनता है, उन लोगोंने समस्त नारी जातिका धोखा दिया था। जीवनमें किसी भी अवस्थामें क्यों न पडना पड़े, जीजा, पर इस मिथ्या नीतिको हागल न मानना। यही मरा जतिम अनुरोध है।—पर अब नहा, मैं जाती हूँ।”

जागु बाबूने थके हुए स्वरमें कहा, “अच्छा जाओ। नीचे तुम्हारे लिए गाड़ी रडो है, पहुँचा आयेगी।”

कमलने प्रथाक साथ कहा, “आप मुझसे स्नेह करते हैं,—पर हम दोनोंम कहा भी तो मेल नहीं।”

नीलिमाने कहा, “है क्या नष्ट कमल। पर वह मालिककी परमादेशके माफिक कौंट-कौंट कर बनाया हुआ मेल नहीं, विधाताकी सृष्टिका मेल है। चेहरा अलग अलग है, पर खून एक ही है,—औरोंकी ओशल नसोंमें बहा

करता है वह। इसीसे तो माहरफा अनेक्य चाहे कितनी गटनी क्या न पैदा करे, भीतरका प्रचण्ड आरुपण हर्गिज नहीं छूटता।”

कमलने पास आकर आगु बाबूने कंधेपर हाथ रखके धीरे धीरे कहा, “लडकीके उदरे आप मेर उपर गुसा गहा हो सजेंगे, म कहे दती हूँ।” आगु बाबू कुठ बोले नहा, सिफ स्तब्ध होकर बैठे रहे।

कमलने कहा, “जैमेजीम एक शब्द है, ‘इमोन्सियेगन’ (= मुक्ति दान)। आप तो जानते हैं, प्राचीन माल्म पिताजी कठोर अधीनतासे सत्तानका मुक्त किया जाना भी उसका एक बड़ा जय था। उस जमानेके लडके लडकियोंने मिलकर इस शब्दका आगिमार नहीं किया था, आगिष्कार किया था जो आप जैसे महान् पिता के उर्दाने—अपनी रक्षणकी रस्सी ढीली करके जिहोंने अपनी कयाजोंको मुक्ति दी थी, उर्दाने। आज भी इमेन्सियेगनके लिए चाहे कितनी ही स्त्रियाँ मिलकर झगडा क्यों न करती रह, देन्चाले अरुल मालिक पुत्र ही है, हम स्त्रियाँ नहा। जगत-व्यवस्थान इस सत्यको म एक दिनके लिए भी नहीं भूलती। मेरे पिता अक्सर कहा करते थे कि सभारने क्षीत दासोंको अपने मालिकोंने ही एक दिन स्वाधीनता दी थी, और उस दिन उनकी तरफसे लडे भा थे वे ही जा उरने मालिकोंकी जातिने थे—दासोंने युद्धने उलपर या युक्तियोंके उलपर स्वाधीनता गहा पाद। ऐसा ही हाता है। विश्वका नियम ही यह है, शक्तिमान ही शक्तिके रक्षणसे दुरलोंका परित्राण दते ह। उसी तरह नारियोंको भी पुष्ट ही मुक्ति दे सजते हैं। दार्यित्व तो उर्दाना है। मनोरमाको मुक्ति देनेका भार आपने हाथम हे। मणि विद्रोह कर सगली है, पर पिताके अभिशापमें तो सगनगी मुक्ति नहीं रहती, उसकी मुक्ति ता उनम आगीगदम ही लिहित है।”

आगु बाबू भी कुछ न बोल सने। इस उच्छ्वसल प्रकृतिकी लडकीने सभार-में असम्मान और असमानके बीचम ही लम्-लाम किया है, किन्तु लम्की उस लजापक दुर्गतिको हृदयसे सम्पूर्ण विरुप्त करके अपने लोकान्तरित पिताके प्रति उसने जो भाक्त और स्नेहका भाव सञ्चित कर रक्ता है उसका सीमा नहीं है।

कमलने पिताको उर्दाने देखा नहीं, और अपने सभार और प्रकृतिके अनुसार उस आदमीपर धडा करता भी कठिन है, फिर भी उस व्यक्तिके लिए उनकी आँगाम पानी भर आया। अपनी लडकीका विच्छेद और विरुद्धाचरण

उनके हृदयम गूली तरह चुभा हुआ है, मगर फिर भा, इस परान लडकीके मुँहकी तरफ देपकर मानो उह इस रातका आभास सा मिला कि सम सधन तोडकर भी आदमीका कैसे हमेशाके लिए बाँधने रखा जा सकता है, और वे अपने कंधेपरका उसका हाथ सोंचकर क्षण भर चुपचाप बैठे रहे।

कमलने कहा, “अन मैं जाऊँ ?”

जासु रात्रूने हाथ छाड दिया, कहा, “जाओ।”

इसमे ज्यादा उनके मुँहसे और कुछ निकला हा नहा।

२५

जाडाका गूय अस्त हा गया है। सध्याकी छायाने परने भीतरका हिस्सा धुँधला सा कर दिया है। मिलाइका एन जरूरी काम थोडा-सा बचा है, जिसे कमल दिया रत्तीने पहले ही पूरा कर देना चाहती है। पास ही कुरसीपर अजित बैठा है। उसकी भाव भगीसे मालूम होता है कि कोई रात कहते कहते अचानक रुक गया है और पात्रुल आग्रहके साथ उत्तरकी प्रतीक्षा कर रहा है।

मनोरमा और शिवनाथका मामला समझो मालूम हा चुका है। आजका प्रसंग उमी शिष्यका लेकर गुरु हुआ है। अजितने गुरु गुरुम कहा था कि उसने आगरमें आते ही सदेह क्रिया था कि अन्तम जाकर ऐसी ही बात होगी।

पर सदेहन कारणने सम्प्रधम कमलन कोद उत्सुकता नहीं दिखाद।

उसने राद अजित जनगल वकते-वकते अतमें ऐसी जगह आकर रुका जहाँ दूसरी तरफसे उत्तर पाये बिना नहा रना जा सकता।

कमल अत्यन्त तनीनताके साथ सिलाद करनेम ही लगी रही, मानो उसे सिर उटानेकी भी पुरसत नहा।

दो तीन मिनट सत्राटेम बाते। जागे न जाने ओर कितनी देर लगे, इसलिए अजितको फिर कोशिश करनी पडी, बोला, “आश्वय तो यह है कि शिवनाथका जाचरण तुम्हारी निगाहम पकडाइ नहीं दिया।”

कमलने मुँह नहा उठाया, किंतु मिर हिलाकर कहा, “नहा।”

“तुम ऐसी भोली भाला हो कि तुम्ह कुठ सदेह नहा हुआ, इसपर क्या कोद दिखास कर सकता है ?”

“और कोइ कर सकता है या नहीं, मुझे नहीं मालूम। पर क्या आप भी

नहीं कर सकते ?”

अजितने कहा, “शायद कर सकता हूँ, लेकिन तुम्हारे मुँहकी ओर देखकर—ऐसे ही नहीं।”

अवकी राय कमलन मुँह ऊपर किया और हँसकर कहा, “तो देखिए, और कहिए, कर सकते हैं या नहीं ?”

अजितनी और चमक उठा, बोला, “तुम्हारी बात सच है। उसपर अविचार नही किया, उसीका यह नतीजा हुआ।”

“हुआ है सो मैं मानती हूँ, पर यह भी तो खुलासा कर बताइए कि आपने अपने सन्देहका अन्त नतीजा किस परिमाणमें पाया ?” कहकर वह फिर जरा हँसी और वाममें लंग गइ।

इसने बाद अजित सरद आर असरद बहुत-सी बात देख-बद्रह मिनटतक लगातार कहता रहा। अन्तमें थककर बोला, “कमी हूँ, कमी ना,—पहेली बुझानेने सिवा क्या तुम सीधी बात करना जानती ही नहीं ?”

कमलन गिलादका नाम सीधा करते हुए कहा, “कियाँ पहेली उगाना ही पसन्द करती हैं,—उनका यह स्वभाव है।”

“तो उस स्वभावकी मैं तारीफ नहीं कर सकता। मरना करना भी जरा सीरो, उसने बिना समारमें काम नही चलता।”

“आप भी पहेली समझना जरा सीगिए, अन्यथा, दूसरे पत्रको भी एसी ही अमुविधा होती है।” कमलने हाथकी चीज तह करके टोकनाम रखते हुए कहा, “सा कहनेका लाम जिहें बहुत ज्यादा होता है, ने अगर रक्ता हुए तो जल भारमें बसता उपाते हैं, लेखक हुए तो अपने म यमी भूमिका लिखते हैं, और अगर नायकार हुए तो खुद ही अपने नाटकके नायक बनकर अभिनय करते हैं।—तो रने हैं, शब्दोंसे जो रक्त नहीं हो सना उसे हाथपैर हिलाकर व्यक्त कर देना चाहिए।—पर सिफ यही मैं नहीं जानती कि अगर ये प्रेम करते हैं तो क्या करते हैं ? लेकिन जरा रैलिए आप, मैं बत्ती जला लाऊँ।” कहकर वह उठके जलीसे दूसरे कमरमें चली गइ।

पाँच-छह मिनट बाद वह लौट आइ और टेबिलपर बत्ती रखकर जमीनपर बैठ गइ।

अजितने कहा, “रक्ता, लेखक या नाटककार, इनमेंसे मैं कोद भी नहीं,

लिहाजा, उनकी तरफसे मैं नैफियत नहीं दे सकता, लेकिन अगर वे प्रेम करते हैं तो क्या करते हैं, सो मैं जानता हूँ। वे शीघ्र विवाहका कूट मौशल नहीं रखते, बल्कि साफ और जानी हूद राहपर कदम रखकर चलते हैं। वे इस बातका खयाल रखते हैं कि उनसे पीछे कहीं घरवालोंको पाने पढ़नेकी तकलीफ न उठानी पड़े, आश्रयके लिए किसी मालिक मजानका मुह न ताकना पड़े, असम्मानकी चोट—”

कमल ग्रीचहीमें रोककर गाल उठी, “उस नाम, हो गया।” जीर फिर हँसते हुए कहा, “यानी वे तुम्हें आखिरतक इमारतको ऐसे भयकर रूपसे ठोस और मजबूत बना देते हैं कि कब्रने मुसदेने सिमा उसमें जिन्दा आदमीके लिए दम लेनेकी भी संधि नहीं रहती। वे साधु पुरुष हैं—”

सहसा दरगाजेक राहसे अनुरोध आया, “हम लोग भीतर आ सकते हैं?” हरेद्रकी आज्ञा थी। पर ‘हम लोग’ कौन ?

“आइए, आइए।” कहती हुई कमल अभ्यथनाके लिए दरगाजेके पास जा खड़ी हुई।

हरेद्र था जीर साथमें एक और युवक। हरेद्रने कहा, “सतीशको हमारे आश्रममें तुमने सिर्फ एक दिन देखा था, फिर भी आज्ञा है कि भूली न होगी।”

कमलने मुसकराते हुए जवाब दिया, “नहा। पर फिर इतना है कि उस दिन कपड़े सफेद थे, आज हैं पीले।”

हरेद्रने कहा, “यह तो उच्चतर भूमिपर आरोहणकी राह घापणा मात्र है और कुठ नहीं। कागाधामसे सत्र प्रयागत हुए हैं—दा घण्टेसे ज्यादा नहीं हुए। एक तो यत्र हुए हैं, जीर दूसरे तुम्हारे प्रति प्रसन्न नहीं, फिर भी मुझे यहाँको जाता देख आयेगना संरण न कर सत्र। यह हम प्रज्ञाचारी लगाके मतना औदाय है जोर कुठ नहीं।” कहते हुए उसने भीतरकी तरफ झाँका, और कहने लगा, “अर आप हैं। यहाँ तो जीर भी एक नैतिक प्रज्ञाचारी पृवाहमें ही समुपस्थित हैं। सर, जोर कोर आत्माका कारण नहीं। मेरा आश्रम तो टूट रहा है, जेकिन दूसरा नया पैदा हुआ ही समझो।” यह कहकर वह भीतर घुमा, दूसरी पुरसी सतीशको दिखाता हुआ बोला, “नेने” और आप राटपर जा डटा। यह देखकर कि कमल खड़ी है, जोर तीसरा आसन है नहीं, सतीश बैठनेमें दुविधा कर रहा था, हरेद्र इस बातको न समझा हो सो बात नहीं, फिर

भी वह हँसकर बोला, "पैठो जी सताश, जाति न जायगा। काशी हो आनेने कारण तुम चाहे जितने भी ऊँचे चले गये हो, पर इस रातको न भूलो कि छत्तारमें उससे भी ऊँची कोढ़ जगह है।"

"नहीं नहीं, इसलिए नहीं?" कहकर सतीश अप्रतिभन्सा होकर बैठ गया। उसका मुँह देखकर कमल हँसी, उसने कहा, "किसीपर व्यग्य करना आपका मुँहस गोभा नहीं देता हरेद्र नाबू। जाधमन प्रतिग्रता भी आप हैं और महन्त महाराज भी आप ही हैं। ये लोग उमरमें भा छोटे हैं और पण्डागिरामें भी पाठे हैं। इनका काम तो सिफ आपने उपदेश और आदेशने अनुसार चलना है। इसलिए—"

हरेद्रन कहा, "आपका यह 'इसलिए' तो विलगुल ही अनावश्यक है। आश्रमना प्रतिग्रता शायद म ही हूँ, पर महन्त और महाराज हैं ये ही दोनों भिन्न सतीश और रातेद्र। एका काम है मुझे उपदेश देना और दूसरेका काम था यथासाध्य मेरी न मानकर चलना। एका तो पना ही नहीं और दूसरे लौटे ह बहुत जगदा तन-सचय करे। मुझे डर है कि इनका साथ बदमसे कदम मिलाकर शायद ही मैं चल सऊँगा। अब सिफ उन अब उपासे लडकोंकी चिन्ता है जिन्हें काशी काशी भ्रमण करकर ये वापस ले जाये हैं। मैंने उनकी तरफ देखते ही समझ लिया कि इस बीचमें उनकी जाचार निग्राम रच मात्र भा पुटि नहीं हुई। जोम सिर्फ इतना हा है कि और जरा जोरसे तपत्या कर दी जाती तो वापस आनेका रेल किगया मेरा नहीं लगता।"

कमलने हार्दिक-बेदनादे साथ पृठा, "लडके बहुत दुःख हो गये होंगे?" हरेद्रने कहा, "दुःखे?—आश्रमना परिभाषामें शायद उसने लिए एक अच्छा-सा शब्द है,—सतीशको माउम हागा,—जाधुनिक कालम अद्विष्ट क्रिया हुआ 'गुनाचायके तपोवनमें कचरा चित्र' क्या तुमने देखा है?—नहीं देखा?—तो तुम मेरी रात नहा समझ सोगी।—मने जब ऊपरदे बरामदेसे देखा ता मादूम हुआ कि क गना एक शृङ्खल सदा पवि सार स्वगसे उत्तरकर आश्रम में प्रवण कर रहा है। मुझे आशा रँध गई कि आश्रम जब टूट जायगा तब, पाना-पीना न मिलनेपर भा वे न मरेंगे, देखके किसी भा चित्रकारने स्कूलमें जाकर चित्रके लिए माडेलका काम दे सकने।"

कमलनी कहा, "लोग कहते हैं कि आप आश्रम उठा दे रहे हैं। यह क्या

सच है ?”

“सच है। तुम्हारे वाक्य-वाण मुझसे सहे नहीं जाते। सतीशने यहाँ आनेवा यह भी एक कारण है। इसकी धारणा है कि तुम असलमें भारतीय रमणी नहीं हो, इसलिए भारतकी निगूँ सत्य वस्तुको तुम पहचान ही नहा सकती। तुम्हें यह यही बात समझा देना चाहता है। समझोगी या नहीं सो तो तुम्हीं जानो, पर मैंने जगहन दे दिया है कि मैं बुढ़ भी क्यों न करूँ, उन लोगोंके लिए डरकी कोद बात नहीं। कारण, मालूम नहीं, चतुर्विध आश्रमोंमें अजित कुमार सत्य कौनसा आश्रम ग्रहण करगे, पर फिर भी, परम्परासे इतनी सबर मुझे मिल गई है कि वे बहुत सा अथ-यय करके ऐसे और भी दस बीस आश्रम जगह जगह खोल देना चाहते हैं। उनसे पास अथ भी है और देनेका सामर्थ्य भी। सो उनमेंसे एकका नायकत्व तो सतीशको मिल ही जायगा।”

कमल भीतर ही भीतर मुसमराती हुई बोली, “दानशीलता जैसी दुष्कृतिको ढँकनेके लिए इससे अच्छा आच्छादन और नहीं हो सकता। पर भारतकी सत्य वस्तुको मुझे समझानेसे सतीश बाबूको क्या फायदा होगा? हरेद्र राजसे मैंने आश्रम उठा देनेके लिए भी नहा कहा, और रुपयोंके बल्पर भारत भरमें आश्रम खोलनेके लिए भी अजित बाबूको मैं मना नहीं करूँगी। मेरी आपत्ति तो सिर्फ उसीको सत्य मान लेनेमें है। उगमें किसानका क्या नुकसान ?”

सतीश विनीत स्वरमें बोला, “नुकसानका परिणाम बाहरसे नहा दिखाइ देता।—बहसके लिए नहीं बल्कि शिष्यार्थीके तौरपर मैं आपसे अगर कुछ प्रश्न करूँ तो क्या आप उनका उत्तर देंगी ?”

“मगर आज तो मैं बहुत थकी हुई हूँ सतीश बाबू।”

सतीशने उसकी बातपर कुछ ध्यान ही नहीं दिया, बोला, “हरेद्र भइयान अभी अभी हँसीके तौरपर कहा था कि मैं वाशी जाकर चाहे जितना भी ऊँचा चल गया होऊँ, ससारमें उससे भी ऊँचा और स्थान है सो, वह यहा घर है। मैं जानता हूँ कि आपने प्रति इनकी श्रद्धा जसाम है। आश्रम टूट जानेसे हानि नहा, किन्तु आपकी बातोंसे इनका अगर मन टूट गया, तो नुकसानकी पूर्ति होना कठिन है।”

कमल चुप रही। सतीश कहने लगा, “राजेन्द्रको आप अच्छी तरह जानती होगी, वह मेरा मित्र है। मूल विषयपर मतका मेल न होता तो हम दोनोंकी

मित्रता होती ही नहीं। उसीके समान मैं भी चाहता हूँ कि भारतकी सर्वोत्तीर्ण मुक्तिमेंसे स्वजातिना परम कल्याण हो। उसी जागसे हम लम्बोंना मधुमद करके गदना चाहते हैं। हमें मृत्युने प्राद कल्पकालतः पैकुण्ठयास करनेना लोभ नहीं, लेकिन नियमके कठोर पधनने बिना सधनी सुष्टि हरगिज नहीं हो सकती। और सिफ लडकोंके लिए ही नहीं, उस पधनको हम लोगोंने स्वयं अपने ऊपर भी लागू किया है। क्या यहाँ जरूर है,—और रहेगा ही, क्योंकि बहुत 'श्रम' करके मगान् धनुकी प्राप्त करनेके स्थानको ही तो 'आश्रम' कहते हैं। इसमें उपहासनी तो कोई बात नहीं।”

कोई जगान न पाकर सतीश फिर कहने लगा, “हरद्व भैयाका आश्रम चाहे जैसा भी हो, उसके विषयमें मैं आलोचना नहीं करूँगा, कारण, तब उसने व्यक्तिगत हो जानेका दर है। परंतु इस तो अम्बोकार नहीं किया जा सकता कि भारतीय आश्रमोंमें भारतके अतीतके प्रति निष्ठा और परम भद्रा निम्ति होनी चाहिए। त्याग, ब्रह्मचर्य, सयम,—ये सब शक्तिहीन असमर्थोंके धम नहीं हैं। जाति-मठनके प्राण और उपादान उस समय इहींमें निहित थे, और आज इस युगमें भी वे उपे राकी सामग्री नहीं। भरणोन्मुख भारतको सिफ एक इसी मार्गसे पुनर्जीवित किया जा सकता है। आश्रमके आचार और अनुष्ठानन द्वारा हम अपने इसी विश्वास और इसी भद्राको जगाये रखना चाहते हैं। एक दिन इस मात्र सुरक्षित, होमाग्नि प्रचलित, तपस्या कठोर भारतमें जो आश्रमोंकी प्रतिष्ठा हुइ या बह जाति जीवनके एउ मौलिक कल्याणनी सफल करनेके उद्देश्यसे ही हुइ भी, और इस सत्यनी कौन ऐसा मूर्ख होगा जो स्वीकार नहीं करगा कि यह प्रयोजन आज भी मिग नहीं है।”

सतीशनी पकृताम हार्दिनताका जोर था। उसनी बातें अच्छी थीं और निरन्तर कहते रहनेके कारण श्ण्टर्य ही गइ थीं। आश्रममें उसना मुलायम स्वर तेज हो गया और मारे उत्तेजनाके चाला चेहरा भिनी ही उठा। उमीकी तरफ चुपचाप और निष्पलन दृष्टिमें देखते रहनेके कारण एक प्रवारन धार्मिक जोशमें अजितका आपाद ममन रोमांचित हो उठा, और साथ ही हरेद्र भी, यगि हमने पहले बह अपने आश्रमके विरुद्ध कितना ही मौखिक आम्फालन कर चुका है, आश्रमके निम्त गौरवके बणनसे विश्वास और अविश्वासके बीच आंधीके वेगस हलने लगा। उसीके मुँहकी तरफ, तीव्र दृष्टि रागकर **काली**

कहने लगा, “हरेद्र भैया, हम भये ही मर जायँ, पर इस सत्यको कि इस तरहने आश्रमोंमें ही हमारे नव-ज म-लाभका मित्रान है, आन भूले जा रहे हैं, किस युक्तिपर ? आप ताडना चाहते हैं, पर तोडना ही क्या बड़ी बात है ? आप ही बताइए कि पनाना क्या उमसे बहुत बड़ी बात रहा है ?”

फिर कमलने मुँहकी तरफ देगकर, उसने पूछा, “जीवनम कितने आश्रम आपने अपनी आँखा देते हैं ? और कितनोके साथ आपका यथाय गूट परिचय हुआ है ?”

कठिन प्रश्न है । कमलने कहा, “वास्तवम एक भी नहा देला और आप लोगोके आश्रमने भिवा और किन्हीके साथ मेरा कोइ परिचय भी नहीं हुआ !”

“तब बताइए ?”

कमलने हँसते चेहरसे कहा, “आँखोंसे क्या सभी कुछ देना जा सकता है ? आप लोगोंने आश्रमका ‘श्रम’ ही आँखोंसे देख आद थी, मगर उससे किसी महान् वस्तुके प्राप्त करनेकी बात तो जाटकी जोशमें ही रू गद ।”

सतीशने कहा, “आप फिर हँसी उडा रही ई ।”

उसका क्रुद्ध चेहरा देखकर हरेद्र निग्ध स्वरम गाल उठा, “नहा नहीं सतीश, हँसी नहा उडा रहीं, यों ही सिफ विनोद कर रही हैं । यह तो इनका स्वभाव है ।”

सतीश बोला, “स्वभाव है ? पर स्वभाव कहनेसे ही नैफियत नहीं हो जाती हरेद्र भैया । यह तो भारतने अतीत कालका जो भी कुछ नित्य पृञ्नीय और नित्य आचारणीय तत्व है, उर्गाका जपमान—उसीके प्रति अश्रद्धा दिग्याना है । उसकी तो उपे ना नहीं की जा सकती ।”

हरे द्रने कमलकी तरफ दशारा करने रहा, “इस बातपर इनसे बहुत दफे बहस हो चुकी है । इनका कहना है कि अतीतका इसम कोइ महत्त्व नहा । वस्तु अतीत होती है कालक धर्मसे, मगर अब्जो होती है अपने गुणसे । सिफ प्राचीन होनेसे ही यह पृञ्ज नहीं हो जाती । जो नर जाति किसी जमानेमें अपने बूटे माँ-बापको जिला गाड देती थी, वह आज भी अगर उस प्राचीन अनुष्ठानकी दुहाइ देकर मनुष्यक कृतयका निर्देश करना चाहे, तो उसे भी तो रोका नहीं जा सकता सतीश ।”

सतीश बोधमें आकर उँचे स्वरम कह उठा, “प्राचीन भारतने साथ बरों

की तुलना नहीं हो सकती हरेन्द्र दादा ।”

हरेन्द्रने कहा, “तो मैं जानता हूँ । पर यह तो युक्ति नहीं सतीश, यह तो गैरे ज़ोरकी बात है ।”

सतीश और भा उत्तेजित हो उठा, बोला, “यह हम लोगाने स्वप्नमें भी न सोचा था हरेन्द्र दादा, कि आपको भी एक दिन इस नास्तिकताका चक्करमें पड़ना पड़ेगा ।”

हरेन्द्रने कहा, “तुम जानते हो कि मैं गाम्भिर्य नहीं हूँ । लेकिन यह गाली देकर सिर्फ अपमान ही किया जा सकता है सतीश, भतकी प्रतिष्ठा नहीं की जा सकती । तब तो ही दुःखीयाम सबसे ज्यादा कमजोर होती है ।”

सतीश गर्भित्वा हो गया । उसने छुटकारे हरेन्द्रने पाँच छू लिये और कहा, “अपमान भले नही किया हरेन्द्र भइया । आप तो जानते हैं, हम लोग आपकी कितनी भक्ति करते हैं मगर हमें दुःख होता है जब सुनते हैं कि भारतीयों का श्वेत तपस्यापर भी आप अविश्वास करने लगे हैं । एक दिन जिन उपादानों और जिस साधनासे उन तपस्वीयोंने भारतीयों इस विशाल जाति और विशिष्ट सभ्यताका निमाण किया था, वह सत्य कभी मिटने नहीं हुआ । मुनहने अजयमें लिखा हुआ मैं स्पष्ट दृश्य रहा हूँ कि यही भारतीय मन्त्रगत धर्म है, वही हमारी अपनी चीज है । इस धर्मोत्पत्ति विगट जातियों फिर उहाँ उपादानोंसे जिलाया जा सकता है हरेन्द्र भइया, और कोद माय नहीं ।”

हरेन्द्रने कहा, “तुम भी जिलाया जा सकते, सतीश । यह तुम्हारा विश्वास है,—और इसकी कीमत सिर्फ तुम्हारा ही मीमित है । एक दिन ठीक इसी ठगनी मतने उवाचमें कमलने कहा था, ‘जगन्नाथ आदिम युगमें एक दिन विशिष्ट अग्नि, विशिष्ट धुंधागते एक विशिष्ट जीवकी सृष्टि हुई था उसी देह और धुंधास वह सत्कारका जय करता करता था, और उस दिन वे थे उमने सत्य उपादान । किन्तु फिर एक दिन ऐसा आया कि उसी देह और उसी धुंधाने उसका मृत्यु ला दी । एक दिनके सत्यने उपादानोंने दूरे दिये मिथ्या उपादान बनकर उसे सत्कारसे विधिहीन कर दिया,—जरा भी दुःखीय नहीं की । उसकी अस्तित्व आज पर्यन्तमें परिणत हो गई है, और अब वह सिर्फ प्रत्यक्ष-प्रमाण (पुरावचन) विद्वानोंकी गणेशकी चीज रह गई है ।”

सतीशको यह सब सुनकर बड़े न भिन्न, और वह कहने लगा,

हमारे पूज पुम्पोंका आदर्श भ्रान्त था ? उनमें तत्त्व निरूपणमें सत्य नहा था ?”

हरेद्रन कहा, “हो सत्यता है कि उस दिन उसमें सत्य रहा हो, पर आज उस सत्यके न रहनेमें कोद राधा नहीं। उस दिन जो पथ स्वयम्भू पथ था अगर आज वही हमें यमराजके दक्षिण द्वारपर पहुँचा दे, तो मुँह पुलानेस में तो कोद कारण नहीं देखता, सतीश।”

सतीश अपने गूढ़ बोधको जी जानसे दगाकर “बोला, हरेद्र भइया, यह सब सिर्फ आप लोगोंकी आधुनिक शिक्षाका फल है और कुछ नहा।”

हरेद्रने कहा, “असम्भव नहीं। किन्तु आधुनिक शिक्षा अगर आधुनिक कालमें हम कल्याणका माग दिखा सके तो मैं उसमें लज्जाकी मोद बात नहीं देखता सतीश।”

सतीश बहुत देरतक निराक् होकर मन्थ बैठ रहा, फिर धीरे धीरे बोला, “मगर मैं तो लज्जाका बिक्रम महा लज्जाका कारण देखता हूँ, हरेद्र भइया। भारतका शान और भारतका प्राचीन तत्त्व इस भारतका ही वैशिष्ट्य और प्राण है। उस तत्त्वको तिलाजलि देकर अगर देशको स्वाधीनता प्राप्त करना हो, तो वह स्वाधीनता भारतकी जय न होगी, बल्कि उससे तो सिर्फ पाश्चात्य नीति और पाश्चात्य सम्भारानी ही जय होगी। यह तो पराजयका ही नामान्तर है। उससे तो मृत्यु अच्छी।”

सतीशकी वेदना दार्दिक है। उस यत्नस्थाना परिणाम अनुभव करके हरेद्र मौन हो रहा, और अपनी बार ज्वान दिया कमलने। उनमें मुँहपर सुपरिचित परिहासका चिह्नतक न था, और कण्ठपर सयत, शांत और मृदु था। उसने कहा, “सतीश बाबू, आपने अपने जीवनमें जैसे अपने आपको समर्पित कर दिया है, अपने सस्कारोंको भी मैंने ही अगर समर्पित कर सकते, तो आज यह बात भी अनुभव करनेमें आपको कठिनाई न होती कि किसी विशेष भावके लिए या किसी वैशिष्ट्यके लिए जादमी नहीं है, बल्कि आदमीके लिए ही उस वैशिष्ट्यका आदर है, मूल्य है। पर मानव ही अगर नष्ट हो जाय, तो उस तत्त्वकी महिमाको प्रचेष्टसे लाभ ही क्या होगा ? भारतके मतकी जय न भी हो तो क्या हुआ, मनुष्यकी जय तो होगी। तब मुक्ति पाकर इतने नर नारी धय हो जायेंगे। जरा नवीन तुर्कीकी तरफ तो देखिए। जनतक वह अपनी प्राचीन रीति नीति, आचार विचार और परम्परागत पुराने अनुष्ठान मागको

सब जानकर पर? रक्षा, तरतम उसकी बार-बार पराजय ही होती रही। आज उसने क्रान्तिमेंसे सत्यको पाया है—उसका सारासा साग, कूड़ा बरकट बह गया है,—किसकी ताकत है कि आज उसका उपहास करे? और मजा यह कि किसी दिन उसने प्राचीन मत और भागने ही उसे विनय दी थी, ऐश्वर्य दिया था, कल्याण दिया था, मनुष्यत्व दिया था। पहले उसने सोचा था कि रहा शायद मित्रतन सत्य है। सोचा था कि उणाको जीजानसे पकड़े रहनेसे मित्रत गौरवको। आज भी वापस पाया जा सकता है। उसे इस बातका खयाल भी न था कि उसका भी मित्रतन है। आज उसका वह मोह तो मर गया, पर जादमी जी उठा। ऐसे दृष्टान्त और भी हैं, और भी होंगे। सताश गांधू, जात्म विश्वास और आत्म अहंकार दोनों एक चीज नदा हैं।”

सतीशन कहा, “जाता हूँ। मगर एसा भी तो हो सकता है कि पश्चिमके लोगोंने मनुष्यके प्रानका जो उत्तर दिया है वह शेष उत्तर न हो? एसा भी तो हो सकता है कि उनकी सम्यताका भी किसी दिन ध्वस हो जाव?”

कमलने खिर हिलाकर कहा, “हाँ, हो सकता है। और मेरी धाग्णा है कि ध्वस होगा भी।”

“तर फिर?”

कमलने कहा, “उसमें धिक्कारकी कोई बात नहीं हागी सतीश गांधू। बुरा तो अच्छेका दुश्मन नहीं हु ता करता, अच्छेका दुश्मन तो वह है जो उससे और भी अच्छा है। वह ‘और भी अच्छा’ जिध दिन अच्छेके सामने उपस्थित होकर प्रदलना जयार चाहता है उस दिन उसने हाथमें राजदण्ड सोंपकर उसे अलग हो जाना पडता है। एक दिन दारू, हूण और तातायने आकर भारतको शारीरि प्रलपर जीत लिया, मगर यहाँकी सम्यताको वे नहीं गँध सने, ब खुद ही गँध गये। जानत हैं इसका कारण क्या था? असल कारण यह था कि वे खुद ही छोटे थे। पर मुगल पठानोंकी परी ता बानी ही रह गद, क्योंकि इसी बीच परासासी और जँघेच जा धमने। लेकिन उनकी मियाद आज भी खत्म नहीं हुद है। भारतको इसका जवाब उहें एक दिन देना हा हागा। गैर, उस प्रानको जाने दाजिए,—लेकिन पश्चिमके शान मिदान और सम्यताके सामने भारतवर्षको आज धगर नीचा देतना पद तो उससे उसने दम्भको चोट जरूर पहुँचेगी, किन्तु यह र्म निश्चयसे कह सकती हूँ कि उससे उसने कयाणना चाड

न पहुँचेगी।”

सतीशने जोरसे सिर हिलाते हुए कहा, “नहीं, नहीं, नहीं। जिनम आस्था नहा, श्रद्धा नहीं, विश्वासकी नींव जिनकी बालपर है, उतने सामने यह कहना तो सर्वनाशको निमंत्रण देना होगा।” कहकर उसने मनगियोंस हरेद्रको देखा और कहा, “ठीक इसी तरह एक दिन मंगलमें,—जभी ज्यादा दिन नहीं हुए—प्रदेशके विनाग, विदेशके दशन और विदेशकी सभ्यताको बड़ा मानकर कुछ सत्यभ्रष्ट और आदर्शभ्रष्ट लोगोंन अपनी अधूरी शिक्षाके विनाशकी दम्भसे स्वदेशका जो कुछ अपना था उसीको गुच्छ करके देशके मनको विविध और कदाचारी बना डाला था। मगर इतना बड़ा अकल्याण विधातासे सहा न गया, उसकी प्रतिश्रिया हुई और निवेक लौट आया। भूल दिखाइ दे गई। उन निम दिनोंमें जो मनस्वी अपनी जातिके पेट्र विमुक्त उद्भ्रान्त चित्तको अपने घरकी ओर फिरसे वापस ल आये थे, वे सिर्फ मंगलके ही नहीं, समग्र भारतके वन्दनीय हैं।” यह कहते हुए उसने दोनों हाथ जोड़कर माथेसे लगा लिये।

रात सच थी और सभी जानते थे। लिहाजा हरेद्र और अजित दोनोंन जो उसका अनुकरण करन कदनीयोंके लिए नमस्कार किया, उसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं थी। अजितने मृदु स्वरमें कहा, “नहा तो शायद बहुतसे-लोग उस समय रसाइ हो जाते। सिर्फ उहीके कारण ऐसा न हो सका।” बात कहनेके बाद ही उसने कमलके मुँहकी तरफ देखा,—उसकी आँखोंमें इसका अनुमोदन नहीं था, सिर्फ तिरस्कारका भाव ही दिखाइ दिया। फिर भी वह चुप ही रही। शायद, जवाब देनेकी इच्छा भी नहीं थी। अजितको वह जानती थी,—पर हरेद्रने इनीकी जखुट प्रति चनि-सी की, तब, उसकी कुछ देर पहले कही हुई बातोंके साथ यह ससकोच जड़ता ऐसी भई दील पटी कि वह चुप न रह सकी। बोली, “हर द्र बाबू, कुछ ऐस आदमी हाते हैं जा भूत तो नहीं मानते, पर भूतसे डरते जाँर हैं। आप उहामसे एक हैं और इसीका नाम है भावन घर चारी। इतना अर्चित और कुछ हो ही नहीं सनता। इस देशमें आश्रम जेसी सस्थाओंके लिए न कभी रपनोंकी कमी होगी और न लडकोंका अकाल पड़गा, इसलिए, आपने बिना भी सतीश बाबूका काम चल जायगा मगर इह त्याग देनेका मिथ्याचार आपकी हमेशा सलता रहेगा।”

फिर जरा ठहरकर बोली, “मेरे पिता रसाइ थे, पर मैं कौन हूँ, इस बातकी

सोजन से कभी उठाने की और न मैं ही। उन्हें इसरी बोट जरूरत नहा थी, और मुझे कुछ याद न था। मैं तो यही बामना करती हूँ कि धमकी आमरण इसी तरह भूरी रह सँ। परन्तु अभी अभी उच्छ्वस्त और अनाचारी कहकर आपने जिनका तिरस्कार किया और उन्दनीय कहकर जिन्हें नमस्कार किया, उनमेंसे स्वयंसे सपनाशर्में किया जान भारी है, इस प्रश्नका जमान लोग किसी न किसी दिन अवश्य चाहेंगे।”

सतीशकी देहपर मानो किसीने कसने चातुन मार दिया। तीन वेदनायक यह अकस्मात् उठकर खड़ा हो गया और बोला, “आप जानती हैं उठने नाम ? कभी मुने हैं किसीने मुँहसे ?”

कमलन सिर हिलाकर कहा, “नहीं।”

“तो, पढ़ल जात लीजिए।”

कमलने हँसते हुए कहा, “अच्छ। पर नामका मोह मुझे नहा है। नाम जाननेको ही मैं जाननेका शय नहीं मान सकती।”

प्रत्युत्तरमें सदाश अपनी जॉर्जामे सिय अरुण और कृपा परसाला हुआ तेज कदमोंसे गहर चला गया।

वह गुन्सेमें चला गया है, इसमें जोह सन्देह नहा रहा। इस अप्रीतिपर घटनाको कुछ हलका करनेने क्यालसे कुछ देर बाद हरेद्रने हँसनेकी कोशिश करते हुए कहा, “कमलनी जाहति तो प्राच्यनी है पर प्रकृति बिल्कुल प्रतीच्यकी। एक तो दिशाद देती है और दूसरी मित्रुल ऑरोंने जोसल रह जाती है। यही आदमीनी गलतफहमी हाती है। इनकी परोसी हुए चीज साद तो जा मरती है, पर हजम करते उस पेटकी बत्तीसों नाडियोंमें मानो मरोटा उठने लगता है। हमारी किसी भी प्राचीन चीजपर न तो इन्हें विश्वास है और न सहानुभूति। बेजाम कहकर रद कर देनेमें इन्हें जैसे कुछ दद ही नहीं मालूम हाता। लेकिन, हम बातको ये समझ ही नहीं सकते कि सूक्ष्म काँटा हाथ आ जानेसे ही सूक्ष्म वजन करना नहीं आ जाता।”

कमलने कहा, “समझ सकती हूँ, लेकिन सिफ दाम देते चक एकरे बदले दूसरी चीज नहीं ले सकती। मेरी आपत्ति यही है।”

हरेद्रने कहा, “मैंने तय कर लिया है कि आश्रम जरूर उठा दूँगा। मुझे सन्देह हो गया है कि उस दिशासे उठने आदमी बनकर देशकी सुक्ति और धर्म

कन्यागणने पुनः प्राप्त कर सगरे या नह। लेमिन समझम नहा आतां कि दीन हीन भरोपे भिन लडकोंको सतीश घर छुडानर ल आया है उनका क्या करूँ ? सतीशने हाथ साप देना भी मुझसे नहीं हो सगता ।”

कमलने कहा, “सॉपनेकी कोद जरूरत नहीं। जरूरत सिफ इस बातकी है कि उनने द्वारा कोई असाधारण या अलौभिक रात करवा डालने की ग्वाहिश न रगी जाय। दीन दु गी घरोंके लडके सभी दर्शोंमें ह, वहाँगाले जैसे उह बडा करते ह ऐसे ही आप भी उह आदमी बनानेकी कोशिश करते रहें ।”

हरेद्रने कहा, “इस नियम भी अभीतर मं नि सशय नहीं हो सका हूँ कमल। शि त्र लगाकर मं उह पग लिखा सगता हूँ, पर इसना मुझे भय है कि जिस समय और त्यागका शिक्षा उह दी जा रही थी, उससे दूर करध भी उह आदमी बनाया जा सगता है या नहीं ।”

कमलने कहा, “हरेद्र बाबू, सभी बातोंको आप लोग इस तरह एकात रूपसे सोचा करते ह, इसीसे किसी प्रश्नका सीग उत्तर आप लोगोंको नहा मिल सकता। आपका खयाल है कि लडके या तो दबता वनेंगे, या फिर बिलकुल ही उन्मुखल पशु बन जायेंगे। जगत्का सहज सरल स्वाभाविक सौन्दय आपकी दृष्टिने सामने आता ही नहीं। आप लोग दूसरोंके हाथने मनगतत अन्यायकी अनुभूतिस अपने सम्पूर्ण चित्तको शकासे उल जोर मलिन रखा करते हैं। उस दिन मैं आश्रममें जो कुछ देख आइ हूँ यह क्या समय और त्यागकी शिक्षा है ? उन लोगोंको मिला ही क्या है ? सिफ दूसरोंका दिया हुआ दु रका पोश ही तो मिला है, अनधिकार मिला है, जोर मिली है प्रवचितकी धुधा। चीन देशमें लडकियोंन पॉर जमसे छोटे बनाये जाते ह। मेरे लिए यह सख है कि पुरुषवग उहें सुन्दर रताये, पर बहानी स्त्रियाँ ही जद अपने उन पगु जोर मिठत पैरोंकी सुन्दरतापर खुद मोहित हो जाती ह, तब फिर सुधारनी काइ आशा शन नहीं रह जाती। इस समय आप लोग अपने कृतित्वपर खुद ही मुग्ध हो रहे हैं। मैंने उन लोगोंसे पूठा, ‘बचो, कैसे रहते हो तुम लोग, बताओ ?’ लडकाने एन साथ जवाब दिया, ‘बहुत अच्छी तरह।’ उ हाने एक गार भी नहीं साचा कि ‘अच्छी तरह’ त्रिसे कहते हैं। सोचने विचारनेकी शक्ति भी उनकी जाती रहा है,—ऐसा चरदस्त शासन है उनपर। नीतिमा जीजीने मेरी तरफ देखकर शायद इसका उत्तर चाहा था, पर छाती पीटकर रोनेके सिवा मुझे इस बातका काइ जवाब

ही हूँ न मिला। मन ही मन सोचने लगी, यही लोग क्या भविष्यमें देशकी स्वाधीनता आन करेंगे ?”

हरेद्रने कहा, “लडकोंकी बात जाने दो, लेकिन राजेंद्र सतीश वगैरह तो सुरक्ष हैं। यही तो मन्-स्वामी हैं।”

रमलने कहा, “राजेंद्रको आप लोग पहचानते नहा, लिहाजा उसकी चन्ना छोटिए। बात जमलम यह है कि वैराग्य यौवनके मरपर ही ज्यादा सवार होता है। यह जहाँ गति बनकर बैठ जाता है वहाँ विन्द शक्तिने बिना उसे गत कौन करेगा ?”

हरेद्रने कहा, “गुम्मा मत होना कमल,—तुम्हारे मनम तो वैराग्य है ही गल। तुम्हारा पिता यूरोपियन थे, और उन्होंने हाथसे तुम्हारा शिशु जीवन गला गया है। माँ दस देका था पर उनका जिक्र न करना ही अच्छा है। दसिमे, पश्चिमकी पिशासे तुमने भोगसो ही जीवनकी सरसे पडी चीज समझ लिया है।”

कमलने कहा, “गुम्मा मैं नहीं करती, हरेद्र जानू। पर ऐसी बात आप न कहें। सिवा भोगसो ही जीवनकी सरसे पडी चीज समझकर ससारमें कोइ भी जानि पडी नहीं हा सकती। मुसलमानोंने जिस दिन ऐसी गलती की, उस दिन उनका त्याग भा गया और भाग भी छूट गया। ऐसी ही गलती यदि पश्चिमवालाने की, तो वे भी मरगे। पश्चिम भी तो कोइ दुनियासे अलग नहीं है। अगर वे उस विमानकी उपेक्षा करके चले तो उनसे भी जीनेका फिर कोइ रास्ता नहा रह जायगा।”

थाडी देर मौन रहकर फिर कहने लगी, “लेकिन तब मन ही मन मुसकरा कर आप लोग कहगे, ‘क्या, कहा था न।’ हम तो पहलमे ही जानत थे कि यह थाल हा दिवकी उल्लङ्घन है इनकी, सो किमी न किमी दिन सतम हो जायगी। लेकिन, श्वर देगा, हम लोग गुम्म जातिरतक वैस ही टिके हुए हैं।” आर कहते रहते मुनिमल हँसीसे उमका साराका चारा चेहरा प्रिन्सिल हो उठा।

हरेद्र बोला, “ऐसा ही हो, बनी दिन आये।”

रमलने कहा, ‘एसी बात नहीं कहना चाहिए हरेद्र जानू। इतना पडी चालि अगर नीचे गिर जाय, तो उमकी धूस ही समारने बहुत-से प्रकार

स्तम्भ म्लान हो जायेंगे । मनुष्य जातिके लिए वे बहुत ही बुरे दिन साबित होंगे ।”

हरेद्र उठ खड़ा हुआ । गोल, “उसे अभी देर है पर अपने बुरे दिनाङ्ग आभास में अभीसे ही पा रहा हूँ । बहुत मे प्रकाश स्तम्भ बुझते दिग्गद दे रहे हैं । अपने पितासे तुमने उह बुझानेका ही कौशल सीखा है कमल जलानेकी विद्या नहीं सीखी । अच्छा, अब चल दिया । अजित बानूका अभी देर होगी शायद ?”

अजित उठनेके लिए जरा हिला हुला, पर उठा नहीं ।

कमलने कहा, “हरेद्र बानू, प्रकाश स्तम्भका प्रकाश रास्तेपर न पडकर अगर आँसोंपर पड़े, तो ठोकर खाकर नालीम गिरना पडता है । उस प्रकाशको जो बुझा देता है उसे हितैषी मित्र ही समझिएगा ।”

हरेद्रने एक गहरी साँस ली, और कहा, “बहुत बार मयाल आता है कि तुम्हारे साथ बुरे क्षणमें परिचय हुआ था । विद्यासका इतना जोर था मुझमें नहा है जितना कि तुममें है, फिर भी मैं कह सकता हूँ कि वे विद्या, बुद्धि, ज्ञान और पोष्यकी चाहे जितनी चमत्कारी दिखलायें, भारतके सामने वह कुछ भी नहा,—सब अन्धित्व है ।”

कमलने कहा, “यह तो ऐसी बात हुई जैसे क्लासमें प्रकाशन न पानेवाले विद्यार्थीका एम्. ए. पास करनेवालेको धिक्कार देना । हरेद्र बानू, ‘आत्म सम्मान ज्ञान’ जैसे एक शब्द है, वैसे ही ‘गडाद करना’ भी एक शब्द है ।”

हरेद्रको क्रोध आ गया, कहने लगा, “शब्द तो बहुत ह । लेकिन यह भारत ही एक दिन सारं जगत्का गुरु था । बहुताके पुरख तो तब शायद पेड़ोंकी डालियोंपर उछला मरत थे । और, फिर एक दिन ऐसा जायगा जब भारतभर ही जगत्के शिष्यका आमन ग्रहण करेगा ।—करेगा, अवश्य ही करेगा ।”

कमलका गुस्सा नहा आया, वह हँस दी । गौली, “आज तो वे लंग डालियोंपरसे नीचे उतर आये हैं । पर यदि इसी आलोचनाका आनन्द उठाना हो कि कौन से महा अतीत कालमें जिसने पूनपुन्य जगत्के गुरु थे और कौनसे महा भविष्य कालमें उनके बशधर फिर पैतृक पेशा अम्बित्यार कर लेंगे,

शेष प्रश्न

तो अजित गान्धे जाकर पकटिए। मुझे यहूत काम करना है।”
 हरेदने कहा, “अच्छा, नमस्कार।”
 और वह विपण्य गम्भीर चेहरा लिये घरसे निरल गया।

२६

आठ दिन बाद कमल आगु गान्धे घर मिलने गई। जिन लोगोंको लेकर यह कहानी है, उनके जीवनमें इधर वह दिनोंमें एक उलट फेर हो गया है। किन्तु उसे न तो आनन्दिक्र कहा जा सकता है और न अपत्याशित ही। इधर कुछ त्रिनोंसे जो आनन्दिक्र इधर उधरसे हवाम उडते हुए गदलेंके डुरुदे जमा हो रहे थे, उनके परिणामने सम्य धम विशेष सशय न था,—जोर हुआ भी वही।

पाठकपर दरमान हाजिर नहीं है। नीचेने वरामदेमें साधारणत कोई बैठता न था, फिर भी, वहाँ कुछ मेजें और कुर्सियाँ पडी रहती थीं, दीवारपर पड़े आदमियोंकी कई एक तस्वीर भी थी,—किन्तु आज वे स्र नदारद हैं। सिफ उतसे एक काली-बलूटी लालटेन लटक रही है। जगह-जगह बूडा-बरकट जम हो रहा है, उसे साफ करनेकी अत्र गायद आवश्यकता नहीं रह गई है। ; जाने कैसा एक श्रीहीन वातावरण है, जिसे देखकर सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि मनान मालिक अत्र यहाँसे पलायन कर रहे हैं।

कमल ऊपर जाकर आगु गान्धेकी पैठरमें पहुँची। दिन ढल रहा था। आगु गान्धे आराम मुसापर पैर पैलाये पड़े थे। कमरेमें और कोद न था। परदा हटनेने शब्दसे उहोंने आँख खोलीं और वे उठकर पैठ गये। कमलने आनेका शायद उहोंने आशा नहा की थी इसने कुछ ज्यादा खुश होकर उहोंने अभ्यथना की, गले, “कमल हो ! आओ बेटा, आओ।”

उनने चेहरेकी तरफ देखकर कमलने हृदयमें चोट पहुँची। उसने कहा,
 “यह क्या ! आप तो बूढ़े-से दिग्गद देने लगे हैं, चाचाजी ?”

आगु गान्धे हँस दिये, गले, “बूढा ! यह तो भगवान्सा आशीवाद है कमल। भीतर ही भीतर जब कि उमर बढ़ती है तत्र मनुष्यने लिए इससे बरकर दुभाग्य और नहा हो सकता कि गहरसे बूढा न दिग्गद दे। यह अवस्था बचपनमें ही गने हो जाने जैसी वरुण है।”

“लेकिन तनीयत भी तो अच्छी नहीं दीग रही है ?”

“नहा ।”

परन्तु, इसके बाद, फिर उन्होंने आगे प्रश्न करनेका मौका नहा दिया, बोले, “तुम कैसा हो, सो ता बताओ ?”

“अच्छी हूँ । मैं तो कभी बीमार पडती नहा, चाचाजी ।”

“सो तो मालूम है । तू देर आर न मन, तुम्हारे दोना ही बीमार नहा होते । कारण दखना यह है कि तुम्हें लोभ नहा । तुम कुछ भी चाहती नहा, दसीसे भगवान्ने तुम्हें दाना हाथोंसे सत्र कुछ उँटल कर दे दिया है ।”

“मुझे ? क्या देते देगा आपने, बताएण तो ?”

आशु बाबूने कहा, “यह डिप्टी साहबकी अदालत नहीं जो धमकी देकर मामला जीत जाओगी । तैर, कुछ भी हो, पर म मानता हूँ कि तुनियाके विचारसे मेंने खुद भी कुछ कम नहीं पाया । यहा तो मं जाज सबरेसे थैली झाउकर और पर्द मिला मिलाकर देग रहा था । देगा कि शयने अकाने ही इतने दिनासे तहरील फुल रही था,—अन्त सारहीन थैलीने भारी भरकम आभारने आदमियोंकी आँगोंको महज धारपा ही दिया,—भीतर कोद चीज उसम थी ही नहीं । लाग सिफ गलतोसे ही साचा करते हं बटी, कि गणित शास्त्र के अनुसार शूयोंकी भी कीमत है । मने तो देगा कि उननी कोद भी नीमत नहीं । एक अरकी दाहिनी तरफ वे अगर पक्किार सड़ हा जायें ता उस एकको ही एक करोट रना देते हैं, पर अगर सिफ शून्य ही अपनी सग्याके जारसे चार कि करोट हो जायें तो नहा हा सत्रते । जहाँ बाद ओर जक नहीं, उहाँ तो वे सिफ माया ही हं । मया पाता भी टोक उन शून्योंका पाने जैसा है ।”

कमलने गहस नहा की, वह उनके पास कुरसी रींचकर बैठ गद । आशु बाबूने अपना दाहिना हाथ कमलक हाथपर रखते हुए कहा, “बगी, अरकी वार तो सचमुच ही मेरे जानेकी पारी आ गद, कल परसोतक चला जाऊँगा । बूढा हा गया,—न जाने जत्र फिर क्या भट होगी । पर इतना तुम भरोसा दो कि मुझे कभी भूगेगी नहीं ।”

कमलने कहा, “नग, भूँडूंगी नहा । आर भेंग भी होगी फिर कभी । आपनो अपनी थैली सूनी मालूम पड रही है, पर मने आनी थैली शू यामे नहा भर रगो है चाचाजी, उसम सचमुचकी चीज ह,—माया नहा ।”

शेष प्रश्न

जागू यावूँ इस बातका कुछ जवाब नहा दिया, पर मनम समग लिया कि लटकने रचमान भी कुछ नहा कहा। कमलने कहा, “म घरम धुमने ही समझ गद कि जाप यहाँ ह जरूर, पर आपका मन यहाँसे निदा हो गया दे। इसलिए अब जापको पकटकर नहा रमा जा सक्त। कहाँ जायँगे?—कलकत्ते?”

जागू यावूँ धामे सिर हिलाते हुए गले, “नहा, वहाँ नहा। अजकी गार जरा दूर जानेकी साँची है। पुराने मित्राको रचन लिया था कि अगर जिदा रहा तो फिर एक गार मिल जाऊँगा। यहाँ तुम्ह तो कोद काम नहीं कमल, चलोगी गिटिया, मेरे साथ गिगयत ? अगर वहाँसे म न लौट सना, तो तुम्हार मुँदसे कोद गगर तो मुन ही लेगा।”

इस अनुद्विष्ट सननाममा उच्छि रौन ह, सो कमलको समानेम देर न लगी, पर तुम्ह अग्यप्ताको मुस्प कर दना भी उसने अनावयय समझा।

जागू यावूँ कहने लगे, “डररी कोद गत नहा बेटी, इस वूँदेनी तुम्ह सेग न करनी होगी। इस अकमय्य देहकी कीमत ही क्या है ?—इसे तोते रहनेके लिए मैं अपने ऊपर किसीका श्रृण नग गगाना चाहता। पर कौन जानता था कमल, कि इस मास पिडको लेकर भी प्रश्न जरूर हो सकता है ? ऐसा लगता है कि गारे लज्जाने जमीनमे गडा जा रहा हँ। इस दुनियाम इतनी गदी आवश्यकता गत भी होता है, सो भला कय रौन साच सक्त ह, गताजो ?”

कमल सदेहमे चाफ पटा, गेली, “नीलिमा जीजीको नही देग रही हँ चाचाजी, वे कहाँ ह ?”

जागू यावूँने कहा, “शायद अपने कमरम होगी,—कल सपरेमे ही नहीं गिगार दे रही है। मुना है कि हरेड आकर उसे अपने घर हे जायगा।”

“अपने आश्रमम ?”

“आश्रम अब नहीं रहा। मतीश चल गया है, कुछ लटकनों भी अपने गाय ले गया है। सिफ चार-पाँच लडकोंको हरे द्रने नहीं जाने दिया ह, वे यहा ह। उनके माँ-बाप, नाते रिस्तेदार कोद भी नहीं ह, यह चाहता है कि उह वह अपने आयडियाके अनुगार नवान दगसे तैगार करे। तुमने मुना नहीं शायद ?—मुनती भी किसमे ?”

जरा टहरकर फिर कहने लगे, “परमों शामको लोगोंने चले जानेपर अधूरा

चिट्ठी पूरी करने नीलिमाको मुनाने लगा। वह दिनासे वह परापर कुछ अन्य मनस्व सी रहती थी, दधर उसे दरल भी कम पाता था। चिट्ठी थी कल्फत्तेने अपने कमचारीन नाम, मेरे खिलायत जानेना सारा आयोजन जन्दी पूरा करनेके लिए। एन नये प्रगीयतनामेका मसबिदा भी भेजा था,—गायद यही मेरा आखिरी स्मायतनामा,—अर्न्नाको दिग्गाकर पश्चा करने तन्मरतन लिए गायम भेजनेको लिखा था। और भी बहुत-सी आशाएँ थी। नीलिमा कुछ सी रही थी। उसनी तरफसे भला बुरा कुछ भी उत्तर न पाकर मँह उठानर उसकी तरफ देगने लगा तो देगा, उसन हाथका सिलादना कपडा जमीनपर पडा है, सिर चौकीन एक बिनारे हटक गया है, आँरों मिर्ची ह और चेहरा सिलकुल सफेद पक है। मेरी कुछ समझहीम न जाया कि अचानक क्या हा गया, झटपट उठकर जमीनपर लिटाया, गिलासमें पानी था उसने मुँह और आँरोंपर छीटे मारे। पगा था नहा, सो अरगार उठाकर उससे हरा करने लगा,—नीकरको पुनारना चाहा, पर मुँहसे अगज ही न निकली। शायद दो-तीन मिनट ही यह अवस्था रही, ज्यादा नहीं, इसके बाद उसने आँरों खोली और शिझनके साथ उठकर बैठ गद। एक बार सारा शरीर काँप उगा और फिर वह ओंधी होकर मेरी गोदम मुँह छिपाकर जोरसे रोने लगा। ऐसी रोद कि कुछ पृछा मत। मालूम हुआ कि जैसे उसकी छाती ही फट जायगी। बहुत देर बाद मेंने उठाकर मिठाया,—कितने दिनोंकी कितनी ही रात और कितनी ही घटनाएँ याद आ गई, फिर मुझे समझनेम कुछ भी बाकी न रह गया।”

कमल चुपचाप उनके मुँहनी तरफ देखती रही।

आगु राबूने धण भर अपनेको संभालनेम लगाया और फिर कहा, “मं समझता हूँ, इस तरह दो-तीन मिनट गीते होंगे। मेरे यह साचनेन पहले ही कि ऐसी हालतमें मुझे क्या कहना चाहिए, वह तोरकी तरह उठ सटी हुद,—मेरी ओर एक गार देगातर नहा,—और कमरसे बाहर निकल गद। न तो उसने बोद बात कही और न में ही कुछ गाल सका। उसने बाद फिर मुलाकात नहा हुद।”

कमलन कहा, “यह क्या आप पहले समझ नहा पाये थे ?”

आगु राबूने कहा, “नहा। कभी स्वप्नम भी न सोचा था। और मोद होता तो सदह करता कि महज ठल है, स्वाथ है। पर उसन नियम ऐसी बात

सोचना मा अपराध है।—यह स्त्रियोंका मन नितनी आश्चर्यजनक चीज है।
 "मैंने उत्तर समारम्भ और क्या आश्चर्यही प्राप्त होगी कि यह रोगातुर शरीर,
 क्या अग्रम और अवसन्न मन, जीवनकी यह सच्चा बेला जिसम जीवनकी
 कानीकौड़ी मा कीमत नहीं,—इसपर भी किसी मुन्तरी युवतीका मन शाश्वत हो ?
 फिर भी, यह सच है, जरा भी झूठ नहीं।"

इतना कहकर यह सदान्वारी प्रीत जादमी शोभ, वेदना और निःस्पृह लज्जासे
 एक सौंम लेकर चुप हो रहा। आगु वानू कुछ देर इसी तरह रहकर फिर कहने
 लग, "मगर मैं यह निश्चित जानता हूँ कि यह बुद्धिमती नारी मुझसे कुछ
 भा प्रयाशा नदा करनी। यह सिर्फ चाहती है मेरी सेवा करना, और वह भी
 इसलिए कि सेनाके अभावम मेरे जीवनके बाकी दिन कहा दुःखमें न बाते।
 फेरल दया और अहृदिम करुणा, उस।"

कमलको चुप देख वे कहने लगे, "बेलने विवाह निच्छेदना जब मामला
 चलाया था तब मैंने उसम अपनी सम्मति दी थी। बातों ही गतोंम उस दिन
 जब प्रसंग उठ पडा, तो नीलिमा बहुत नाराज हुन और उसने चादसे तो बेल
 उसके लिए भसल हो गद। अपन पतिका इस तरह सनसाधारणके सामने लजित
 और बदज्जत करनेकी प्रतिहिंसाको नालिमा हृदयसे पसन्द न कर सकी। उसने
 कहा कि 'पतिको त्याग देना काद बड़ी बात नहीं, उसे फिरसे पानेकी साधना
 हा स्त्रीके लिए परम साधकता है। अपमानना रदल लेनेम ही स्त्रीकी साम्तविक
 सधादा नष्ट होती है, अन्यथा वह तो दसौटी है जिसपर जाँचकर प्रेमकी कीमत
 ओकी जाती है। और फिर यह नैसा आत्म-सम्मानका भाव कि जिने असम्मानके
 साथ अलग कर लिया, उसीते अपने गाने पहरनेका खच हाय पसारकर लिया
 जाय ? क्या गलेम पाँसी डालनेके लिए रस्ती भी नहीं जुगी ?' सुनकर मैंने सोचा
 था कि नालिमाका यह बात बचा है,—ज्यादती है। पर आज सोचता हूँ कि
 प्रेम क्या नहीं कर सकता। रूप, यौवन, सम्मान, सम्पदा,—यह सब कुछ नहीं
 बर्ग, धमा ही उसका वास्तविक आत्मा है। जहाँ धमा नहा वहाँ प्रेम सिर्फ बिट
 भवना है,—वहाँपर रूप यौवनका विचार वितन उठता है और उहाँपर आता है
 आत्मसम्मान शानका 'टग ऑफ्-वार'।"

कमल उनके मुँहकी तरफ देगती हुद चुप हो रही।

आगु वानू कहने लग, "कमल, तुम ही उसकी जादग हो,—पर, चाँदकी

चिट्ठी पूरी करके नीलिमाको सुनाने लगा। कद दिनोंसे वह राबर कुछ अन्य मनम्बन्धी रहती थी, इधर उसे देख भी कम पाता था। चिट्ठी थी कल्पत्तेरे अपने कमचारीके नाम, मेरे विलायत जानेका सारा आयाचन जल्दी पूरा करनेके लिए। एक नये वसीयतनामेका मसविदा भी भेजा था,—गायद यही मेरा आग्रिरो वसीयतनामा,—जटनीको दिग्गकर पक्का करन दम्नपतन लिख गायस भेजनेका लिखा था। और भी बहुत सी आशाएँ थीं। नीलिमा कुछ सी रही थी। उसकी तरफसे भला-बुरा कुछ भी उत्तर न पाकर मैं मुँह उठाकर उसकी तरफ देखने लगा तो देखा, उसने हाथका सिलाइका कपटा जमीनपर पडा है, सिर चोरीके एक किनारे टूट गया है, ओख मिची है और चेहरा बिल्गुल सफेद पक है। मेरी कुछ समझहीन न आया कि अचानक क्या हो गया, झटपट उठकर जमीनपर लिटाया, गिलासमें पानी था उसक मुँह और आँखोंपर छीट मारे। पत्ता था नहा, सो अपना उठाकर उसमें हवा करने लगा,—नीकरको पुकारना चाहा, पर मुँहसे अनाज ही न निकली। शायद दो-तीन मिनट ही यह अवस्था रही, ज्यादा नहीं, इसके बाद उसने आँखें खोली और शिक्षाने साथ उठकर बैठ गद। एक बार सारा शरीर काँप उठा और फिर वह आँधी होकर मेरी गोदमें मुँह छिपाकर जोरसे रोने लगा। ऐसी रोइ कि कुछ पृजे मत। मात्रम हुआ कि जैसे उसकी छाती ही फट जायगी। बहुत देर बाद मने उठाकर बिठाया,—कितने दिनाकी कितनी ही रात आर कितनी ही घटनाएँ पाद आ गईं, फिर मुझे समझनेमें कुछ भी शक न रह गया।”

कमल चुपचाप उनसे मुँहनी तरफ देखती रही।

आगु बाबूने क्षण भर अपनेको संभालनेमें लगाया और फिर कहा, “मैं समझता हूँ, इस तरह दो-तीन मिनट रीते होंगे। मेरे यह सोचनेके पहले ही कि ऐसी हालतमें मुझे क्या कहना चाहिए, वह तोरकी तरह उठ खड़ी हुई,—मेरी आर एक बार देखातक नहा,—और कमरसे बाहर निकल गद। न तो उसने कोई बात कही और न मैं ही कुछ बाल सना। उसने बाद फिर मुलाकात नहा हुई।”

कमलने कहा, “यह क्या आप पहले समझ नहा पाये थे ?”

आगु बाबूने कहा, “नहा। कभी स्वप्नमें भी न सोचा था। और जोइ होता तो सदह करता कि महज छल है, स्वार्थ है। पर उसक विषयमें ऐसी बात

सोचना भी अपराध है।—यह स्त्रियोंका मन कितनी आश्चर्यजनक चीज है। हमने उन्कर समारम्भ और क्या आश्चर्यकी रात होगी कि यह रोगातुर शरीर, पद्मा अश्रम और अवसन्न मन, जीवनकी यह सच्चा बेला जिसम जीवनकी कानाकौड़ी भी कीमत नहीं,—इसपर भी किसी सुन्दर युवतीका मन आकृष्ट हो ? फिर भी, यह सच है, जरा भा झूठ नहीं।”

इतना कहकर वह सदाचारी प्रीत जाटमी शोम, रेखा और निक्पट लजासे एक गोंस लेकर चुप हो रहा। आगु बाबू कुछ देर इसी तरह रहकर फिर कहने लगे, “मगर मैं यह निश्चय जानता हूँ कि यह बुद्धिमती नारा मुझसे कुछ भी प्रयाग्न नहा करता। वह सिर्फ चाहती है मेरी सेवा करना, और वह भी इसलिए कि मुझमें अमानमें मर जीवनका बाकी दिन कदा दुःखमें न बीत। उन्का दया और अस्त्रिम करणा, उस।”

कमलकी चुप दृश्य ने कहने लगे, “बेलान विवाह विच्छेदका जय मामला चलाया था तब मैंने उसमें अपनी सम्मति दी थी। रातों ही रातोंम उस दिन जब प्रसंग उठ पडा, ता नीलिमा बहुत नायक हुई और उसने बादसे ता बेला उसका लिए अग्रय हो गई। अपने पतिको इस तरह स्वमाधारणके सामने लज्जित और बहज्जत करनेकी प्रतिहिमाका नीलिमा हृदयमे पसन्द न कर सकी। उसने कहा कि ‘पतिको त्याग देना काद बना बात नहीं, उमे फिरसे पानकी साधना हो चाने लिए परम मायकता है। अपमानका बदला लेनेम ही स्त्रीकी चाम्त्वि मयादा नष्ट होती है, अन्यथा, वह तो नगौटा हं जिनकार जौचकर प्रेमकी कीमत ओंका जाती है। और फिर यह कैसा आम-सम्मानका माव कि निम अममानके साथ अलग कर दिया, उगसे अपने गाने पहरनेका रच हाथ पसाकर लिया जाय ? क्या गलेमें फोंसा टालनेका लिए रम्मा भी नहीं जुगी ?’ मुनकर मैं सोचा था कि नीलिमाकी यह रात बना है,—ज्वादती है। पर आज सोचता हूँ कि प्रेम क्या नहीं कर सकता। रूप, यौवन, सम्मान, सभदा,—यह सब कुछ नहीं बगी, धमा ही उसका चाम्त्वि आत्मा है। जहा शमा नहीं वहाँ प्रेम सिर्फ विट भवा है,—वहाँपर रूप-यौवनका विचार रितक उन्ता है और वहाँपर आर्ता है आत्मसम्मान पानका ‘ग ऑर-यार’।”

कमल उनके मुँहकी तरफ दृग्ता दूर चुप हो रही।

आगु बाबू कहने लगे, “कमल, तुम हो उसकी आदग्य हो,—पर, चाँदकी

चाँदना मानो गूथ फिरणामे भी न गइ है। तुममे जो कुछ उमो पाता है, अपने हृदयक रंगम भिगाकर स्निग्ध माधुर्यक साथ उमन उमे न जा रिक्तनी तरफ फिर दिशा है। भा हा दा दिनाम नो गो यरना विन्ता का है, कमल। स्त्रीका प्रेम मन पाता था, उमका स्वात् भ पहचाता हँ, स्वरूप जाता हँ परन्तु रग तरोन तत्परा, रि तारन प्रेमका उइ सिफ एर हा पहल था, सन्मा जान मुझ आच्छा कर दिया है। इमम न जान रिक्तता राधा है, न जाने रिक्तता क्या है, अपनेका भिगात करणेका न जान रिक्तता विनजाता तपारियाँ हँ। यत्रि म उम हाथ पगारकर ले गहा गका, पर क्या रहन उमे तम्भार करू भा भी मरो समगम गदी आ गता है कमल।”

कमल गमन गइ रि पत्नी प्रेमनी मुठीय छायेने इतने दिन विन टिगाआम अँभेग कर रगा था, आन व ही दिगाएँ धारे धीर उज्ज्वल होती जा रहा है।

जागु राबू कहा, “ठीक है, मणिने मने क्षमा कर दिया है। वापर अभिमानका म अत्र उसर आगे लाल आँग न करन दूँगा। म जाता हँ कि यह दुःख पायेगी, जगत्सा विधिभद्र शासन उमे छुटकारा नहा देगा। अनुमति तो नहीं दे गूँगा, पर जात समय यह आशीवाद टाट जाऊगा रि दु गममे यह फिर अपनका जिना दिन रोज कर पा ले। उसरी भूल भ्रान्ति और प्रेम,—मगवान् उन लागका सुविचार कर।” कहते रहत उनका गग भारी हो आया।

इसा तरह नारयताम रहत शण कट गये। उनने माँट हाथपर कमल धार धीरे हाथ केर रही थी, रहत दर गद उमन मृदु कण्ठमे कहा, “चाचाजा, नीलिमा जीनीक शिष्यमें आपने क्या निणय किया ?”

जागु राबू अरुम्मात् गीधे हाकर उठे गये,—जैस किसाने उर टेलकर उग दिया हो, “देगा बनी, उम्ह म पहले भी गी समझा मना हँ आर जब भी न समझा गूँगा आर शायद नर गामथ्य भी नहा है। पर, ऐसा गणय मेरे मनम कभी नहीं आया रि एरनिष्ठ प्रमना आदश मनुष्यका सच्चा जादग नहीं। नीलिमा न प्रेमपर मैं सदेह नहीं करता पर जैम वह सत्र ह वैस ही उमे अस्वीकार करना भी मेर लिए वैसा ही सय है। किसी तरह भी म इस निपल आत्म-वचना नहीं कह सकता। तउसे इमका मेल नहीं गायगा, पर यह सच है रि निपलतामस होकर मनुष्य आग वयेगा। मैं गहा माउता कि कहाँ

जायगा, पर आपका जन्म । यद्यपि वह मेरी जन्मनामे अतीत है, पर मैं यह निश्चयसे जानता हूँ कि 'तुम्हारा बड़ी व्यथाका प्रतिफल मनुष्य किसी किसी दिन पायेंगा अन्तः । नहीं तो समझ जसत्य, सृष्टि असत्य हो जायगी ।'

वे कहने लगे, "इस गोलिमाको हा ले लो, किसी भी आदमीके लिए जो नारी अमूल्य सम्पदा हो सकती है,—उमर लिए कहा भा 'उड़े होनेकी जगह नहीं । उमरकी व्यथता मेरे सभी दिनोंको शून्यता तपह चुमता रहेगी । इसमें मोचता हूँ, अगर वह और किसीम प्रग करता । यह उमका पैगो भूल है ।"

कमाने कहा, "भूल सुधारन दिन तो अभी उमके वनम नग हो गय चाचाज ।"

"इसे ? तुम समझती हो, जब क्या वह किन किसीम प्रेम कर सकता है ?"

"कमसे कम, जन्ममर तो नहीं है । इसे भी क्या आपने अभी सम्भव सम्झा था कि आपने अपने जीवनम क्या ऐसी घटना हा सकती है ?"

"'द्विज नीलिमा' उसका पैगो ग्री ?"

कमाने कहा, "सो नग जानता । पर उमर लिए क्या आप वहा प्रार्थना करें कि जिसे उमन पाया नहा, और प्रा सकती नहा, उमरकी कान्म धार्य जीवन यथ नियन्त्राम काट द ?"

आपु गवून चहरेका दीप्ति गहुत लुठ मलिन हो गद । बोने, "नहा, ऐसी प्रार्थना नहीं करूँगा ।" फिर धन भर चुप रहकर बदन लग, "मगर मर्य रात भी तुम नहीं समझागी, कम । मैं जो कर सकता हूँ, वह तुम नहा कर सकता । मर्यका मूलगत सरकार पुम्हार धार मर बाननका एक गहा है,—'मिलकु' भिन्न है । इस जीवनका हा जिज लामौन मानद आत्मानो परम प्राप्ति सम्झा है, उनके लिए प्रतीत करना मुक्ति है, व ता जाजम मागनी अतिम शून्यतर इग जीवनम पी लेना चाहगे, परन्तु हम जमानत गात ह, प्रतीग कराना समझ हमार लिए आनन्द है,—उठम आपे हाकर काना जकरा गरी पन्ता ।"

कमाने गात कान्म करा, "उह रात मैं आपकी मानती हूँ गागरी । लेकिन, गिर्न इग कारण ता आपने गन्धारका मुक्ति रूपम ग्रीसार नहा किया जा सकता, और काना-शुभुमका जागाता शिवायक लम्बतर हाय फ्यार जमानत-कालतर प्रतीग कराना लपर धैर्य भा मुझमें नहीं है । निज जानका

सबसे नीच गहन बुद्धिमे पाया है, वहा मर लिण सय है, वही महान् है। फूल-बल आर गाभा-भागदास मरा यह जीवन भर उठे, परमाणु विशाल लाभरी आगाम र्म इम जीवारी उभेभा, जयगा आर अयमा १ वर्र,—इतना ही र्मे टीक समशती हूँ। चाचाजी, र्गो तरह आप लंग जानन्दमे और सौभाग्यमे स्वच्छापुत्रक र्चिच रह करे ह। आप लोग इहलान्को तुच्छ समझत ह, इगास इहलान्को भी आप लोगाता मार जगात्न गामा तुच्छ रना रगा है। नीलिमा जीजीसे भट टागी या र्ही, सो नहीं मादूम, अगर होगी ता म उनमे यह बात कह जाऊँगी।”

कमल उठकर गठी हा गद। आगु राबूने महसा जारस उयगा हाथ पन्ड लिया, गले, “जा रही हो बगी ? यह सोचते हा कि ‘तुम जा रही हा’ मेरा छातीने भीतर हाहाजार-सा मच जाता है।”

कमल षठ गद, गली, “पर आपको ता म किसी भी तरफसे तसन्ली दे नहीं पाती चाचाजी, दह और मनमे जर रि आप अत्यन्त जस्वस्थ ह आर सान्त्वना दना ही जर कि गरमे जरूरी वस्तु है, तर र्मे सर तरफमे मानो आपको चोट ही पहुँचाया करती हूँ। फिर भी, यह सच है रि म आपको किसामे भी कम प्यार रहा करती चाचाजी।”

आगु राबूने इस मन ही मन स्वीकार करते हुए कहा, “इसके सिवा नीलिमा,—वह भी क्या साधारण आश्रय है ? पर जानती हो इसका कारण क्या है कमल ?”

कमलने मुगगराते हुए कहा, “शायद आपन अन्दर दलदल नहीं है,—इसीसे दलदल अपने शरीरका भी बोझ नहीं ढो सगता—पाँवाय नीचेसे अपनेको हटाकर अपने आपको डुना देता है। लेमिन ठोस मित्री लहे और पत्थरका भी बोझ शेल लेती है,—इमारत उसीपर रनाइ जा सकसी है। नीलिमा जोजीका सर खियाँ र्ही समझ सकती, हूँ जिनक अपनेको लेनर रेल रेलनेये दिन बात चुये ह और सिरका बोझ उतार कर जो सहज नि श्वास लेती हुद जीना चाहती है, वे उह समझ सकेंगी।”

“हूँ।” कहकर आगु राबूने एन गहरी साँस ली, और कहा, “और सिननाथ ?”

कमलन कहा, “जिस दिनसे र्मेने उह सचमुच समझा है, उस दिनसे

धाम और अभिमान मेरे मनसे बिल्कुल धुल पुँट गया है,—ज्वाला बुझ गई है। शिवनाथ गुणी आदमी हूँ, कलाकार हूँ,—कवि हूँ। चिरम्यायी प्रेम कलाकारोंके भागसा विघ्न है, उनका सृष्टिके लिए अन्तराय है, उनके स्वभावका परम विगधी है। यही बात उस दिन ताज्जु सामने खड़ा हाकर मैं कहना चाहती थी। स्त्रियाँ तो एक उपलभ्य मात्र हैं,—नहा ताँ, असलम वे प्रेम करते हैं सिर्फ अपने आपसे। अपने मनका दो भागोंमें विभक्त करके उनकी दो दिनकी लीला चलती है,—उसके बाद वह रात्म हा जाती है। इसी लिए उनके गलेका स्वर ऐसा त्रिचित्र होकर बजता है,—अन्यथा वह बजता नहीं, सुगन्धर जम जाता। मैं तो समझती हूँ, शिवनाथने उसे नहीं ठगा, मनोरमाने अपने आप ही भूल की है। रायास्तने समय बादलापर जो रग गिरलने लगता है चाचाजी, वह न तो स्वाथा होता है और न उसका वह स्वाभावक रग ही है। लेकिन फिर भी उसे झूठ कौन कह सकता है ?”

आगु बाबूने कहा, “सो माझूम है, पर कबल रगसे ही ता आदमीके दिन नहीं कटत बेगी, और न उपमासे उसकी च्यथा ही मिटती है। उताओ बेटी, इसका क्या उपाय है ?”

बमलका चेहरा झारितसे मलिन हो गया, उसने कहा, “इससे घूम फिरकर एक ही प्रश्न बार-बार सामने आ जाया करता है चाचाजी, वह जैसे शप ही नहीं होता। तल्लि यही ठीक है कि जाते समय आप अपना यही आशीवाद छोट जायँ कि मणि दु गवँ तिनोम अपने आपको टूँट निकाले, जा झटनेवाला है उसके झड जानके बाद वह रिगा किसी सगायन अपनेको पहचान सके। और आपसे भी मैं कहूँगी कि सखारम होनेवाली अनेक घटनाओंमेंस रिवाह भी एक घटना है, उससे ज्यादा कुछ नहीं। उसीको जिन दिनसे नारीका सख मान लिया गया है उसी दिनसे स्त्रियोंके जीवनकी सबसे बड़ी ट्रेजडी शुरू हो गई है। विदेश जानेके पहले अपने मनकी असत्यनी लजीरम अपनी लडकीको मुक्त कर जाइए, चाचाजी, यही आपसे मेरी अन्तिम प्रार्थना है।”

सहसा दरवानेन पास किसीने पैरोंकी आहट सुनकर दोनों उधर देखने लग। हनेन्द्रने भीतर आकर कहा, “भाभाजीको म लगाने आया हूँ, आगु बाबू, य भी तैयार हूँ,—सौगा लानेन लिए आदमी भेज दिया है।”

आगु बाबूना चेहरा एक पट गया, रोल, “अभी ? लेकिन दिन तो अर

आगु बाबूने कहा, “सो मैंने सुना है। यही तो बैठा सोचा करता हँ।”

* * * *

उस दिन कमलको घर लौटनेमें काफी देर हो गई। आते समय आगु बाबूने कहा, “डरनेकी कोई बात नहीं बटी, जा आतक कभी मुझे छोड़कर नहीं रही, आज भी वह मुझे छोड़कर न जायगी। निरुपायका उपाय वह करेगी।” कहते हुए उन्होंने हाथ उठाकर सामनेकी दीवारपर टेंगी हुई अपनी स्वर्गीया धम-धनीकी तस्वीर दिखा दी और चुप हो रहे।

* * * *

कमलने घर पहुँचकर देखा कि ऊपर जानेका रास्ता ही बंद है, बक्सोरा टेर सीढ़ीके सामने जडा पडा है। एकाएक उसकी छातीके भातर छोंक-सा लग गया। किसी तरह रास्ता निकालकर वह ऊपर पहुँची। रसोदघरमें शारगुल सुनकर उसने शॉकर देखा कि अजितने नौकरानीकी मददसे ‘स्टोव’ जलाकर चायके लिए पाना चला दिया है, और चाय-चीनी आदिकी तलाशमें घर भरकी तमाम चीज उथल पुथल कर डाली हैं।

“यह क्या कर रक्ता है?”

अजित चौंकर कमलकी आर देसने लगा, बोला, “चाय-चीनी वगैरह क्या तुम लाहेकी तिजोरीमें बंद रक्खा करती हो? पानी कबसे खौलकर मिझी हुआ जा रहा है।”

“लेकिन मेरे घरकी चीज आपकी मिलेगी कैसे, सो तो बताइए? खलिए, इधर आइए, मैं तैयार किये देती हूँ।”

अजित हटकर अलग खडा हो गया।

कमलने कहा, “पर आज बात क्या है? बक्स टूटा, गठरी पोटली,—यह सब किसका सामान है?”

“मेरा। इरेड्र बाबूने नोटिस दे दिया है।”

“नोटिस दिया है तो वहाँसे चले जानेका दिया होगा। पर यहाँ आनेका बुद्धि किसने दी?”

“वह मेरी अपनी है। इतने दिनोंमें पराइ बुद्धिपर ही चलता जा रहा हूँ,—अब मैंने अपनी बुद्धि हँटा निकाली है।”

कमलने कहा, “अच्छा किया है। पर चीज-बस्त क्या सब नीचे ही पडी

रहेगी ? कोद चुरा नहीं ले जायगा वहाँसे ?”

मुनते ही अजित चंचल हो उठा, बोला, “चुरा तो नहीं ले गया कोद कुठ ! एक चमड़ने सूट कैसेम बहुत-से रुपये रखते हैं ।”

कमलने सिर हिलाकर कहा, “बहुत अच्छा किया है । एक ग्वास जातिने आदमा हात हैं जो अम्मा रपकी उमरतर भी बालिया नहीं हुआ करते, उनके सरपर एक-न एक अभिभावक होना ही चाहिए । पर इसकी व्यवस्था मगमान् स्वयं कृपा करके कर दते हैं । चाय रहने दाजिए, चलिए, नीचे चलिए पद्ले,—किसी तरह पन्ट थामर सामान ऊपर लानेका कोशिश का जाय ।”

२७

मगानमाला अमी अमी पूरे महीनका किराया लेकर गया है । इधर उधर गिरे हुए सामानके बीच, विशृंगल रमरेके एक किनारे, केन्वासनी आराम कुर्सीपर अजित आँवें माचे पडा है । मुँह खुरा हुआ है, दगते ही पता चल जाता है कि उसने चिन्ताग्रन्त मनमें सुगन्ना लेश भी नहीं है । कमल सिंगिने गार रँधी सँची नीजोंको पदसे मिलाकर एक कागजपर लिख रही है । स्थान छोड़नेका समय सत्रिन्द है, इस कारण उसका कामम किसी तरहकी चञ्चलता नहीं आर है ।—एसा लगता है मानो यह उसका रोजमराका काम हो । सिफ नीरगता कुठ अधिर है ।

इतनेमें धरे द्ररे यहाँमें गामने भोजनका निमरण आया । किसी आदमीने भारपत नहा,—डाकसे । अजितने चिन्ती गोलने पगी । आगु गानूनी पिदाके उपलभ्यम यह आयोजन है । बहुत-से परिचित लोगोंको आमन्त्रित किया गया है । नीचेके एक रीनेम छोटे हरपमें लिखा है, ‘कमल, जरूर आना रहन ।—नीलिमा ।’

अजितने उसे दिग्गते हुए पृठा, “जाओगी क्या ?”

“जाऊँगी क्या नहा । मेरी कदर इतना थादे र गह है कि निमरण जैनी चीनकी उगे ता कर गई । मगर तुम ?”

अजितने दुविधाके रररम कहा, “यहा थाय रहा हूँ । आज तनीयत कुठ—”

“तो जरूरत नहीं जानेका ।”

अजितकी निगाह अरतर चिट्ठापर ही थी । नहीं ता वह कमने आँवपर आर हुइ कौतुनपूण मुसकराहट जरूर दग रता ।

कमलने हरेद्रसे हँसते हुए कहा, “जय प्रताप ? दीजिए इसका जगमग ?” हरेद्र तथा औरोंने भी मुँह फेरकर अपनी अपनी हँसी छिपानेकी मोशिरा की। अभयने नीरस-कण्ठसे पूछा, “क्या कमल, मुझे पहचाना कि नहा ?”

आशु गानू मन ही मन असन्तुष्ट हुए, बोले, “तुम पहचान लो इतना ही काफी है। तुमने तो पहचान लिया न ?”

कमलने कहा, “यह प्रश्न आपका बेजा है जानु गानू ! आदमी पहचानना तो इनका ग्यास पेशा है। इसमें भी सदेह करना इनके पेशेपर चोट पहुँचाना है।”

बात उसने इस ढंगसे कही कि अपनी बार किसीसे हँसी दगाये नहीं दनी मगर साथ ही इस ढरसे कि यह दुःशासन आदमी कही कुछ कुत्सित बात न कह बैठे, सज शान्त हो उठे। आजकल दिन अक्षयको बुलानेकी हरेद्रकी इच्छा नहीं थी, पर यही सोचकर निमंत्रण दे दिया गया था कि वह बहुत दिन बाद घरसे आया है, न देनेसे बहुत ही भद्रा दीखेगा। हरेद्रने उरते हुए और प्रिय के साथ कहा, “हमारे इस शहरसे—अथवा या कहिए कि इस देशसे ही आशु गानू चले जा रहे हैं। इनका साथ परिचित होना किसी भी आदमीके लिए सौभाग्यकी बात है और वह सौभाग्य हम लोगोंको प्राप्त हुआ है। आज आपकी तबीयत ठीक नहीं है, मन भी अयसज है, इसलिए हम आशा करनी चाहिए कि आज हम आपको सहज-सौजन्यसे साथ निदा कर सकेंगे।”

बात साधारण-सी थी पर उस शान्त सहृदय प्रौढ व्यक्ति के चेहरेकी तरफ देखते ही वे सबके हृदयमें पैठ गईं।

आशु गानूको सकोच मालूम हुआ। इस आशकासे कि बातचीतका सिल सिला वहीं उहाके विषयमें न चल पड़े, उन्होंने चपसे दूसरी बात छेड़ दी, बोले, “अभय, गायद तुम्हें मालूम हो गया होगा कि हरेद्रका ब्रह्मचर्याश्रम अय नहीं रहा। राजेद्र तो पहलेसे ही लापता है और शतीग भी उस दिन चलता बना। जो कुछ दो चार लडने रह गये हैं, हरेद्रकी इच्छा है कि उन्हें सगारने सीधे रास्तेसे ही आदमी बनाया जाय। तुम मज लोग बहुत दिनांतर बहुत सी बातें करते रहे, पर नतीजा कुछ नहीं हुआ। जय तुम लोगका कतव्य है कि कमलको धन्यवाद दो।”

अक्षय भीतरसे जल गया और सूखी हँसी हँसता हुआ बोला, “अन्तम फल

पता शायद हाथी गार्तासे ? लेकिन कुछ भी कहिये जागु शाय, मुझ जरा भी आशय नहीं हुआ। यह अनुमान तो मने बहुत पहलेसे ही कर ग्या था।”

हस्त्रने कहा, “छा तो कग्ने ही, क्यौंकि आदमी पहचानना आपका रोगा र्हा।”

आशु बाबू गग्ने, “फिर भी, मैं समझता हूँ, तोडनेकी काद जरूरत नहीं थी। सभी धम या मत मूलत एक ही हैं,—सिद्धि प्राप्त करनेके अथ वे सिफ कुछ प्राचीन आचार अनुष्ठान हा तो ई ? जो उह मानते नहीं या पालते नहीं, वे न मान या न पालें, पर जिनम मानने या पालनेका अध्ययनाय है उह निरन्हाह करनेसे क्या लाभ ? क्या कहते हा आय ?”

अउपने कहा, “जरूर।”

आगु बाबूने कमलकी तरफ देखा। उनने देखते ही यह जारसे सिर हिला कर मोल उठी, “आपका यह हल विदग्धस तो गरी हुआ आगु बाबू, बरिफ यह तो अविदग्धस उभेभाकी गत हुइ। इस तरह सौत्र सनती तो मैं आधमने विदग्ध एक शब्द भी न कहता। मगर गत ऐसी नहीं है। यह कहना कि आचार अनुष्ठान मनुष्यन लिए धमसे भी गती गन्तु हैं वैसा ही है जैसा कि राजासे बढकर राजाके कमचारियोंको बढा बताना।”

आगु बाबूने हँसते हुए कहा, “माना कि यह ठीक है, पर इससे क्या तुम्हारी उपमाका ही युक्ति मान लें ?”

यह गत कमलके चेहरसे ही जाहिर थी कि उसने परिहास गरी किया। उसने कहा, “क्या सिफ उपमा ही है आगु बाबू, उससे ज्यादा कुछ नहीं ? इसे मैं मानती हूँ कि सभी धम असलमें एक हैं, सब कालों और सब देशोंम वे उसी एक अक्षय वस्तुकी असाध्य साधना हैं। उह मूत्रान अदर तो पाया जा नहीं सक्ता। प्रमाद्य और हवाको लेकर मनुष्यका विवाद नहीं शक्ता, विवाद हाता है अग्ने गेटेवारने लिए,—जिसे कि अपने अधिकारमें लिया जा सकता है या दराल करने अपने बशधरांने लिए इक्का किया जा सकता है। इसीसे तो जीवनकी आनन्दकताओंमें वह इतना उदा सत्य हो रहा है। यह तो सभी जानते हैं कि विवाहका मूल उद्देश्य सभी क्षेत्रोंमें एक ही है, पर इससे क्या सब उसे मान सक्ते हैं ? आय ही उगाइए न अक्षय बाबू, ठीक है कि नहीं ?” यह कहा और उसने हँसकर मँह पेर लिया।

सकता । जालीचना करके हम गये अनुभव कर सकते हैं, पर पुम्नन्ने मिला मिलाकर समान नहीं गए सकते । श्रीरामचन्द्रके युगका भी नहीं, युधिष्ठिरके युगका भी नहीं । 'समायण' और 'महाभारत'में चाहे जितनी ही बातें लिखी हैं पर उक्त लोगोंको टटोलनेसे उस जमानेके साधारण मनुष्यके दर्शन नहीं मिल सकते, और माँकी काम चाहे जितनी ही निरापद क्यों न हो, उड़ होनेपर उसमें वापस नहीं जाया जा सकता । ससारकी सम्पूर्ण मानव जातिको मिलाकर ही तो मनुष्यका अस्तित्व है, वह तो आपन चारा तरफ है । कमल ओढ़कर क्या हमारे दर्शनको रोना जा सकता है ?”

बला और मालिनी चुपचाप बैठी मुन रही थीं । हम स्त्रीके सम्बन्धमें बहुत सी बातें उन लोगोंने सुन रखी थीं, पर आज सामने-सामने बैठकर इस परित्यक्ता और निराश्रया महिलाके बान्धवोंकी निरुत्थय विभयता देखकर उनके आश्चर्यका ठिकाना न रहा ।

दूसरे ही क्षण यह भाव आगे बान्धने मुँहसे प्रकट हुआ । उन्होंने कहा, “बहममें हम चाहे जो भी कहा करे कमल, पर तुम्हारा बहुत-सी बात हम मानते हैं । जिसे हम नहीं कर सकते, हृदयसे उसकी अज्ञा भी नहीं करते । इसी घमम किसी दिन स्त्रियाँका दरगाजा मन्द था और मुना है, एक दिन तुम्हारे आ जानेसे सतीशने इस जगहको वृत्तित समझ लिया था । मगर, आज हम सभी यहाँ धामनित होकर आये हैं, स्त्रीका आनेकी शोक गोक नहीं—”

इतनेमें एक लटकी दरगाजेके पास आकर रुका हो गया । साफ सुथरी पोशाक पहने था, चेहरेपर आनन्द और सन्तापका भाव झलक रहा था, बोला, “रहनेजीने कहा है, रसोई तैयार है, आसन बिठाये जायँ ?”

अभयने कहा, “हाँ हाँ, बिठाये जायँ । कहो जाकर, रात भी तो हो रही है ।”

लटका चला गया । हरेन्द्रन कहा, “जैसे माभीजी आइ हैं, गाने पीनेकी चिन्ता किसीको नहीं करनी पडती । उनके लिए तो कहीं जगह न रह गई थी,— पर सतीश गुस्सा होकर चला गया ।”

आशु राबूका चेहरा क्षण भरके लिए मुख हो उठा ।

हरेन्द्र कहने लगा, “और मजा यह कि सतीशने लिए भी और कोई उपाय नहा था । वह त्यागी ब्रह्मचारी आदमी ठहरा,—उसकी साँसमें यह सम्भव

निज या । पर मुश्किल तो यह है कि मेरी कुछ समझाहीमें नहा गा रहा कि
बालमें कौन-सा काम टीक हु ता ।”

कमलने तुरत नि सकोच स्वरम कहा, “यही काम हरन्द्र गानू, यही काम
रिज हुआ है । समय जत्र सहज स्वाभाविक न रहकर दूसरेपर आघात करने
लगता है, तब यह दुःख हो उठता है ।” कहत-कहते उसने लहमे भरने लिए
आगु गानूकी तरफ देखा,—“गणद कोद एक गुप्त इजारा या,—पर फिर उमने
हरदसे ही कहा, “भगवान् रूपमें वे अपने आपको ही बल्ककर देरते हैं,
अपने आपको ही खींच-खींचके वे अपने भगवान्की सृष्टि करते हैं । सीसे
उनकी भगवान्की पूजा, गार-वार सिर झुकाकर, अपनी ही पूजापर उतर आती
है । इसक सिवा उनने लिए और वाद रास्ता भी नहा । मणुय न तो सिर्फ पुरुष
ही है और न सिर्फ स्त्री हा, दोनों मिलकर हा एक होत हैं । आधेको नाद देकर
येय जाधा नर सिर्फ अपनेको हा जिगाल रूपम पाना चाहता है, तब यह अपने
को भी नहा पाता और भगवान्को भी को बैठता है । सतीश बाबूने लिए
लुध्वन्ता मत रसिण इन्द्रे गानू, उनकी सिद्धि स्वयं भगवान्ने जिम्मे है ।”

सतीशको लगभग कोद भी देर न पाता या, इसीसे अतिम वातपर सरके
धन हँस पड़ । आगु गानू भी हँसे, परन्तु गानू, “हमारे हिन्दू शास्त्रोंमें जो सत्रसे
यही बात है कमल, यह है आत्म-ज्ञान । अथात्, अपनी गम्भीरताके साथ
जान लेना । कृपियोजना कहना है कि इसकी रोजमें ही निररकी सम्पूर्ण ज्ञान
कारी,—सम्पूर्ण ज्ञान मरा पडा है । भगवान्को पानेका यही एक माग है और
इसीके लिए ध्यानका उपदेश है । तुम दूसरको नहीं मानती,—पर ज्ञान मानते
हैं, विश्वास करते हैं, उन्हें चाहते हैं,—वे अगर र सरय जनक विषयोंसे अपने
को वंचित न रने तो एकप्रचित्त होकर ध्यानमें रगल नहा हा सकते । सतीशकी
गत में नहीं कहता,—पर कमल, यह तो हिन्दुओंका आरिच्छित्त परस्परसे प्राप्त
भस्कार है, और यही तो योग है । समुद्रने लेजर हिमालयतक सम्पूर्ण भारत
त्रिचि श्रद्धासे इसी त उपर विश्वास करता है ।”

भक्ति, विश्वास और भावने धारणसे उनकी दोना जॉने छलउला आदे ।
उन तरहके गहरी साहसी ठाठके नाच उनका जो हृन्निष्ठ निररास-परायण
हिन्दू चित्त निगत दीप जिगवाकी तरह जल रहा या, कमलने क्षण भरके लिए
उगहा जनमर क्रिया । यह कुछ कहना चाहती थी, पर सकोचके मारे कह न

इहलोक परलोकका देवता समझती है, बीमार होनेपर दवा नहीं खाना चाहती, कहती है, 'पतिने पादोदकमे ही सत्र बीमारियाँ अच्छी हो जाती हैं। अगर न अच्छी हों तो समझना चाहिए कि स्त्रीकी आयु खतम हो चुकी।'

कमलको इसका थोड़ा बहुत आभास हरेद्रसे मिल चुका था, उसने कहा—
“तब तो आप भाग्यवान् ह, —कमसे कम स्त्रीने भाग्यसे! इतना जरूरदस्त विश्वास इस युगम दुर्लभ है।”

अश्वने कहा, “शायद ऐसा ही हो, ठीक नहीं जानता। सम्भव है, इसोको स्त्रीभाग्य कहते हों। पर कभी ऐसा मालूम होता है कि ससारमें मेरा कोई नहीं, मैं अनेला हूँ,—मिलजुल नि सग अनेला।—अच्छा नमस्कार।”

कमलने हाथ उठाकर प्रति-नमस्कार किया।

अश्व एक कदम पनाकर फिर मुड़ पडा, बोला, “एक अनुरोध करूँ ?”
“कहिण।”

“अगर कभी समय मिले, ओर मेरी याद रहे, तो एक पत्र लिखिणगा ? आप खुद कैसे हैं, अजित बाबू कैसे हैं,—यही सत्र आप लोगोंने गत में अक्सर सोचा करूँगा। अच्छा अब जाता हूँ, नमस्कार।” इतना कहकर अश्व जन्दीसे चला गया और कमल वहाँ स्तब्ध होकर खड़ी रही। भते बुरेका विचार करने नहा, उसे सिफ इसी गतका खयाल हुआ कि यह वही अश्व है। और मनुष्यकी जानकारीने गहर इस भाग्यवान्का दाम्पत्य जीवन निर्भिन्न शान्तिके साथ इस तरह बहा चला जा रहा है। एक चिट्ठीने लिए उसे इतना कुतूहल, ऐसी विनीत ओर सच्ची प्रार्थना।

ऊपर जाकर देखा कि नीलिमाक सिवा और सत्र यथास्थान बैठे हैं। यह नीलिमाका स्वभाव है,—इसपर कोई कुछ खयाल भी नहीं करता। आशु बाबूने कहा, “हरेन्द्रने एक मजेकी गत कही थी कमल, सुननसे पहले तो सहसा यह एक पहेली-सी मालूम होती है, पर गत असलमें सच है। यह रहे थे, लोग इतना भी नहीं समझ सकते कि समाजने प्रचलित विधि विधानाने उल्लंघन करने का दु स सिफ चरित्र-बल ओर प्रियेक बुद्धिने गलपर ही सहन किया जा सकता है। मनुष्य गहरन अन्यायको ही देखता है, अन्त करणकी प्रेरणाकी कुछ खबर ही नहीं रखता। और यहींपर समस्त द्र द्र ओर गिराधोंकी सृष्टि होती है।”

कमलने समझा कि इसका लक्ष्य वह खुद और अजित है, इसलिए वह चुप

रही। उसने यह बात नहा कही कि उच्छ्वलताने जोरसे भी समाजने विधि विधानोंका उल्लंघन किया जा सकता है। दुःखि और निवेन-दुःखि दोनों एक चीज नहीं हैं।

बेला और मालिनी उठ खड़ी हुई, उनके जानेका समय हो गया। कमलकी मिलाप उपेक्षा करके उन्होंने हर द्र और आगु गानुनो नमस्कार किया। इस क्षणे सामने उन्होंने हमेशा अपनेका छाया समझा है, इसलिए अंतमें उसका बदला चुनाया उपेक्षा दिखाकर। उनके जानेपर आगु गानुने स्नेहने साथ कहा, "तुम्हें खयाल मत करना बेटी, इसका सिद्धा उनसे पास और कुछ है ही नहीं। मैं भी तो उसी दलका आदमी हूँ। सब जानता हूँ।"

आगु गानुने हरेद्रके सामने आज पहली बार उसे 'बेटी' कहके पुकारा। कहा, "देवयोगसे वे पदस्थ यक्तियां ही स्त्रियाँ हैं, हाद सक्लकी महिलाएँ रह्य। जैमेजी गतचित्तम, चाल-चल्य और पहनाव उतासमें अप-टू डेट हैं। यह मूल जाससे तो उनकी मूल पूँजीपर चोट पत्ती है, कमल। उनपर गुस्ता होना भी अन्याय है।"

कमलने हँसते हुए कहा, "गुस्ता तो मैं नहा हूँ।"

आगु गानुने कहा, "सो मैं जानता हूँ। गुस्ता मुने भा नहीं आया, सिर्फ हँसी आद। पर, घर कैसे नाजोगी बेटी, मैं उत्तरता जाऊँ तुम्हें?"

"वाह, नहीं तो मैं जाऊँगी कैसे?"

कहाँ लोकाकी विगाह न पट जाय, इस डरसे उसने अपनी मांटर लौटा दी थी।

"जल्दी गत है। पर, अर देर कराना भी शायद ठीक न हो, —क्यों ठीक है न?"

सबको खयाल हो आया कि अभी वे सम्पूर्ण नीरोग नहा हुए हैं।

इतनेम जीनमें जूतेकी आवाज सुनाई दी, और दूसरे क्षण समने अत्यन्त आश्चर्य साथ देना कि दरवानेने बाहर अजित आ सडा हुआ है।

हरेद्रने मीठे स्वरसे स्वागत किया, "हेल्लो! चटर लट देन नेहर। (=सन्धा नहींसे देर भली!) ब्रह्मयथाश्रमका कैसा सौभाग्य है!"

अजित अप्रतिभ होकर रोला, "लेने आया हूँ।" और पक्क मारते ही एक अनचीती दुःसाहसिकताने उससे भीतरकी बातको जोरसे कहा देखा

निकाल दिया, बोला, “नहीं तो फिर मुलाकात न होती। हम लोग तड़के हा चले जा रहे हैं।”

“तड़के ही ? आजकी रात बीते ?”

“हाँ। सब तैयारियाँ हो चुकी हैं। यहाँमे हम लोगोंकी यात्रा शुरू होगी।”

बात मिसोसे ठिपी हुए नहीं थी, फिर भी सपने सब मानो लज्जासे म्लान हो उठे।

इतनेम दवे पाँव चुपकसे नीलिमा आ पहुँची और एक तरफ बैठ गई। सकोच दूर करने आगु बाबूने जाँच उठाकर देखा। जो बात व कहना चाहते थे वह एक बार उनक गलेम अटनी, फिर धीरे धारे व बोले, “हो सभता है कि हम लोगोंकी अब फिर कभी भट न हा, तुम दोनों मरे रोहन पात्र हा, अगर तुम लोगोंका ब्याह हो जाता तो म देव जाता।”

अजितको सहसा मानो किनारा नजर आ गया, वह यत्र कण्ठसे बोल उठा, “यह चीज म नहीं चाहता आगु गानू, यह तो मरे लिए कल्पनाय राहरकी बात है। विनाहके लिए मैंने बार बार कहा है, और बार-बार सिर हिलाकर कमलने अस्वीकार कर दिया है। अपनी सारी सम्पत्ति,—जो कुछ मेरे पाम है सब,—उसने नाम लिपक म मजबूतीमे पकड़ा देका तैयार था, पर कमल राजी नहीं हुई। आज इन सपने सामने म फिर प्रार्थना करता हूँ कमल, तुम राजी हो जाओ। मैं अपना सर्वस्व तुम्ह देकर जी जाऊँ। धागेक कल्पस कुटकारा पा जाऊँ ?”

नीलिमा अगानू होकर देखती रह गई। अजित स्वभागत शू प्रवृत्तिना आदमी था,—सपन सामने उसकी ऐसी असीम यादगुता देख सपन सब मारे आश्चर्य दग रह गये। आज यह अपनेको बिल्कुल नि स कर देना चाहता है। अपनी कहनेका कोर आज अपने हावम ररानेकी आज उमे कोइ आवश्यकता ही नहीं माहूम हो रही है।

कमलने उसन मुँहकी तरफ देगकर कहा, “क्यों, तुम्ह दतना डर किस बातना हो रहा है ?”

“डर आज न सही, पर—”

“‘पर’का दिन पहले आये तो सही।”

“आनेपर तो फिर तुम हर्गिज कुछ लगी नहा, मैं जानता हूँ।”

कमलने हँसत हुए कहा, “जानते हो ? तो यही होगा तुम्हारे लिए सबसे बुरा और मजबूत बंधन ।”

उस टहरकर फिर कहने लगी, “तुम्हें याद नहीं, मने एक दिन कहा था कि बहुत ज्यादा मजबूत बनानेके लोभसे निकटुल ठोस और निश्चिद्र ममान बनानेकी कोशिश मत करो । उससे मुरदेकी कत्र भन्ने ही बन जाय, पर जीवित मनुष्यना शयनागार नहीं बन सकता ।”

अन्तितने कहा, “कहा था, मुझे याद है । जानता हूँ, तुम मुझे बाँधना नहीं चाहता—पर मैं जो बँधना चाहता हूँ । नहीं तो फिर मैं तुम्हें किस चीजसे बाँध रखूँगा कमल ? मुझसे कहाँ है इतना जोर ?”

कमलने कहा, “जोरकी जरूरत नहीं । बल्कि तुम अपनी कमजोरीसे ही मुझे बाँध रखना । मैं इतनी निश्चर नहीं कि तुम उसे आदमीको दुनियामें यों ही उहाकर चली जाऊँ ।” फिर पलकमात्र आगु बाचूनी तरफ देखकर बोली, “भगवान्को तो मैं नहीं मानती, नहा तो उनसे प्रार्थना करती कि तुम्हें ससारके समस्त आघातोंकी ओटम रखकर ही मैं एक दिन मर सकूँ ।”

नीलिमाकी आँखोंमें आँसू भर आये । आगु बाचूने भी अपनी आँसुओंसे यादुल आँगोंको पोंठते हुए मँधे हुए कण्ठसे कहा, “तुम्हें भगवान माननेकी भी जरूरत नहीं कमल । सब एक ही बात है बेटी । यह आत्म-समपण ही तुम्हें एक दिन गौरवस साथ उनके पास पहुँचा देगा ।”

कमल हँस दी, बोली, “यह तो मेरे ऊपरा प्राप्ति होगी । इक्की प्राप्तिसे भी उसकी ब्याग इज्जत है ।”

“सो गीर है, बेटी । पर यह जान रखना कि मेरा आशीवाद निष्फल नहीं होनेका ।”

हरेद्रन कहा, “अन्तित, राखे तो जाये नहीं होंगे, चलो जाने ।”

आगु बाचू हँमने हुए बोले, “तुम्हारी चह भी खून है । ऐसा भा कभी हो सकता है कि अन्तित बिना राखे-धीये ही चला आय और कमल यहाँ सा-पीनर निश्चिन्त हो जाये ।”

अन्तितने लज्जके साथ स्तकार किया कि बात दर असल ऐसी हा है । यह बिना राखे चहा आया ।

इस बातका स्मरण आते ही कि यही शेष सचि है, निधीका जी नहीं

चाहता था कि सभा भंग हो, परन्तु आशु बानू स्वस्थका ग्याल करके आखिर उठनेकी तैयारी करनी पटी। हरेद्रन कमलके पास आकर धीमे स्वरम कहा, “इतने दिनों राद अर असल चीज पाद कमल, मेरा अभिनन्दन ग्रहण करो।”

कमलने उसी तरह चुपकेसे ज्ञान दिया, “पाद है? कमसे कम यही आशीवाद दीजिए।”

हरेद्रने आगे और कुछ न कहा। परन्तु कमलके मूठसे जैसा चाहिए वैसा दुषिधाहीन परम निःशय स्वर शकृत नहीं हुआ और यह रात उनका कानोको खटकी। मगर फिर भी ऐसा ही हुआ करता है। विश्वका विधान ही ऐसा है।

कमलको दरवाजेकी ओटम बुलाकर नीलिमाने अपनी ओरसे पाठते हुए कहा, “कमल, मुझे भूल न जाना कहीं।” इससे ज्यादा उससे कहते नहीं बना।

कमलने उसे झुम्झर नमस्कार किया आर कहा, “जीजी, मैं फिर आऊँगी, पर जानक पहले मैं आपके पास एक प्राथना रख जाऊँगी कि जीवनम कल्याण को कभी अस्वीकार न करना। उसका सत्य रूप आनन्दका रूप है। उसी रूपमें वह दरसाइ देता है—वह और किसी भी तरह पहचाना नहा जा सकता। तुम और चाहे जो भी करो जीजी पर अग्निनाश राबूने घरकी बेगार करनेको अर राजी न होना।”

नीलिमाने कहा, “ऐसा ही होगा कमल।”

आशु बानू गाडीमें जाकर बैठे तो कमलने हिन्दू रातिस उनका पॉप छुम्झर प्रणाम किया। आशु बाबूने उसने माथेपर हाथ रखकर आशीवाद दिया। कहा, “तुमसे मुझे एक वास्तविक रात्वका पता लगा कमल। अनुकरणसे मुक्ति नहीं मिलती, मुक्ति मिलती है ज्ञानमे। इससे डर लगता है कि तुम्ह जिसन मुक्ति मिला दी है, कहीं अजितको वही असम्मानमें न डुगा दे। उससे इसकी रक्षा करना बटी। आरसे इसका भार तुम्हीपर है।”

कमलने इशारा समझ लिया।

आशु राबू फिर कहने लगे, “तुम्हारी हा रात मैं तुम्ह राद दिलाये दता हूँ कमल। उस दिनसे मैंने इस रातपर बार बार विचार किया है कि प्रेमकी पवित्रताका इतिहास ही मनुष्यकी सभ्यताका इतिहास है—उसका जीवन है। यही उसने महान् होनेका धारावाहिक वणन है। फिर भी शुचिताकी सजा या

दाग्याको लेकर मैं चलते रक्त तरु नहीं करूँगा। अपन क्षोभन नि श्वासने तुम लोगोंकी मिदाकी घटियोंको मैं मलिन नहीं करना चाहता। मगर इस बूझना इतनी सी बात याद रखना कमल, कि आन्ध्र या आर्द्रिया सिर्फ दो-चार आदमियोंके लिए ही है—इसीसे उसकी कीमत है। उसे साधारणने नीच रॉच लानेसे फिर वह पागलपन हो जाता है, उसका गुम मिट जाता है और बोझ दु सह हो उठता है। गौद युगसे लेकर वैष्णव युगतरु इसकी पुत्रुत-सी दु लद ननीरें ससारमें पैली पड़ी है। क्या तुम फिरसे उही दु गन मिष्ट ससारमें र्वीच लाना चाहती हो बेटी ?”

कमलने मूढ कण्ठसे उत्तर दिया, “यह तो मेरा धम है चाचाजी !”

“धम ! तुम्हारा यह धम है ?”

कमलने कहा, “हाँ। जिस दु लन आप डर रहे हैं चाचाजी, उसीमसे फिर उससे भी बड़ा आदम पैदा होगा। और उसका भी काम जिस दिन सतम हो जायगा, उस दिन उसने मृत गरीरने सारमेंसे उससे भी महान् आदमकी सृष्टि होगी। इसी तरह ससारमें आजका गुम चलने गुभतरक चरणोंम आत्म प्रसजन करके अपना ऋण बुझाता रहता है। यही ता मनुष्यकी सुत्तिका माग है। देखते नहीं चाचाजी, सती-दाहका गहरी चढरा राजशासनसे उदल गया है, पर उसने भीतरकी आग आज भी ज्योंका त्यों धधक रही है और उसी तरह भस्म निय जा रही है। यह बुझेगी किस चीजसे ?”

आगु बाबूसे कुछ बाला न गया, वे एक गहरी रॉस लेकर रह गये। परन्तु दूसरे ही क्षण गोल उठे, “कमल, मगिना मॉना पधा में आजतन नहा तोड सवा, सो इस तुम नदा करती हा कि मोद है, कमजोरी है,—मादम नहीं वह क्या है, पर यह मोद जिस दिन जाता रद्ग उस दिन उसन साथ-साथ मनुष्यका बहुत-कुठ चला जायगा, बेगे। मनुष्यनी यह पुत्रुत तपस्यानी पूँजी है कमल।—अच्छा, अर जायँ। चलो वामुदन।”

इतनेमें टेलिग्राफ सिग्नल सामने आकर साइग्निलसे उतरा। अजण्ट तार है।

हरेद्रा गादीकी बत्तीने गामने जानर तार ग्योलकर पना। लम्बा टेलिग्राफ है, मयुरा जिन्हे एक छोटे सरनारी अलाजालरं टाकररा भेजा है। उसमें लिखा है,

“गारने एक मन्त्रिममें आग लग गयी थी। बहुत गिनोंकी बहुजनपूजित

प्रतिमा उस होनेकी थी। रत्ना काद भी उपाय न रह गया था कि इतनेमें उस जलते हुए मन्दिरके अन्दर राजेन्द्र घुस पडा और मूर्तियों बाहर ले आया। देवतानी रक्षा हा गद, पर उनके रत्ना जतानी रक्षा न हो सनी। दा दिन चुप चाप अयत्त यातना सहता हुआ आज राबरे वह वैकुण्ठ चला गया। दस हजार जनताने मिलकर कीतन भजनादिसे साथ जुलूस निकाल कर यमुना-तटपर उसकी अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न की है। मरते समय राजेन्द्र आपनों समाचार देनेके लिए कह गया है।”

स्वच्छ नील आकाशसे प्रभ्र गिरा।

रुलाइसे हरेन्द्रना गला रुक गया, और स्वच्छ चॉत्नी रात मुहृत भरमें अथ कारमें एतानार हो गई।

आशु बाबू रा पड़े, रोठे, “दो दिन,—बडतालीस घण्टे,—इतने नजदीक, फिर भी जरा स्परतन नहा दी ?”

हरेन्द्र आँसु पोंछता हुआ बोला, “जरूरत नहीं समझी। कुछ क्रिया तो जानहीं सक्तता था, इसीसे शायद उसने किसीको दुख देना नहीं चाहा।”

आशु बाबूने अपने दोनों हाथ माथेसे लगाकर कहा, “इसते मागी यह है कि सिवा देशके, किसी आदमीको उसने अपना आत्मीय नहीं माना। सिर्फ देश,—समग्र भारतवर्ष। फिर भी, भगवान्, तुम अपने चरणोंमें उसे स्नान देना। तुम और चाहे जो भी करा, पर इस राजेन्द्रकी जातिमें उखारसे न मिगना।—वासुदेव, चलो।”

इस शोकनी मामिन् चोट कमलसे कटकर शायद और किसीको न पहुँची हागी, पर तु वेदनाकी भापसे उसने अपने कण्ठमें रँवने नहीं दिया। उसकी आँसुसे चिनगारियाँ-सी निकलने लगी, बोली, “दुख किस बातना ? वह वैकुण्ठ गया है।” फिर हरेन्द्रसे बोली, “रोइए मत हरेन्द्र बाबू, अज्ञानकी बलि हमेशा इसी तरह अदा होता है।

कमलने स्वच्छ कटोर स्वस्ने पैसे छुरेनी तरह सपने कलेजेमें छेद दिया।

आशु बाबू चले गये।

और, उस शोकच्छत्र स्तंभ नीरस्ताके पीच कमल अनितने साथ गाढीमें जा बैठी। बोली, “शमदीन—चलो।”

